पंडित श्याम सुन्दर लाल वत्स

नवग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ नवग्रह स्तोत्र

(वेदों-पुराणों से संकलित)

नवग्रह सम्बन्धी भ्रमों का निवारण करने वाली
मौलिक एवं शोधपूर्ण कृति जो सिद्ध करती है :

नवग्रह : शत्रु नहीं, मित्र

नवग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ नवग्रह स्तोत्र

(वेदों-पुराणों से संकलित)

लेखक :

ज्योतिष भाष्कर, पंडित श्याम सुन्दर लाल वत्स

(अनेक स्वर्ण पदकों से सम्मानित)

नवग्रह शोध विशेषज्ञ

एवं

संस्थापक : श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र

सैक्टर 11, A/32-B लघु सचिवालय मार्ग

फरीदाबाद 121006

दूरभाष 0129-5280912

प्राप्ति स्थान : श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा
जीवन प्रदायण केन्द्र सैक्टर 11, A/32-B
लघु सचिवालय मार्ग
फरीदाबाद- 121006
दूरभाष : 0129-5280912

निवास स्थान : पं० श्री श्याम सुन्दर लाल वत्स
गाँव-सिही, सैक्टर 8,
फरीदाबाद
दूरभाष : 0129-5245095

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 5000,

मूल्य : 200/-

प्रकाशक एवं मुद्रक :-
नवीन जैन,
पारस प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिसर्श
बी-45/46, सैक्टर 8
नोएडा- 201301
दूरभाष : 4551152, 4557671

॥ श्री हरिः ॥

धर्म की जय हो | । श्रीज्योतिरीश्वरोविजयते । | अधर्म का नाश हो,
प्राणियों में सद्भावना हो, | ॥ हर हर महादेव ॥ | विश्व का कल्याण हो,
गौ हत्या बन्द हो | अनन्त श्री विभूषित गौ माता की जय हो ।

जगद्गुरू शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर

स्वामी श्रीमाधवाश्रम जी महाराज
(बदरिकाश्रम, हिमालय)
७, शङ्कराचार्य मार्ग, सिविल लाईन दिल्ली -११००५४
दूरभाष : २६१४५७९

आशीर्वचन

स्वस्ति श्री पं. श्याम सुन्दर लाल वत्स दैवज्ञ की नवीन अनमोल कृति **"नव-ग्रह पीड़ा निवारण विधि"** का पठन किया । मनन-चिन्तन-मन्थन की कसौटी पर खरी उतरी, इस कृति के लिये मैं वत्स जी के ज्योतिष ज्ञान की हार्दिक सराहना करता हूँ और पंडित जी इसी तरह ज्योतिष के द्वारा जनमानस का निरन्तर मार्गदर्शन करते रहें यही प्रभु से प्रार्थना करता हूँ । पंडित जी ने अत्यन्त प्रभावशाली, सरल भाषा में सभी ग्रहों के शुभ-अशुभ स्वरूप का सविस्तार वर्णन किया है तथा अशुभ कारक ग्रहों के दोषों के निवारण के उपाय भी बताये हैं जो सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए जीवन प्रदायण सिद्ध होंगे । ग्रहों के प्रति व्याप्त अनेक भ्रांतियों को निर्मूल करते हुए जप-तप की महत्ता को भी समझाया है । इस कृति से निश्चय ही ज्योतिष विज्ञान में रुचि रखने वाले वरन् ज्योतिष शास्त्र का वैज्ञानिक अध्ययन व शोधकर्ता भी लाभ उठा सकेंगे ।

इस पुस्तक परिधि में पंडित जी ने शनि राहु-केतु भूत प्रेत तथा समस्त तांत्रिक प्रयोगों से सहज ही छुटकारा पाने के सर्वोत्तम उपाय भी बताये हैं । भैरव सिद्धि द्वारा भयानक कष्टों से उद्धार की विधिवत् चर्चा करके इस पुस्तक को अत्यन्त महत्वपूर्ण बना दिया है ।

अतः निश्चय ही यह पुस्तक जनकल्याणकारी सिद्ध होगी । मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक ज्योतिष जगत् में एक प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभायेगी ।

भावत्कः

(स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज)

ज्योतिष भाष्कर नवग्रह शोधकर्ता "शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि" तथा "नवग्रह पीड़ा निवारण विधि" के रचयिता पंडित श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा प्रस्तुत हैं नवग्रहों पर सरस सारात्मक अनूठी संग्रहणीय पुस्तकें

श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान तथा जीवन प्रदायण केन्द्र, फरीदाबाद के संस्थापक ज्योतिष-मार्तण्ड पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स की नौ ग्रहों पर नौ पुस्तकें पहले ही प्रकाशित हो चुकी हैं । पं० वत्स जी की अब इन्हीं नवग्रहों पर आधारित पस्तुत हैं, नौ पृथक-पृथक पुस्तकें । इनमें **'शनि ग्रह पीड़ा निवारण : शनि शत्रु नहीं मित्र'** बेहद लोकप्रिय हुई हैं और अब उसका चतुर्थ संशोधित-परिवर्धित संस्करण भी प्रकाशित होने जा रहा है । इनमें से जन कल्याण की भावना को मददे नजर रखते हुए **"नवग्रह पीड़ा निवारण विधि"** नामक पुस्तक का नूतन प्रकाशन किया है जो नवग्रह सम्बन्धी समस्त शंकाओं का समाधान कर नवग्रहों की कल्याणकारी जानकारी प्रदान करेगी । शेष अन्य ग्रहों पर भी पंडित वत्स जी की पुस्तकें मुद्रणाधीन हैं ।

इन सभी पुस्तकों में पंडित जी ने ग्रह की उत्पत्ति, अंतरिक्ष में उसकी स्थिति, ज्योतिष हस्तरेखा शास्त्र, अंक शास्त्र में ग्रह विशेष का महत्व, वेदों, पुराणों आदि से प्राप्त ग्रह विशेष सम्बन्धी प्रसंगों आदि का सारगर्भित, ज्ञान-वर्द्धक अध्ययन प्रस्तुत किया है । प्रत्येक पुस्तक ग्रहों सम्बन्धी अन्य सभी उपलब्ध पुस्तकों से सर्वथा पृथक एवं अभूतपूर्व है । इनमें पंडित वत्स जी ने अपने ज्योतिष जीवन के अनुभवों का सार, सिद्ध-महात्माओं से प्राप्त अचूक उपायों और जड़ी-बूटियों का विवरण इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है ।

ग्रहों का मानव से सम्बन्ध तथा प्रभाव, ग्रह, जप, यज्ञ, का विधान कहां और कैसे अग्नि, मत्स्य पुराणानुसार ग्रह स्थापन पूजन एव ग्रह, जप, यज्ञ की महिमा, महर्षि भृगु एवं भृगुतीर्थ महात्म्य, (ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ महर्षि भृगु जी) तथा क्या तंत्र ताबीज टोटके, रत्नादि से ग्रह पीड़ा निवृत्त होना संभव है? ग्रह पीड़ा शमन करने में कौन पूर्ण सक्षम है, तंत्र अथवा मंत्र का विस्तार से वर्णन किया है ।

ज्योर्तिमय

ज्योतिर्मय

लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार 'जनसत्ता' इंडियन एक्सप्रैस

A-80, सैक्टर - 2 नौयडा

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स की अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

- सूर्य ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- चन्द्र ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- मंगल ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- बुध ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- बृहस्पति ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- शुक्र ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- शनि ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- राहु ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय
- केतु ग्रह का मानव से सम्बन्ध, प्रभाव तथा उपाय

श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र द्वारा प्रकाशित नवग्रहों की उपरोक्त कृतियाँ पाठकों में बेहद लोकप्रिय हुई हैं । इन कृतियों में ग्रहों के प्रभाव एवं उनके दोषों के निवारण के लिए केन्द्र द्वारा अपनायी गई अनुभव सिद्ध उपचार-विधि, पूजा मंत्र-जाप, स्तोत्र पाठ, रत्नों एवं औषधियों का उपयोगी विवरण भी उपलब्ध है ।

पाठकों के विशेष अनुरोध पर अब प्रथम प्रस्तुत है "नवग्रह पीड़ा निवारण विधि" सम्पूर्ण जानकारी सहित वृहद शोधपूर्ण कृतियाँ:

- सूर्य ग्रह पीड़ा निवारण विधि । (शिघ्र प्रकाशित) चन्द्र ग्रह पीड़ा निवारण विधि ।
- मंगल ग्रह पीड़ा निवारण विधि । बुध ग्रह पीड़ा निवारण विधि ।
- बृहस्पति ग्रह पीड़ा निवारण विधि । शुक्र ग्रह पीड़ा निवारण विधि ।
- शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि । ("शनि शत्रु नही मित्र" का चतुर्थ संशोधित संस्करण प्रकाशित हो चुका है)
- राहु ग्रह पीड़ा निवारण विधि । (शिघ्र प्रकाशित) केतु ग्रह पीड़ा निवारण विधि ।

कुंडली के भाव और फलित ज्योतिष (प्रत्येक भाव पर पृथक संपूर्ण पुस्तक-अर्थात बारह भावों पर बारह पुस्तकें) हस्त रेखा विज्ञान ।

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स की एक और अद्भुत, मौलिक कृति-मंत्र शक्ति का चमत्कार

दुर्गा पूजा अनुष्ठान-विधि

इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने नवरात्रों के महत्व को स्पष्ट करने के साथ-साथ यह भी बताया है कि पूजा में रखे नारियल किस प्रकार अपने आप आवाज करते हुए फट जाते हैं और किस प्रकार एक कलश का जल अपने आप बाहर आता है । यह एक चमत्कारिक योग है, जो यह भी सिद्ध करता है कि देवी जी ने आपकी पूजा स्वीकार कर ली है ।

एक परम कल्याणकारी कृति

आज के दूषित वातावरण में सुकून पाना अत्यन्त दुष्कृत हो गया है । लेकिन जब जब वातावरण दूषित हुआ है, जब-जब धर्म की हानि हुई है तब तब धर्म के उत्थान हेतु प्रभु ने किसी न किसी रूप में आकर जनता को दूषित वातावरण से मुक्त करा, धर्म का उत्थान किया है । जीवन में सुख और दुःख भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र के समान घूमते रहते हैं और सुख दुःख के कारक हैं यही नवग्रह । मनुष्य के जीवन में जब राहु ग्रह का प्रभाव आता है तो मनुष्य भयभीत हो जाता है क्योंकि राहु काल अशुभकारी होता है परन्तु सब जगह और सब क्षेत्र में राहु का प्रभाव अशुभ नहीं होता है ।

ज्योतिष देव-मानव-दानव का अभिन्न अंग सनातन से रहा है । आज के स्वार्थिक एवं लोलुपता भरे युग में किसी सुयोग्य ज्योतिषी का परामर्श प्राप्त होना कठिन ही है लेकिन यह ईश्वर की कृपा और पंडित जी का अपार स्नेह है जिनका परामर्श मुझे ही नहीं मेरे परिजनों, परिवार को भी पूर्ण रूप से प्राप्त हुआ और पंडित जी के ही मार्गदर्शन से हर प्रकार का लाभ प्राप्त हुआ ।

मैंने पंडित जी के केन्द्र को देखा है तथा मंत्रों में क्या शक्ति है स्वयं अनुभव किया है इससे प्रभावित होकर ज्योतिष सम्बन्धी नवग्रह विज्ञान को अपने 'दैनिक पंजाब केसरी' समाचार पत्र में 1992 में "ग्रहों का मानव पर प्रभाव" लेख माला प्रकाशित किया जिससे जनता जनार्दन में इस विज्ञान के प्रति नई जागृति आई और अनेक लोगों को इससे महान लाभ हुआ है ।

वत्स जी ज्योतिष के माध्यम से जातकों के नाना प्रकार के कष्टों का समाधान कर सत्मार्ग दर्शाते हैं इसके लिए मैं ही नहीं जन समूह भी आभारी है । विगत वर्ष जनकल्याणार्थ **'शनि शत्रु नही मित्र'** नामक अनोखी पुस्तक प्रकाशित की थी लेकिन जनकल्याण की भावना को मद्देनज़र रखते हुए **'नवग्रह पीड़ा निवारण विधि'** नामक पुस्तक का नूतन प्रकाशन किया जो नवग्रह सम्बन्धी समस्त शंकाओं का समाधान कर नवग्रहों की कल्याणकारी जानकारी प्रदान करेगी । आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है कि समस्त जन समूह इस पुस्तक का सहारा लेकर ग्रहों से परिचित होते हुए परिजन परिवार सहित सुख पूर्वक जीवन यापन करेंगे । अतः वत्स जी की यह कृति मानव मात्र के लिए परम कल्याणकारी है ।

अश्विनी कुमार

स्थानीय सम्पादक 'पंजाब केसरी'

सम्मति

जो लोग फलित ज्योतिष को प्रामाणिक मानते हैं, वे ग्रह योगों द्वारा उत्पादित संकटों से मुक्ति के लिए की जाने वाली ग्रह पूजा-दानादि पर भी आस्था अक्सर रखते ही हैं। ऐसे लोगों के लिए मन्त्रविदों ने ग्रहों के कुयोगों के कुप्रभाव से बचाव के लिए ग्रहों के मन्त्रों तथा तान्त्रिक विधानों का निर्देश किया है, जिनके जप एवं प्रयोग से ग्रह संकट से मुक्ति मिल जाती है, ऐसी अधिकतर जातकों की धारणा है। जातकफलादेश के अनुसार ग्रहों को उनकी सहज प्रकृति के आधार पर शुभ एवं क्रूर दो भागों में बांटा गया है। लेकिन जन्मकालिक अपनी स्थिति-विशेषवश ये शुभ एवं क्रूर ग्रह क्रमशः अशुभ एवं शुभ फल भी देने की प्रकृति रखते हैं-यह जातक, मुहूर्त आदि ग्रन्थों में सप्रपंच प्रतिपादित है। ग्रह-कर्मकाण्ड के विशेषज्ञ श्री श्याम सुन्दर लाल वत्स जी की सोद्घोष प्रतिज्ञा है कि विधिपूर्वक किए गए जप-मन्त्र, तन्त्र प्रयोग द्वारा किसी भी अशुभ फलप्रद ग्रह के प्रत्याशित कुफल को निरपवादरूपेण पूर्णतः ध्वस्त किया जा सकता है। अपनी इस प्रतिज्ञा को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने अपनी एतत्सम्बन्धी अनेक लेखमालाओं में, जो भारत के सुप्रसिद्ध दैनिक मासिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है, अनेक ऐसे ग्रहाकान्त दुःखी लोगों की व्यथा-कथाएं प्रकाशित की हैं, जो उनके श्री वत्स जी द्वारा निर्दिष्ट जपादि का यथाविधि अनुष्ठान करने पर विकट ग्रहापदाओं से पूर्णतया मुक्त हो सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

क्या ग्रह जातक के जीवन को प्रभावित करते हैं?, क्या प्रतिकूल ग्रह-स्थिति को अनुकूल बनाने की कर्मकाण्ड में क्षमता है? ये विषय भले ही विवादास्पद हों, लेकिन इसमें अतिशयोक्ति नहीं है कि सूर्यादि नवग्रह सम्बन्धी जप-दान-तन्त्र-मन्त्रों के अनुष्ठान के बारे में श्री वत्स जी का जो स्वाध्याय एवं प्रतिपादन है उसका कोई प्रतियोगी नहीं है। अपने लगभग अर्द्धशताब्दी के गंभीर विस्तृत स्वाध्याय अनुसन्धान के परिणामस्वरूप उनकी सशक्त लेखनी से **"शनि शत्रु नहीं मित्र"** एवं **"नवग्रह पीड़ा निवारण विधि"** जैसी रचनाएं निकली हैं। जीवन पर ग्रहों के प्रभाव एवं उनके कुप्रभाव को अनुकूल बनाने की जपादि प्रक्रिया पर आस्थावान् लोगों के लिए श्री वत्स जी की इन कृतियों का कोई विकल्प ढूंढ पाना मैं तो समझता हूँ, सरल नहीं है।

प्रियव्रत शर्मा एम. ए

पंचांगकर्ता

59/6 (अभिजित्)

पंचकूला - 134109

दिनांक 4/7/1998

विद्वान् सम्पादकों एवं समीक्षकों की दृष्टि में
पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स का लेखन

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स ने ज्योतिष संबंधी भ्रमों के निराकरण एवं ग्रह पीड़ा निवारण को सामान्य जनता तक पहुंचाने के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे हैं। इन सभी लेखों को पाठकों ने बेहद पसंद किया तथा अधिक जानकारी के लिए भी वत्सजी से संपर्क भी किया। जिज्ञासु एवं शोधार्थी पाठकों की सुविधा के लिए इन लेखों का प्रकाशन संबंधी विवरण निम्नलिखित हैः

1. साप्ताहिक हिन्दुस्तान-शनि ग्रह पीड़ा निवारण 21 दिन में 2-7-1984, 15-11-86, 12-7-97, 11-4-98, 31-8-92, 26-9-99, 9-10-99, 10-10-99,
2. दैनिक पंजाब केसरी-नई दिल्ली- नवग्रहों का मानव पर प्रभाव और उपाय--लेखमाला-20-10-92 से 4-11-92 तथा 4-6-93, 19-10-94, 13-10-95, 23-10-95, 7-11-96, 13-1-97, 14-9-97, 27-2-98, 8-1-99, 17-1-99, 10-8-99, 10-10-99,
3. जनसत्ता नई दिल्ली- एक दावा नक्षत्रों की चाल साध लेने का 1993, नवम्बर-1994 मंत्र जाप करने से रोगों से निवृत्ति नबम्वर-: 25-4-95, 12-6-95, 1996, 18-1-96, 6-11-96, 21-1-97, 16-5-97, 14-1-99
4. दैनिक राष्ट्रीय सहारा--ग्रह से आदमी का रिश्ता, कर्मों का फल तो मिलता ही है-लेख माला- 2-2-94, से 24-2-1994, तक तथा 25-7-99 ।
5. दैनिक ट्रिब्यून-चण्डीगढ़ धर्म संस्कृति साक्षात्कार- भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक ही रक्षा कवच 23-10-94, 25-5-97
6. कादम्बिनी मासिक पत्रिकाः- सब धोखा दे सकते मंत्र नहीं । तंत्र विशेषांक नवम्बर 1994, 95, 96, 97, तथा 99
7. स्वदेश 14-9-97 । 23-9-99
8. दैनिक लोकमत दिल्ली 20-9-92
9. दैनिक विश्वामित्र कलकत्ताः-शनि ग्रह पीड़ा निवारण 15-7-87 ।
10. दैनिक नवज्योति- 3-2-97 शनि से डरने की जरूरत नहीं ।
11. दैनिक आज वाराणसी, गोरखपुर, इलाहाबाद (रीवा, लखनऊ, कानपुर (झांसी), आगरा बरेली, पटना, रांची जमशेदपुर से प्रकाशित - शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि-19-2-1987, 11-9-88 तथा 15-8-99 से धारावाहिक राशि फल तथा ग्रहों की स्थिति का वर्णन प्रत्येक शनिवार अगले वर्ष धारावाहिक चलता रहेगा ।

12. दैनिक राष्ट्रदूत- नागपुर- ग्रहों का मानव पर प्रभाव और उपाय- लेखमाला- 24-2-94 से 30-4-94 तक ।
13. दैनिक अमन व्यापार- ज्योतिष की दुनिया में एक चमत्कारिक खोज- लेखमाला- 21-5-94, 30-5-94, 7-6-94, 16-6-1994, 4-7-94, 22-8-94, 16-8-94, 2-9-94, 5-9-94, 12-9-94, 3-10-94, 19-9-94, 18-10-95, 19-10-95, 27-7-99, 31-7-99, 28-7-99,
14. व्यापार भारती दिल्ली :- 31-7-99
15. दैनिक समाचार मेल-ग्रह जीवन के न्यायाधीश साक्षात्कार-19-7-93, 8-4-94 से 22-10-94, 22-4-95, 21-9-96 तक ।
16. दैनिक अदृष्टम्- महालक्ष्मी पूजा दीपावली-13-11-1993
17. दैनिक नवभारत टाइम्स-सम्मेलन समाचार- 22-10-1994
18. दैनिक प्राण-फरीदाबाद-मानव उन्नति के लिए ग्रह संशोधन अनिवार्य- 30-12-84, 10-8-90, 17-8-90, .22-8-90, 9-9-90, 15-9-90, 17-9-92, 3-11-90, 23-11-90, 4-11-90
19. वीर अर्जुन- 8-2-87, 8-2-97 ग्रहों की पूजा से ही स्वर्ग की प्राप्ति सम्भव । वीर प्रताप - 4-12-93, 14-1-97
20. साप्ताहिक नरकेसरी (सोनीपत) 25-7-97. 12-9-97, 18-9-97, 21-9-97, 3-10-97, 31-10-97, 21-11-97, 5-12-97, 19-12-97, 2-1-98, 16-1-98, 23-1-98, 30-1-98, 13-2-98, 20-2-98, 27-2-98, 8-5-98, 2-4-99
21. दैनिक शेरे हरियाणा (फरीदाबाद) 30-11-990, 19-9-92, 21-6-97, 6-9-97, 13-9-97, 16-9-97, 24-7-99
22. हरि आवाज दिल्लीः- 7 से 13-12-98, 1 से 15 जनवरी 98, 21 से 27-12-98, 11 से 17 जनवरी 1999
23. महाशनि टाईम्स नई दिल्ली साप्ताहिक 24 से 30 जनवरी 1998 - पैपर का विमोचन पं. श्याम सुन्दर लाल वत्स जी के द्वारा
24. इसके अतिरिक्त जनता जनार्दन के अनुरोध पर शनि सम्बन्धी समस्त भ्रांति तथा भ्रमों के निवारण तथा लुप्त नवग्रह विज्ञान के पुनः प्रचार प्रसार हेतु धारावाहिक प्रवचन सिटी केवल नई दिल्ली ।
25. धारावाहिक इन्टरव्यू नैशनल चैनल जैन टी. वी. ।
26. नमस्ते कनाडा 1-2-2000, 16-2-2000 उत्तरी अमेरिका का प्रथम हिन्दी अंग्रेजी समाचार पाक्षिक ।

पुस्तक विमोचन तथा स्थानीय संपादकों द्वारा पुस्तक की समीक्षा

'शनि शत्रु नहीं मित्र' मानव समाज की मार्ग दर्शिका

केन्द्र द्वारा प्रकाशित अनूठी कृति शनि शत्रु नहीं मित्र का विमोचन श्री श्री 1008 जगतगुरू शंकराचार्य स्वामी श्री माधवआश्रम महाराज जी ने जनवरी 97 में किया तत्पश्चात दैनिक 'पंजाब केसरी' के स्थानीय संपादक श्री अश्विनी कुमार चौपड़ा जी ने जनवरी 97 में पुस्तक की समीक्षा की, तदोपरान्त जनसत्ता, दैनिक नवज्योति, वीर अर्जुन, तथा 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी तथा मार्तण्ड पंचांग कर्ता प्रियव्रत शर्मा जी कोराली चण्डीगढ़ ने अलग-अलग समीक्षा की । जन जानकारी हेतु पृथक-पृथक संलग्न हैं । शनि की यह अद्‌भुत कृति परम लोकप्रिय हुई है और प्रथम संस्करण में ही एक हजार कृतियां शीघ्र विक्रय हो गयीं हैं । इस कृति की जनसमूह ने भूरि-भूरि सराहना की और कहा यह कृति मानव समाज की मार्गदर्शिका सिद्ध होगी । अनेक प्रान्तों से जन समूह ने पत्रों द्वारा इस कृति का हार्दिक आभार व्यक्त कर पूर्ण प्रशंसा की ।

शनि ग्रह पर इतनी विस्तृत यह प्रथम कृति है जिसमें शनि की पूर्ण जानकारी देते हुए शनि शत्रु नहीं मित्र का उद्‌बोधन किया है । शनि क्या है, किस प्रकार पीड़ित करता है तथा किस प्रकार शनि पीड़ा से मुक्त हुआ जा सकता आदि सभी कुछ विस्तार से देते हुए पूजा पाठ अनुष्ठान यज्ञ आदि का सम्पूर्ण वर्णन तथा शनि संबंधी समस्त भ्रांतियों को ध्वस्त कर मानव समाज का मार्गदर्शन किया है । अतः इस कृति को पढ़कर जातक शनि ग्रह पीड़ा निवारण स्वतः कर सकता है । इसकी समीक्षाएं इस प्रकार हैं ।

इसकी लोकप्रियता तथा जनसमूह की विशाल मांग को देखते हुए चतुर्थ मौलिक संशोधित विस्तृत संस्करण 400 पाठ, जिसका मूल्य केवल 270 रु० ही है, इसे आप केन्द्र से भी प्राप्त कर सकते हैं ।

महाशनि टाइम्स का लोकार्पण करते हुए
पं. श्याम सुन्दरलाल वत्स

भारत निर्माण सम्मेलन में स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए पं. श्याम सुन्दरलाल वत्स

पंजाब केसरी

धर्म-संस्कृति संस्करण

वर्ष १५ सोमवार, १३ जनवरी १९९७ तदनुसार १ माघ, २०५३ विक्रमी सम्वत अंक १३

साढ़ेसाती सम्राट शनि कष्ट ही नहीं देता संकटमोचक भी है...

प्रविन्द्र

इंसान का जीवन और सुख दुःख इनका आपस में रिश्ता अटूट है । इस अटूट बंधन में ज्यातिष का अपना महत्व है । विज्ञान इसे कुछ भी कहे परंतु यह बात सच है कि भारतीय ज्योतिषचार्यों ने जो कुछ कहा उसके प्रयोग अमरीका जैसे विज्ञान युगीन राष्ट्रों ने भी किए । इससे भी ज्यादा हैरानी की बात और क्या हो सकती है कि आज अमरीका जैसे राष्ट्र में भारतीय ज्योतिष की धूम मची हुई है । मानव जीवन आज कदम-कदम पर दुःखों और सुखों से साक्षात्कार कराता है परंतु अपने आप में मदमस्त होकर जिए जा रहा है और जो जीवन के सुख-दुःख के भाव को समझ लेते हैं, वे ज्योतिष में यकीन रखने वाले होते हैं और ज्योतिष शास्त्र में क्रांति लाने वाले सूत्रधार का नाम है पं. श्यामसुंदर लाल वत्स ।

श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान केन्द्र फरीदाबाद के संचालक पं. श्यामसुंदर लाल वत्स ने चार वर्ष पूर्व अपने केन्द्र में नवग्रहों की विधिवत सिद्धि प्राप्त की और अनेक शोध किए तथा मंत्रों की कसौटी पर उन्हें अनेक खरा उतारा। पं. वत्स का दावा है कि इंसान कर्मशील होते हुए भी ग्रहों की चाल के अनुसार चलने को विवश हैं । मानव के पूर्व कृत कर्म उसे इस जीवन में अच्छा और बुरा फल देते हैं । लाभ-हानि, मान-अपमान, जय-पराजय, आंधी-तूफान सब ग्रहों के मुताबिक चलते हैं । उनका दावा है कि पूर्ण विधि के अनुसार किए गए मंत्र जाप हमेशा लाभदायक होते हैं ।

पिछले दिनों उन्होंने शनिग्रह, पर पुस्तक लिख कर बड़ी हैरतअंगेज घोषणाएं की है कि शनि इंसान के लिए कष्टदाई नहीं बल्कि फायदे पहुंचाने वाला, अमीर बनाने वाला ग्रह है । शनि का जाप विधिपूर्वक कैसे किया जाता है इसकी संपूर्ण विधि उन्होंने इसमें वर्णित की है ।

इस पुस्तक का विमोचन दैनिक 'पंजाब केसरी' दिल्ली के स्थानिय संपादक श्री अश्विनी कुमार चोपड़ा ने गत दिनों किया । शनि की इस पुस्तक में पूरा विधान प्रस्तुत किया है । विज्ञान तक को उन्होंने पुस्तक में अपने ढंग से पिरो डाला है । उनका दावा है कि दुनियाँ में हर चीज का जोड़ा है । जैसे आग-पानी, सुख दुःख, प्रेम-घृणा, आदमी-औरत इसी प्रकार बीमारी और इलाज यानि समस्या व समाधान । अपनी हर बात का तर्क शनि की इस पुस्तक में है ।

शनिदेव पर प्रकाशित पुस्तक में शनि प्रकोप से बच कर विधिपूर्वक पूजन के अचूक बाणों से हर मुसीबत दूर करने का दावा

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि के साढ़ेसाती की मान्याएं तीन तरह से होती हैं । एक लग्न से, दूसरे चन्द्र से और तीसरे सूर्य से । जातक ग्रंथों में इसका अलग-अलग वर्णन आया है । इन तीन साढ़ेसातियों के अनुसार साढ़े २२ साल तो इन तीन साढ़ेसाती में ही निकल जाएंगे । फिर जातक उन्नति

ही नहीं कर सकेगा क्योंकि शनि की साढेसाती विकास को अवरुद्ध करके हानि और दुःखकलह ही प्रदान करती है । तीस वर्ष में एक साढ़ेसाती प्रत्येक जातक को व्यापती है चाहे वह बहुत बड़ा सिद्ध या राजयोगी ही क्यों न हो । साढ़ेसाती का प्रभाव हर जातक को अवश्यमेव व्यापता है ।

चन्द्रमा के साढ़ेसाती की मान्यता उत्तर भारत के सभी विद्वान मानते हैं । कुंडली में जहां चन्द्रमा बैठा हो उससे एक घर पीछे तक शनि का प्रभाव रहता है । उदाहरण के लिए मेष राशि में चन्द्रमा बैठा है तो मीन-मेष, वृष को ही साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा । (१) ढैया मीन का (२) मेष का (३) वृष का । चौथे भाव, छठे भाव, आठवें भाव, बारहवें भाव की साढ़ेसाती बहुत विपत्ति कारक होती है । इन साढ़ेसातियों में महान कष्ट, विशाल दुःख भयंकर रोग, परमदोष, दरिद्रता, धनहानि, अपमान, बीमारी कारावास आदि दुःख जातक को व्यापते हैं ।

अतः जब-जब साढ़ेसाती लगे, जातक को श्रद्धाविश्वास से मंत्र जाप और तुलादान रत्नधारण तथा ग्यारह नारियल वाला प्रयोग अवश्यमेव कर या करवा लेना चाहिए । इन उपचारों का वैदिक विधि से आश्रय लेकर मंत्र जाप आदि करने से कराल साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव नष्ट हो जाता है । साढ़ेसाती यानी साढ़े सात वर्ष तक शनि का प्रभाव अच्छे चलते हुए काम को एकदम खड़ा कर देता है । जैसे तेज गति से चलती हुई गाड़ी लालबत्ती होते ही रुक जाती है वैसे रफ्तारसे चलते हुए काम तुरंत ठप्प हो जाते हैं । यह साढ़ेसाती का विशिष्ट प्रभाव है ।

यदि जन्मांक में शनि उच्च का होता है और वहीं साढ़ेसाती लग गई तो उच्चस्तरीय धन हानि करेगा । जिसे जातक स्वप्न में भी नहीं सोच सकता, फिर उसके साथ झगड़े-झंझट आदि कराकर विषम परिस्थिति पैदा करेगा । शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव मकर-कुंभ-मीन लग्न या मकर- कुंभ-मीन राशि वालों को कम व्यापता है, अर्थात यश, धन कारोबार की हानि कम करता है ।

शनि की साढ़ेसाती वीर विक्रमादित्य, नल- हरिश्चन्द्र आदि महान प्रतापी राजाओं पर समय से आई तो उन्होंने उसे आराम से झेल लिया । परंतु सत्य को नहीं छोड़ा, असत्य का आश्रय नहीं लिया । साढ़ेसाती ने उन्हें कितने ही दुःख पहुंचाए लेकिन उनका कोई अनिष्ट नहीं कर सकी । राजा हरिश्चन्द्र ने अंत तक सत्य को नहीं छोड़ा । तब महाराज शनि ने प्रशन्न होकर पुनः उन्हें राजपाट, धन, पुत्रादि देकर परम भागवत् बना दिया । तप करने की शक्ति दी । उस तप के कारण महाराज हरिश्चन्द्र की प्रतिष्ठा ऐसी बनी कि लोग आज भी मुक्त कंठ से उनका चरित्र तथा गुणगान गाते हैं ।

पुस्तक में कहा गया है कि याद रखें जब-जब साढ़ेसाती का प्रभाव आए जातक को मंत्र रूपी नैया का आश्रय लेकर आराम से कुसमय को पार कर लेना चाहिए परंतु बुरे कर्म नहीं करना चाहिए । चोरी-डकैती, व्यभिचार, दुर्व्यसन, परस्त्रीगमन तथा असत्य से जीवन यापन नहीं करना चाहिए । यदि जातक असत्य मार्ग पर नहीं गया तो शनि महाराज आखिरी ढैया में परम संतुष्ट होकर उसे पहले से अधिक यश, धन, वैभव देकर जीवन परम सुखमय बना देते हैं । इसमें शनि का दोष नहीं कारण हमारे जन्म-जन्मांतर, युग-युगांतर, कल्प-कल्पांतर के पापों को भुगवाकर हमें ईश्वर परायण करता है । यदि शनि प्रदत्त कष्ट को मंत्र जाप का सहारा लेकर सत्यतापूर्वक निर्वाह कर लिया जाए तो इह लोक और परलोक सार्थक हो जाएंगे । मानव जीवन सफल हो जाएगा ।

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

विक्रम संवत् २०५५, शक संवत् १९२० सन् १९९८-९९,

पुस्तक-समीक्षा

शनि शत्रु नहीं, मित्र

लेखकः- पं० श्यामसुन्दर लाल वत्स

प्रकाशकः- श्री बजरंग नव ग्रह अनुसन्धान संशोधन केन्द्र सैक्टरः-११, लघु सचिवालय मार्ग, फरीदाबाद-१२१००६

शनि सर्वदा अनिष्ट करने वाला क्रूर ग्रह ही है- सामान्यजन की इस धारणा का श्री वत्स जी ने प्रतिवाद किया है। इनका कहना है कि सभी क्रूर या शुभ ग्रह जातक के पूर्वार्जित पुण्य पापों के शुभाशुभ फलों को उसकी जन्मकालिक एवं गोचरस्थिति वश यथासमय घटित करने के लिए प्रकृति द्वारा बाधित है। लेकिन जातक इनकी पूजा, जप द्वारा इनके अनिष्ट फल से मुक्त हो, शुभ फल प्राप्त करने की क्षमता रखता है। इनका यह भी मत है कि लगभग सभी वैदिक एवं अन्य संस्कृत मन्त्र अभिशप्त हो जाने से अपना प्रभाव खो बैठे हैं। अतः ग्रहों के शाबर बीज मन्त्रों का जप ग्रह जन्य संकटावस्था को दूर करने में सक्षम है। यदि जातक सभी ग्रहों के बीज मन्त्रों का एक-एक करोड़ जप शुद्धिपूर्वक पहले ही कर लेता है, तब उस पर ग्रहों की भावी अशुभ दशा-अन्तर्दशा, गोचर स्थिति का कुप्रभाव कदापि नहीं पड़ सकता- श्री वत्स जी का यह दृढ़ विश्वास और प्रत्यक्ष अनुभव है।

प्रस्तुत पुस्तक में शनि के कुप्रभाव को दूर करने के लिए सभी प्रकार के वैदिक तथा अन्य पूजन, जप, अनुष्ठान, रत्न धारण आदि का विस्तृत विवेचन तो है ही, इसके अलावा इसमें शनि की आकाशीय स्थिति-चार, शास्त्रोक्त शनि का रूप-वाहन, शनि का जातक-संहितानुसार शुभाशुभ दशा, अन्तर्दशा और गोचर फल, पुराणों में उपलब्ध शनि सम्बन्धी सभी स्तोत्र, उपाख्यान तथा भारत के विभिन्न स्थलों पर उपलब्ध शनि की प्रतिमाएं, मन्दिर आदि का सप्रपंच, सचित्र रोचक विवरण भी है। इसके अतिरिक्त शमी वृक्ष का महत्त्व, मृत्यु का पूर्वाभास, मृत्युंजयमन्त्र का माहात्म्य, क्षय रोग का उपचार, कलशमहिमा, रोगोत्पादक क्रिमि नाशक विधि, मुहूर्त्त-वारों की उत्पत्ति, पितृ महिमा, उत्तम सन्तान प्राप्ति के उपाय आदि बीसों अन्य ऐसे विषयों का भी लेखक ने पुस्तक में समावेश किया है, जिनका प्रकृत प्रतिपाद्य विषय से यद्यपि कोई साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, लेकिन वे पाठक के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक अवश्य हैं।

निःसंदेह शनि के विषय में यह पुस्तक निरवशेष ज्ञान, उसके भयावह कुफल के निवारक उपाय-प्रतिकारों का पूर्ण, सांगोपांग परिचय देने वाला, सुन्दर प्रशंसनीय प्रकाशन है। इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले दैवज्ञों तथा अन्य जिज्ञासुओं के लिए यह प्रकाशन संग्रहणीय है। इस विषय पर ऐसा सर्वोत्कर्ष विवेचन, जो शनि के बारे में प्रचरित अनेक भ्रान्तियों को निरस्त करता है, शायद ही और कहीं मिले।

–प्रियव्रत शर्मा

५९/६ (अभिजित्), पंचकूला- १३४१०९

जनसत्ता

दिल्ली: मंगलवार, २१ जनवरी, १९९७

हमेशा आतंकित ही नहीं करता शनि ग्रह

ज्योतिर्मय

जनसत्ता संवाददाता

नई दिल्ली, २० जनवरी । फलित ज्योतिष में यकीन करने वाले सबसे ज्यादा शनि ग्रह से ही आतंकित होते हैं । कुंडली में दूसरे ग्रह कितनी ही शुभ स्थिति में हो लेकिन शनि के बारे में पता चल जाए कि वह कुपित है, उसकी महादशा या अंतर्दशा चल रही है या उसकी साढ़ेसाती शुरू हो रही है तो सुनने वाले बुरी तरह चिंतित हो जाते हैं । लेकिन शनि हमेशा अशुभ प्रभाव ही नहीं देता । वह मित्र ग्रहों से भी ज्यादा सहायक और कल्याण करने वाला होता है । बजरंग नवग्रह अनुसंधान केंद्र के संस्थापक पंडित श्यामसुन्दर लाल वत्स जी का यही कहना है । ग्रहों के प्रभाव और परिष्कार पर वर्षों से शोध कर रहे पंडित जी अनुभव और प्रयोगों के आधार पर बताते हैं कि शनि अगर अशुभ स्थिति में हो तो भी उसके बुरे प्रभावों का निवारण किया जा सकता है ।

शनि के स्वरूप, प्रभाव और उपचार पर केन्द्र के प्रयोग और निष्कर्षों को पंडित जी ने 'शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि' पुस्तक में समेटने की कोशिश की है । फरीदाबाद के सैक्टर ग्यारह में लघु सचिवालय मार्ग पर स्थित केन्द्र में मंत्र जप, अनुष्ठान और यज्ञ आदि प्रकृतियाँ नियमित चलती रहती हैं । अध्ययन के अलावा साधना अनुष्ठान भी वहां चल रही शोध की एक विशिष्ट शैली है ।

पंडित जी ने बताया कि केंद्र ने शनि पर विशेष काम किया है । उनके अनुसार सूर्य के पुत्र शनि ग्रह को संतुलन और न्याय का ग्रह कह सकते हैं । इसलिए कि जातक को उसके पापकर्मों का फल देने में शनि उत्प्रेरक की तरह काम करता है । फल भोगने की गति बढ़ा देता है । परिणाम क्योंकि अप्रिय और कष्टदायी होते हैं इसलिए लोग शनि से डरते हैं । उन्होंने कहा कि कर्मों के परिणाम तो भुगतने ही होते हैं । दो ही तरीके हैं कि या तो ग्रहों के प्रभाव को रोते कलपते भोगें अथवा किए का प्रायश्चित करें और अपने कर्मों से

हुई क्षति की खुद ही पूर्ति करें । ग्रहों की उपासना, दान पुण्य, मंत्र, जप, रत्न आदि के उपचार इस प्रयोजन को पूरा करते हैं ।

पंडित श्याम सुन्दर का निष्कर्ष है कि शनि हरेक व्यक्ति के जीवन में अच्छे बुरे प्रभाव जरूर लाता है । यह कुंभ मकर राशि का स्वामी है । कुंडली में दो भावों का स्वामी होने के अलावा तीन पर इसकी दृष्टि रहती है। जिस भाव में यह बैठता है वहां तो प्रभावित करता ही है । आशय यह कि कोई भी जातक शनि के कठोर प्रभाव से बच नहीं सकता । लग्न भाव में बैठा शनि अकारण क्रोध दिलाता है । शरीर पर इसका प्रभाव रंग बदलने से लेकर रोगी होने और चोट लगने के रूप में देखा जा सकता है । दाम्पत्य जीवन में निरंतर कलह और संबंध टूटने की हद तक तनाव भी इस ग्रह का प्रभाव है ।

इसका अर्थ है कि मनुष्य के लिए कुछ नहीं होता । जब सब कुछ ग्रह नक्षत्र ही करते हैं तो पुरुषार्थ और प्रयत्न की क्या जरूरत? सवाल के जवाब में पंडित जी ने कहा,'यह सोचना गलत है कि मनुष्य के करने से कुछ नहीं होता, ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव ही सब कुछ है । दरअसल ग्रह नक्षत्र अपने आप कुछ नहीं करते । वे प्रकृति की न्याय व्यवस्था को अंजाम देने वाले कुछ घटक हैं जो हमारे ही कर्मों के अनुसार फल देते हैं । अगर हम उस व्यवस्था में सहयोग देने के लिए तैयार हों तो वे हमारी मदद ही करते हैं ।

उन्होंने कहा कि सिद्धांत पक्ष जितना आसान है प्रक्रिया उतनी आसान नहीं है । वह जटिल है और विस्तार में जाए बगैर इतने से ही संतोष करना चाहिए कि ग्रह सुख दुख, रोग शोक, और विषाद, उल्लास के कारण हैं । विस्तार में जाना हो तो पंडित जी की सलाह है कि, 'शनि ग्रह पीड़ा निवारण' पुस्तक पर्याप्त है । वेद शास्त्रों, पुराणों, संहिताओं में शनि के बारे में जो कुछ कहा गया है वह तो संकलित किया ही गया है, खगोल शास्त्रों के संदर्भ से भी पर्याप्त जानकारी है । पंडित जी के अनुसार नवग्रहों में शनि सबसे प्रचंड और प्रभाव शाली है । यह सीमा पर स्थित है । जहां सूर्य का प्रभाव पूर्ण होता है वहां शनि का प्रभाव शुरू होता है । स्वभाव से ही दुख या संताप देने वाले, तामस प्रकृति के स्वामी, वात प्रकृति प्रधान, भाग्यहीन और नीरस वस्तुओं का स्वामी शनि यदि साध लिया जाए तो जीवन में आने वाले अनावश्यक, दुखद और कठोर बाधाओं को सहज ही पार किया जा सकता है ।

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

तंत्र-सम्मोहन विशेषांक

शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि : शनि विषयक यह एक पठनीय कृति है शनि के संबंध में लोगों में एक भय व्याप्त है । शनि की महादशा एवं साढ़ेसाती में लोगं को जो कष्ट उठाने पढ़ते हैं, इस कृति से इस भय का निवारण होता है । पं. श्याम सुंदर लाल वत्स ने शनि ग्रह के संबंध में विशेष अध्ययन किया है और उनका अनुभव एवं निष्कर्ष है कि शनि शत्रु नहीं मित्र है । ज्योतिष शास्त्र में शनि को मोक्षदायक ग्रह माना गया है । शनि ग्रह संबंधी आधुनिक खोजों से शनि विषयक अंनेक पौराणिक धारणाओं की पुष्टि होती है । पौराणिक आख्यान प्रतीकात्मक भी हैं । इन्हीं प्रतीकों में तथ्य छिपे हैं । श्री वत्स ने इस कृति में शनि विषयक प्रायः सभी सामग्री उपलब्ध करा दी है । इसे पढ़कर शनि के संबंध में पाठकों को नयी जानकारी मिलती है तथा उनकी अनेक भ्रांतियों का निराकरण भी होता है ।

पुस्तक १३० अध्यायों में बंटी है । लेखक के अनुसार शनि परम कल्याणकारक ग्रह है । वह यदि कष्ट देता है तो केवल पूर्व कर्मों के दंड स्वरूप क्योंकि वह परम न्यायाधीश है ।

इस पुस्तक में अथर्ववेद से भी उपयोगी जानकारी दी गयी है तथा दीपक, कलश, संकल्प, नान्दी श्राद्ध का महत्त्व भी समझाया है ।

कादम्बिनी

नवम्बर 1999

तंत्र-मंत्र विशेषांक

दुष्ट ग्रहों से मुक्ति केसे ?

शनि, राहु और मंगल को दुष्ट ग्रह माना जाता है जो व्यक्ति के जीवन को बुरी तरह प्रभावित करते हैं ! प्रत्येक जातक इन ग्रहों से किसी-न-किसी रूप में पीड़ित हैं । इन ग्रहों की शांति के लिए कादम्बिनी के पाठकों के लिए बेहद सहज उपाय प्रस्तुत हैं :-

शनि

शनि के लिए यह प्रयोग करें :–

1. ग्यारह नारियल जटा सहित कच्चे पानीवाले लें । एक-एक नारियल दायें हाथ से पकड़ें और दायें कान की तरफ से बायीं ओर घुमाकर दोनों हाथ लगाकर जल में प्रवाहित करें । ऐसा ११ बार करें ।
2. सवा किलो जो काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें ।
3. सवा किलो कच्चा कोयला काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें ।
4. सवा किलो चना काले कपड़े में दो कोयले, दो कील बांधकर पोटली बनायें ।
5. सवा किलो रांगा, लैड, सिक्का ।

श्रद्धापूर्वक स्नान करें । तदोपरान्त उपरोक्त क्रमशः एक-एक वस्तुओं को सिर पर से नारियल की तरह घुमाकर श्रद्धापूर्वक जल में प्रवाहित करें । घुमाते समय राहु एवं शनि देव का नाम लेकर कहें :- हे शनि देव और राहु देव, मेरी ग्रह पीड़ा निवृत्त हो जाए, मुझे सुख-शांति, धन धान्य आदि की प्राप्ति हो । ये कार्य मैं आपकी प्रसन्नता के लिए कर रहा हूँ । ऐसे ही हर वस्तु को सिर से घुमाते हुए प्रवाहित कर प्रार्थना करें । इसके बाद पुनः स्नान करें और हृदय से अपने कल्याण के लिए प्रार्थना करें तथा पहने हुए कपड़े, जूते, चप्पल, सबको घाट पर छोड़ दें और नये वस्त्र या धुले वस्त्र पहनकर घाट से बाहर आयें । इसके पीछे रहस्य यह है कि पहने हुए कपड़े वस्त्र छोड़ने से दरिद्रता दूर हो जाती है (पहने हुए कपड़े एक ही बार छोड़ने चाहिए बार-बार नहीं) ।

उपरोक्त ग्यारह नारियलवाला कार्य ग्यारह शनिवार करना होगा । यदि धनाभाव हो तो ग्यारह नारियल के बजाय एक नारियल ले लें और सवा किलो रांगे के बजाय सौ ग्राम रांगा रख लें और जो, चना, कोयला सवा किलो ही रहेगा, पर यह प्रयोग अवश्य करें ।

राहु

शनि के समान ही राहु का प्रभाव् होता है । तीसरे, छठे भाव में राहु महाबली होता है । सफल कूटनीतिज्ञ बनाता है और अपनी दशा में जातक को अपार धन धान्य वैभव प्रदान करता है । दशम और एकादश भाव में भी रक्षा करता है अन्य सब भावों में तो यह मारक ही हो जाता है और चौथे भाव स्थित राहु अपनी दशा में बालक विद्या चाहने के बाद भी नहीं पढ़ पाता ।

इनसे बचने के लिए और ग्रह पीड़ा से मुक्त होने के लिए उपाय इस प्रकार हैं :-

शनि का बीज मन्त्र संस्कृत में --**ॐ प्रां प्री प्रौं स: शनैश्चराय नम:** सरल भाषा में **ॐ प्राम् प्रीम् प्रौम् स: शनैश्चराय नम:** मंत्र संख्या नित्य 19000 ।

राहु का बीज मंत्र संस्कृत में **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहुवे नम:** सरल भाषा में **ॐ भ्राम् भ्रीम् भ्रौम् स: राहुवे नम:** मंत्र संख्या नित्य 19000 ।

मंगल

तीसरा पाप ग्रह मंगल है, जब यह लग्न और सप्तम में बैठता है तो मानव में क्रोध बहुत अधिक होता है । पति-पत्नी में इसी के कारण विशेष रूप से लड़ाइयां होती हैं । कारण कि मंगल युद्ध का ग्रह है इसको लड़ाई रोज चाहिए । जिनका मंगल 8-12 भाव में होता है उसका देह बल और मनोबल ठीक नहीं रहता है । रोग ग्रस्त रहते हैं काम करने की हिम्मत होने के बाद भी काम नहीं कर पाते । यदि शनि के साथ मंगल बैठा हुआ होगा तो जीवन में जातक धन को स्थिर नहीं कर पाएगा, यह अकाट्य सिद्धांत है । 1, 4, 7, 8, 12 में यदि मंगल होता है तो वे जातक मंगली कहलाते हैं । इसमें एक और सूक्ष्म विवेचन है । वह लग्न से मंगली हो, चन्द्र से मंगली हो, शुक्र से मंगली हो तो वह मंगली माना जाता है । यदि विवाह के बाद मंगल महादशाओं में आ जाता है और जातक मंगली नहीं होता तो वैधव योग उपस्थित हो जाता है । मंगल का मंत्र संस्कृत में **ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:।** सरल भाष में **ॐ क्राम् क्रीम् क्रौम् स: भौमाय नम:** । मंत्र 7000 नित्य ।

शुक्र

शुक्र बहुत शुभ ग्रह है सहस्त्रसार में अमृत के कुंड का संचालन यही करता है । जिह्वा तथा जननेन्द्रिय में इसका निवास है । शरीर के मुख्य संचालन का कार्य भार शुक्र के ही कारण है । भगवान शंकर के वरदान अनुसार बृहस्पति से तीन गुणा बल इसमें अधिक है । सब ग्रह आठवें, बारहवें भाव में सारहीन हो जाते हैं, परंतु शुक्र यदि आठवें और बारहवें भाव में हो और इसकी महादशा चल जाए तो जातक को अरबों, खरबों रुपये, वाहन सुख, राज्यसुख, स्त्रीसुख, सब कुछ प्रदान कर देता है ।

यदि मंगल के साथ शुक्र होता है तो वह सैक्स में 90 साल तक भी हलका नहीं होता । वह ब्रह्मचारी रहने ही नहीं देता और बिना ब्रह्मचारी रहे ईश्वर उपासना हो ही नहीं सकती । गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में लिखा "जहां राम तहां काम नहिं, जहां काम कहां राम । तुलसी कबहुंक रहि सकहिं, रवि, रजनी एक ठाम ।।" हनुमान जी को छोड़कर कामदेव से सब पराजित हुए । शुक्र लाभदायी ग्रह है । शुक्र का बीज मंत्र संस्कृत में **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** सरल भाषा में **ॐ द्राम् द्रीम् द्रौम् सः शुक्राय नमः** ।

लेखक ने स्वयं नवग्रहों के सूक्ष्म तत्वों का अनुभव प्राप्त करने हेतु करोड़ों की संख्या में जप किया है और शनि की पुस्तक लिखने से पहले अकेले शनि के दो करोड़ मंत्र जप किये । तब शनि के सूक्ष्म तत्त्व समझ में आये और शनि देव ने ऐसे उपाय सुझाये जिनको करने से लाभ-ही-लाभ प्राप्त होता है । तपोबल से शनि की कृपा प्राप्त हुई । जो लेखक के तप प्रयोगों से लाभ उठाना चाहें वे संपर्क कर सकते हैं ।

—श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान केन्द्र,
सैक्टर 11, लघु सचिवालय मार्ग,
फरीदाबाद

नवग्रह पीड़ा निवारण विधि शीर्षक प्रस्तुत कृति 'गागर में सागर' की उक्ति पूर्णतः चरितार्थ करती है

गत एक दशक से भी अधिक की अवधि से पंडित जी का स्नेह और मार्गदर्शन मुझे और मेरे मित्रों को प्राप्त होता रहा है । सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं चिंतक श्री राजेन्द्र अवस्थी द्वारा संपादित 'कादम्बिनी' के लिए मैंने समय-समय पर पंडित जी के साक्षात्कार लिये तथा अवस्थी जी के साथ ही मुझे पंडित जी के आश्रम श्री बजरंग नवग्रह पीड़ा निवारण एवं जीवन प्रदायण केन्द्र में भी कुछ समय बिताने का अवसर मिला । पंडित जी आज भी शास्त्रों में वर्णित प्रत्येक विधि का अक्षरशः पालन करते हुए मंत्र शक्ति से लोगों की समस्याओं के निराकरण में लगे हुए हैं । अपने केन्द्र की समस्त व्यस्तताओं के बावजूद पंडित जी आज भी वेदों, उपनिषदों, पुराणों और ज्योतिष विषयक प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन में तल्लीन रहते हैं । उनके इसी गहन अध्ययन एवं अपने केन्द्र के अनुभवों का सार वे पाठकों के लाभार्थ अपनी कृतियों में प्रस्तुत करते रहते हैं । उनकी **'शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि'** 'शनि शत्रु नहीं मित्र' अपनी नवीन अवधारणाओं के कारण बेहद लोकप्रिय हुई है । इसमें पंडित जी ने शनि सम्बन्धी भ्रांतियों का तर्क सम्मत सप्रमाण निराकरण किया है ।

अब पंडित जी शेष ग्रहों पर भी ऐसी ही विषद् पुस्तकें लिख रहे हैं । इसमें निश्चय ही कुछ समय लगेगा । अतः पंडित जी ने पाठकों के ज्ञान वर्धन एवं लाभ के लिए यह कृति 'नवग्रह पीड़ा निवारण विधि' पहले लिख दी है ।

पंडित जी की भांति उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री गोविन्द कृष्ण एवं कनिष्ठ पुत्र श्री राधा कृष्ण भी ज्योतिष शास्त्र के विद्वान हैं । पंडित जी के आशीर्वाद से इन दोनों के भविष्य कथन भी अक्षरशः सही सिद्ध होते हैं । पंडित जी की कृतियों के प्रकाशन में इनकी भी विशिष्ट भूमिका होती है । ये दोनों युवा ज्योतिषी न केवल पंडित जी के मार्ग दर्शन में ज्योतिषशास्त्र को आगे बढ़ाएं वरन उसे समृद्ध भी करें, यही कामना है ।

दुर्गाप्रसाद शुक्ल

दुर्गाप्रसाद शुक्ल

भूतपूर्व सहायक सम्पादक 'कादम्बिनी'

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रधान सम्पादक : 'णाण सायर' (ज्ञान सागर), दिल्ली

नवग्रह पीड़ा निवारण विधि प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य

जो भी प्राणी इस धरा-धर्म पर जन्म लेता है परमात्मा शुभ अशुभ कर्मों को समय-समय पर अच्छा या बुरा फल प्राणी-मात्र को अवश्यमेव भुगतवाता है । शुभ कर्मों के फलस्वरूप ही मानव धन धान्य समृद्धि-एवं ऐश्वर्य को भोगता है और पाप कर्म के फल स्वरूप भयानक दरिद्रता आधि-व्याधि को भोगता है । जब शुभ अशुभ कर्मों का पूर्ण भुगतान हो जाता है तो जीवन परमात्मा को प्राप्त कर लेता है ।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि कर्मों के भुगतान हेतु जो ग्रह पीड़ा दे रहा है उससे निवृत्ति कैसे हो । जन्मांक में है सो है परन्तु ग्रह पीड़ा से जातक कैसे मुक्त होकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है ।

पंडित जी विगत 20 वर्षों के अथक् परिश्रम तथा शोधकार्य कर, अनुभव एवं नवग्रहों के करोड़ों मंत्र जाप कर तथा दूसरों से करवाकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ग्रह पीड़ा मंत्र जाप से ही पूर्णतः निवृत्त की जा सकती है । दूसरा रत्न पहिनने से 20, 30 प्रतिशत राहत प्राप्त होती है तथा दान आदि शुद्ध आचरण भी ग्रह पीड़ा निवृत्त करने में सहायक है, लेकिन शत् प्रतिशत ग्रहपीड़ा मंत्र जाप से ही निवृत्ति होती है ।

जन्मांक और हाथ की रेखाओं से यह बोध होता है कि प्राणी क्या करेगा और कैसा जीवन यापन करेगा । इस पुस्तक में नवग्रहों की सूक्ष्म चर्चा करते हुए पंडित जी ने यह बताया है कि ग्रह क्यों प्रताड़ित करते हैं और कैसे ग्रह पीड़ा निवृत्त हो जाती है आदि सबको सविधि दर्शाया है । विद्यार्थी से लेकर व्यवसायी तक कैसे ग्रह पीड़ा से निवृत्त हो सकते हैं आदि समझाने का पूरा-पूरा प्रयास किया है ।

पंडित जी की यह **'नवग्रह पीड़ा निवारण विधि'** अद्धितीय मौलिक शोध पूर्ण कृति है । ऐसा प्रकाशन भारतवर्ष में आज तक उपलब्ध नहीं हुआ है । इस कृति से जनता-जनार्दन का व्याप्त भ्रम ग्रहों के प्रति निवृत्त होगा और जातक इस विज्ञान का सहारा लेकर ग्रह पीड़ा से मुक्त हो जाएगा । हम आशा करते हैं, पंडित जी इसी प्रकार पुस्तकें लिख कर जनता-जनार्दन का कल्याण करते रहें ।

डा० सत्यप्रकाश 'बजरंग'

एम० ए० पी० एच० डी०,

डी-47 समीप महाकाली मंदिर

डिसेन्सरी मार्ग, भजनपुरा

दिल्ली-110053

दूरभाष 2267858

भूमिका

विश्व में ज्योतिष-विज्ञान का नित्य प्रति आदर भाव बढ़ रहा है । पूर्व और पाश्चात्य जगत् में अनेक विद्वान विचारक ज्योतिष शास्त्र (Astrology science) पर अनुसन्धान करते रहे हैं । देव भूमि भारत में वेदों तथा पुराणों आदि ने ज्योतिष विज्ञान में मंत्र-साधना द्वारा सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु ग्रहों की उपासना विधि एवं उसके स्वरूप की समुचित व्याख्या की है ।

भारत में ज्योतिष शास्त्र के प्रति न केवल आदर भाव ही रहा अपितु प्रयौगिक ज्ञान का समय-समय पर प्रकाश फैलाया गया जिससे अंधविश्वास का अंधकार दूर हो सके । भारतीय ज्योतिष में पूर्व जन्म के कर्म व उसके प्रतिफल तथा वर्तमान में नवजात शिशु के जन्म समय में उपस्थित नक्षत्रों की भी सविस्तार व्याख्या की जाती है ।

ज्योतिष शास्त्र के मुख्यतः तीन पक्ष ही अत्यंत प्रमुख हैं गणित, फलित और सिद्धान्त । गणित और फलित दोनों महत्व पूर्ण हैं, एक दूसरे के पूरक हैं और सीधे ही उनका वैज्ञानिक स्वरूप भी स्पष्ट होता है । ज्योतिष को मात्र भाग्यवादी मान कर आलोचना करना सर्वथा अनुचित व भ्रमपूर्ण होगा । ज्योतिष में कर्म का उतना ही महत्व है जितना योगीराज भगवान कृष्ण ने गीता में कर्म का महत्व दर्शाया है । कर्म जितना कुशल व उत्तम होगा फल भी उसी प्रकार उत्तम और कल्याणकारी होगा । जीव कर्म करने में स्वतन्त्र अवश्य है किन्तु फल भोगने में परतंत्र है । जहां सद् कर्मों का फल सुखमयी एवं कल्याणकारी होता है, वहीं बुरे कर्मों का फल दुखदायी, पीड़ादायक, अकल्याणकारी होता है। पूर्व जन्मों कृत कर्मों का तानाबाना इस जन्म में सुख दुख रूप में प्राप्त होता है । पापों, कष्टों व पीड़ाओं से मुक्ति का मार्ग है प्रायश्चित, जप एवम् तप । प्राचीन काल से ही अन्तः करण की शुद्धता हेतु जप-तप व प्रायश्चित विधान सभी ऋषि, सिद्धों ने किया है । मंत्र जप से ऊर्जा, शक्ति अर्जित कर ही भारत ने जगद्गुरू का पद व गरिमा प्राप्त की ।

आज ज्योतिष-विज्ञान की महत्ता इस युग में और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है क्योंकि विश्व में मानव मात्र को विनाशकारी पाप ग्रहों से मुक्ति दिलाना है । अतः मंत्र का जप, प्रायश्चित हेतु निर्धारित विधि व नियमों का पालन भी सावधानी पूर्वक हो यह भी अति आवश्यक है । इसके लिए पूर्ण मनोयोग, श्रद्धा, विश्वास तथा संकल्प युक्त कर्म का आधार नितान्त अनिवार्य है तभी इस आधार शिला पर मानव मात्र को सत्-चित्-आनन्द अर्थात सच्चिदानन्द की प्राप्ति हो सकती है ।

यह शाश्वत सत्य है कि आकाशीय पिण्ड ग्रह, नक्षत्र, आदि की स्थितियाँ तथा गतियाँ मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करतीं हैं । यही कारण है इस जीवन के सुख-दुख जन्म कालिक ग्रहों की स्थिति तथा राशि द्वारा जन्म काल में ही निर्धारित हो जाते हैं ।

ग्रह ईश्वर के प्रतिनिधि हैं जो जीवात्माओं के कर्म फल का भुगतान कराके जीवात्मा को शुद्ध व पवित्र बनाने का कार्य करते हैं । जीवन में ग्रहों द्वारा उत्पन्न अशान्ति व अनिष्टों से छुटकारा पाने के लिये हमें ग्रहों की शान्ति स्वयं अथवा विद्वानों से करवा लेनी चाहिए ।

जिस प्रकार निपुण वैद्य से रोग मुक्ति हेतु परामर्श लेकर ही औषधि सेवन करते हैं ठीक इसी प्रकार यह पुस्तक सभी नव ग्रहों से उत्पन्न पीड़ा का निवारण कर उन्नति, उत्कर्ष, सुख, तथा कल्याणकारी पथ प्रशस्त करेगी । इस पुस्तक में विशेष रूप से तीन मुख्य तथ्यों की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है । प्रथम ग्रहों की स्थिति, द्वितीयः पूर्वकृत कर्म तथा तृतीयः कर्म द्वारा अर्जित पापों का प्रायश्चित कर शुद्ध आत्मा बनाकर सभी संतापों, दुखों व पीड़ा से मुक्ति दिलाकर जीवन में असाधारण सफलतीओं के द्वार खोलना जिससे जीवन सुखमयी, कल्याणकारी तथा सर्वमंगलकारी बने ।

इन तथ्यों का वर्णन करते हुए पुस्तक को दो भागों मे बांटा गया है । जहां प्रथम भाग में शास्त्रीय वर्णन अनुसार ग्रहों के स्वभाव, स्थिति, गति आदि के बारे में विचार किया गया है और जीवन में आई ग्रह चाल से जीवन को सरस और सुखद बनाने के लिए ग्रहों के बीजमन्त्रों के जप पर जोर दिया गया है वही दूसरे भाग में जप के अतिरिक्त जीवन में आई ग्रह चाल से त्राण पाने और इच्छित वस्तु की प्राप्ति के लिए अन्य उपयोगी सरल, सफल, परीक्षित, व्यवहारिक उपाय वर्णित किये गये हैं । यह वह उपाय हैं जिन्हें जप से पहले तथा जप काल में जप के साथ किया जाए तो परिणाम शीघ्र प्राप्त होगा । जैसे पीपल परिक्रमा आदि जहां स्वयं में ही चमत्कारिक परिणाम देने में समर्थ है वहां जप के साथ कई गुना प्रभावकारी है जिसे जीवन में उतार कर ही अनुभव किया जा सकता है, इसे प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है । आशा है कि इन उपायों को अपनाकर सभी लाभ उठाएगें और अपने अनुभवों से इस केन्द्र को भी यथासमय सुचित करेंगे जिससे इन अनुभवों से आने वाले जातको को अवगत कराया जा सके ।

यह पुस्तक आप एवम् आपके सम्पूर्ण परिवार, सम्पूर्ण समाज व सम्पूर्ण मानव मात्र के लिये समर्पित है । आशा है आप ईश्वर कृपा से अवश्य ही लाभान्वित होंगे ।

------------------*हरि ॐ तत्सत*-----------------

लेखक परिचय

इस पुस्तक के लेखक पंडित श्याम सुन्दर लाल वत्स जी का जन्म धर्मनिष्ठ परम वैष्णव परिवार में हुआ । पिता पंडित श्री राम स्वरूप कर्मकांडी, श्रोत्रिय और प्रतिष्ठित विद्वान थे । माँ रामकली देवी भी भगवती स्वरूपा थीं । व्यवसाय से दोनों ही अध्यापक थे । पूर्वजों की छोड़ी हुई प्रचुर सम्पदा थीं । श्री विद्या और प्रतिष्ठा सम्पन्न परिवार में लेखक को श्रद्धाभक्ति सत्य निष्ठा, धर्म भावना, और भगवत प्राप्ति की उत्कंठा माता-पिता से विरासत में मिली ।

शिक्षा-दीक्षा पूरी करने के बाद पंडित जी सरकारी सेवा में चले गए । कार्यालय के काम से जो समय बचता उसे धर्म, अध्यात्म, शास्त्र ज्ञान और ज्योतिष विद्या के अनुसंधान के अलावा भक्तिभाव में लगाते । घर में ही राधा कृष्ण का परम शोभनीय मंदिर है, जहाँ षोडशोपचार से ठाकुर सेवा तथा गणपति, नवग्रह पूजन भी अनवरत चलता रहा । कालान्तर में वे अपने एक हस्त रेखा विशेषज्ञ सहयोगी मित्र भी कृष्ण लाल श्रीवास्तव के सम्पर्क में आए । फलतः हस्तविज्ञान में रुचि बढ़ी और अपनी सरकारी नौकरी के समय में ही इसमें दक्षता प्राप्त कर ली । मथुरा निवासी श्री योगेन्द्र जी से उन्होंने फलित ज्योतिष के गूढ़ रहस्य समझे । वत्स जी जाने-माने ज्योतिषाचार्य गणितज्ञ और सरल हृदय, दैवज्ञ हैं । उन्होंने अनुभव किया कि ज्योतिष विज्ञान अपने में पूर्ण है । इसकी सहायता से आपदा-विपदाओं को आने से पहले देखा जा सकता है और ग्रहों का शोध करके आने वाले कष्ट को टाला जा सकता है । अतः ग्रहों के शोधकार्यों को जनता जनार्दन तक पहुंचाने के लिए उन्होंने सरकारी नौकरी से निवृत्ति ले ली ।

पांच दिसम्बर १९५४ में एक कुलीन सात्विक ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्री जमनादास की कन्या राममूर्ति देवी से विवाह हुआ । १९५७ में शान्ति नाम की एक प्रेत आत्मा ने उन्हें पकड़ लिया । वह उनके शरीर में प्रवेश कर जाती थी और उन्हीं की वाणी से सवाल-जवाब करती थी । वत्स जी ने प्रेत लोक के कितने ही रहस्य उससे पूछे । प्रेत आत्मा ने उन सबके जवाब दिए । परन्तु वह लेखक की पत्नी को छोड़ने के लिए राजी न हुई ।

प्रेत बाधा से ग्रस्त पत्नी को जाने-माने तांत्रिकों के पास ले जाया गया पर पूरे दो वर्ष तक कोई कामयाबी नहीं मिली । दो साल तक उनकी पत्नी ने घोर कष्ट सहा और प्रेतात्मा ने ५ दिसंबर १९५८ को घोषित कर दिया कि 'तीन दिन बाद तुम्हारी पत्नी जीवित नहीं रहेगी ।' मन में वेदना तो पहले ही चल रही थी, अब वह असह्य हो गई । सभी

उपाय कर देख लिए, कोई सफल नहीं हुए । अंत में सब कुछ भगवान पर छोड़ दिया गया। प्रेतात्मा की धमकी सुनकर अपार चिन्ताओं से ग्रस्त होना स्वाभाविक था । वत्स जी ने एक दिन हार मान कर भगवान से प्रार्थना की । उस दिन उनके ध्यान की अवस्था में लगभग ८ वर्ष की छोटी-सी बालिका पूर्ण श्रृंगार से सुसज्जित प्रकट हुई और बोली-बेटा, मैं गायत्री हूँ ।

वत्स जी के शब्दों में, 'भगवती के दर्शन कर जीवन धन्य हुआ । गायत्री ब्राह्मणों की कामधेनु है । उसकी उपासना से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं और प्रेतबाधा दूर होती है । प्रेरणा हुई एक गायत्री का अनुष्ठान किया जाए । उससे पत्नी प्रेत बाधा से मुक्त हो जायेगी । शुभ मुहूर्त देखकर प्रातः होते ही गायत्री का अनुष्ठान आरंभ कर दिया । ज्योति जलाई और संकल्प लिया-प्रेत बाधा से पत्नी को मुक्ति मिले । पत्नी को आरोग्यता प्राप्त हो । जहां यह अनुष्ठान चल रहा था, उससे चालीस फुट दूर पत्नी आकर बैठ गई । प्रेत आत्मा ने उसकी वाणी से कहना आरंभ कर दिया, 'पंडित जी, मैं हार गई । तुम जीत गये क्योंकि ज्योति वहाँ जल रही है, आग यहां लग रही है । अब में क्षण मात्र भी टिक नहीं सकती । मैंने बड़े-बड़े तांत्रिकों को धोखा दिया । किसी के काबू नहीं आयी पर गायत्री जी का तेज सहन करने की मेरी क्षमता नहीं । पंडित जी, आपको मैंने बहुत परेशान किया । मुझे माफ करना ।' यह कहकर वह चली गयी और प्रेतात्मा के भागते ही मैं गायत्री महामंत्र के प्रभाव से चमत्कृत हो गया । निश्चय किया कि शेष जीवन भगवत भक्ति और लोगों के कष्टों से मुक्त कराने में ही लगाऊंगा । पत्नी भी सहमत थी । अपने इष्ट भगवान श्री कृष्ण के चार करोड़ मंत्र जाप करेंगे तथा एक करोड़ जप अपने गुरुदेव, जीवन रक्षक, भक्त के एक मात्र सहायक हनुमंतलाल जी के मंत्र जाप करेंगे । हमारी अभी कोई सन्तान नहीं थी । पांच वर्ष के बाद इस पर विचार करेंगे । तब तक हम में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य तथा भगवत कृपा सब कुछ प्राप्त हो जायेगा । ऐसा कहकर हम दोनों प्राणी तप में रत हो गये और पांच वर्ष में पांच करोड़ मंत्र जप कर डाले, और साथ-साथ पांच यज्ञ वैदिक विधि अनुसार सम्पन्न किये । इसके बाद देवकृपा से तीन पुत्र, दो पुत्रियां प्राप्त हुई । बृहस्पति की महादशा में ही उपरोक्त सब काम हुए ।'

इसी काल में सन १९६५ में लेखक का भृगुसंहिता कार्यालय, होशियारपुर (पंजाब) से सम्पर्क हुआ । भृगुसंहिता में बताया गया कि शनि की बड़ी कराल दशा चल रही है, और इसका उपाय कर लेना चाहिये । ये दशा कुल को, धन को, सम्पति को संतान को नष्ट भ्रष्ट कर देगी । महर्षि भृगु ने पुनः बताया कि पिछले जन्म में लेखक काशी में निवास करता था और मठाधीश था । धर्म का पैसा धर्म में न लगाकर मन्दिर आदि का पैसा स्वयं उपभोग कर लिया जिसके फलस्वरूप शनि इस जन्म में सब कुछ नष्ट भ्रष्ट कर देगा । यदि मेरे बताये हुये मंत्रों का विधिवत् जप करेगा तो मेरी कृपा से सब कुछ ठीक हो

जायेगा । पुनः भविष्यवाणी की कि पिछले 11 जन्मों से यही ब्राह्मण का शरीर तथा यही पत्नी मिलती चली आ रही है, पूर्व जन्म के कुछ ऐसे सिद्ध योग हैं, जिनके प्रभाव से इस जन्म में भी सिद्ध अवस्था आयेगी । भारत के विभिन्न स्थानों में बहुत-सी वेद शालाएँ बनेंगी । लाखों व्यक्तियों का कल्याण तुम्हारे द्वारा सम्भव होगा 'इस पुण्य के प्रभाव से तू पुनः परमात्मा में समाहित हो जाएगा ।'

महर्षि भृगु की उपरोक्त वाणी सुनकर लेखक ने भृगु शास्त्री से कहा, 'पाँच करोड़ मंत्र विधिवत् करने के पश्चात भी शनि के प्रभाव से सब कुछ नष्ट हो जायेगा । थोड़े से धर्म के पैसे को अपने कार्य में प्रयोग करने पर ये हाल हुआ और जो धर्म का पैसा सब कुछ खा जाते हैं वे ये भी नहीं देखते कि हम ब्राह्मण भी नहीं हैं, क्या हाल होगा ।'

इस उद्बोधन ने भगवान श्री कृष्ण की भक्ति जो पैतृक रूप से चल रही थी, ग्रहों का शोध कार्य भी जोड़ दिया । शनि ग्रह शान्ति हेतु पद्मपुराण में वर्णित राजा दशरथ द्वारा कथित शनि स्तोत्र तथा बीज मंत्र द्वारा उपासना करने से जीवन में ग्रहों की गति के दुष्प्रभावों के कारण आने वाले कष्टों, कठिनाइयों रुकावटों, रोगों आदि के निवारण हेतु उपायों को खोजना प्रयोग करना भी एक हिस्सा बन गया । इस पथ पर आगे बढ़ते-बढ़ते ग्रहों के गति से उत्पन्न विघ्नों से बचने के लिए कई उपाय खोज कर स्वयं पर प्रयोग कर शोध किये ।

दैव प्रेरणा हुई । 'यदि शनि के शोध कार्यों की पूर्ण जानकारी चाहिए तो शनि के लिए तप करो ।' दैव से प्रेरणा प्राप्त होते ही वे फिर शनि के तप में लग गये और शनि के दो करोड़ बीज मंत्रों का जप कर डाला । कारण कि तप करने का कई जन्म का अभ्यास बना है । तप करने के बाद उन्हें शनि की पूर्ण कृपा प्राप्त हुई, और उनके सारे रहस्य खुल गये, और शनि देव ने ऐसे उपाय दिये जो कभी निष्फल नहीं होते, लाभ ही लाभ होता है। हानि का तो प्रश्न ही नहीं उठता । वत्सजी ने उन सब का वर्णन अपनी **'शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधिः शनि शत्रु नहीं मित्र'** शीर्षक में क्रमबद्ध कर दिया है । ये सब उपाय दैव प्रदत्त हैं । इसीलिए शत-प्रतिशत सफल हैं ।

आज के तनावयुक्त वातावरण, कलह, भयंकर रोग, जीवन घातक कष्ट, मानसिक तनाव, जीवन में शान्ति तथा सुख का अभाव, निरन्तर बढ़ती हुई बुराइयाँ, उनसे उत्पन्न कष्टों से त्राण पाने के लिए, जब मानव का इन्द्रियजन्य तथा कुछ अंशों में बुद्धि जन्य, ज्ञान कुण्ठित हो जाता है तो जीवन में सरसता, शान्ति आनंद को भरने के लिए ईश्वरीय शक्तियों की शरण में जाना आवश्यक हो जाता है ।

इन शोधों का लाभ जनता तक पहुंचाने के लिए वत्स जी श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान, संशोधन एवं जीवन प्रदायण नामक प्रयोग़शाला का गठन किया । इसके द्वारा जनमानस पर ग्रहों के चाल के कारण आये कष्टों को दूर करने का प्रयोग शुरू किया गया है ।

केन्द्र की स्थापना सैक्टर ११, फरीदाबाद में की गई । केन्द्र में उपचार की सभी सामग्री, जो जड़ी बूटियाँ और अन्य शोध कार्यों का गठन किया गया । इस प्रकार लगातार संशोधन तथा अनुसंधान द्वारा प्राप्त अनुभव से मानव मात्र को ग्रहों के दुष्प्रभाव से छुटकारा दिलाकर जीवन को सरस बनाने में लगातार प्रयत्न किये जा रहे हैं और हजारों व्यक्ति लाभ उठा रहे हैं । कई करोड़ मंत्रों का इस केंद्र में जप हो चुका है जिसके कारण यह स्थल सिद्ध हो गया है । इसका तुरन्त प्रभाव यह पड़ता है कि आने वाले जातकों की मनः स्थिति तुरन्त शान्त हो जाती है ।

इस कार्य के प्रचार हेतु उनके परम सहयोगी मित्र श्री रामस्वरूप मल्होत्रा के लेखन सहयोग से कई अन्य सामग्री का प्रकाशन किया जा चुका है । इन लेखों को पंजाब केसरी, राष्ट्रीय सहारा, हिन्दुस्तान, जनसत्ता, विश्वमित्र, कलकत्ता, राष्ट्र दूत, नागपुर तथा अन्य प्रमुख समाचार पत्रों में एवं कादम्बिनी आदि प्रमुख पत्रिकाओं ने जनता जनार्दन के कल्याण हेतु समान रूप से प्रकाशित किया है । उन उपासना विधियों से लाभ उठाने वालों की संख्या असंख्य है । इस विज्ञान की जनता जनार्दन ने सराहना भी की है । शनि कृपा से यह शनि ग्रह पीड़ा निवारण का यह तीसरा वृहद् तथा जानकारी से भरपूर संस्करण जनता की सेवा में अर्पित किया जा रहा है।

इस मार्ग में प्राप्त अनुभवों और प्रयोगों की सफलता में लेखक ने अपने दोनों सुपुत्रों श्री गोविन्द कृष्ण वत्स तथा राधाकृष्ण वत्स को भी लगाया हुआ है, और दैव कृपा से वे इसमें धीरे-धीरे दक्ष हो गये हैं । वे पूरे अनुशासन और संयम पूर्वक आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं और लेखक इस बात से सन्तुष्ट है कि उनके बाद भी यह दोनों इस कार्य को और अधिक उत्साह दक्षता तथा सावधानी पूर्वक आगे बढ़ा सकेंगे और कई नये प्रयोगों को प्राप्त कर जनता जनार्दन की सेवा कर सकेंगे । लेखक ने अपने दोनों पुत्रों द्वारा करोड़ो मंत्रों का जाप पहले ही करा लिया है ताकि उनकी बुद्धि कुण्ठित न हो । कार्य में शिथिलता न आये, किसी के साथ धोखा न हो, गलत काम करके जीवन यापन न कर सकें, उत्तरोत्तर महानता को प्राप्त होते चले जाएं ।

अनुक्रमाणिका

सं०	अनुक्रमाणिका	पृष्ठ
	भूमिका	
	लेखक परिचय	
1.	महर्षि भृगु एवं भृगुतीर्थ माहात्म्य, (ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ महर्षि भृगु जी)	1-8
2.	ग्रह परिचय	9-12
3.	ग्रहों का मानव से सम्बन्ध तथा प्रभाव	13-20
4.	राशियों का जातक पर प्रभाव, नक्षत्रों का जातक पर प्रभाव, जातक पर नक्षत्रों का प्रभाव	21-23
5.	ग्रह, जप, यज्ञ का विधान कहां और कैसे, अग्नि, मत्स्य पुराणानुसार ग्रह स्थापन पूजन	24-27
6.	यज्ञ मंडप तथा यज्ञ कुंड का निर्माण कैसे करें । नवग्रह समिधा एवं हवनीय मंत्र, दान के बाद प्रार्थना,	28-35
7.	नवग्रह मंत्रों का अद्भूत चमत्कार	36-37
8.	**भगवान सूर्य**	38
9.	आत्मा का कारक संसार का पालक सूर्य, सूर्य	39-40
10.	खगोलीय विज्ञान में सूर्य	41
11.	द्वादश भावों में सूर्य की स्थिति	42
12.	अंक शास्त्र में सूर्य तथा सूर्य प्रधान जातक	43
13.	सूर्य सम्बन्धी अन्य विवरण	44-46
14.	अथ आदित्यमंत्र	47
15.	सूर्याष्टकस्तोत्रम्	48
16.	सूर्य क्यों प्रताड़ित करता है? यदि आप स्त्री या पुरुष हैं, यदि आप विद्यार्थी हैं, केन्द्र का अनुभव	49-54
17.	केन्द्र की सूर्य सम्बन्धी खोज	55-56
18.	वेदों में सूर्य	57
19.	**भगवान चन्द्रमा**	58
20.	अमृत रस का संचारक मन का प्रतीक चन्द्रमा, चन्द्रमा	59-61
21.	अंक शास्त्र में चन्द्रमा तथा चन्द्र प्रधान जातक	62
22.	द्वादश भावों में चन्द्रमा	63
23.	चन्द्रमा ग्रह सम्बन्धी अन्य विवरण	64-65
24.	अथ चन्द्र मंत्र	66
25.	चन्द्रस्तोत्रम्	67
26.	चन्द्रमा क्यों प्रताड़ित करता है?, यदि आप स्त्री या पुरुष हैं, यदि आप विद्यार्थी हैं, चन्द्रमा की महानता	68-72
27.	केन्द्र की विशेष खोज	73-74
28.	वेदों में चन्द्रमा	75
29.	**भगवान मंगल**	76
30.	रक्त बल मज्जा कारक, अग्निभय व युद्ध का नियामक तथा पराक्रम का प्रतीक मंगल, मंगल	77-78

31.	ज्योतिष शास्त्र में मंगल, द्वादश भावों में मंगल	79-80
32.	अंक शास्त्र में मंगल तथा मंगल प्रधान जातक	81
33.	मंगल ग्रह से सम्बन्धित रोग तथा उनका उपशमन, अथ मंगल मंत्र	82-83
34.	ऋणमोचन मंगल स्तोत्रम्	84
35.	मंगल क्यों प्रताड़ित करता है?, कातिल का उदारण, यदि आप अपने बल पराक्रम का दुरुपयोग करते हैं?, पति पत्नी विवाद	85-89
36.	केन्द्र की विशेष खोज, विभिन्न रोगों के लिए, ऋण मुक्ति के लिए, उन्नति की कामना करने वालों के लिए, विवाह के लिए	90-91
37.	वेदों में मंगल	92
38.	**भगवान बुध**	93
39.	व्यापार सम्बन्धी समस्त उतार चढ़ाव का स्वामी हृदय का नियामक कल्याण एवं मंगलकारी बुध बुध ग्रह के विषय में सांगोपांग अध्ययन, बुध	94-95
40.	खगोलीय विज्ञान में बुध	96
41.	अंक शास्त्र में बुध तथा बुध प्रधान जातक	97
42.	द्वादश भावों में बुध	98-99
43.	अथ बुध मंत्र	100
44.	बुधपंचविंशतिनामस्तोत्रम्	101
45.	हस्त रेखा शास्त्र में बुध	102
46.	बुध क्यों प्रताड़ित करता है?, यदि आप व्यवसायी हैं, यदि आप स्त्री या पुरुष हैं?	103-106
47.	केन्द्र की विशेष खोज	107
48.	वेदों में बुध	108
49.	**भगवान बृहस्पति**	109
50.	विद्वत्ता और विवेक का अधिपति बृहस्पति, बृहस्पति (गुरु)	110-111
51.	खगोलीय विज्ञान में बृहस्पति, ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति	112
52.	अंक शास्त्र में बृहस्पति तथा बृहस्पति प्रधान जातक	113
53.	बृहस्पति सम्बन्धी अन्य विवरण	114-115
54.	द्वादश भावों में बृहस्पति	116
55.	अथ बृहस्पति मंत्र	117
56.	बृहस्पतिस्तोत्रम्	118
57.	बृहस्पति क्यों प्रताड़ित करता है?, यदि आप बुद्धिजीवी हैं, भक्ति और बुद्धि का दुरुपयोग, ज्योतिष द्वारा गुमराह कर प्राणियों का दोहन, यदि आप स्त्री या पुरुष हैं?	119-126
58.	केन्द्र की महत्वपूर्ण खोज	127
69.	वेदों में बृहस्पति	128
60.	**भगवान शुक्र**	129
61.	काया और कला का नियामक गायन, वादन, अभिनय नृत्य एवं रति सुख व समस्त ऐश्वर्य का प्रदाता शुक्र, शुक्र, द्वादश भावों में शुक्र	130-132
62.	अंक शास्त्र में शुक्र तथा शुक्र प्रधान जातक	133

63.	शुक्र सम्बन्धी अन्य फल	134
64.	अथ शुक्र मन्त्र	135
65.	शुक्रस्तवराजः	136
66.	शुक्र क्यों प्रताड़ित करता है?, यदि आप स्त्री या पुरुष है	137-141
67.	केन्द्र की विशेष खोज, भौतिक सुख के लिए	142-143
68.	वेदों में शुक्र	144
69.	**भगवान शनि**	145
70.	कर्म का यथावत् कारक एवं मारक परम न्यायाधीश अतुलित संपत्ति तथा तप कारक शनि, शनि, शनि खगोलिय विवरण, ज्योतिष शास्त्र में शनि	146-148
71.	द्वादश भावों में शनि	149
72.	अंक शास्त्र में शनि तथा शनि प्रधान जातक	150
73.	शनि सम्बन्धी अन्य विवरण, भारत में स्थित तीन शनि चमत्कारिक सिद्ध पीठ	151-152
74.	शनि की साढ़ेसाती	153
75.	परम कल्याण का प्रेरक शनि, कासी में घनघोर तपस्या कर शनि देव ने ग्रहत्व प्राप्त किया	154-155
76.	अथ शनि मंत्र	156
77.	शनि स्तोत्रम्	157
78.	शनि सम्बन्धित रोग, रत्न, जड़ीबूटी, दान व्यापार एवं नौकरी	158
79.	शनि क्यों प्रताड़ित करता है?, कामदेव तथा कलियुग की समीक्षा, यदि आप संत महात्मा हैं, यदि आप सच्चे मित्र हैं, यदि आप स्त्री या पुरुष हैं, यदि आप व्यवसायी हैं, राजनेता, अन्य समाज	159-168
80.	केन्द्र द्वारा शोध	169
81.	वेदों में शनि	170
82.	तीन दिन में शनि की किताब पढ़ने से शनि के प्रत्यक्ष दर्शन हुए । एक सच्ची कहानी घनश्याम की जुबानी	171-173
83.	सिद्ध अवस्था की प्राप्ति तथा समीक्षा	174
84.	**भगवान राहु**	175
85.	योग, अखंड शांति एवं कूटनीति का सूत्रधार राहु, राहु, ज्योतिष विज्ञान में राहु, द्वादश भावों में राहु	176-179
86.	राहु की विशेषता	180-181
87.	राहु सम्बन्धी अन्य विवरण	182
88.	अथ राहु मंत्र	183
89.	राहुस्तोत्रम्	184
90.	राहु क्यों प्रताड़ित करता है?, यदि आप गृहस्थी हैं, यदि आप स्त्री या पुरुष हैं?, केन्द्र का अनुभव, रखैल या उपपत्नी से निवृत्ति का अचूक उपाय	185-189
91.	केन्द्र की विशेष खोज, कर्म फल, सत्ता के इच्छुक लोगों के लिए, वेदों में राहु	190-192
92.	**भगवान केतु**	193
93.	उदर संरक्षक दुर्घटना एवं शल्य क्रिया का जनक तथा मोक्ष कारक केतु, केतु,	194-196

ज्योतिष शास्त्र में केतु, द्वादश भावों में केतु
94. केतु सम्बन्धी अन्य विवरण 197
95. अथ केतु मंत्र 198
96. केतुपंचविंशतिनामस्तोत्रम् 199
97. केतु क्यों प्रताड़ित करता है?, श्री मद् की समीक्षा, केन्द्र का अनुभव 200-203
98. केन्द्र का महत्वपूर्ण शोध 204
99. वेदों में केतु 205
100. श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान तथा जीवन प्रदायण केन्द्र, हस्तरेखा/कुण्डली द्वारा ग्रह विश्लेषण किस प्रकार 206-208
101. केन्द्र में ग्रहशोध के लिए अपनायी गयी विधि 209
102. केन्द्र की विशेष सावधानो 210
103. शनि, राहु, एवं भूत, प्रेत तथा समस्त तांत्रिक प्रयोगों से सहज ही छुटकारा पाने का सर्वोत्तम उपाय, विशेष चेतावनी, तांत्रकीय प्रयोगों का विध्वंसक ज्योति प्रयोग 211-213
104. प्रेत बाधा तथा तांत्रिक प्रयोग के निवारण का अचूक उपाय हनुमान तथा गायत्री आराधना 214-216
105. क्या तंत्र तांबिज, टोटके रत्नादि से ग्रहपीड़ा निवृत्त होना संभव है ग्रह पीड़ा शमन करने में कौन पूर्ण सक्षम है तंत्र अथवा मंत्र, मंत्र की समीक्षा 217-218
106. हनुमान जी का बल पराक्रम, तंत्र की समीक्षा 219-220
107. क्या परमात्मा प्राप्ति सरल सुलभ है उपासना की समीक्षा 221-223
108. किस ग्रह की उपासना करने से सत्ता प्राप्त होती है ? 224-226
109. क्या कारण है जो चाहते हुए भी विद्यार्थी विद्या नहीं पढ़ पाते लाख प्रयास करने के बाद भी विद्यार्थी विद्या से बंचित क्यों?, विद्या अध्ययन में बाधक दो अन्य कारणों का उल्लेख 227-232
110. विद्यार्थी अपने जन्मांक से स्वयं विद्या अध्ययन का योग कैसे जानें, विद्या पांच तरह की होती है, विद्यार्थी कितनी विद्या पढ़ेगा? 233-235
111. लाख चाहने और पूर्ण प्रयास करने पर भी लक्ष्मी क्यों नहीं प्राप्त होती? समस्त भ्रांतियों का रहस्य, बुद्धि की समीक्षा, लक्ष्मी प्राप्त न होने का पहला कारण ग्रह 236-239
112. महालक्ष्मी का पर्व दीपावली, दीपावली कैसे मनानी चाहिए? पूजा विधि, चावल से लक्ष्मी पूजन करना निषेध क्यों? 240-242
113. मानव जीवन पर पितरों का प्रभाव एक अकाट्य सत्य 243-244
114. विवाह में देरी क्यों 245
115. विवाह किन योगों में होता है? 246
116. विवाह में विवाद और तलाक क्यों?, तलाक की समीक्षा, बिना कोर्ट कचहरी के घर बसाने का सरलतम उपाय 247-252
117. केन्द्र की महत्वपूर्ण खोज हर प्रकार के रोगों को शमन करने का अचूक उपाय, असाध्य रोगों की साध्य औषधि, 253-254
118. औषधि के गुण दोष का विवेचन 255-256

119.	योगासन एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा उदर रोग दूर करने का सरल उपाय, विधि	257-258
120.	शंख मणि चन्द्रमा, सेवन विधि	259
121.	दक्षिणावर्ति शंख	260
122.	केन्द्र की एक और अभूतपूर्व चमत्कारिक खोज	261
123.	पूर्व जन्म, इह जन्मकृत ब्रह्म हत्या, बाल हत्या तथा अन्यान्य जघन्य पापों से तुरन्त निवृत्ति, केंद्र की सर्वोत्तम् खोज	262-263
124.	वैज्ञानिकों की दृष्टि में पीपल का महात्म्य	264-265
125.	परिक्रमा करने की विधि	266
126.	गायत्री परम मंत्र है इसे जप कर मनुष्य भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त करता है	267
127.	गायत्री माता का ध्यान	268-269
128.	गायत्री-शापविमोचन	270-272
129.	सात वारों की उत्पत्ति देवता आदि की पूजा का फल	273-275
130.	ग्रह बीज मंत्रों के अधिक जप के लिए आग्रह क्यों ?	276-277
131.	किस अंगुली से जप करने से क्या प्रभाव तथा फल?	278-282
132.	अमन व्यापार, व्यापार भारती 31 जुलाई 1999 तपोबल की अनूठी श्रेष्ठता	283-284
133.	महर्षि भृगु जी द्वारा तप की अनूठी महत्ता का वर्णन	285-289
134.	सिद्धों की दृष्टि में श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र	290-292
135.	लेखक के उदगार	293-294
136.	जन्मांक बनाना क्यों आवश्यक है?	295
137.	जगत गुरु श्री स्वामी माधव आश्रम द्वारा जन्मांक का विमोचन	296
138.	पंजाब केसरी, जन्मांक कुडली है ज्योतिष की दुनिया में नई क्रांति, अपना भविष्य खुद जानिए	297-298
139.	ग्रहों का मानव से सम्बन्ध एवं जन्म कुण्डली निर्माण हेतु ग्रहणीय समय तथा ग्रहों की गति उच्च, नीच, अस्त, वक्री, मार्गी, आदि का विवेचन	299
140.	बारह राशियों पर ग्रहों का भ्रमण तथा डिग्री का प्रभाव, ग्रहों का उच्च अथवा नीच स्वरूप, उच्च नीच ग्रह की समीक्षा	300-301
141.	ग्रह का अस्त और वक्री स्वरूप	302-303
142.	श्री गणेशाय नमः अपनी जन्म-पत्री का स्वयं अवलोकन करें	304-305
143.	कम्प्यूटर द्वारा विशेष जन्म पत्रिका निर्माण, पथ प्रदर्शिका है जन्म कुण्डली	306-307
144.	केन्द्र द्वारा निर्मित जन्म पत्रिका की मुख्य विशेषताएं	308
145.	नवग्रह चालीसा	309-310
146.	श्री नवग्रह स्तोत्र	311-312
147.	श्री नवग्रह कवच	313
148.	आरती श्री नवग्रह	314
149.	विशेष सूचना	315

क्रं०	रंगीन चित्रावली	पृ० सं०
1.	मंत्री द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स जी	
2.	महाशनि टाइम्स का होटल सोफिटल सूर्या में लोकार्पण करते हुए पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स जी	
3.	महर्षि भृगु	1
4.	ग्रहों का जातक पर प्रभाव	13
5.	राशियों का जातक पर प्रभाव	21
6.	नक्षत्रों का जातक पर प्रभाव	22
7.	**भगवान सूर्य**	38
8.	आकाश मंडल में सूर्य की वास्तविक स्थिति टेलीस्कोप द्वारा सूर्य पर धब्बे भी दिखाई दे रहे हैं	
9.	**भगवान चन्द्रमा**	58
10.	चन्द्र धरातल पर क्रेटर (गड्डों) के चित्र, पिन होल क्रेटर	
11.	चन्द्रमा से लाई गई चट्टान का चित्र	
12.	वाईकिंग यान द्वारा चन्द्र धरातल का चित्र	
13.	**भगवान मंगल**	76
14.	मंगल के नदी नाले तथा मंगल धरातल का वास्तविक चित्र	
15.	**भगवान बुध**	93
16.	मेरीनस यान द्वारा लिया गया बुध के धरातल का वास्तविक चित्र	
17.	**भगवान बृहस्पति**	109
18.	बृहस्पति की आकाशमंडल में स्थिति तथा बृहस्पति के धरातल का चित्र	
19.	**भगवान शुक्र**	129
20.	शुक्र की आकाश मंडल में स्थिति तथा शुक्र धरातल का चित्र	
21.	**भगवान शनि**	145
22.	शनि की आकाश मंडल में स्थिति तथा घेरे	
23.	अंतरिक्ष में शनि ग्रह की स्थिति	
24.	**भगवान राहु**	175
25.	**भगवान केतु**	193
26.	श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र का चित्र	206
27.	पीपल परिक्रमा का चित्र	261
28.	पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा नई शोधपूर्ण जन्मांक का विमोचन करते हुए पंजाब केसरी के सम्पादक श्री अश्विनी कुमार, पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित जन्मांक का जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज द्वारा विमोचन	296
29.	नवजात शिशु पर ग्रहों का प्रभाव	300

महर्षि भृगवे नमः
महर्षि भृगु एवं भृगुतीर्थ माहात्म्य

ज्योतिष के विद्वान् सर्व प्रथम महर्षि भृगु को प्रणाम कर फलादेश करें

महर्षि भृगु जगत् सृजनकर्ता ब्रह्मदेव जी के मानस पुत्र हैं । भगवान श्री नारायण के नाभिकमल से अवतरित हुए श्री ब्रह्मा जी की त्वचा से, वरुण देव के यज्ञ में अग्नि से, भृगु जी का जन्म हुआ । सम्पूर्ण भृगु वंश में यही अग्नि के तेज का प्रभाव निरन्तर विद्यमान रहा। भृगु जी समस्त विद्याओं के भण्डार है । वेद वेदांत तथा समस्त धर्म शास्त्रों के महान ज्ञाता हैं । महर्षि भृगु चाक्षुष मन्वन्तर के प्रसिद्ध मंत्र दृष्टा ऋषि कहे गये हैं । इनकी दो पत्नियाँ थीं: कर्दम की पुत्री ख्याति तथा पुलोमा । इनके पुत्र का नाम शुक्र है जो दैत्यों के गुरु हैं । भगवान परशुराम जी भी इसी वंश के थे । महर्षि भृगु परम तपस्वी, पराविद्या निधि तथा ज्योतिष के अधिष्ठाता ऋषि हैं ।

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र भृगु जी प्राचीन काल में सरस्वती नदी के तट पर अन्य ऋषियों के साथ यज्ञ के निमित्त एकत्रित हुए । महर्षि अंगिरा जी के सानिध्य में यह यज्ञ चल रहा था कि एक जटिल समस्या ने प्रश्न के रूप में जन्म लिया कि तीनों देवों में से कौन श्रेष्ठ है जिसको यज्ञ का प्रधानत्व प्रदान किया जाये ? तब उस सभा में देवर्षि नारद ने ही ऋषियों के समक्ष त्रिदेव परीक्षा हेतु परीक्षक के रूप में भृगु जी का नाम प्रस्तावित किया जिसे सर्व सम्मति से सभी उपस्थित ऋषियों ने स्वीकार किया । इस प्रकार महर्षि भृगु जी त्रिदेव परीक्षा के लिए परीक्षक के रूप में नियुक्त हुए । तत्पश्चात् महर्षि भृगु जी परीक्षक के रूप में सर्वप्रथम ब्रह्मा जी के यहाँ गये जहाँ उन्होंने ब्रह्मा जी को प्रणाम भी नहीं किया । कुछ अटपटे अभद्र व्यवहार समन्वित भाषा का भी उपयोग किया । ब्रह्मा जी ने क्रोधवश कमण्डल से जल शाप देने हेतु उठाया ही था कि विद्या माता सरस्वती जी ने उनको ऐसा करने से रोक लिया और जैसे तैसे भाग कर भृगु जी ने अपनी प्राण रक्षा की ।

दूसरे क्रम में भृगु जी भगवान सदाशिव के आश्रम कैलाश पर्वत पर पहुँचे । परीक्षक की गरिमा भाव के कारण भृगु जी ने शिवजी को प्रणाम नहीं किया । शिष्टाचार के सारे नियमों को तोड़ कर अभद्र अपमान जनक व्यंवहार हीन भाषा का उपयोग किया । क्रोधवश शिवजी ने त्रिशूल उठाया ही था कि महादेवी पार्वती जी ने क्रोध शान्त करते हुए भृगु जी को क्षमा करने को कहा । यहाँ से भी भृगु जी ने भाग कर ही अपने प्राणों की रक्षा की ।

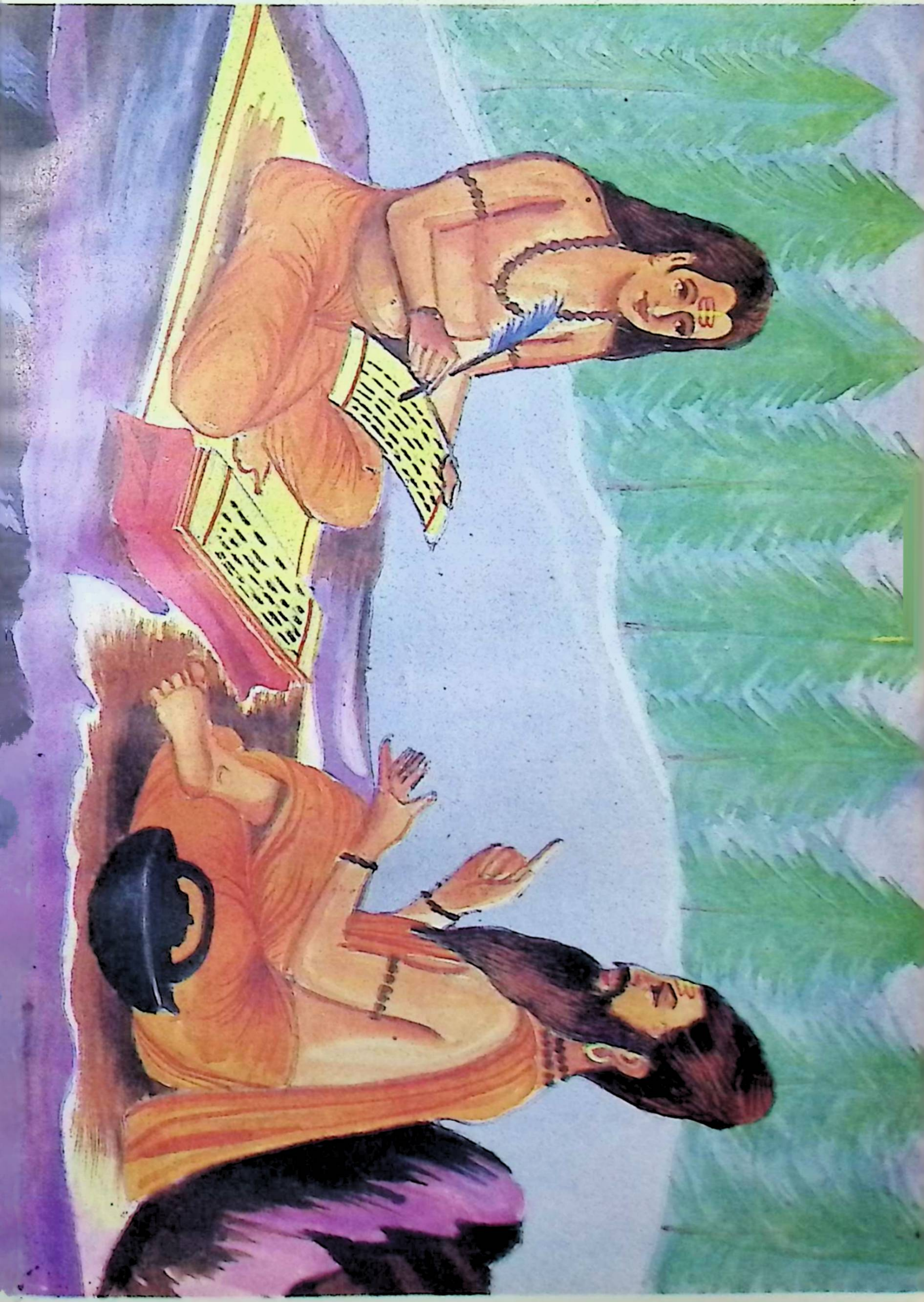

- Useful in general debility
- Prevents heart & lung deseas
- Removes weakness

प्रवेक
स्पेशल
च्यवनप्राश™

Blended with Saffron & Mukta Panchamrit

PRAVEK
SPECIAL
CHYAWANPRASH™

Enjoy a better life

An Ayurvedic Patent Medicine

तृतीय व अंतिम क्रम में भृगु जी क्षीर सिन्धु स्थित विष्णु जी के निवास स्थान के शयन कक्ष में सीधे बिना किसी सूचना व अनुमति के प्रवेश कर गये । भगवान विष्णु जी सो रहे थे और लक्ष्मी जी उनके चरण दबा रहीं थीं तभी भृगु जी ने विष्णु जी का उपहास उड़ाते हुए कहा कि विश्व का पालनहार ही स्वयं निद्रा निमग्न है तो फिर विश्व की रक्षा कौन करेगा । अतः उन्होंने विष्णु जी को नींद से मुक्ति देने हेतु अपने चरणों का प्रहार विष्णु जी की छाती पर कर दिया जो "श्री वत्स" के चिन्ह रूप में विष्णु जी की छाती पर अंकित हो गया । भगवान विष्णु जी ने भृगु जी के चरण पकड़ कर कहा "मेरा हृदय बहुत कठोर है और आपके चरण हैं कोमल । कहीं आपको कोई चोट तो नहीं लगी ।"

भगवान विष्णु जी ने तो क्षमा कर दिया किन्तु पति परायण पत्नी लक्ष्मी जी ने भृगु जी को शाप देते हुए कहा, "सुनो भृगु ! तुमने मेरे पति का घोर अपमान किया है इसलिए मैं शाप देती हूँ कि ब्राह्मण सदैव याचक, निर्धन व दरिद्र एवं परस्पर आपस में झगड़ते रहेंगे" । महर्षि भृगु ने कहा हे मातेश्वरी आपने व्यर्थ ही समूचे द्विजाति मात्र को यह कठोर शाप दिया है । माँ मैंने तो ऋषियों के प्रस्तावित मतानुसार परीक्षक बनकर त्रिदेवों की परीक्षा ली और परीक्षा में शत् प्रतिशत उत्तीर्ण हुए भगवान विष्णु को सर्वश्रेष्ठ घोषित कर यज्ञ का प्रधानत्व प्रदान किया है । ऋषि भृगु के इन शब्दों को सुनकर माँ लक्ष्मी का हृदय करुणा से भर गया और उन्हें अपने किये पर महान खेद हुआ लेकिन शाप दे चुकीं थीं अतः उन्होंने कहा, ऋषिराज मेरा शाप ब्राह्मणों को अवश्य व्यापेगा लेकिन धनाभाव के कारण समूचे द्विजाति मात्र मेरे पति की एकात्मरूप से आराधना के प्रभाव से वह संसार में पूजित होकर ईश्वर भक्त होते हुए विद्यावान, गुणवान तथा विवेकवान होंगे ।

महर्षि भृगु ने हाथ जोड़ कर कहा, "माँ मैं तुम्हारे शाप को वरदान में बदल दूंगा"। लक्ष्मी ने पूछा-- "ऋषिवर शाप को वरदान में बदलने का स्वरूप क्या है?" तब भृगु जी ने ज्योतिष शास्त्र के महान ग्रंथ भृगु संहिता की रचना की । इस के लिए भृगु जी ने नर्मदा पर्वत-शिखर पर घोर तप किया जिसके परिणाम स्वरूप भगवान शंकर ने भृगु संहिता ज्ञान के लिये माता सरस्वती का आवाहन करने को कहा । माता सरस्वती ने आशीर्वाद देते हुए कहा "भृगु मैं तो सदैव से तुम्हारे साथ हूँ और रहूँगी किन्तु विघ्न विनाशक बुद्धि प्रदाता गणेश का आवाहन करना चाहिए ।" आज्ञा मानते हुए भृगु जी ने गणेश जी का आवाहन किया । गणेश जी प्रकट हुए और लेखनी में अपनी शक्ति भर दी । माता सरस्वती की प्रेरणा से ही भृगु जी ने नर्मदा तट पर भृगु संहिता की रचना की जो कि ज्योतिष शास्त्र का प्रकाश स्तम्भ सिद्ध हुआ है ।

ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ महर्षि भृगु जी

भगवान श्री कृष्ण ने भगवद गीता में स्पष्ट उल्लेख किया है कि महर्षियों में मैं भृगु हूँ । दस ऋषियों में भृगु ऋषि की मान्यता वायु पुराण में वर्णित है । ब्रह्मा जी के मानस पुत्र, सर्व सिद्धि सम्पन्न महर्षि भृगु जी सर्वत्र व्याप्त हैं । बुद्धि से परे विद्वानों में गुणातीत होते हुए सदैव परमेश्वर का अवलम्बन करते हैं । दस ऋषि भृगु, मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, मनु, दक्ष, वसिष्ठ पुलस्त्य हैं । भृगु जी इन सबमें प्रमुख व सर्वश्रेष्ठ हैं । सप्त ऋषियों में इनका अनूठा वर्चस्व है । महर्षि च्यवन इनके पुत्र थे । भृगु जी महान मंत्र दृष्टा ऋषि हुए हैं । इन्हीं के परम शिष्य एवं उनके पुत्रों ने अथर्ववेद की रचना इनके निर्देशन में की । महा मृत्युंजय मंत्र सिद्धि द्वारा इन्होंने अपनी पत्नी तथा महर्षि जमदग्नि को पुनर्जीवित किया । भृगु जी के चरण चिन्ह को ही विष्णु भगवान की छाती पर श्री वत्स चिन्ह कहा जाता है । भृगु जी अजर अमर ऋषियों में सर्व कल्याणकारी हैं ।

भृगुतीर्थ के बारे में कहा गया है कि भरगड़ नाम की नदी के किनारे जिसे भार्गवी कहते हैं, मूल में शुक्रतीर्थ है । महर्षि भृगु ने उस जगह महान तपस्या की थी । उनका सारा शरीर दीमकों ने मिट्टी से ढक लिया था । महर्षि भृगु की दुर्गम तपस्या से प्रभावित हो भवानी उमा ने भगवान शिव से कहा हे नाथ, ऋषि की मनोकामना पूर्ण कीजिए । शिव संतुष्ट नहीं थे । अंत में भृगु ने करुणाहृदय स्तुति से भगवान शंकर को प्रसन्न किया और नर्मदातट के उस स्थान को तीर्थ बना दिया ।

नर्मदायां स्थितं दिव्यं भृगुतीर्थ नराधिप ।
भृगुतीर्थस्य माहात्म्यं यः श्रृणोति नरः क्वचित् ।।
विमुक्तः सर्व पापेभ्यो रूद्र लोकं स गच्छति ।।(६०-६१)

बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में भी भृगु प्रस्रवण गिरि का उल्लेख है । तदनुसार राजा सगर ने अपनी दोनों पत्नियों- केशिली और सुमति के साथ हिमालय पर्वत पर जाकर भृगुप्रस्रवण नामक शिखर पर तपस्या की । सौ वर्ष पूरे होने पर भृगु ने उन्हें अनेक पुत्र प्राप्त करने का वर दिया । स्कंदपुराण में मार्कण्डेय जी कहते हैं, 'राजन त्रिपुरी क्षेत्र में ही मर्कट तीर्थ है और मर्कट तीर्थ के पूर्वभाग में परम पावन भृगुतीर्थ है । कार्तिक की पूर्णिमा को इस तीर्थ में स्नान करके मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है । पूर्वभाग में त्रिलोचन नामक महादेव जी विराजमान हैं । उनके ललाट में स्थित तृतीय नेत्र का दर्शन करके मुनि श्रेष्ठ भृगु ने पृथ्वी पर दण्डवत प्रणाम किया, स्तुति की और कहा,' 'हे महादेव! मैं दूसरों का तिरस्कार करने के पाप से पराजित हूँ । मेरी उस पाप से रक्षा कीजिए। परमेश्वर इस क्षण भंगुर शरीर के प्रति मेरे मन में आत्माभिमान उदय हो गया है ।

मैं देह को ही आत्मा मानने लगा हूँ । अतः हे सदाशिव कुमार्ग की ओर दृष्टि रखने वाले मुझ दीन की आप रक्षा करें' ।

"प्रभो मुझ दीन ब्राह्मण को ज्ञान देने के लिए उद्यत होइए । आप तो सदा सबका कल्याण करने वाले हैं फिर मुझे मूढ़ देखकर भी ज्ञान दान में बिलम्ब क्यों करते हैं ? आप मेरी बढ़ी हुई तृष्णा को हर लें और मुझे स्थिर रहने वाली लक्ष्मी प्रदान करें । महेश्वर, आपके तीर्थों में जाने मात्र से जो पुण्य होता है वह सदा ही मोह का उच्छेद, पापों का विनाश और संसार सागर से उद्धार करता है परन्तु मुझ भाग्यहीन ने उस पुण्य का संचय भी नहीं किया है ।" महर्षि भृगु के द्वारा कहे हुए इस करुणा हृदय जनक स्तोत्र से भूतभावन भोले शंकर परम प्रसन्न हुए और कहा, "विप्रवर तुम्हारे मन में जिस वर की अभिलाषा है वह सब मैं तुम्हें दूंगा । साथ ही तुम्हें देव दुर्लभ उत्तम सिद्धि भी प्रदान करूंगा ।"

भगवान शंभो के वचन सुनकर भृगु जी ने कहा, "हे देव ! यदि आप संतुष्ट हैं और मुझे वर देना चाहते हैं तो पृथ्वी पर मेरे ही नाम से इस तीर्थ की प्रसिद्धि हो । महेश्वर मेरी दूसरी प्रार्थना यह है कि आप अपने को उस भृगु क्षेत्र में अवतरित करें । सदा ही आपकी स्थिति बनी रहे ।" भृगु क्षेत्र में आठ रुद्र बताये गये हैं । इन सभी के कारण भृगु क्षेत्र बहुत ही मनोरम धन्य-धन्य हो गया । इस तीर्थ के भीतर जो स्नान, दान, पुण्य, होम, तर्पण, पूजन करता है उन सबका जातक को अक्षय फल प्राप्त होता है । जो भृगुक्षेत्र में स्नान करके वहां एक रात्रि निवास करता है उसे जो पुण्य प्राप्त होता है वह सैकड़ों यज्ञों द्वारा भी उपलब्ध होने वाला नहीं है । संयमी मनुष्य भृगुतीर्थ की प्रदक्षिणा करके तत्काल विशुद्ध होकर शिवलोक में प्रतिष्ठित होता है । इस तीर्थ के माहात्म्य से मनुष्य सब पातकों से मुक्त हो जाता है ।

दैत्यों की विजय एवं जीवनदान हेतु शुक्राचार्य जी ने भगवान शंकर का तप करना प्रारम्भ किया । अवसर देखकर देवता बृहस्पति को प्रमुख बना असुरों पर प्रहार करने लगे । असुरों ने कहा, 'हम निहत्थे हैं और हमारे गुरूदेव अभी तप-रत है अतः तुम्हारा हमारे साथ युद्ध करना अनुचित है, लेकिन देवता इस मौके को हाथ से नहीं निकलने देना चाहते थे तब राक्षस भयभीत होकर शुक्र माता की शरण आये । तब शुक्र माता ने कहा-, दानवगण, डरो मत, लेकिन देवगण राक्षसों को खदेड़कर लौटने लगे और यह देख शुक्र माता क्रोधित हो गयीं । योग एवं तपस्या के प्रभाव द्वारा इन्द्र को स्तम्भित कर दिया । इन्द्र को स्तम्भित देख देवगण भाग गये तब भगवान विष्णु ने कहा,- देवेश, तुम मेरे शरीर में प्रविष्ट कर जाओ । जिससे अपनी शक्ति द्वारा तुम्हें अन्यत्र कर दूं । तब इन्द्र ने विष्णु के शरीर में प्रवेश किया । विष्णु द्वारा इन्द्र को रक्षित देख शुक्र की माता बोली, मैं विष्णु सहित तुझे जला रही हूँ । यह विषम संकट देख विष्णु भगवान ने चक्र से ऋषि पत्नी का वध कर दिया । अपनी पत्नी का वध देखकर भृगु महाराज बहुत क्रोधित हुए और कहा, हे विष्णु, तूने एक निरपराध स्त्री का वध किया है । इसीलिए मै शाप देता हूँ । तुम्हें सात बार

मनुष्य योनि में जन्म लेना पड़ेगा'। भृगु के उसी शाप के कारण धर्म के पतन होने पर धर्मस्थापना एवं लोक कल्याण के लिए विष्णु भगवान मानव योनि ग्रहण कर पृथ्वी को पाप रहित करते हैं ।

महर्षि भृगु ने विष्णु को शाप देने के बाद मृत पत्नी का सिर और धड़ को जोड़कर कहा, "जी जाओ, फिर कहा, यदि मैं सर्वदा सत्यवादी रहा हूं और सभी धार्मिक कार्यों को संपन्न कर चुका हूं तों सत्य के प्रभाव से मेरी पत्नी जीवित हो जाय," भृगु जी के इस प्रकार कहने पर मृत पत्नी ज़ीवित होकर उठ खड़ी हुई । तब देवराज इन्द्र बहुत भयभीत हुए और उसने तपरत् शुक्र की सेवा सुश्रुषा में अपनी पुत्री जयन्ती को भेजा और उसने तप के दौरान शुक्र की पूर्ण सेवा की । तप पूर्ण होने पर फल प्राप्त कर शुक्र ने दासीरूप में जयन्ती को देखा और पूछा, देवी, तुम किसकी पुत्री हो और क्या चाहती हो, तब जयन्ती ने कहा, "प्रभु, मैं इन्द्र पुत्री आपकी धर्मपत्नी बनना चाहती हूँ ।" जयन्ती की मनो अभिलाषित इच्छा शुक्र ने पूर्ण कर दस वर्षों तक सहवास किया ।

इस प्रकार महर्षि भृगु का योगक्षेम अद्भुत है । इन्हें यह संसार आंवले की तरह घूमता हुआ दिखायी देता है । महर्षि भृगु का वर्णन अनंत है और इनका तपोबल भी अनंत है इसलिए महर्षि भृगु की आराधना एवं भृगुक्षेत्र का सेवन प्रत्येक जातक को करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से जातक शिव एवं भृगु की कृपा से पाप मुक्त होकर परम धाम प्राप्त कर लेता है ।

अनूप शहर गंगा तटपर स्थित सिद्ध भृगु क्षेत्र का प्रभाव तथा स्थान की महिमा

उत्तर प्रदेश में अनूप शहर से कर्णवास मार्ग से ६ कि० मी० दूर सड़क से ३ कि० मी० अन्दर गंगा तट के साथ भृगु क्षेत्र स्थित है । यह एक सिद्ध क्षेत्र है । भगवान शंकर ने अपार तप करके इस क्षेत्र को जाग्रत किया । यहाँ पर समस्त ऋद्धि-सिद्धी निवास करतीं हैं । उनके प्रभाव से हरिभक्तों को हरिभक्ती सुगमता से प्राप्त हो जाती है, तथा भौतिक वादियों को भौतिक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं । पुराणों में भृगुक्षेत्र के अनेक रोचक प्रसंग हैं लेकिन इस भृगुक्षेत्र की रोचक कथा कुछ इस प्रकार है जो सन्तों द्वारा ज्ञात कराई गयी है। काशी में एक तपरत मुनि श्री श्री १००८ श्री अच्युतानन्द जी नाम के एक परम सन्त थे । महर्षि भृगु ने सन्त से कहा कि तू मेरे भृगुक्षेत्र में जाकर तप कर तुझे सभी सिद्धियां और मेरा दर्शन होगा । काशी से नाव में चढ़कर गंगा जी के साथ साथ भृगुक्षेत्र की ओर प्रस्थान कर जहाँ तेरी नाव रुक जाए वही भृगुक्षेत्र होगा । मेरी कृपा से तुझे वहां अपने आप सब कुछ बोध हो जायेगा । इस क्षेत्र का तू जीर्णोद्धार करेगा । जहाँ मैंने तप किया है वहाँ तू मेरा मन्दिर बना । सन्त जी ने वैसा ही किया और उस स्थान को जागृत किया । श्री करपात्री जी ने उसी भृगुक्षेत्र में ही रह कर वेदान्त पढ़ा और तप किया । श्री उड़िया बाबा, श्री

हरिबाबा और माँ आनन्दमयी ने यहीं बैठ कर तप किया और सिद्धियाँ प्राप्त कीं । लेखक ने उपरोक्त भृगुक्षेत्र की महिमा सुनी तो दर्शनों की उत्कण्ठा जगी और अपने शिष्य मण्डली के साथ १७-९-१९९७ को चन्द्र ग्रहण के सु-अवसर पर भृगुक्षेत्र के दर्शन किए । रात्रि में भृगु मन्दिर के सामने १०.३८ मिनट से २.३८ मिनट तक लगातार राहु के बीजमंत्र तथा नवग्रहों के बीजमंत्र से अलग-अलग आहुतियाँ दीं ।

यज्ञान्त गंगा स्नान किया । नारियल वाला प्रयोग किया । कार्य सम्पन्न होने पर एक महान शान्ति का अनुभव हुआ । हर एक को अपनी अपनी स्थिति के अनुसार अलग-अलग अनुभव हुए । सभी ने मुक्त कण्ठ से सराहा और कहा कि यह स्थान सिद्ध है। हमें जो आनंद प्राप्त हुआ है उसे हम लेखनी से वर्णन नहीं कर सकते । लेखक को भी यह अनुभव हुआ कि ये स्थान सिद्ध है । भृगु जी का यहाँ प्रत्यक्ष निवास है । तब मन में यह निश्चय किया कि कुछ समय यहाँ अवश्य तप करेंगे ।

लेखक की समस्त ज्योतिर्विदों से प्रार्थना है कि इस स्थान के दर्शन अवश्य करें और कुछ समय यहां निवास कर भृगु जी का पाठ स्तोत्र मंत्र तथा जप करें । ऐसा करने से ज्योतिष के सूक्ष्म तत्व तथा योग समझ में आ जायेंगे । हिन्दू संस्कृति की महिमा बढ़ेगी और ज्योतिषियों को धन, मान, यश, कीर्ति प्राप्त होगी और जनता जनार्दन को कल्याणकारी मार्ग प्राप्त हो सकेगा ।

भृगुदेवं नमस्तुभ्यं ब्रह्मनिष्ठं जगत्गुरो । मम पूर्वकृतं पापं क्षम्यतां परमेश्वर ।

महर्षि भृगु को सारा ब्रह्माण्ड हाथ में रखे हुए आँवले की तरह दिखाई देता है । महर्षि भृगु त्रिकालज्ञ हैं । भूत, भविष्य, वर्तमान के ज्ञाता एवं ब्रह्म विद्या से युक्त हैं । सारी सिद्धियां महर्षि भृगु को घेरे रहती हैं । महर्षि अपने पुत्र शुक्राचार्य को प्राणी मात्र के कुंडलियों का फलादेश उनके पूछने पर सुनाते रहते हैं ।

ज्योतिष के रचयिता महर्षि भृगु हैं । इसलिये ज्योतिष के विद्वान सर्व प्रथम फलादेश करने से पहले महर्षि को हृदय से प्रणाम करें और नेत्र बन्द कर थोड़ी देर के लिए ध्यानरत हो तथा भृगुस्तोत्र का उच्चारण एक बार कर फलादेश करें । ऐसा करने से उनकी वाणी कुंठित नहीं होगी । प्रत्येक ज्योतिषी को भृगु पूजा नमन के साथ साथ महर्षि भृगु का स्तोत्र पाठ अवश्य करना चाहिए । ऐसा करने से निकला हुआ शब्द चरितार्थ होगा । महर्षि भृगु की कृपा से किया हुआ भविष्य फल जनता का भला करेगा और फलादेश करने वाले की कीर्ति यत्र तत्र सर्वत्र फैलेगी ।

केन्द्र का यह अनुभव है कि यदि ग्रन्थ के रचयिता का प्रथम स्मरण कर तदोपरान्त फलादेश किया जाये तो निश्चय ही वह सत्य होगा यह अनुभव लेखक ने स्वयं कर, इसकी सत्यता को परखा है ।

तपोबल से महर्षि भृगु ने ब्रह्मविद्या तथा अनेक सिद्धियाँ प्राप्त की हैं । ब्रह्म विद्या के कारण इस भूतल पर जिनका जन्म हो गया है या होने वाला है, उन सबके कर्मों का ज्ञान अर्थात तीन जन्मों का ज्ञान महर्षि भृगु को है । महर्षि भृगु ने भृगु संहिता में बताया है कि मुझे ब्रह्म विद्या के कारण सभी प्राणियों के शुभ अशुभ कर्म इस प्रकार दिखायी देते हैं, जैसे हाथ पर रखा हुआ आँवला और इसी कारण जिनके लिए जो वचन कह देते हैं वह अकाट्य सत्य होते हैं ।

ब्रह्म विद्या, योग विद्या, ऋद्धि, सिद्धि, से युक्त पूर्ण तपोनिष्ठ तथा त्रिकालज्ञ होने के कारण भृगु जी ने जिस ग्रन्थ की संरचना की जो भृगु संहिता के नाम से परम विख्यात है । आज भी यह ग्रन्थ यत्र तत्र उपलब्ध है और जनता जनार्दन इसका लाभ उठाकर सुखी जीवन यापन कर रही है । जिन ब्राह्मणों के पास यह ग्रन्थ है वह भृगु महाराज की कृपा से पूर्ण समृद्धिशाली है । भृगु संहिता में जनकल्याणार्थ भूत, वर्तमान, भविष्य तथा तीन जन्मों का फलादेश लिखा हुआ है ।

भारत में २७ मन का यह ग्रन्थ लेखक की जानकारी अनुसार रेलवे मण्डी होशियारपुर में पंडित देशराज जी के निवास स्थान में उपलब्ध है । पंडित देशराज परम तपस्वी और परोपकारी ब्राह्मण ही नहीं ऋषि तुल्य ही थे । वर्तमान में उनके पुत्र ग्रन्थानुसार जातकों के जन्माकों का फलित सुनाते हैं । लेखक को भी १२-१३ कुण्डलियां प्राप्त हुईं जिनमें एक जन्म कुण्डली का संहितानुसार जो फलित श्रवण कराया, लेखक वह लेखनी से नहीं लिख सकता तथा उन्हीं की प्रेरणा आदेशानुसार अग्रिम जनकल्याणार्थ कार्य एवं बताये हुए मार्ग का अनुसरण तपादि करके ग्रहों का शोध प्रारंभ किया और उन्हीं की कृपा से केन्द्र द्वारा **'शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि' (शनि शत्रु नही मित्र)** का प्रकाशन पिछले वर्ष किया गया जिसकी प्रशंसा सभी ने मुक्त कंठ से की और कहा कि यह कृति मानव मात्र के लिए सर्वश्रेष्ठ परमोपयोगी है तथा अब जनता की मांग पर द्वितीय बार पहले से अधिक तथा संशोधित संस्करण प्रकाशित हो चुका है । शेष ग्रहों की पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं । लेखक को तीस वर्ष पहले संहिता द्वारा जो भविष्यवाणियां की गयीं थीं, वह सभी चरितार्थ हुईं । अतः यह ग्रन्थ जीव मात्र का परम मार्ग दर्शक है ।

जनकल्याणार्थ मुख्यतः दैवज्ञों के हितार्थ भृगु स्तोत्र को अंकित कर रहे हैं । जिसका हार्दिक पाठ करने पर सद्बुद्धि प्राप्त होगी और दैवज्ञ उत्तम फलित कर सकेंगे तथा जो फलित करेंगे वह चरितार्थ होगा जिससे हिन्दू संस्कृति को एक नवीन दिशा प्राप्त होगी । जातकों का पूर्ण उठा हुआ विश्वास ज्योतिष एवं ज्योतिषी पर पुनः स्थापित हो सकेगा और महर्षि भृगु की कृपा से किया गया फलित पूर्ण सत्य होगा जिससे जातक को धन ऐश्वर्य एवं यत्र तत्र सर्वत्र ख्याति प्राप्त होगी ।

ॐ श्री विष्णुरूपाय श्री महर्षिभृगवे नमोनमः

श्री भृगुस्तवराजः

ॐ सद्गुरवे नमः

मंगलाचरणम्

गुरूर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परं बह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
भृगुदेवं नमस्तुभ्यं ब्रह्मनिष्ठ जगद्गुरो ।
मम पूर्व कृतं पापं क्षम्यतां परमेश्वर ॥
त्वं नाथः करुणासिन्धुः दीनवन्धुः कृपाकरः ।
निर्गुणश्च निराकारः साकारः सगुणः स्वयम् ॥
बीजं त्वं सर्वशक्तीनां ज्योतिरूपः सनातनः ।
सर्वव्यापी निराकारः आनन्द विग्रहो प्रभुः ॥
चिरयौवनसम्पन्नः पीतकौशेयवासभृत ।
मृगाजिनासने भासि मस्तके त्रिपुटांकितः ॥
द्विभुजो ज्ञानमुद्राढ्यः कृष्णकेशसमायुतः ।
सर्वतीर्थो जलं पात्रे वामे धारयति प्रभुः ॥
शुभस्ते दक्षिणः पादो भक्तानां ध्यान हेतवे ।
रूपं मनोहरं नाथ दर्शनं ते च शान्तिदं ॥
श्री वत्सांकश्च सर्वेषामंगानां रक्षको भवेत्
एवं बहु विधो रोगो नराणां चैव जायते ।
पूर्व कर्म फलं चैवं भुज्यते खलुः मानवैः ॥
प्रत्यहं यः पठेत् स्तोत्रमिदं भक्त्या भृगोर्ऋषेः ।
तस्य यान्ति क्षयं सर्वा आपदस्तत्प्रसादतः ॥
शताश्वमेध तुल्यं हि फलं प्राप्नोति मानवः ।
यः पठेन्निश्चितं भक्तया भृगुस्तोत्रं दिने दिने ॥
राम प्रिया च मुद्रेयम् यस्यापि हृदये स्थिता ।
सर्व ताप विनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥
वैकुण्ठे वासमाप्नोति क्षोभनाशो ध्रुवं भवेत् ।
ऋषेर्भृगोः स्तोत्रमिदं मोक्षदं मुक्तिकारणम् ॥
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघ विग्रहम् ।
महर्षि भृगु मंत्रः- ॐ श्री विष्णु रूपाय महर्षि भृगवे नमः

ग्रह परिचय

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु-इन ग्रहों को नवग्रह कहते हैं । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रवि और चन्द्रमा को नक्षत्रों का स्वामी, मंगल को पृथ्वी पुत्र, बुध को चन्द्रका का पुत्र, बृहस्पति को देवगुरु, शुक्र को दैत्यगुरु, शनि को सूर्य पुत्र एवं राहु-केतु को पृथ्वी का छाया पुत्र माना जाता है ।

आकाश में जो असंख्य टिमटिमाते हुए तारे दिखाई देते हैं, वह किसी वस्तु से जुड़े हुए नहीं हैं । आकाश केवल एक खुला हुआ स्थान है जो दिन में सूर्य के प्रकाश में नीला और रात में काला दिखाई देता है । यह ताराओं के विशाल समूह आकाश गंगाएं कहलाते हैं । ब्रह्माण्ड में पाई जाने वाली इन करोड़ों आकाश गंगाओं में से एक आकाश गंगा में हमारा सौरमण्डल स्थित है । सौरमण्डल में स्वयं सूर्य और उनके उपग्रह आदि होते हैं । सूर्य का यह परिवार ही सौर मण्डल कहलाता है । यह सभी ग्रह सूर्य से आकर्षित होकर उसकी परिक्रमा करते हैं और उपग्रह अपने ग्रह के साथ सूर्य की परिक्रमा करते हैं । सूर्य सौर मण्डल के मध्य स्थित है और बाकी ग्रह इसके चारों ओर स्थित हैं । सूर्य से क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, राहु-केतु स्थित हैं । चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है । ग्रह मण्डल की गति से यह स्पष्ट है कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के मध्य अन्य सामान्य ग्रहों की तरह स्थित है परन्तु जीवन धारण कारक वायुमण्डल, पानी, तापमान आदि उसे अन्य ग्रहों से भिन्न करता है । विस्तारित ग्रह मण्डल के बावजूद कोई भी ग्रह अपने आप में अकेले परिभ्रमण नहीं करता है परन्तु सभी ग्रह एक दूसरे की आकर्षण-विकर्षण शक्ति के कारण परिभ्रमण करते रहते हैं । हर एक की अपनी आकर्षण शक्ति है और जिसका जितना बड़ा पिण्ड है, उतनी ही उसकी आकर्षण शक्ति है । वह जितना दूसरे ग्रह के सम्पर्क में आता है उतना ही उससे आकर्षित होता और आकर्षित करता है । इसलिए प्रत्येक ग्रह एक दूसरे को आकर्षित कर रहा है और एक दूसरे की गति में व्यवधान डालता रहता है । इस कारण ग्रहों के आपसी सम्बन्धों का बहुत महत्व है । जितनी कम दूरी होगी और पिण्ड बड़ा होगा उतना ही आंकर्षण उसके प्रति ज्यादा होगा । चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह होने के कारण पृथ्वी के सबसे नजदीक है और उसका बहुत महत्व है । सबसे बड़ा ग्रह शनि है और उसके बाद बृहस्पति का स्थान है । इस कारण इनका पृथ्वी सम्बन्धी (सांसारिक) घटनाओं पर बहुत प्रभाव पड़ता है । सारे ग्रह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, और पृथ्वी के वातावरण और जन-जीवन पर उनका सीधा असर पड़ता है ।

ग्रहों की गति एक निश्चित पथ पर निश्चित समय के द्वारा बंधी हुई है । आकाश में जिस मार्ग से सभी ग्रह सूर्य के इर्द गिर्द चक्कर लगाते हैं उसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं । यह क्रान्तिवृत्त पृथ्वी के सूर्य परिक्रमा मार्ग का नाक्षत्रिक वृत्त है । इस विशिष्ट मार्ग का आकाशीय विस्तार राशि है, जिसके 2 भाग हैं और प्रत्येक भाग 30 अंशों का होता है । इन बारह राशियों का आकार आकाश के तारों के आकार पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जन्तुओं के आकार पर होने के कारण ही उनका वैसा नाम पड़ा है । इस प्रकार से मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन--ये बारह राशियाँ बनीं । मनुष्य के भाग्य का सम्बन्ध ग्रहों की गति पर ही अवलम्बित है और ग्रहों की गति क्रान्तिवृत्त के आसपास के नक्षत्र मंडल में होती है । ताराओं का समूह नक्षत्र कहलाता है । विभिन्न रूपों और आकारों में जो तारा-पुँज दिखाई देते हैं, उन्हें नक्षत्र कहा जाता है । सम्पूर्ण आकाश को 27 भागों में विभाजित कर प्रत्येक भाग का अधिपति एक नक्षत्र मान लिया गया है ।

इन नक्षत्रों और ग्रहों का सीधा प्रभाव मानव पर पड़ता है और इनके प्रभाव के अनुकूल ही मानव जीवन संचालित होता है। यही नहीं इन ग्रहों का प्रभाव मानव पर व्यक्तिगत रूप से और सार्वजनिक रूप से भी पड़ता है । इसलिए जीवन का सम्पूर्ण सुख-दुख, लाभ-हानि और जय-पराजय आदि विषय इन नवग्रहों पर आधारित होते हैं । ये ग्रह 27 नक्षत्रों और 12 राशियों पर सतत भ्रमण करते रहते हैं जिससे ऋतुएं, वर्ष, मास और दिन-रात बनते हैं इस प्रकार अपनी अपनी गति के अनुरूप ये ग्रह मन्द अथवा तीव्र चाल से एक-एक राशि को पार करते रहते हैं । बारह राशियों हेतु नवग्रहों को इनका स्वामी चुना गया है जैसे-मेष-वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष-तुला का स्वामी शुक्र, कन्या-मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु-मीन का गुरू और मकर-कुम्भ का स्वामी शनि को माना गया है । नाम के अनुसार इन्हीं राशियों पर स्थित ग्रहों की चाल देखकर बताया जाता है कि अमुक व्यक्ति के लिए अमुक समय अच्छा नहीं है । जब जन्म कुंडली अथवा वर्ष/प्रश्न कुण्डली में कोई ग्रह खराब बैठा हुआ अपना अच्छा असर नहीं करता तब कहा जाता है कि अमुक ग्रह खराब है इसके लिए दान, पुण्य, अनुष्ठान कराओ, समय अच्छा नहीं है तथा आने वाला समय और भी बुरा है । और बुरे के पश्चात् तो अच्छा ही होना चाहिए परन्तु प्रत्येक अच्छा या बुरा समय बहुत कुछ अपने पूर्वगामी समय पर निर्भर रहता है कि उसमें जातक को कितनी स्थायी हानि अथवा स्थायी लाभ पहुंचता है । इसलिए ग्रह शान्ति अवश्य करानी चाहिए।

आकाश में जितने भी ग्रह हैं वे सब निर्दिष्ट गति से अपने पथ पर चलते रहते हैं और इस गति से ग्रहों का जो प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है, उसी गति से उनका फल होता है ।

ऐसी स्थिति में मानव के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह अपने बारे में भली प्रकार जान ले और आने वाले समय को पहले से ही पहचान ले जिससे कि भविष्य में आने वाली परेशानियों, बाधाओं, अभावों और कठिनाईयों को दूर किया जा सके, जिससे हमारा जीवन संतुलित, सुखमय और उन्नतिपूर्ण हो सके, जिससे कम से कम समय में हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकें । ज्योतिष का उद्देश्य मानव के आत्मकल्याण और शुभाशुभ का निर्णय करते हुए भविष्य का संकेत कर देना है । इसलिए ज्योतिष सार्थक तो तभी है जब हम आने वाले अनिष्ट को टालें, नहीं तो जानने मात्र से क्या लाभ कि समय अच्छा आयेगा या बुरा आयेगा । कुंडली में जैसा ग्रह बैठा हुआ है वैसा फल देता है । इसमें ग्रह सुख-दुख नहीं देता, ग्रहों की चाल ही सुख-दुख देती है । जिस प्रकार यदि चलती हुई मोटर से टकराकर कोई मर जाए तो हर प्रकार से अपराध मोटर वाले का ही कहा जायेगा, पथिक का नहीं ।

ग्रह चाल से जो हानि जातक को पहुँचती है, उसका कारण वह स्वयं है, ग्रह हमें कष्ट देने आते हैं और इसलिए हम उनकी पूजा-जाप आदि करें, यह विचार ठीक नहीं है । माता-पिता गुरुजन जो हमें दंड देते हैं, क्या उसमें हमारे कल्याण का भाव नहीं छिपा हुआ है । क्या इसी कारण कि उन्होंने हमें दण्ड दिया है, हमें अपने को अहीन सिद्ध करने के लिए उनके प्रति अपनी सारी श्रद्धा को समेट लेना चाहिए । इसी विश्वास को दृढ़ करने के लिए जप किया जाता है । बार-बार दुहराओ कि प्रत्येक ग्रह हमारा मित्र है । ग्रह अटूट नियमों के अनुसार नक्षत्रों और राशियों पर परिभ्रमण करते हैं । इन्हें किसी से राग द्वेष नहीं । उनके चलाने वाले की निपुणता और सर्वकल्याणमयी भावना पर विश्वास करना चाहिए उसकी प्रत्येक चाल हमारे कल्याण के लिए है । उसे जो चला रहा है, उसकी सतत चेष्टा हमें निरन्तर विकास की ओर ले जाने की है और उसके आज्ञाकारी सेवक एवं प्रतिनिधि के रूप में जो ग्रह हैं, उनके चरणों में हमारा नमस्कार स्वीकार हो । ग्रह के कष्टकारी होने से पूर्व कहीं हम **विचलित न हो जाएं और न ही उसे अपना शत्रु समझ बैठें । जप द्वारा यह विश्वास जगाया जाता है कि ग्रह हमारे सदैव हितैषी है ।** जिस प्रकार विद्यालयों में समय-विभाग होता है, प्रत्येक अध्यापक विद्यार्थियों के एक या दो विषयों की ओर ध्यान देता है । जो विद्यार्थी जिस अध्यापक के विषय में संदेहयुक्त होता है, उसका समय आने पर घबराने लगता है और यदि वह अध्यापक को अपना शत्रु समझ कर चलता है तो उसके कष्ट और बढ़

जाते हैं और यदि वह यह भावना कर लें कि प्रत्येक अध्यापक मेरे कल्याण के लिए है तो उसमें सद्बुद्धि का विकास होगा वह अपनां हीनता दूर करने में सफल और सुखी रहेगा ।

इसी प्रकार जीवनयापन में प्रत्येक ग्रह का अपना समय निर्धारित होता है और वह ग्रह उस समय विभाग का अध्यक्ष होता है । मानव की आयु 120 वर्ष मानकर ग्रहों का विभाजन किया गया है, जिसके फलस्वरूप सूर्य की दशा 6 वर्ष, चन्द्रमा की 10 वर्ष, मंगल की 7 वर्ष, राहु की 17 वर्ष, गुरु की 16 वर्ष, शनि की 19 वर्ष, बुध की 17 वर्ष, केतु की 6 वर्ष, तथा शुक्र की 20 वर्ष की दशा बतायी गई है । इसलिए उस समय विशेष में जो ग्रह होगा वह अपना प्रभाव अपनी स्थिति अनुसार दिखाएगा और उस समय में जो त्रुटि होगी उसे दूर करने के लिए वह दण्ड देगा । यह स्पष्ट है कि भविष्य निश्चित है और इस भविष्य का निर्माण पूर्व जीवन के कार्यों से बंधा हुआ है और पूर्व जीवन में जो कार्य किये हैं या जिस प्रकार के कार्य कलाप रहे हैं उसका परिणाम हमें इस जीवन में भुगतने हैं । ग्रह शब्द का अर्थ है जो ग्रहण किया करते हैं । प्रत्येक ग्रह पीड़ा देने वाले ही होते हैं, अर्थात् हमारे कर्मानुसार जो ग्रह चाल हमारे ऊपर आई है, उससे वह जातक को शुद्ध कर विकास की ओर ले जाती है इसलिए प्रत्येक ग्रह तथा उसकी चाल का उद्देश्य अपना कल्याण समझें । शनि संतुलन और न्याय का ग्रह है । वह तुला राशि में मुदित होता है । जो लोग अनुचित विषमता अथवा अस्वभाविक समता को आश्रय देते हैं, शनि उन्हें पीड़ित करता है । शनि के कुपित होने से पहले हमें समझ लेना चाहिए कि हम अन्याय और अनावश्यक विषमता का साथ तो नहीं दे रहे हैं । इसी तरह मंगल उग्रता का ग्रह है । अवांछनीय शान्ति और अनावश्यक उग्रता दोनों ही मंगल को अप्रिय हैं । इसी प्रकार अन्य ग्रहों का कार्य विभाग है । इन सभी का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है । यह समझ कर हमें सभी को नमस्कार करना है, सभी की पूजा करनी है ।

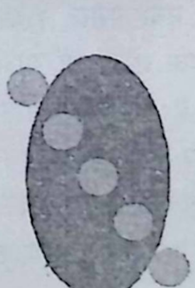

ग्रहों का मानव से सम्बन्ध तथा प्रभाव

आधुनिक मनुष्य अपने को प्रकृति का अंग अनुभव नहीं करता है । वह अपने को प्रकृति से बाहर की शक्ति मानता है, कि उसका जन्म प्रकृति पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए हुआ है । वह प्रकृति से संघर्ष की बात करता है और भूल जाता है कि उस संघर्ष में वह जीत भी जाए तो भी घाटा उसी का होगा । वह प्रकृति के अनोखे एवं असम्भव फैसलों से लड़ाई लेने के कारण अपना सिर धुन रहा है ।

इसी कारण आज के तथाकथित वैज्ञानिक युग में अमित प्रचार के कारण जनमानस साधारणतया यह जानने की कोशिश करता है कि ग्रहों का मानव से क्या सम्बन्ध है और उसके जीवन में क्या प्रभाव है । विज्ञान का अर्थ मानव को यह दर्शाने में है कि मानव का संसार में आना, उसके शरीर की रचना और उसके सम्बन्धित कार्यों को जानकर प्रकृति के नियमानुसार मानव-वृत्तियों को अनुशासित कर एक आदर्श मानव जीवन जीने में है, परन्तु आज का विज्ञान प्रकृति मां के कुछ तत्वों को अनुशासित कर अपना चमत्कार दिखा रहा है । वह समुद्र की गहराईयों को नाप रहा है, नभ के ओर छोर को ढूंढ रहा है, प्रकृति द्वारा प्रदत्त अणु-परमाणुओं का एकीकरण और विकरण कर प्रकृति को अपने अधीन मान रहा है। विज्ञान बर्बर होकर जबरदस्ती दुःशासन की तरह प्रकृति की साड़ी खींचता चला जा रहा है । यह विज्ञान अभी तक प्रकृति के पांच तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) को जिनके मिश्रण से इस संसार में पाये जाने वाले प्रत्येक पदार्थ, प्राणी का निर्माण हुआ है, और जो स्वयं प्रकृति का विकार मात्र हैं के रहस्यों को नहीं समझ पाया है । फिर वह किस बल पर प्रकृति पर अपनी विजय की आशा कर रहा है और उसके रहस्यों को समझाने का ढिंढोरा पीट रहा है इस संसार में प्रत्येक हलचल तथा स्पन्दन प्रकृति मां अम्बा की सत्ता से हो रही है । प्रकृति की सत्ता के आगे विज्ञान के बल तथा सूझबूझ का कोई महत्व नहीं है । क्योंकि अभी तक वह उसके पांच तत्वों के रहस्यों को भी नहीं समझ पा रहा है जिनका वह स्वंय अंग है । इस कारण विज्ञान का यह मानना पूर्णतः ठीक नहीं है। प्रकृति अपने रहस्य क्यों खोले । अत्यधिक सघन अनुभवात्मक क्षणों में कभी-कभी प्रकृति अपने रहस्य की एक छोटी सी झलक किसी एक विरले को दे देती है । वह सदा चंचला और परिवर्तनशील है । हर क्षण नया परिवर्तन आता है । आज मनुष्य पर जड़वादी दृष्टि हावी हो गई है और वह पूर्ण मानव होने की बजाय प्रभु होने के स्वप्न देखने लगा है । वह सोच ही नहीं सकता है कि प्रकृति मनुष्य की सहचरी है, सहचरी नहीं रहेगी तो साहचर्य नहीं रहेगा । तो मनुष्य अपने आप नृशंस हो जायेगा ।

विज्ञान की विचार तरंगों में अध्यात्म तत्व का नितांत अभाव है इसलिए उसका परम प्रभु की सत्ता और सर्वज्ञता को मानने से इन्कार है । विज्ञान की व्याप्ति केवल

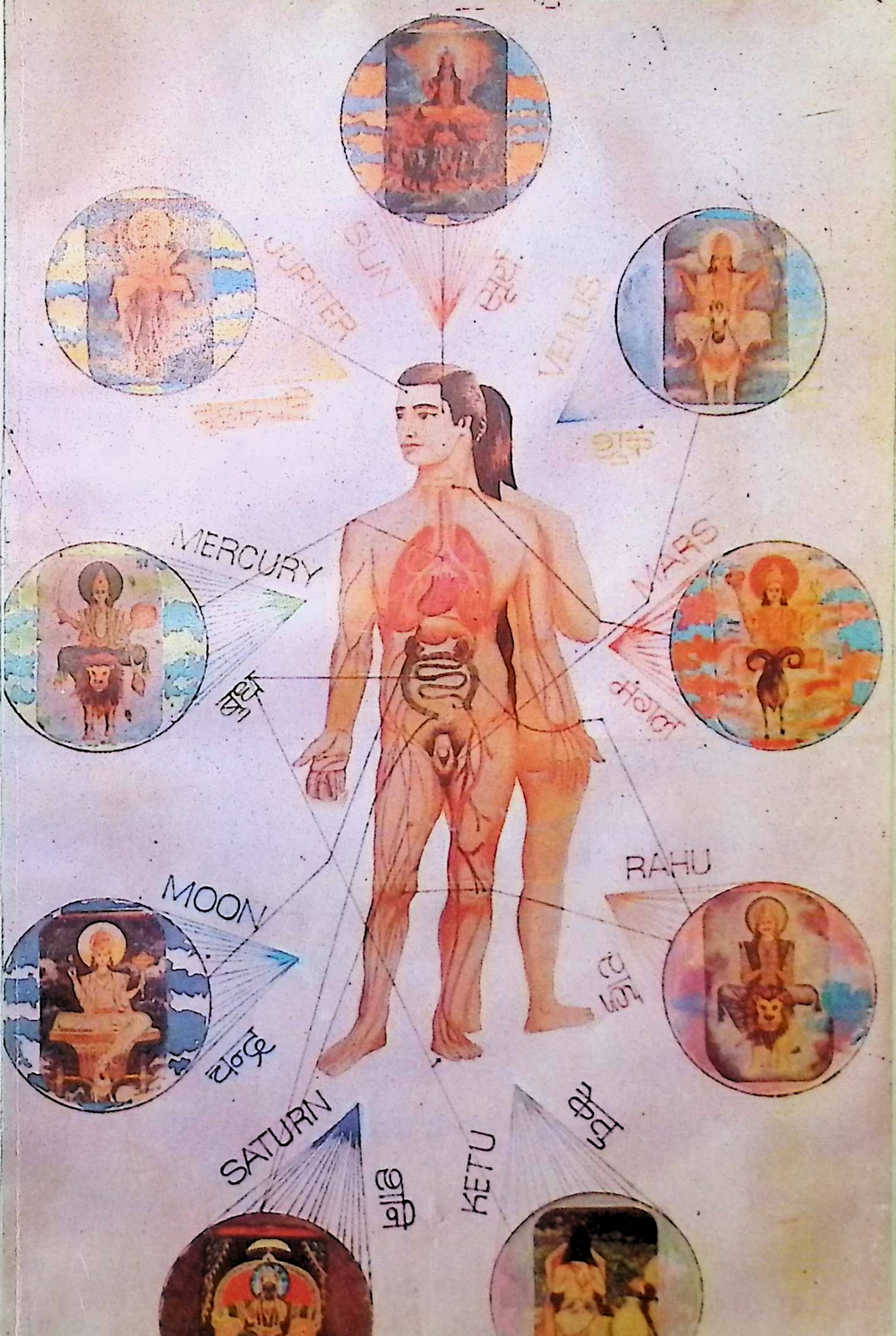
SUN
JUPITER
VENUS
MERCURY
MARS
RAHU
MOON
SATURN
KETU

Dhodh, Makhan se Malamal,
Butter Bite ka Anokha Swad.....!
PRIYAGOLD
Butter Bite
BISCUITS
हक़ से माँगो!
PRIYAGOLD®
Butter® Bite
BISCUITS
RICH, FRESH, CRISP & BEST
AVAILABLE IN 100 & 300 g
Regd. off :
Surya Food & Agro Ltd., D-1, Sector-2, NOIDA. Fax: 011-8-4558154,
E-mail: priagold@del3.vsnl.net.in, Website: www.priyagold.com

इन्द्रियगोचर विश्व तक सीमित है । वह केवल "क्या है ?" इतना ही बतला सकता है । "क्या होना चाहिए ?" और "क्यों होना चाहिए ?" इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता है । मानव जीवन के मूल्यों का विचार न तो विज्ञान ने कभी किया है और न कभी कर सकेगा । इसी कारण आज का मानव भ्रमित है, प्रभु की शक्तियों अर्थात् ग्रहों के अस्तित्व को नकार रहा है और अपने आपको सर्वशक्तिमान मान रहा है, इसलिए उसे ग्रहों का प्रभाव मालूम नहीं हो रहा है ।

आज आम धारणा यह है कि मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं का पुतला है और उसका जीवन भौतिक ऐश्वर्य से भर दिया जाए तो उसका सारा खालीपन मिट जाएगा। यह अवधारणा मानव की प्रकृति और अब तक के अनुभवों के विपरीत है । ऐसी मान्यता तृष्णा को प्रोत्साहित करती है और तृष्णा ही दुःख का मूल कारण है । तृष्णा को समाप्त कर ही दुःख का निवारण किया जा सकता है । दूसरे के दुःख को सहज बाँटा जा सकता है पर दूसरे का सुख सहा नहीं जाता, दूसरे का सुख भी अपना सुख लगे इसके लिए सांस्कृतिक दृष्टिकोण की जरूरत है । अनादि काल से मानव की आकांक्षा प्रकृति से संस्कृति की ओर प्रगति करने की रही है, परन्तु आजकल हम प्रकृति से विकृति के जाल में फंसते जा रहे हैं । यह सब भौतिक विकास का ही परिणाम है और भौतिक विकास अन्ततः गरीबी और भूख ही देता है ।

साधारणतया मानव सुख-शान्ति और समृद्धि की ही इच्छा करता है । जीवन को समृद्धिशाली बनाने के लिए मनुष्य को अनेक आवश्यकताओं की अनुभूति होती है, जिन्हें पूर्ण करने के लिए वह प्रयत्नशील भी होता है परन्तु अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर लेना उसके वश की बात नहीं है । इस समस्या पर भारतीय दार्शनिकों ने निष्कर्ष निकाला कि इहलोक एवं परलोक में सुख-शान्ति और समृद्धि प्राप्ति का साधन केवल देवताओं की उपासना आदि पुण्य कार्य और भगवद् अनुग्रह ही है । इसी कारण प्राचीनकाल से ही हमारे पूर्वज देवोपासना के बल पर विशेष सामर्थ्यवान थे ।

प्रत्येक मानव श्रेयमार्ग (आध्यात्मिकता) की अपेक्षा प्रेयमार्ग (सांसारिक भोग) का ज्यादा अनुसरण करता है अर्थात् जीवन में केवल अक्षुण्ण भौतिक सुख-शान्ति तथा समृद्धि ही चाहता है । इस संसार में जीवन यापन के लिए भोगों की आवश्यकता है परन्तु यही सब कुछ नहीं है परन्तु मानव जीवन में जीवनयापन के लिए भोगों की आवश्यकता के बजाय उनकी निरन्तर कामना कर उन्हें केवल अपने लिए ही अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है और इन भोगों की कामना के कारण वह अपने शरीर तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले पदार्थों के प्रति मोह उत्पन्न कर लेता है और कर्म का अहं अर्जित कर कर्मफल का भागी बन जाता है । बस यहीं से ही कर्मफल का भोग शुरू हो जाता है और मानव पर ग्रहों आदि देवों की सत्ता आ जाती है और मानव जीवन पर ग्रहों का प्रभाव बना रहता है । यदि कोई जीव

शरीर भाव से ऊपर उठ कर इन्द्रियों, इन्द्रियों से परे मन, मन से परे बुद्धि, बुद्धि से परे आत्मभाव में प्रवेश कर जाता है तो वह ग्रहों के प्रभाव से परे हो जाता है ।

मानव, यहाँ तक कि हर जीव मात्र जब इस पृथ्वी पर माँ के गर्भ से जन्म लेता है और उस समय आकाशस्थ नक्षत्र, राशियाँ और उस पर परिभ्रमण करते हैं नवग्रह जिस विशेष स्थिति में होते हैं और उस विशेष स्थिति के कारण जो प्रभाव दे रहे होते हैं, वह नवजात जातक के सारे जीवन वृत्त को दिशा देते हैं । जातक अपने पूर्व जन्म के कृत कर्मों के भुगतान में स्वतंत्र नहीं होता परन्तु इसके साथ-साथ उसे अपने पूर्वकृत कर्मों के भुगतान-स्वरूप भोगों को भोगते हुए नवीन कर्म करने में पूरी स्वतन्त्रता होती है । यदि पूर्व कृत कर्मों के भुगतान अनुसार उसकी वृत्तियाँ वैसी ही बनी होती हैं परन्तु प्रयास और अभ्यास द्वारा इसमें सौम्यता लाई जा सकती है । जिस प्रकार इस संसार में मानव अपने प्रयत्न तथा उद्यम द्वारा अपने जीवन-वृत्त में काफी बदलाव ला सकता है परन्तु वह अपनी माँ को नहीं बदल सकता है, क्योंकि वह उसके कर्मानुसार उसके जन्म के पूर्व निश्चित की गई होती है । उसी प्रकार उसके लिए नवग्रहों द्वारा दिशा निश्चित कर दी जाती है जिसके अनुसार कर्म भोग करते हुए उसे कर्म करने की स्वतन्त्रता रहती है परन्तु उसका स्वधर्म अर्थात् कर्म काफी निश्चित-सा है अर्थात् सहज प्राप्त है, और हमसे अपने आप उसका पालन होना चाहिए । परन्तु अनेक प्रकार के मोहों के कारण ऐसा नहीं होता अथवा बड़ी कठिनाई से होता है और हुआ भी तो उसमें अनेक प्रकार के दोष-मिल जाते हैं । यह सब पिछली देह बुद्धि के कारण होता है जिससे हीन विचारों की बाढ़ के कारण स्वधर्म रूपी आरोग्य का नाश हो जाता है और जीवन में कष्टों की भरमार हो जाती है ।

सारे जीव स्वकर्मानुसार अपनी-अपनी करनी का फल भोगते हैं, क्योंकि जो भी शुभ अथवा अशुभ कर्म होता है उसका करोड़ों कल्पों में भी नाश नहीं होता । जीव कर्मानुसार ब्रह्म, इन्द्र और सूर्य के भवन में जन्म लेता है । कर्म से ही वह मनुष्य के घर में और कर्म से ही पशु आदि योनियों में उत्पन्न होता है । कर्म से ही वह नरक में जाता है और कर्म से ही उसे बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है । स्वकर्मानुसार वह चक्रवर्ती राजा हो जाता है और अपने ही कर्म से वही नौकर हो जाता है । कर्म से ही वह सुन्दर होता है और कर्म के फलस्वरूप वह सदा रोगग्रस्त बना रहता है । कर्मानुसार ही वह विषयप्रेमी और अपने ही कर्म से ही विषयों में निर्लिप्त रहता है । कर्म से वह लोक में धनवान, कर्म से ही दारिद्र, कर्म से ही उत्तम कुटुम्ब वाला और कर्म से ही बन्धुओं के लिए कण्टकमय हो जाता है । अपने कर्म से ही जीव को उत्तम पत्नी, उत्तम पुत्र और निरन्तर सुख की प्राप्ति होती है तथा स्वकर्म से ही वह पुत्रहीन, दुष्टस्वभाव स्त्री का स्वामी अथवा स्त्रीहीन होता है ।

मानव जीवन ग्रहों की रश्मियों के संतुलन का एक पुंज है । जीवन में जब वह जन्म लेता है, उस क्षण विशेष में उस स्थान पर ग्रहों की रश्मियों का जितना और जो कुछ

प्रभाव होता है उस प्रभाव को उस क्षण विशेष में बालक अपने शरीर में समाहित कर लेता है । आदमी बीमार तभी पड़ता है जब उन रश्मियों में असंतुलन आ जाता है । प्रत्येक क्षण मानव जीवन पर ग्रहों का प्रभाव रश्मियों के माध्यम से पड़ता रहता है और इसी वजह से सुख दुख आदि का भोग उस व्यक्ति को भोगना पड़ता है । जब मानव जन्म लेता तो वह पूर्व जन्म के संस्कारों से बंधा हुआ होता है उसके जीवन में उन संस्कारों का प्रभाव भी होता है इसके साथ ही साथ इस जीवन में ग्रहों के प्रभाव को भी उस को स्वीकार करना पड़ता है और उन दोनों के समन्वय से उसका यह जीवन पथ निर्माण होता है ।

जन्म के समय आकाश मंडल में ग्रहों की जो स्थिति होती है और उपरोक्त ग्रह जिन अंगों के स्वामी होते हैं, अपने अपने रंगों की किरणों द्वारा वैसा वैसा प्रभाव डालते हैं। जैसा ग्रहों का स्वभाव होता है उसी प्रकार जातक का रहन सहन, स्वभाव एवं कार्यकलाप होते हैं भू मंडल पर जो जन्म लेगा उस पर ग्रहों का प्रभाव समान रूप से अवश्य पड़ेगा । कोई व्यक्ति पूरी शक्ति लगाकर भी ग्रहों के प्रभाव से बच नहीं सकता । ग्रह उसके कर्मानुसार उसे दुख या सुख जीवन-पर्यन्त भुगवाते रहते हैं । मानव जीवन जिस गुण से आबद्ध होता है उसके शरीर की संरचना भी उसी प्रकार से हो जाती है । वाराह मिहिर ने स्पष्ट कहा है कि मानव जीवन के चारों ओर ग्रह अपनी गति से बराबर गतिशील हैं और जिस क्षण विशेष में जिस स्थल पर मानव का जन्म होता है उस समय उस स्थल पर जिस प्रकार के ग्रहों की दृष्टियों का प्रभाव कम या ज्यादा होता है, उस बालक का स्वभाव भी वैसा ही बन जाता है अर्थात किसी मानव में सतोगुण, तमोगुण तथा रजोगुण की प्रधानता ग्रहों के फलस्वरूप ही संभव हो सकती है ।

प्रत्येक क्षण की अपने आप में स्वतन्त्र सत्ता है और प्रत्येक क्षण अपने आप में मूल्यवान है। इसके साथ ही साथ प्रत्येक क्षण का प्रभाव भी अपने आप में अलग अलग हैं। ज्योतिष के माध्यम से ही हम उस क्षण को और प्रकृति को पहचान सकते हैं और तदनुकुल कार्य करके इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं । सृष्टि के रहस्य का पता भी ज्योतिष के माध्यम से ही हो सकता है क्योंकि ज्योतिष ने प्रत्येक अणु की संरचना का ज्ञान प्राप्त किया है और यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक अणु का निर्माण किस प्रकार से संभव हो सका हैं । इसी तथ्य के आधार पर सृष्टि का निर्धारण और इसके रहस्य को समझा जा सका है । शरीर विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान पूर्ण रूप से ज्योतिष से बंधे हुए हैं, क्योंकि इन दोनों का सम्बन्ध मानव शरीर है और इसी प्रकार ज्योतिष का सम्बन्ध भी मानव शरीर ही है ।

इसी कारण जीवन में आए सुख, दुःख, संताप, क्लेश, कलह, द्वेष आदि से बचने के लिए ग्रहों की भी देवताओं की तरह उपासना पूजा बहुत आवश्यक है । संसार में प्रत्येक वस्तु का एक अधिष्ठातृ देवता होता है । इसी प्रकार शरीर के अलग-अलग अंगों

पर नक्षत्र, राशि तथा ग्रह आदि का आधिपत्य होता है । देवताओं के भजन, पूजन और उनकी उपासना से लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति बड़ी सरलता से सिद्ध हो जाती है ।

मुख्य ग्रह सात ही हैं और उनके सात ही रंग है तथा पृथ्वी पर सात ही प्रकार की किरणें सूर्य और अन्य ग्रहों के प्रकाश से पड़ती हैं । सम्भवतः इसी कारण इन ग्रहों से सम्बन्धित नग-पत्थर आदि भी सात रंगों में ही उपलब्ध होते हैं जिन्हें सम्बन्धित ग्रह को अनुकूल करने के लिए धारण किया जाता है । उदाहरण के लिए प्रिज्म नामक त्रिकोण काँच से सूर्य का प्रकाश निकालने पर प्रकाश का सात रंगों में विभाजन हो जाता है और यह सात रंग भली प्रकार देखे जा सकते हैं और सूक्ष्म परीक्षण से इन रंगों के भिन्न-भिन्न अनुपात को सूर्य के प्रकाश में देखा जा सकता है ।

यह अनुपात प्रत्येक ग्रह के प्रकाश में किसी एक रंग की किरणों का अधिक या कम होता है । शनि की किरणों में श्यामलता लिए हुए नीला रंग, बृहस्पति की किरणों में पीला रंग, शुक्र की किरणों में सफेद रंग, बुध की किरणों में हरा, मंगल की किरणों से लाल, चन्द्रमा की किरणों में हलका पीलापन लिए सफेद और सूर्य की किरणों सुनहला स्वर्ण रंग दिखता है तथा इसी प्रकार शरीर पर भी इन किरणों का प्रभाव शरीरगत विभिन्न तत्वों पर बराबर बना रहता है ।

हमारे सारे शरीर का संचालन ग्रहों के द्वारा ही होता है । सूर्य नेत्र में स्थिर होकर जीव मात्र को देखने की शक्ति प्रदान करता है और आमाशय में बैठकर पाचन क्रिया को संचालित करता है । चन्द्रमा मन को प्रभावित करता है तथा जल तत्व को सम्यक् रूप से नियंत्रित करता है । मंगल रक्त को शरीर में संचालित करता है । बुध बुद्धि तथा हृदय का स्वामी होकर हर प्रकार का आनन्द हृदय को प्रदान करता है । बृहस्पति मेघा बुद्धि को संचालित कर ज्ञान प्रदान करता है । शुक्र जिह्वा तथा जननेन्द्रिय में निवास कर हर प्रकार के रसों का रसास्वादन कराता है और जनेन्द्रिय के सारे भोगों का रस प्रदान करता है । उदर को चलाने का कार्य शनि, राहु तथा केतु तीन ग्रह करते हैं । शनि स्नायु-मंडल का स्वामी है । राहु नाभि से चार अंगुल नीचे बैठता है और पिंडलियों में बैठकर चलने की शक्ति प्रदान करता है । केतु पाचन तन्त्र तथा पैर के तलवों में निवास करता है और मानव मात्र को चलाता है । जब ग्रह प्रतिकूल होते हैं तो अपने से सम्बन्धित शरीर के अंगों को प्रभावित करते हैं प्रभावित अंगों में ग्रह की स्थिति के अनुसार दोष, विकृति आ जाती है और वह देखने मात्र के रह जाते हैं और उनसे कोई काम नहीं लिया जा सकता है । ग्रहों का प्रभाव गर्भकाल से ही आरम्भ हो जाता है और गर्भकाल में ही वह ग्रह अंगों को कुरूप और सारहीन कर देते हैं, और अंगों की काम करने की ताकत कम हो जाती है या नष्ट हो जाती है । यदि इतने से भी जीव का पाप बराबर नहीं होता है तो भयंकर रोगों को देकर जीते जी नर्क बना देते हैं ।

सारा सौरमण्डल ग्रहों पर आधारित है । सारा व्यापार मंदा, तेजी, राज्य में उथल-पुथल, वर्षा, सूखा, दिन-रात, सर्दी-गर्मी इन सबका संचालन कार्य आकाश स्थित ग्रह मन्त्रिमण्डल द्वारा होता है । जैसे पूर्णिमा के दिन समुद्र में वृहद् ज्वार तथा अमावस्या का लघु ज्वार होता है और मंगल, शुक्र तथा सूर्य की विविध स्थितियों के कारण सूखा तथा वर्षा आदि होती है । यह शाश्वत सत्य है कि कर्मों का भुगतान जीव को करना ही पड़ेगा । यह कारण और भी सत्य है कि जीव मात्र को बुरे कर्म नहीं करने चाहिएं । दूसरे की भलाई, परमात्मा का भजन करके जीवन यापन करना चाहिए । ग्रहों का कोई दोष नहीं होता है । हम बुरे कर्म करने से हिचकिचाते नहीं और ग्रह हमें मारने से बन्द नहीं होते हैं । भारतीय दर्शन का मत है कि मनुष्य का जन्म तथा उसका सुख-दुःख का भोग उसके पिछले जन्म के पुण्यापुण्य पर आधारित है । शास्त्र के मत से वह दुःख-सुख इस जन्म के जन्मकालिक ग्रहों तथा दशाओं के समय में प्रस्फुटित होता है । जिस प्रकार बीज में उसके सभी अवयव समाए हुए रहते हैं उनका प्रस्फुटन अनुकूल भूमि तथा अवसर के अनुकूल वातावरण में होता है । उसी प्रकार मनुष्य के संचित पूर्वजन्म के संस्कारों तथा पुण्यापुण्य कर्माशयों का प्रस्फुटन ग्रहों की अनुकूल तथा प्रतिकूल अवस्थाओं में होता रहता है । पुण्यापुण्य, उपयुक्त अनुपयुक्त कर्माशय के फल प्रारब्ध के साथ-साथ इस जन्म में उनका क्रियमाण (किए हुए कर्म) का भी संचय होता रहता है । मनुष्य का प्रारब्ध जब तक बली रहता है, ग्रहों के फल निर्धारित मात्रा में होते रहते हैं और क्रियमाण प्रबल हो जाता है तो ग्रहों का प्रभाव या ग्रहों की सूचना अक्षुण्ण हो जाती है इसलिए जो लोग सांसारिक चक्र में फँसे सांसारिक वासनाओं और सामाजिक तथ्यों के बीच उलझे रहते हैं उनका अपना (आत्मीय) कुछ नहीं रहता तो उन पर ग्रहों का प्रभाव अत्याधिक होता है अथवा उन्हें भोगना वैसा ही होता है जैसे वे ग्रह सूचना देते हैं । जो लोग इससे ऊपर उठ चुके होते हैं उन पर ग्रहों का प्रभाव, विशेषतया मानसिक प्रभाव बहुत कम होता है जिससे निर्धारित उपयुक्त व अनुपयुक्त फल की अनुभूति वैसी नहीं होती है जैसी सांसारिक पुरुष की होती है । शारीरिक अनिष्ट तथा मृत्यु को कोई पार नहीं कर सकता है इसलिए सब किसी की मृत्यु होती है । चूँकि निधन ग्रहों की संभावित निधनावस्था में ही प्रायः संभव है इसलिए उनका निर्धारित रहना तर्क संगत है । मनुष्य अल्पज्ञ है इसलिए उसकी कोई भी जानकारी भावी भी हो यह संभव नहीं ।

जब मनुष्य का आधा पुण्य और आधा पाप, कहीं पुण्य अधिक और कहीं पाप अधिक होते हैं तो परमात्मा करुणा करके पाप और पुण्य दोनों का भुगतान कराने के लिए मानव देह प्रदान करते हैं क्योंकि वह जीव के कर्म के साक्षी हैं । **"जीव कर्म करने मात्र में स्वतन्त्र है पर फल में ठीक परतन्त्र है ।"**

गीता में कहा गया है: **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।"

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में कहा है

"करम प्रधान विस्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फल चाखा ।"

पूर्वकृत अच्छे और बुर कर्मों का भुगतान हर शरीरधारी जीवमात्र से कराने के लिए परमात्मा ने नवग्रहों को कार्य भार सौंप दिया । ये अच्छे और बुरे कर्मों का फल समान रूप से भुगवाते हैं । इनमें आठ न्यायाधीश और एक परम न्यायाधीश, जिसका नाम शनि है, नियुक्त किये गये हैं । ये नवग्रह हमारे पाप और पुण्य का भुगतान निरन्तर कराते रहते हैं । हाथ की रेखायें और अपनी जन्म कुण्डली देखकर प्राणी मात्र अपने पिछले कर्मों का अनुमान लगा सकता है । जो कुण्डली में होगा वही हाथ में भी होगा । यदि अच्छे कर्म होंगे तो स्पष्ट सुन्दर और साफ रेखायें और पाँच पर्वतों से युक्त हाथ की रेखायें होंगी । धनी व्यक्ति के हाथों में हम देखते हैं कि चार रेखायें चन्द्र पर्वत से चलती हैं और भाग्य रेखा से मिल जाती है अर्थात् मिट्टी से सोना बनता है । और जब पाप का भुगतान कराते हैं तो कुण्डली में तीन चार ग्रह नीच के बैठेंगे और फिर कोई शुभ ग्रह केन्द्र में नहीं होगा, ग्रहों का योग भी खराब होगा ।

इस जगत के संचालन हेतु प्रभु ने अपने आपको अनन्त शक्तियों के रूप में विभाजित किया हुआ है । यह नवग्रह भी प्रभु की शक्तियाँ हैं, जो मानव यहां तक कि प्रत्येक प्राणी-मात्र का उसके पूर्व कर्मानुसार उसका भाग्य निर्माणकर, उसे भोग (सुख-दुःख) करवा कर शुद्ध करने का कार्य करते हैं । जो मनुष्य ग्रह चाल द्वारा निर्दिष्ट कर्म भोग को हर्ष से स्वीकार कर इस संसार में अपने कर्मों को केवल कर्त्तव्य समझकर करते हैं, वह अन्त में कर्म भोग को भोगकर, उस परम प्रभु के चरणों में समर्पित हो जाते हैं और प्रभु उन्हें अपना लेते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने दुष्कर्मों का अन्त कर लिया होता है । ग्रह तीन प्रकार से कर्म का भुगतान कराते हैं अर्थात् पुण्य के अधिक होने से उच्च स्थान में बैठ कर, पाप के अधिक होने से नीच स्थान में बैठ कर, और पाप-पुण्य बराबर होने से स्वग्रही होकर भुगतान कराते हैं । जैसे चन्द्रमा अगर उच्च का है तो वह जातक को काफी धनवान बनाएगा, कमा कमाया धन अर्थात् धनवान के घर में ही पैदा करेगा, मोहक रूप प्रदान करेगा । यदि पुण्यहीन है तो बिल्कुल उलट होगा, अर्थात् यह सारा जीवन घोर कष्टों में ही गुजरेगा इत्यादि । यदि स्वगृही हैं तो जीवन सुचारु रूप से गुजर जाएगा ।

अब दूसरी तरफ देखिए जिस जातक ने पूर्व में अपने उन्माद तथा अभिमान में आकर अति क्रूर पापाचार, अत्याचारी कर्म किये होंगे, उनके हाथ-पाँव आदि अंग कटे-फटे तथा जीर्ण हो जाते हैं । ग्रह उसका मस्तिष्क अति गर्म कर देते हैं । वह सब कुछ प्राप्त करके भी उसे भोग नहीं सकता है । जब मानव अति उद्दण्ड हो जाता है तो शनि उसका मस्तिष्क अति गर्म कर देता है और उसकी अक्ल मारी जाती है फिर उसे अच्छे-बुरे का भी

ध्यान नहीं रहता और ऐसे कर्म हो जाते हैं कि सब नाश हो जाता है । ऐसे जातकों को ग्रह उसके पापों का भुगतान करवा कर शुद्ध करने का प्रयास करते हैं । परन्तु हाय रे मानव! इस भुगतान को अपना कर्त्तव्य न समझ कर व्यर्थ में ग्रहों पर दोष मढ़ता रहता है और अपने कर्मों की पिटारी को और भारी बनाता रहता है ।

इस प्रकार सभी ग्रह न्यायाधीश का कार्य करते हैं । अर्थात् बुरे कर्मों का भुगतान दुःख भुगवा कर और अच्छे कर्मों का सुख भुगवा कर जातक के कर्मों को क्षय करने का प्रयास करते हैं । क्योंकि मानव कर्म करने में स्वतन्त्र है इसलिए हर कर्म को वह मोहवश कर उसके फल का भागी बन जाता है और अच्छे-बुरे परिणाम का जिम्मा ले लेता है । बस यहीं से जातक का ग्रहों से सम्बन्ध बन जाता है और उनका प्रभाव उस पर पड़ने लगता है ।

इसलिए इन ग्रहों की चाल से बचने के लिए दान, मन्त्रजप, तप आदि का विधान हमारे मनीषियों ने किया है अर्थात् ये ग्रह हम पर दया कर सौम्य होकर हमारे अच्छे-बुरे कर्मों का भुगतान करवा कर हमें शुद्ध कर दें, जिससे यह जीवनयात्रा सफल हो सके तथा कर्म क्षय होने पर उस परम पिता परमात्मा की प्राप्ति हो सके ।

देवताओं की उपासना, भजन-पूजन, मन्त्र तथा दान का विशेष स्थान है । मन्त्र मानव को सभी प्रकार के भयों से परित्राण दिलाता है । मन को मननीय-शक्ति (एकाग्रता) प्रदान करके जप द्वारा समस्त भयों का विनाश करके पूर्ण रक्षा करने वाले शब्दों को मन्त्र कहा जाता है । 'मन्' शब्द से मन को एकाग्र करना, 'त्र' शब्द से त्राण (रक्षा) करना जिसका धर्म है और जप से जो अभीष्ट फल प्रदान करे, वे मन्त्र कहे जाते हैं । मन्त्र यद्यपि शब्दात्मक हैं तो भी उनकी सामर्थ्य विलक्षण होती हैं वह वस्तु शून्य नहीं होती है । मन्त्र तोप के गोले से भी शक्तिशाली होता है । मन्त्र के प्रभाव और प्रेरणा से मनुष्य स्वेच्छा से अपना जीवन तदनुरूप बनाने लगता है । मन्त्र जप करने से साधक का जिसमें हित निहित होता है उसे मन्त्र का अधिष्ठातृ देवता स्वयं सम्पादन करता रहता है । अपने इष्टदेव के सर्वात्मन समर्पण शरणागत होकर देवता प्रीत्यर्थ कर्म करने से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं, ऐसा शास्त्रों का मत है । इसी प्रकार दान से न केवल आसक्ति ही घटती है अपितु ईश्वर विश्वास भी बढ़ता है । जो प्रभु के पथ पर चलते हैं, उनका योगक्षेम प्रभु के हाथों में है । बिना ईश्वर विश्वास बढ़े जो आसक्ति घटती है उसका कोई भरोसा नहीं है और वह एक नीरस यातना है ।

• •

राशियों का जातक पर प्रभाव

ग्रहों के साथ साथ जातक पर राशियों का प्रभाव भी पड़ता है । जो राशि जिस अंग की स्वामिनी होती है तथा उसका जैसा स्वभाव होता है वैसा ही स्वभाव उस राशि में जन्में जातक का हो जाता है और लाख चाहने पर भी वह अपने स्वभाव को नहीं बदल पाता कारण राशियों के प्रभाव के अनुसार जातक को विवश होकर चलना पड़ता है । नवग्रह इन्हीं बारह राशियों पर अपनी समान तीव्र गति से निरंतर भ्रमण करते रहते हैं और इन्हीं राशियों में आकर ग्रह ऊँच, नीच या सम होते हैं । जिस राशि में जातक का जन्म होता है उस राशि में वह ग्रह यदि उच्च होता है तो जातक प्रतिभाशाली, उर्ध्वरिता, मान सम्मान पाने वाला होता है । यदि वह नीच का होता है तो जातक नीचकर्म करने वाला बन जाता है यदि ग्रह स्वग्रही होता है तो समान फल देता है ।

जातक चाहे कितना ही ब्रह्मवेत्ता (विज्ञानवेत्ता) क्यों न हो राशि के स्वभाव के अनुसार उसे जीवन पर्यन्त चलना पड़ता है । वह परमात्मा ही राशि रूप में सारी सृष्टि का नियंत्रण करता है और जातकों को कर्मानुसार विधिवत भुगतान कराता रहता है । इन्हीं राशियों के अनुसार ही जातक का नामकरण संस्कार किया जाता है । हर राशि में नौ अक्षर होते हैं । उपरोक्त १२ राशि के अक्षरों के अनुसार जातक अपनी राशि को अच्छी प्रकार समझ सकते हैं ।

जन्म कुंडली में राशियों और ग्रहों के स्वरूप के समन्वय के द्वारा ही फल का विचार किया जाता है । प्रेमी प्रेमिका, पति पत्नी, अथवा एक मित्र का दूसरे मित्र के साथ कैसा सम्बन्ध रहेगा, इसको देखने के लिए भी राशि के स्वभाव पर ध्यान दिया जाता है, जिस राशि का जैसा स्वभाव होता है, उन राशियों में उत्पन्न हुआ पुरुष तथा स्त्री का स्वभाव भी वैसा होता है । दो सामान स्वभाव वाले प्राणियों में मित्रता तथा असमान स्वभाव वाले प्राणियों में शत्रुता रहती है । प्रत्येक राशि काल पुरुष के एक अंग का प्रतीक है, जैसे मेष राशि से सिर, वृष से मुख आदि पृथ्वी में भी आकर्षण शक्ति है जिस कारण सूर्य उसे प्रकाश देता है । फलस्वरूप पृथ्वी के जीवधारियों में प्राण और शक्ति का संचार होता रहता है । सूर्य एवं चन्द्रमा की तरह ही अन्य ग्रहों का प्रभाव भी पृथ्वी पर पड़ता है और यह एक दूसरे का ओज आदि प्रदान करते रहते हैं । चूंकि पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक काल का एक स्वतंत्र मानव अस्तित्व होता है अतः ग्रह प्रत्येक काल पर भिन्न भिन्न रूप में अपना प्रभाव डालते हैं । मानव जीवन पर हर समय ग्रहों का प्रभाव पड़ता है । उत्पत्ति के समय बालक पर जिस ग्रह रश्मियों की छाया पड़ेगी, बालक का स्वभाव, चरित्रादि वैसा ही होगा। सत्य तो यह है कि परमात्मा ही ग्रह के रूप में सारी सृष्टि का नियंत्रण करता है तथा प्रकृति का संचालन करता है एवं प्राणी मात्र के कर्मानुसार उन्हें सुख दुख एवं मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

राशियों का जातक पर प्रभाव

Figure rahe ekdum right!
Jee bhar ke khao Marie Lite!!

80% Fat Free

हक से माँगो!
PRIYAGOLD®
Marie Lite
BISCUITS
Available in 100 g & 250 g.

Regd. off : Surya Food & Agro Ltd., D-1, Sector-2, NOIDA. Fax: 011-8-4558154, E-mail: priagold@del3.vsnl.net.in, Website: www.priyagold.com

Every one has the right to good taste

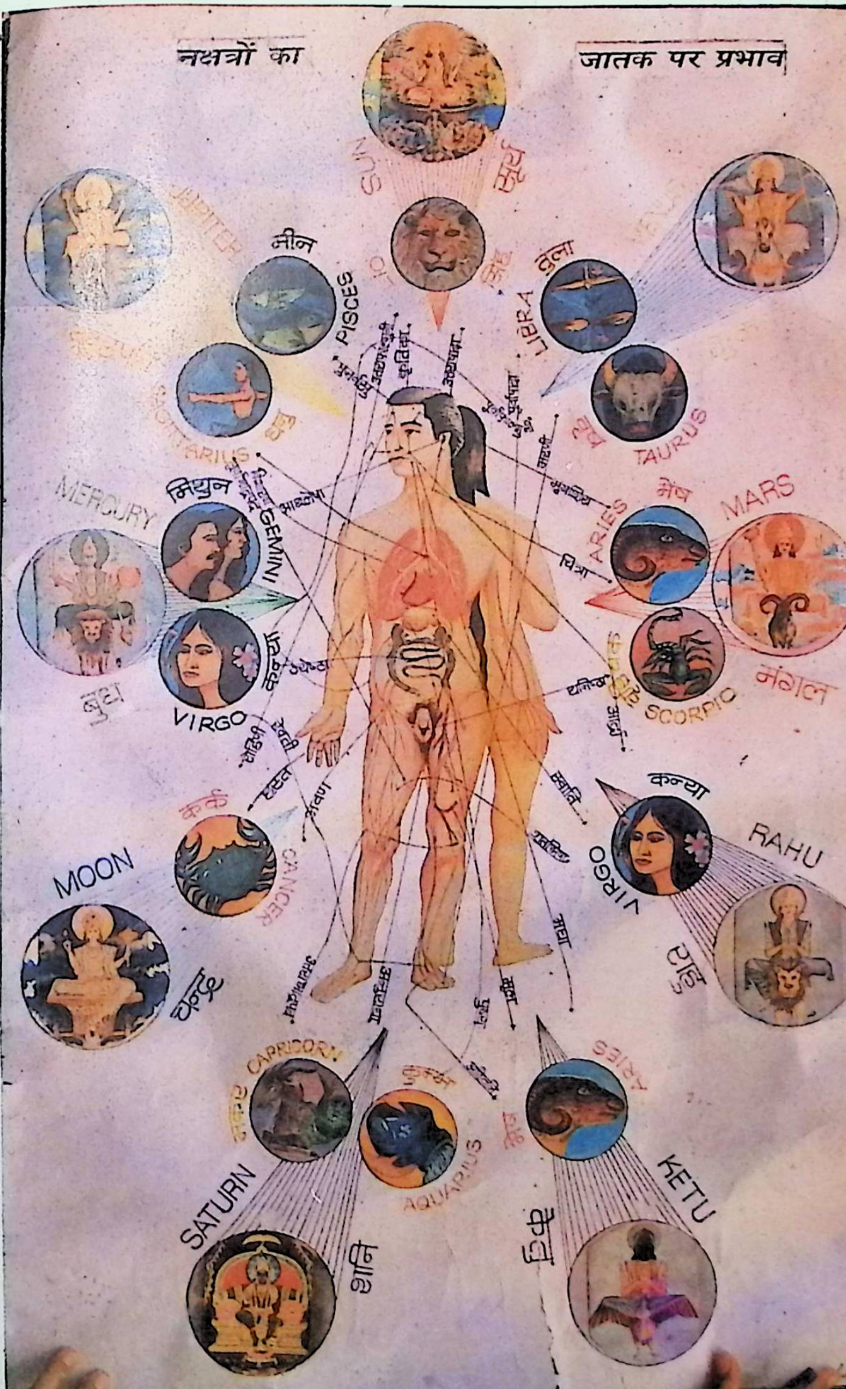

नक्षत्रों का जातक पर प्रभाव
SUN
सूर्य
JUPITER
VENUS
मीन
PISCES
तुला
LIBRA
TAURUS
SAGITTARIUS
धनु
MERCURY
मिथुन
GEMINI
बुध
VIRGO
कन्या
ARIES
मेष
MARS
मंगल
SCORPIO
कर्क
CANCER
MOON
चन्द्र
RAHU
राहु
CAPRICORN
मकर
AQUARIUS
कुम्भ
SATURN
शनि
KETU
केतु

For your requirements of

NEWSPRINT
(Indian/Imported)

CREAMWOVE / MAPLITHO / M.G POSTER
CAST COATED / SECURITY PAPER

From:
Shiva Paper Mills Ltd.
Sikka Papers Ltd.
Pragati Paper Inds. Ltd.
ACE Cast Coaters Ltd.

Indenting Agents For :

- TEA BAG PAPER
- NEWSPRINT
- SPECIALITY PAPERS

(Art Paper & Board, Ivory Embossed & Perlized)

Contact:

Trade Links

Wholesale Paper & Board Merchant

A-20/F-1 Dilshad Garden, Delhi-110095, India Phone : +91 11 228 2888, Fax, +91 11 2133564
E-mail : papyrus@ndf.vsnl.net.in

नक्षत्रों का जातक पर प्रभाव

सबसे पहला प्रभाव बालक पर जन्म के समय नक्षत्र का पड़ता है । जो नक्षत्र जिस अंग के स्वामी होते हैं और उनका जैसा स्वभाव होता है उसी प्रकार जातक का स्वभाव हो जाता है । जातक के पापक ग्रह जब उपयुक्त नक्षत्र पर आते हैं तब नक्षत्रों से सम्बन्धित शारीरिक अंगों को पीड़ा पहुँचाते हैं इसी प्रकार शुभ अथवा सौम्य ग्रह आने पर उस अंग की पुष्टि करते हैं ।

ताराओं का समुदाय नक्षत्र कहलाता है । विभिन्न रूपों और आकारों में जो तारा पुँज दिखाई देते है, उन्हें नक्षत्रों की संज्ञा दी गई है । ज्योतिष शास्त्र में गणित की सूक्ष्मता के लिए प्रत्येक नक्षत्र को चार चरणों में विभाजित कर लिया गया है । नक्षत्र सत्ताइस होते हैं। इनमें सात्विक, राजस, तामस तथा मूल नक्षत्र होते हैं । हर नक्षत्र का अपना अपना प्रभाव हैं । स्वाति नक्षत्र की बूंद सीपी में पड़ते ही मोती बना देती है, गज में मुक्ता बना देती है इसी प्रकार हर नक्षत्र का अपना अपना प्रभाव जातक पर समान रूप से जीवनपर्यन्त बनाये रहता है । कोई भी जातक कितना भी ब्रह्मवेत्ता हो, अमल विमलात्मा परमहंस हो, नक्षत्रों की चालों के अनुसार विवश होकर उसको चलना पड़ता है । परमात्मा ही नक्षत्र रूप में भासता है । सारी सृष्टि का संचालन करता है और प्राणी मात्र के पालन हेतु रोहिणी तथा आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा का योग बनाता है । यही वर्षा प्राणी मात्र को आनन्दित करती है । यदि बालक का जन्म मूल नक्षत्रों में हो तो उनके माता-पिता मूल शान्ति अवश्य करा लें अन्यथा बालक की प्रगति नहीं हो पाएगी यह अकाट्य सत्य है ।

मनुष्य के भाग्य का सम्बन्ध ग्रहों की गति पर ही अवलम्बित है और ग्रहों की गति क्रान्तिवृत्त के आसपास के नक्षत्र मंडल में ही होती है इसलिए ज्योतिषियों ने नक्षत्र मंडल के २७ भागों के २७ नक्षत्र मानकर उनका नामकरण स्पष्ट किया । चूंकि चन्द्रमा एक दिन में इस मंडल में १३-२० चलता है इसलिए उसकी गति को २७ भागों में विभाजन किया गया । पृथ्वी भी इन्हीं नक्षत्रों में ३६५, १५, ३१, ३०, ३६५, ०६, १, १७ गति पर सूर्य की परिक्रमा करती है । जिससे एक सौर वर्ष बनता है इसके साथ ही पृथ्वी अपनी धुरी पर भी २३°, २६°, ५२° झुकी हुई हैं जिससे उसकी गति के मध्य में उसका विषुवत दो स्थानों पर क्रान्तिवृत्त को काटता है जिससे अयन बनता है । इसी के फलस्वरूप सूर्य एक वर्ष में ६ महीने दक्षिण अयन पर तथा ६ महीने उत्तर अयन पर रहता है ।

जातक का जन्म जिस नक्षत्र में होता है वह नक्षत्र अपने स्वभावानुसार जातक को सुख समृद्धि रोग, दोष आदि देता है । सतोगुणी नक्षत्र सतोगुण की वृद्धि करता है । रजोगुणी नक्षत्र रजोगुण की वृद्धि करता है और तमोगुणी नक्षत्र तमोगुण की वृद्धि करता है । मूल नक्षत्र का स्वभाव/प्रभाव अपना अलग ही होता है । अच्छे समय में जातक को नक्षत्रों

के वेदोक्त मन्त्रों का जप कर या करवा लेना चाहिए । जप करने से नक्षत्र का बल कई गुणा बढ़ जाता है । शारीरिक, मानसिक, आर्थिक तीनों बलों में सराहनीय वृद्धि होती है । नक्षत्रों द्वारा प्रदत्त रोगों, दोषों की अपने आप निवृत्ति होती है । जप पहले से आरम्भ कर देना चाहिये और जो जिसका नक्षत्र हो उस दिन उसका उपरोक्त हवन, सामग्री से हवन करने के बाद जड़ी बूटी बाँधे । यथा शक्ति दान आदि भी अवश्य करें । पंचांग से नक्षत्र का समय देख लेना चाहिए कि वह कब से कब तक है । उसी अवधि में यज्ञ दान आदि कर लेना चाहिए ।

द्युःलोक और अन्तरिक्ष जिससे हमारी पृथ्वी चारों ओर से घिरी हुई है अर्थात् सूर्य आदि ग्रह और नक्षत्रों की चाल से उत्पन्न स्थिति के प्रभाव को जानने के लिये क्रान्तिवृत्त को बारह बराबर भागों में बाँटा गया है, जिसे राशियाँ कहते हैं । इन राशियों में सत्ताईस नक्षत्रों तथा नौ ग्रहों के भ्रमण का मार्ग निर्धारित है, जिसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं । अर्थात् जातक के जन्म के समय उस क्रान्तिवृत्त के एक विशेष भाग जिसे राशि कहा जाता है जिसका सीधा प्रभाव पड़ रहा होता है । उस राशि विशेष के समय पर विशेष नक्षत्र का संचार हो रहा होता है जो राशि के विशेष आधिपत्य में होते हैं और नक्षत्र किसी ग्रह विशेष में होता है । इस विशेष स्थान पर होने से राशि, नक्षत्र तथा ग्रह का प्रभाव/स्वभाव अलग ही होता है और वही स्वभाव जातक का जीवन भर बना रहता है । गोचर में आने पर इसका प्रभाव बदलता रहता है । परन्तु जन्म कुण्डली में आये स्वभाव और प्रभाव का यह सहयोगी होता है और उस जातक को कभी राहत और कंभी कष्ट प्रदान करता रहता है । इसलिये जीवन काल के स्वभाव को जानने के लिये जातक की राशि, नक्षत्र और ग्रह की चाल का अवलोकन किया जाता है ।

ग्रह जप, यज्ञ, का विधान कहाँ और कैसे

क्या शास्त्र ग्रह पूजा का उल्लेख करता है, प्रत्येक जातक को जीवन में प्रथम ग्रह पूजा क्यों करनी चाहिए, क्या यह शास्त्रों का निर्देश है । क्या ग्रह, जप, यज्ञ से इच्छित फल की प्राप्ति होती है आदि ।

आज मानव संकट के बोझ तले निरन्तर दबा जा रहा है चिन्ता एवं अन्यान्य वेदनाओं से व्यथित है । आधुनिक समय की महान विडम्बना यह है कि जातक शिक्षित होने के साथ साथ ग्रह शक्ति से परिचित होते हुए भी ग्रह शक्ति से विमुख होता जा रहा है । और यही कारण है कि नित्य प्रति कष्ट के बोझ तले दबा जा रहा है । महान आश्चर्य तो तब होता है जब शिक्षित समाज भी कुछ ऐसे निरर्थक प्रश्न करते हैं कि ग्रह यज्ञ का विधान कहां प्रतिपादित है । यह प्रश्न सुनकर यही महसूस होता है कि या तो उन्होंने अध्ययन नहीं किया या वक्त को गुजारने हेतु पन्ने पलटे हैं इसलिए ऐसे निरर्थक प्रश्न करते हैं ।

जातकों ने पत्रादि द्वारा एवं अन्यान्य प्रकार से प्रश्न किये कि ग्रह यज्ञ का विधान किस पुराण में प्रतिपादित है आदि शंका समाधान हेतु मत्स्यपुराण एवं अग्नि पुराण द्वारा उल्लेखित ग्रह यज्ञ का विवरण सूक्ष्मतः प्रस्तुत कर रहे हैं । विशेष शंका समाधान हेतु केन्द्र से सम्पर्क करें या उपरोक्त पुराणों का गहन अध्ययन करें ।

अग्निपुराण एवं मत्स्यपुराण में ग्रह सम्बन्धी समस्त वर्णन है। पाठकों की जानकारी हेतु जैसा पुराण में वर्णन है वैसा अंकित है ।

नवग्रहहोमः

अग्निपुराणानुसारः-

पुष्कर उवाच :-

श्रीकामः शान्तिकामो वा ग्रहयज्ञं समारभेत् । दृष्ट्यायुः पुष्टिकामो वा तथैवाभिचरन्पुनः ।
सूर्यः सोमो मंङ्गलश्च बुधश्चाथ बृहस्पतिः । शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहाः स्मृताः ।
ताम्रकात्स्फटिकाद्रक्तचन्दनात्स्वर्णकादुभौ । रजतादयशः सीसाद्ग्रहाः कार्याः क्रमादिमे ।
सुवर्णैर्वा यजेल्लिख्य गन्धमण्डलकेषु वा । यथावर्णं प्रदेयानि वासांसि कुसुमानि च ।

पुष्कर बोले :- ऐश्वर्य, शान्ति, दृष्टि, आयु और पुष्टि की इच्छा करने वाले तथा अभिचार कर्म करने वाले को ग्रहों का यजन करना चाहिये । ग्रह ये हैं--सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु । इन ग्रहों का निर्माण क्रमशः ताम्र, स्फटिक, रक्तचन्दन, स्वर्ण, चाँदी, लोहा और शीशा से करना चाहिए अथवा सभी ग्रहों का निर्माण स्वर्ण से किया जा सकता है । गन्धमण्डलों में ग्रहों का चित्रण करके उनका यजन

करना चाहिए ग्रहों के लिये उनके वर्णो के अनुसार वस्तुओं तथा पुष्पों को समर्पित करना चाहिए ।

गन्धाश्च वलयश्चैव धूपो देयस्तु गु (गौ) ग्गुलः । कर्तव्या मन्त्रवन्तश्च चरवः प्रतिदैवतम् ।
आकृष्णेन इमं देवा अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत् । उद्‌वध्यवेति च ऋचो यथासंख्यं प्रकीर्तिताः ।
वृहस्पते अति यदर्यस्तथैवाल्पात्परिश्रुतः । शं नो देवीस्तथा काण्डात्केतुं कृण्वन्निमास्तथा ।

ग्रहों के लिये गन्ध, कंगण और गुग्गुल का धूपदान करना चाहिए । प्रत्येक देवता के लिये मन्त्रों से युक्त चरु का सम्पादन करना चाहिए । उस समय क्रमशः जिन मन्त्रों को पढ़ा जाता है वे हैं--'आकृष्णेन', 'इमं देवा', 'अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्', 'उद्‌बुध्यस्व' बृहस्पते अति यदर्य', 'शं नो देवी', 'काण्डात् तथा 'केतुं कुण्वंन्न' इत्यादि ।

('अर्कः पलाशः खदिरो ह्यपामार्गोऽथ पिप्पलः । उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ।
एकैकस्याम (स्य अ) ष्टशतमष्टाविंशतिरेव वा) । होतव्या मधुसर्पिर्भ्यां दध्ना चैव समन्विताः ।
गुडौदनं पायसं च हविष्यं क्षीरयष्टिकम् । दध्योदनं हविः पूपान्मांसं चित्रान्नमेव च ।
दद्याद्ग्रहक्रमादेतद्विजेभ्यो भोजनं बुधः । शक्तितो वा यथालाभं सत्कृत्य विधिपूर्वकम् ।
धेनुः शंखस्तथाऽनड्‌वान् हेम वासो हयस्तथा । कृष्णा गौरायसश्छाग एता वै दक्षिणाः क्रमात् ।

इन ग्रहों के लिये क्रमशः अर्क, पलाश, खदिर, अपामार्ग, पीपल, गूलर, शमी, दूर्वा और कुशाओं की समिधायें होती हैं । प्रत्येक देवता के लिये एक सौ आठ अथवा अट्‌ठाईस आहुतियाँ मधु, घृत और दही से देनी चाहिएं । ग्रहों के क्रम से ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए जिसमें गुड़-भात, खीर, हविष्य, मलाई, दही-चावल, हवि, पुआ, उड़द तथा खिचड़ी प्रयोग होना चाहिये । यथाशक्ति और यथा लाभ ब्राह्मणों का विधिपूर्वक सत्कार करके (ग्रहों के क्रम से) ब्राह्मणों को गाय, शंख, बैल, सोना, वस्त्र, अश्व, काली गाय, लोहा और बकरा दक्षिणा में टेना चाहिए ।

यश्च यस्य यदा दूष्यः स तं यत्नेन पूजयेत् । ब्रह्मणैषां वरो दत्तः पूजिताः पूजितस्य च ।
ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रयाः पतनानि च । भावाभावौ च जगतस्तस्मात्पूज्यतमा ग्रहाः ।

जो ग्रह जिसके लिय दूषित हो, उसे उसी ग्रह का पूजन करना चाहिये ब्रह्मा के द्वारा ग्रहों को यह वर दिया गया है । राजाओं के उत्थान-पतन तथा संसार का अस्तित्व ग्रहों के अधीन है, इसलिये ये ग्रह सबसे अधिक पूज्य हैं ।

अग्निरुवाच :-

श्रीशान्तिविजयाद्यर्थं ग्रहयज्ञं पुनर्वदे । ग्रहयज्ञोऽयुतहोमलक्षकोट्यात्मकमस्त्रिधा ।

अग्निदेव बोले--अब मैं ऐश्वर्य, शान्ति और विजय इत्यादि के लिये ग्रह यज्ञ का वर्णन कर रहा हूँ । यह ग्रह यज्ञ तीन प्रकार का होता है जिसमें दस हजार, एक लाख और एक करोड़ आहुतियाँ दी जाती हैं । अतः लक्ष कोटि ग्रह होम ही सभी भौतिक कामनाओं की पूर्ति कर पारलौकिक सुखों की प्राप्ति कराते हैं । ग्रह-यज्ञ, अयुत होम और दक्षिणाओं से

रण में विजय तथा विवाहोत्सव आदि यज्ञों में और (देव) प्रतिष्ठादि कर्मों में सफलता प्राप्त होती है । सभी कर्मों की प्राप्ति के लिये लक्ष और कोटि होम माने गये हैं ।

विशेष-कुण्ड निर्माण विधि अग्नि कर्म विधि तथा ग्रह हवनादि संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु अग्नि पुराण का २४ वाँ अध्याय अवश्य देखें । पूजाविधि से प्रथम हमने भी नवग्रह यज्ञादि हेतु महत्वपूर्ण जानकारी सूक्ष्मतः प्रस्तुत की है । ग्रह संबंधी विस्तृत जानकारी हेतु पुराणों का अध्ययन कर अग्निपुराण का विशेष अवलोकन करें ।

मत्स्यपुराणानुसार:--

सूत ने कहा--प्राचीनकाल में एक बार बैठे हुए वैशम्पायन से शौनक ने पूछा--सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करने के लिए कभी विनष्ट न होने वाले शान्तिक एवं पौष्टिक शुभ कर्मों को किस प्रकार करना चाहिए ?

वैशम्पायन ने कहा--ब्रह्मन् ! लक्ष्मी की कामना करने वाले एवं शान्ति की अभिलाषा करने वाले मनुष्य को ग्रहयज्ञ का आरम्भ करना चाहिये । उसी प्रकार आयु की वृद्धि एवं पुष्टि की प्राप्ति के लिए भी वही अनुष्ठान करना श्रेष्ठ है । अब जिस प्रकार से उक्त ग्रहयज्ञ समाप्त होता है, उसे मैं कह रहा हूँ, सुनिए । सम्पूर्ण शास्त्रों की परिपाटी के अनुसार, ग्रन्थ विस्तार को संक्षिप्त करके, पुराणों तथा श्रुतियों द्वारा प्रमाणित ग्रहों की शान्तिका विधान मैं बतला रहा हूँ । पण्डितों द्वारा निर्दिष्ट पुण्यप्रद दिन में ब्राह्मणों द्वारा पाठ व मांगलिक स्तोत्र करवाकर ग्रहों तथा ग्रहों के अधिदेवों की स्थापना कर हवन प्रारम्भ करना चाहिये ।

पुराणों तथा वेदों के जानने वाले पण्डितों ने तीन प्रकार के ग्रह यज्ञ के विधान बतलाये हैं ! प्रथम वह, जिसमें दस हजार आहुति दी जाती है । द्वितीय वह, जिसमें एक लाख आहुति और तीसरा सम्पूर्ण मनोरथों का प्रदान करने वाला वह, जिसमें एक करोड़ आहुतियाँ दी जाती हैं । इस सहस्र आहुतियों से नवग्रहों का यज्ञ पूर्ण होना बतलाया जाता है, उसकी विधि जिस प्रकार पुराणों तथा वेदों में बतलाई गई है, मैं बतला रहा हूँ, सुनिए । हवन कुण्ड के उत्तर तथा पूर्व दिशा की ओर दो बीता चौड़ी, दो किनारों तक घिरी हुई, एक बीता ऊँची, चार कोनों वाली, उत्तर की ओर मुख वाली वेदी देवताओं की स्थापना करने के लिए बनवायें । उसमें अग्नि स्थापना करने के पश्चात् देवताओं का आवाहन करें । और इस प्रकार बत्तीस देवताओं को उसमें स्थापित करें ।

ग्रह स्थापन-पूजन

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु--ये संसार के हित करने वाले ग्रह बताए गए हैं । वेदी के मध्य भाग में सूर्य को अवस्थित जानना चाहिए । दक्षिण से लोहित (मंगल) को, उत्तर से बृहस्पति को, पूर्वोत्तर से बुध को, पूर्व से शुक्र को, दक्षिणपूर्व से चन्द्रमा को, पश्चिम से शनैश्चर को, पश्चिम दक्षिण से राहु को, और पश्चिम उत्तर से केतु को जानना चाहिए । सूर्य का अधिदेवता शिव को जानना चाहिए । इसी प्रकार चन्द्रमा के अधिदेवता पार्वती, मंगल के स्कन्द, बुध के भगवान् विष्णु गुरु बृहस्पति के ब्रह्मा, शुक्र के इन्द्र, शनैश्चर के यमराज, राहु के काल और केतु के चित्रगुप्त--ये इन नव ग्रहों के अधिदेवता हैं । अग्नि, जल पृथ्वी, विष्णु, इन्द्र, ऐन्द्री, प्रजापति, ब्रह्मा और सर्पगण-ये प्रत्यधिदेवता हैं । इस ग्रहयज्ञ में इन उपर्युक्त देवगणों के अतिरिक्त विनायक, दुर्गा, वायु, आकाश तथा दोनों अश्विनीकुमारों को भी व्याहुतियों द्वारा आवाहित करना चाहिए ।

मंगल के समेत सूर्य को लालवर्ण का स्मरण करना चाहिए । अर्थात् सूर्य और मंगल का स्वरूप लालवर्ण का होना चाहिए । इसी प्रकार चन्द्रमा और शुक्र को श्वेत का बुध और बृहस्पति को पीले वर्ण का, शनैश्चर और राहु को काले वर्ण का तथा केतु को धूम्र वर्ण का जिस रंग के ग्रह होते हैं उसी रंग का वस्त्र तथा पुष्प आदि भी उन्हें दान करना चाहिए । बुद्धिमान् पुरुष इस ग्रहयज्ञ में धूप, सुगंधित द्रव्य आदि तथा ऊपर से एक सुन्दर चंदोवा तान कर--जिस प्रकार अधिक सुन्दर हो--फल एवं पुष्प आदि सामग्रियों द्वारा ग्रहों की स्थापना करें । ग्रहपीड़ा शान्त्यर्थ निर्दिष्ट पदार्थ का दान करें । सूर्य के लिए गुड़ और चावल, चन्द्रमा के लिए घृत तथा दुग्ध से बना हुआ पदार्थ, मंगल के लिए हलुआ, बुध के लिए दूध तथा साठी का चावल, बृहस्पति को दही और चावल, शुक्र को घी और चावल, शनैश्चर को खिचड़ी, राहु को जौ से बना पदार्थ और केतु को विचित्र रंग का चावल दान करना चाहिए । इन्हीं सब खाद्य पदार्थों द्वारा ग्रहों की पूजा करनी चाहिए । तदन्तर पूर्व और उत्तर दिशा की ओर दही और अक्षत से अलंकृत, आम के पल्लवों से ढके हुए, फल और वस्त्र के समेत पंच अभंग (अवयवों) वाले कलश की स्थापना करनी चाहिए, जो टूटा हुआ न हो और उसी में वरुण की स्थापना करनी चाहिए ।

गंगा आदि सम्पूर्ण पवित्र नदियों की, समुद्रों की, सरोवरों की, हाथी, घोड़ा, सड़क, बिल, नदी के संगम, तालाब और गौओं के बाड़े के नीचे की मिट्टी लाकर उसे सम्पूर्ण औषधि मिश्रित जल संयुक्त कर यजमान के स्नान के लिए धर्मज्ञ पुरोहित को इस ग्रहयज्ञ में पहले ही से सुरक्षित रखना चाहिए । पश्चात् इस मंत्र से स्नान करावे--'सब समुद्र, नदियाँ, सरोवर, नद आदि यजमान के पापों के नष्ट करने वाले यहाँ आवें ।' मुनिश्रेष्ठ ! इस प्रकार मंत्रोच्चारण कर इन देवताओं का आवाहन कर घी, आदि सामग्रियों द्वारा हवन कार्य प्रारम्भ करना चाहिए ।

....

यज्ञ मंडप तथा यज्ञ कुण्ड का निर्माण कैसे करें

ग्रहों तथा तारा के बल को प्राप्त कर अर्थात् ऐसी लग्न में जब कि कर्त्ता की राशि पर ग्रहों तथा ताराओं की क्रूर दृष्टि न पड़ती हो, ब्राह्मणों द्वारा वेदपाठ तथा स्वस्ति वाचनादि मांगलिक स्तोत्र कराकर अपने घर की उत्तर-पूर्व दिशा की ओर बुद्धिमान् पुरुष मण्डप की रचना करें अथवा शिवालय की समीपवर्ती भूमि पर ही मण्डप बनायें । चार कोनों वाला दस हाथ अथवा आठ हाथ परिणाम का मण्डप विधान पूर्वक बनवाना चाहिए, जिसका प्रधान द्वार उत्तर दिशा की ओर हो । बुद्धिमान् पुरुष मण्डप की भूमि को प्रयत्नपूर्वक पूर्व तथा उत्तर की ओर ढालू रखें । मण्डप की पूर्व तथा उत्तर दिशा की ओर एक भाग में जिस प्रकार का विधान बतलाया गया है, उसी अनुकूल एक सुन्दर कुण्ड निर्मित करें, जो चारों ओर से समान तथा चौकोना हो, उसके मुख भाग पर योनि के आकार का घृतपात्र रखने का स्थान बना हो और वह मेखलाओं से अलंकृत हो, उस कुण्ड की मेखला चार अंगुल की विस्तृत तथा उतनी ही ऊँची होनी चाहिए, इसकी भूमि चारों ओर से बराबर और पूर्व और उत्तर की ओर झुकी हुई होनी चाहिए ।

सभी लोकों की शान्ति के लिए उक्त नवग्रह यज्ञ का विधान बतलाया गया है । ऊपर बतलाये गये परिणाम से अधिक वा न्यून कुण्ड अनेक प्रकार का भय देने वाला होता है अतः उपर्युक्त परिणाम के अनुकूल ही शान्तिकुण्ड बनाना चाहिए। ब्रह्मा ने लक्ष आहुति वाले हवन को इससे दस गुणा अधिक पुण्यदायी माना है, इसे प्रयत्न पूर्वक यथेष्ट आहुति तथा दक्षिणा से सम्पन्न करना चाहिए दो हाथ विस्तृत तथा चार हाथ लम्बा यज्ञकुण्ड इस लक्षाहुति के हवन में बनाना चाहिए, इसके भी मुखभाग पर पूर्ववत् योनि का निर्माण हो और उसके चारों ओर तीन मेखलाएँ बनी हों । उक्त कुण्ड के उत्तर और पूर्व की ओर तीन बीते पर अवस्थित, पूर्व और उत्तर की ओर झुका हुआ चारों ओर से चौकोना, विष्कम्भ का आधा ऊँचा स्थण्डिल (बालू की बनी हुई वेदी, जो तीन प्राचीरों से युक्त हो) देवताओं के स्थापित करने के लिए विश्वकर्मा ने बतलाया है । जिनमें प्रथम प्राचीर दो अंगुल ऊँची तथा शेष दो प्राचीरें एक अंगुल ऊँची होनी चाहिएं । पण्डित लोग इन सभी प्राचीरों की चौड़ाई तीन अंगुल बतलाते हैं । स्थण्डिल की भित्ति दस अंगुल ऊँची होनी चाहिए । उक्त रीति के अनुसार इस हवन में भी पुण्य तथा अक्षतों द्वारा देवताओं का आवाहन करना चाहिए । हे मुनियों में श्रेष्ठ ! अधिदेवता तथा प्रत्यधिदेवताओं के साथ सभी ग्रहों को सूर्य के सम्मुख ही स्थापित करना चाहिये । उन्हें उत्तर दिशा अथवा पराङ्मुख (पीछे की ओर) नहीं स्थापित करना चाहिए । इस हवन कार्य में लक्ष्मी की इच्छा करने वाले पुरुष को गरुड की विशेष पुजा करनी चाहिये । उसका मंत्र यह है–'हे गरुड़ ! सामवेद की ध्वनि ही तुम्हारा शरीर है। तुम परमात्मा विष्णु के वाहन हो, सर्वदा विषयुक्त पापों (सर्पों) का नाश करने वाले हो, अतः मुझे शान्ति प्रदान करो ।'

नवग्रह समिधा एवं हवनीय मंत्र

आक, पलास (ढाक), खदिर, अपामार्ग (चिराचिरा) पीपल, औदूम्बर (गूलर) शमी, दूब, और कुश--ये क्रमशः नव ग्रहों की समिधाएं हैं । इनमें से एक एक की एक सौ आठ, अथवा केवल अट्ठाईस समिधाओं द्वारा मधु, घृत, तथा दही के साथ हवन करना चाहिए । तर्जनी अंगुली से अंगूठे जितनी बड़ी, वरोहों से रहित, बिना डाली और पत्तों की समिधाएं बुद्धिमान् पुरुष सर्वदा सभी कार्यों में प्रयुक्त करें । परमार्थ के महत्त्व को जानने वाला यजमान सभी देवताओं के लिए बिल्कुल धीरे-धीरे --जिससे कोई दूसरा न सुन सके--अलग अलग देवताओं के उनके मंत्रों का उच्चारण करते हुए उन्हीं-उन्हीं के लिए हवन करें । घी में डुबोए हुए चरू भक्ष्य आदि पदार्थों की दस बार आहुति देकर तब व्याहृतियों का उच्चारण करके हवन करें ।

ब्राह्मण पुंगवों को चाहिए कि वे उत्तर दिशा की ओर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुख करके हवन करें, और चरु को देवता के मंत्रों के उच्चारण के साथ ही साथ अग्नि में छोड़ें । उस घी में डुबोई हुई चरु को भलीभाँति हवन कर लेने के पश्चात् सामान्य हवन करना चाहिये । ब्राह्माणों को 'आकृष्णेन'......इत्यादि मंत्र का उच्चारण कर सूर्य के लिए हवन करना चाहिए । इसी प्रकार चन्द्रमा के लिए 'आप्यायस्व' इत्यादि मंत्र का उच्चारण कर, मंगल के लिए 'अग्निर्मूर्धा दिवो.....' इस मंत्र का कीर्तन कर, सोमसुत बुध के लिए 'अग्ने विवस्वदुषस......' इस मंत्र का उच्चारण कर, बृहस्पति के लिए 'बृहस्पते परीदीयारथेन....' इस मंत्र का उच्चारण कर हवन करना चाहिये । शुक्र के लिए अन्यत...' इस मंत्र का पाठ करना बतलाया गया है, शनैश्चर के लिए-शन्नो देवीरभष्टय....' इस मंत्र का पाठ करके हवन करना चाहिये । राहु के लिए 'कयानश्चित्र आभुवत्.....' इस मंत्र का पाठ बतलाया जाता है, केतु की शान्ति के लिए 'केतुं कृण्वन्नपि....' इस मंत्र का पाठ करना चाहिये । शिवजी के लिए आ वो राज...' इस मन्त्र का पाठ कर हवन करना चाहिए । 'आपो हिष्ठा....' इस मंत्र का पाठ पार्वती के लिए और 'स्योन.' इत्यादि का स्वामिकार्तिकेय के लिए बतलाया गया है । विष्णु भगवान् का मंत्र 'विष्णोरिदं...' इत्यादि है और ब्रह्मा के लिए 'तमीस...' इत्यादि मंत्र का जप करना चाहिए । तत्पश्चात् 'इन्द्रमिद्देव तात्...' इस मंत्र का पाठ कर इन्द्र के लिए हवन करना चाहिये ।

यम के लिए 'आयं गौः.....' इत्यादि मंत्र का पाठ कर हवन करना चाहिए । काल के लिए 'ब्रह्म जज्ञानम्...' इस मन्त्र का पाठ प्रशंसित माना गया है । चित्रगुप्त का मन्त्र देवज्ञ लोग 'चाज्ञातम...' इत्यादि जानते हैं । 'अग्नि दूतं बृणीमहे...' इस मन्त्र को अग्नि के लिए लोग बतलाते है । 'उदुत्तमं वरुण...' इस मन्त्र का पाठ जल के लिए कहा गया है । वेदों में पृथ्वी के लिए 'पृथिव्यन्तरिक्षम्..' इस मन्त्र बतलाया गया है । विष्णु के लिए 'सहस्रशीर्षा पुरुष....' यह मन्त्र बतलाया गया है, इन्द्र के लिए 'इन्द्रायेन्द्रो मरुत्वत्'

यह मन्त्र कहा गया है । देवी के लिए 'उत्तानपर्णे सुभगे...' यह मंन्त्र बतलाया जाता है । प्रजापति के लिए 'प्रजापति .....' यह मन्त्र बतलाया गया है । 'नमोऽस्तु सर्पेभ्यः' यह मन्त्र कहा जाता है, ब्रह्मा के लिए 'एष ब्रह्मा य ऋत्विग्भ्यः...' यह मन्त्र कहा गया है । विद्वानों ने गणेश के लिए 'चाऽऽनूनं' यह मन्त्र बतलाया है । 'ज़ातवेदसे सुनवाम...' इत्यादि दुर्गा का मन्त्र कहा जाता है । आकाश का आदित्यप्रसत्लस रेतस...' यह मन्त्र बतलाया गया है । वायु का मन्त्र 'क्रारण शिशुर्महीनां' बतलाया है । अश्विनीकुमारों का 'एषो उषा अपूर्व्या...' यह मन्त्र कहा जाता है 'मूर्धानं दिव...' इस मन्त्र का उच्चारण कर पूर्णाहुति करनी चाहिए । उपरोक्त हवनीय पूर्ण वेद मंत्रों को पूजा विधि से पहले पुराणों के "अनुसार हवन कुण्ड निर्माण की विधि" में उल्लेखनीय कर दिया है ।

पूर्वकथित रीति के अनुकूल ही कलश स्थापन का विधान करके उसी प्रकार हवन कार्य का प्रारम्भ करें । एक लक्ष आहुतियों का हवन करके जितनी समिधाओं की संख्या हो उतनी आहुति पुनः दें, तत्पश्चात् घृतकलश द्वारा जलती हुई अग्नि के ऊपर घृत की धारा गिरावें । गूलर की ऐसी गीली लकड़ी, जिसमें खोखलापन न हो, सीधी हो, बाहु भर लम्बी हो, का स्रुवा बनवाकर उसी के द्वारा उन दोनों स्तम्भों (खम्भों) के ऊपर करके घी की धारा भलीभांति अग्नि के ऊपर गिरावें । हवन करते समय अग्नि, विष्णु, शिव, चन्द्रमा का सूक्त गान करना चाहिये । उसी प्रकार ज्येष्ठमास, महावैश्वानर साम का भी मांगलिक पाठ करवाना चाहिए ।

हवन की समाप्ति हो जाने पर बाजा तथा मांगलिक गीतों के मध्य में अभिषेचन के मन्त्रों का उच्चारण करते हुए तथा उत्तर की ओर मुख करके उसी जल कलश के द्वारा यजमान का स्नान वे चार ब्राह्मण करायें, जो विकृत अथवा न्यून अंगों वाले न हों तथा सुवर्ण निर्मित माला आदि से विभूषित हों । इस प्रकार स्तोत्र का उच्चारण करते हुए - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव-ये सब देवता तुम्हारा अभिषेचन करें । वासुदेव जगन्नाथ, शक्तिशाली संकर्षण, प्रद्युम्न, तथा अनिरुद्ध आदि तुम्हारी विजय करें । देवराज इन्द्र, भगवान् अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, शिव, ब्रह्मा के सहित शेषनाग और दिक्पाल गण--ये सब तुम्हारी रक्षा करें । कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, तुष्टि और क्रान्ति--ये माताएँ जो सब धर्म की पत्नियाँ हैं, आकर तुम्हारा अभिषेचन करें । सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु--सब ग्रह तृप्त होकर तुम्हारा अभिषेचन करें । देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प, ऋषि, मुनि, गौएं, देवमाताएं, देव-स्त्रियां, वृक्ष, नाग, दैत्य, अप्सराएं, सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, राजगण, वाहन, औषधियाँ, रत्न, काल, के अवयव-युग दिन, रात, पहर, घड़ी, पला, विपला आदि-नदियाँ, समुद्र, पर्वत, तीर्थ, बादल समूह, नद-ये सब तुम्हारे मनोरथों के पूर्ण करने के लिए तुम्हारा अभिषेचन करें ।' इस प्रकार श्रेष्ठ ब्राह्मणों से सम्पूर्ण औषधियों एवं सुगन्धित वस्तुओं द्वारा स्नान कराये जाने के बाद यजमान अपनी पत्नी के समेत वस्त्र धारण कर श्वेत

रंग के सुगन्धित चन्दनादि से विभूषित हो अपने परिनिष्ठित तथा विद्वान् पुरोहितों की विस्मय रहित हो प्रयत्न पूर्वक दक्षिणा आदि से पूजा करें ।

यजमान का स्नान तो उसी प्रकार कराना चाहिये, जैसा कि ऊपर वर्णित है । काम क्रोध से रहित हो शान्तात्मा यजमान को भी पूर्वकथित रीति से पृथक्-पृथक् पुरोहितों को दक्षिणा देनी चाहिए । इस नवग्रह यज्ञ में वेद के जानने वाले चार उत्तम ब्राह्मण चाहिये । वेदों के पारगामी शान्तचित्त दो ही पुरोहित इस सहस्र आहुतियों वाले हवन में होने चाहिएं, विस्तार सक्षमतानुसार करना चाहिए । उसी प्रकार इस लक्ष आहुति वाले हवन में यथाशक्ति अट्ठारह पुरोहित या सक्षमतानुसार होने चाहिएं अथवा उसी प्रकार चार ही पुरोहितों की नियुक्ति मत्सर रहित ही करनी चाहिए । मुनियों में श्रेष्ठ ! ऊपर कहे गये नवग्रह यज्ञ की अपेक्षा इस लक्ष हवन यज्ञ में दसगुणी अधिक खाद्य सामग्रियों का तथा आभूषणों का यथाशक्ति दान करना चाहिए ।

लोलुपता एवं कृपणता छोड़कर पूजन, दान, यज्ञ करें

इस प्रकार भक्तिपूर्वक कृपणता छोड़कर रत्न, सुवर्ण वस्त्रादि, धूप, पुष्प एवं चन्दन आदि पूजा की सामग्रियों द्वारा ग्रहों की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए । इस विधि के अनुकूल जो मनुष्य ग्रहों की पूजा करता है, वह सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करता है और मृत्यु के उपरान्त स्वर्ग लोक में पूजित होता है । जिस निर्धन मनुष्य को कोई एक ग्रह अत्यन्त पीड़ा देने वाला हो, उस बुद्धिमान पुरुष को चाहिए कि उस पीड़ा पहुँचाने वाले एक ग्रह की यत्नपूर्वक पूजा करके अन्य ग्रहों की भी पूजा करे । ग्रहगण, गौएँ, राजा तथा विशेषकर ब्राह्मण लोग पूजित होने पर तो पूजा करने वालों के मनोरथों को पूर्ण करते हैं, किन्तु अपमानित होने पर उसे जला देते हैं । जिस प्रकार बाण के प्रहार से बचाने में कवच वारण (बचाने वाला) होता है उसी प्रकार दुर्दैव के प्रहार का निवारण करने वाली यह शान्ति (गृहयज्ञ) धारण होती है इसलिए समृद्धि की इच्छा करने वाले मनुष्य को दक्षिणा के बिना यज्ञ नहीं करना चाहिए । क्योंकि भरपूर दक्षिणा देने पर ब्राह्मण भी सन्तुष्ट होकर मनोरथ सिद्ध कर सकता है ।

सर्वदा इस सहस्र आहुतियों द्वारा सम्पन्न होने वाला यह हवन नवग्रहों के यज्ञ में होता है । मुनिश्रेष्ठ ! विवाहोत्सव, देवप्रतिष्ठा आदि कार्यों में तथा चित्त के उद्विग्न होने अथवा आकस्मिक आपत्तियों के घटित होने पर सर्वथा विघ्नों के नाश के लिए यह दस सहस्र आहुतियों का हवन करने का विधान बतलाया गया है । अब इसके पश्चात् एक लाख आहुतियों वाले यज्ञ को सुनो, क्योंकि बुद्धिमान लोग सब प्रकार के मनोरथों की प्राप्ति इस लक्षहोम की महत्ता जानते हैं । यह पितरों को अतिप्रिय तथा भुक्ति और मुक्ति का देने वाला है ।

शक्ति सम्पन्न पुरुष को एक शय्या, जो उत्तमोत्तम वस्त्रों से संयुक्त हो, सुवर्ण निर्मित वाजूबन्द कान और अंगुलियों के विविध आभूषण तथा गले का हार आदि भी दान देना चाहिए । मनुष्य को यह यज्ञ, कृपणतावश दक्षिणा रहित नहीं करवाना चाहिए। अज्ञान से अथवा लोभ से जो इसमें यथेष्ठ दान नहीं करता उसका परिवार नष्ट हो जाता है । समृद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष को यथाशक्ति अन्न दान करना चाहिये क्योंकि अन्नदान के बिना किया हुआ यह यज्ञ दारिद्रय देने वाला होता है । अन्नहीन यज्ञ राष्ट्र का विनाशक होता है, मंत्रहीन पुरोहित का एवं दक्षिणाहीन हवन करने वाले का; इस प्रकार अनुचित रीति से सम्पन्न यज्ञ के समान कोई शत्रु भी संसार में नहीं है । अल्प धनवाले पुरुष को कभी इस एक लाख आहुतियों वाले हवन का अनुष्ठान नहीं करना चाहिए; क्योंकि यज्ञ के अवसर पर उत्पन्न होने वाली विग्रह जन्य अपूर्णता पीड़ाकारक होती है । इसलिए अल्पवित्त मनुष्य को विधिपूर्वक उसी (अपने पुरोहित की) अथवा दो वा तीन अथवा एक ही वेद पारगामी ब्राह्मण की प्रयत्नपूर्वक दक्षिणा आदि से पूजा करनी चाहिये, इससे अधिक की नहीं । अपने वित्त के अनुकूल लक्ष हवन का अनुष्ठान करना चाहिये, इससे अधिक फल की प्राप्ति होती है क्योंकि इसके विधान पूर्वक अनुष्ठान करने से मुनष्य अपने सभी मनोरथों को प्राप्त करता है और शिव के लोक में वसु, आदित्य तथा मरुत् गणों द्वारा एक सौ आठ कल्पपर्यन्त पूजित होता है, तत्पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति करता है ।

जो मनुष्य किसी विशेष अभिलाषा से इस ग्रहयज्ञ को विधिपूर्वक सम्पन्न करता है, वह अपने मनोरथ की प्राप्ति करता है और अनन्त पद का उपभोग करता है । पुत्र का चाहने वाला पुत्र प्राप्त करता है धनार्थी धन प्राप्त करता है, स्त्री चाहने वाला सुन्दर स्त्री प्राप्त करता है, कुमारी कन्या सुन्दर पति प्राप्त करती है । अधिकार से भ्रष्ट पुरुष अपने अधिकार को पुनः प्राप्त करता है और लक्ष्मी का अभिलाषी यथेष्ट लक्ष्मी प्राप्त करता है । जो जो कामना मनुष्य इस यज्ञ से करता है, उसे प्रचुर परिणाम में प्राप्त करता है । जो किसी कामना से रहित होकर इसका अनुष्ठान करता है उसका परब्रह्म में लय होता है । ब्रह्मा ने इस लक्षाहुति हवन से परिमाण में सौ गुणी अधिक आहुति, प्रयत्न, दक्षिणा एवं फलयुक्त कोटि होम का विधान बतलाया है । अर्थात् उसमें सभी वस्तुएँ सौगुणी लगती हैं । इस यज्ञ में भी पूर्वकथित रीति से ही ग्रहों तथा देवताओं का आवाहन और विसर्जन करना चाहिए ।

होम, स्नान तथा दान आदि कार्यों में भी उन्हीं मंत्रों को बतलाया गया है । कुण्ड, मण्डप एवं वेदी में अवश्य कुछ विशेषता है, उसे मैं बतला रहा हूँ, सुनो । इस कोटि हवन में सब ओर से बराबर, चौकोना, चार हाथ परिमाण का कुण्ड बनाना चाहिये, जो दो योनि वक्त्रों तथा तीन मेखलाओं से युक्त हो । पंडित लोगों की पहली मेखला दो

अंगुल ऊँची बनानी चाहिये । उसी प्रकार दूसरी को तीन अंगुल ऊँची बतलाते हैं । तीसरी मेखला की ऊँचाई और चौड़ाई चार अंगुल की होनी चाहिए। पहले कही गई उन दोनों मेखलाओं का विस्तार तो दो ही अंगुल करना चाहिए । योनि को सात व आठ अंगुल चौड़ी और एक बीता लम्बी बनानी चाहिये । इसका मध्यम भाग कच्छप की पीठ की भांति उठा हुआ हो, दोनों बगलों में एक अंगुल ऊँचाई हो । वह हाथी के ओंठ की भाँति तथा छिद्र युक्त होनी चाहिये । सभी कुण्डों में योनि के बनाने का यही लक्षण बतलाया जाता है । सभी स्थलों पर इस कोटि हवन में मेखलाओं के ऊपर पीपल के पत्ते के समान चार बीते की बेदी होनी चाहिए जो सुडौल तथा तीन मेखलाओं से युक्त हो । मेखला एवं वेदी की ऊँचाई का प्रमाण ऊपर कहा जा चुका है। इसमें सोलह हाथ का चौमुखा मण्डल होना चाहिये, उसमें पूर्व दिशा के द्वार देश पर ऋग्वेद पारगामी ब्राह्मण को बिठाना चाहिये । उसी प्रकार बुद्धिमान् पुरुषों को दक्षिण दिशा में यजुर्वेद के विद्वान् को पश्चिम दिशा में सामवेदाध्यायी की और उत्तर दिशा में अथर्ववेद विज्ञ ब्राह्मण को बिठाना चाहिए ।

हवन करने के लिए वेद तथा वेदांगों के पारगामी आठ विद्वानों को नियुक्त करना चाहिये, इसी प्रकार बारह और ब्राह्मणों को भी रखना चाहिए । इन सभी ब्राह्मणों की वस्त्र, पुष्प, माला, आभूषण एवं पूजन की अन्य सामग्रियों द्वारा भक्ति पूजा करनी चाहिये । पूर्व दिशा में नियुक्त ऋग्वेद के ज्ञाता ब्राह्मण को उत्तराभिमुख होकर रात्रि सूक्त, रौद्र सूक्त, पावमान सूक्त, सुमंगल, एवं शान्तिप्रद स्तोत्रों का पाठ करते हुए शान्त भाव से स्थित रहना चाहिये । दक्षिण द्वार पर नियुक्त यजुर्वेदी ब्राह्मण से शाक्त, शाक्र, सौम्य, कौष्माण्ड एवं शान्ति सूक्त का पाठ करवाना चाहिये । सामवेद के छन्दों का गायक पश्चिम दिशा से सुवर्ण, वैराज्ञ, आग्नेय, रुद्रसंहिता, ज्येष्ठसाम तथा शान्तिक का पाठ करे । उत्तर दिशा में स्थित अथर्ववेदी विद्वान् को भी शान्तिसूक्त, सौरसूक्त, कल्याणप्रद शाकुनक सूक्त, पौष्टिक एवं महाराज्य का पाठ करते रहना चाहिए । मुनिश्रेष्ठ ! इसमें भी पांच अथवा सात ब्राह्मणों द्वारा पूर्वकथित रीति से हवन कराना चाहिए । स्नान एवं दान के वही पूर्वकथित मंत्र हैं । केवल वसुधारा का विधान लक्ष हवन में कुछ विशिष्ट है ।

इस प्रकार की विधि से जो मनुष्य इस कोटि हवन का अनुष्ठान करता है, वह अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करता है और तत्पश्चात् विष्णु भगवान् के परमपद को प्राप्त करता है । जो मनुष्य इन तीनों ग्रहयज्ञों के विधान को विधिपूर्वक संपन्न करता है, वह सम्पूर्ण पापों से छुटकारा पा विशुद्धात्मा बन इन्द्र के पद को प्राप्त करता है ।

धर्मज्ञ पुरुष अट्ठारह सहस्र अश्वमेध यज्ञ करके जो फल प्राप्त करता है वह फल इस कोटि हवन के करने से प्राप्त करता है । जैसा कि शिव जी का कहना है, इस कोटि हवन के करने से एक सहस्र ब्रह्म हत्या एवं एक करोड़ गर्भहत्या करने का पाप नष्ट होता है । शत्रुओं को वश में करने के लिए, शत्रुओं का मारण एवं उच्चाटन आदि करने के लिए जो तंत्रकर्म किया जाता है, उन सबको, इस नवग्रह यज्ञ का अनुष्ठान के तत्पश्चात् करना चाहिये । इसके न करने से पुरुष का किया हुआ वह काम्य यज्ञ कभी सफल नहीं हो सकता, इसलिए उसके करने के पूर्व उक्त दस सहस्र आहुतियों वाले हवन का अनुष्ठान तो अवश्यमेव करना चाहिए ।

विशेष- एक लाख हवन हेतु दस लाख जप होना चाहिए लेकिन कलयुग में चौबीस लाख अर्थात् एक चरण जप करना पड़ता है । एक कोटि हेतु दस करोड़ मंत्र जप होना चाहिए । अर्थात चौबीस चौबीस लाख जप गायत्री-शिव हनुमान गणपति के हों और नौ करोड़ जप नवग्रहों के हों तथा जप की दशांश आहुति दी जाएँ तभी यज्ञ का पूर्ण फल प्राप्त होता है । लेकिन साधु और ब्राह्मण दशांश के दशांश का ही हवन कर हृदय से प्रभु आराधन करें और प्रभु कृपा से इच्छित फल प्राप्त करें। नवग्रहों की कृपा प्राप्त कर प्रत्येक क्षेत्र में विजयी होते हुए परमधाम प्राप्त करें ।

नवग्रह प्रसन्नार्थ दान

सूर्य के लिए कपिला गाय तथा चन्द्रमा के लिए शंख का दान देना चाहिए । मंगल के लिए भार ढोने में समर्थ, डील वाले एक लाल बैल का दान देना चाहिए । बुध के लिए सुवर्ण का दान करना चाहिये, बृहस्पति के लिए पीले रंग के दो वस्त्र देने चाहिएं । दैत्य गुरु शुक्र के लिए श्वेत रंग का बैल, सूर्य-पुत्र शनैश्चर के लिए काली गाय देनी चाहिए, राहु के लिए लोहे की बनी हुई वस्तु देनी चाहिएं और केतु के लिए श्रेष्ठ बकरा । यजमान को सुवर्ण के साथ ये दक्षिणाएं देनी चाहिएं । अथवा सभी ग्रहों के लिए सुवर्ण से अलंकृत गौएँ ही देनी चाहिए, अथवा सुवर्ण ही दे । तात्पर्य यह कि जिससे गुरु प्रसन्न हो वही वस्तु देनी चाहिए ।

दान के बाद प्रार्थना

हे कपिले ! तुम रोहिणी रूपा हो, सम्पूर्ण देव वर्गों की पूजनीया हो, सर्व तीर्थ तथा देवमयी हो, अतः मुझे शान्ति प्रदान करो । शंख ! तुम जगत् के सभी पुण्यमय पदार्थों में भी अधिक पुण्यप्रद हो, मंगलदायी में भी सर्वाधिक मंगलदाता हो, विष्णु भगवान् के

हाथों में सुशोभित रहते हो, अतः मुझे शान्ति प्रदान करो । जगत् को आनन्दित करने वाले! तुम वृषभ रूप से साक्षात् धर्म हो, भगवान् अष्टमूर्ति के वाहन हो अतः मुझे शान्ति प्रदान करो' । फिर सुवर्ण से प्रार्थना करें, 'सुवर्ण ! तुम भगवान् हिरण्यगर्भ (ब्रह्माजी) के गर्भ स्वरूप हो, अग्नि और सूर्य के बीज हो, अनन्त पुण्य तथा फल को देने वाले हो, अतः मुझे शान्ति प्रदान करो।' (वस्त्र से) 'यतः पीले वस्त्र का जोड़ा भगवान् विष्णु के समान फल देने वाली ; पूजनीय तथा सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाली हो, अतः मुझे नित्य शान्ति प्रदान करो, सारे लांगल (हल) तथा हथियार आदि के परिश्रमपूर्ण कार्य तुम्हारे ही अधीन हैं अतः मुझे शान्ति प्रदान करो, सूर्य के वाहन ! तुम नित्य ही सभी प्रकार के यज्ञ कार्यों के प्रमुख अंग रूप से निर्धारित रहते हो अतः मुझे शान्ति प्रदान करो, गौओं के अंगों में चौदहों भुवन निवास करते हैं अतः इस लोक तथा परलोक में वह हमारी लक्ष्मी के लिए सहायक हों, अतः भगवान् विष्णु की शैय्या सर्वदा अशून्य (लक्ष्मी से युक्त) रहती है अतः दान देने से हमारी शय्या भी प्रत्येक जन्म में अशून्य रहे । सभी रत्नों में सम्पूर्ण देवगण निवास करते हैं अतः रत्नों के दान करने से देवगण हमें भी रत्नों को दें, अन्य वस्तुओं के दान पृथ्वी दान के सोलहवें भाग की भी समानता नहीं कर सकते अतः इस लोक में उस परमपुण्यप्रद पृथ्वी दान के करने से मुझे शान्ति प्राप्त हो ।'

नवग्रह मंत्रों का अद्‌भुत चमत्कार

केन्द्र ने ग्रहों के मंत्रों की पूर्ण सत्यता, बलाबल तथा प्रभाव को पूर्णतयः जानने के लिए श्री अग्रवाल जी, जो दिल्ली महानगर के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी धनिक बनिक ईश्वर भक्त एवं परमात्म परायण हैं, के कल्याण हेतु नवग्रहों का संशोधन अर्थात नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्र जप पूर्ण विधि सहित अनुष्ठानात्मक पद्धति द्वारा लगातार तीन महीनों में पूर्ण किये । तीन माह अनुष्ठान के दौरान बड़ी सावधानी बर्तते हुए पूर्ण सतर्क रहना पड़ा लेकिन विनायक भगवान की कृपा से अनुष्ठान निर्विघ्न संपन्न हुआ और यज्ञान्त जो अनुष्ठान का परिणाम प्राप्त हुआ वह लेखनी द्वारा नहीं लिखा जा सकता है ।

श्री अग्रवाल जी की कुण्डली में बैठे हुए ग्रह दशा का सूक्ष्म विवरण इस प्रकार था । शनि दशम में बैठा है । राहु एकादश भाव में बैठा है । महादशा इस समय शनि में बृहस्पति की चल रही है जब शनि में राहु की दशा चली तो धन की महान क्षति हुई और राजकाज की तरफ से भी बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा । शनि की कराल चाल ने गौरवर्ण को पूर्ण कालिमायुक्त कर दिया था । कालिमा मुख्यतः मस्तक एवं हथेली पर स्पष्ट कोयलावत् झलकती थी । याद रखें जब शनि का प्रकोप होगा तब लक्षण उपरोक्त सा ही होता है ।

अग्रवाल जी का केन्द्र में आगमन हुआ और कुण्डली का स्पष्ट फलित सुनकर वो कुछ, आश्चर्य मान रहे थे कारण जो फलित बताया था वह वास्तव में शत प्रतिशत् उनके जीवन की गाथा थी । तब परामर्श के बाद ग्रहयज्ञ करने का सुझाव दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर अनुष्ठान का मुहूर्त निकलवाया और शुभ समय पर नवग्रह यज्ञ प्रारंभ किया । प्रथम शनि का एक करोड़ मंत्र संपन्न किया और मंत्र जप होने के बाद विधिवत यज्ञ सम्पन्न किया और यज्ञ होने के बाद हथेली की और मस्तक की कालिमा अचानक गायब हो गयी और गौर वर्ण झलकने लगा ।

मस्तिष्क में पूर्ण शान्ति प्राप्त हुई तथा मंत्र के प्रभाव से पूर्ण प्रसन्न होकर श्री अग्रवाल जी ने कहा, 'मैं शेष ग्रहों का जप यज्ञ करवाने हेतु कृत संकल्प लेता हूँ, अतः शेष आठ ग्रहों का जप प्रारम्भ करें ।' समय आने पर शेष ग्रहों का जप प्रारम्भ किया गया और जप यज्ञ सम्पन्न होने पर यज्ञान्त स्नान के बाद जो अग्रवाल जी को लाभ हुआ वह अनूठा था । सभी क्षेत्रों में महान लाभ प्राप्त हुआ विवाद तथा राजकाज सम्बन्धी सभी कार्यो में विजय प्राप्त हुई तथा यश अनोखी उपलब्धि प्राप्त हुई एवं प्रत्यक्ष चमत्कार यह हुआ अनिष्ट कारी रेखाएँ स्वतः ध्वस्त हो गयीं और शुभ रेखाओं का उदय हो गया । एक रेखा चन्द्र पर्वत से उदय हुई भाग्य रेखा में मिल गयी । दूसरा कमाल यह हुआ कि बाहरी मंगल से एक रेखा जो मस्तक रेखा को स्पर्श कर रही थी जो बार-बार दुश्मन पैदा करती थी

मंगल जप के प्रभाव से वह अदृश्य हो गयी अर्थात असंभव भी संभव हुआ ग्रह जप यज्ञ से। केन्द्र इस प्रयोग को करने के बाद इस तथ्य पर पहुँच गया है कि मंत्र जप करके हम वो कर सकते हैं जो नहीं हो सकता है । मंत्र के प्रभाव से भाग्य को बदला जा सकता है । हमारे ऋषि मुनियों भक्तों ने तप द्वारा परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन किये जो नहीं हो सकते । इस बात का इतिहास साक्षी है ।

अतः प्राणी-मात्र को जीवन में नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्र जप तथा प्रकृति को जानने हेतु योग माया दुर्गा के एक करोड़ मंत्र जप अवश्यमेव कर या करवा लेने चाहिएं । एक करोड़ नारायण के मंत्र जाप करना चाहिएं फिर इसके बाद जो गुरु मंत्र हो या जो इष्ट देव हो, निरन्तर जप करना चाहिए । ऐसा करने से अध्यात्मवादियों का अध्यात्म मार्ग प्रखर एवं निर्विघ्न पूर्ण हो परमात्म प्राप्ति होती है और भौतिकवादियों को अपार धन, धान्य, वैभव, ऐश्वर्य, कीर्ति प्राप्त होती है और अंत में वह प्रभु ज्योति में समाहित हो जाते हैं । जीवन में कभी भी उसे उतार चढ़ाव नहीं देखना पड़ता है और न ही किसी बीमारी का सामना ही करना पड़ता है । याद रखें मंत्र जप तब सम्पन्न कर या करवा लेना चाहिए जब जेब में पैसा और भुजाओं में ताकत हो । कवि ने स्पष्ट किया है कि :

दुःख में सुमिरण सब करे सुख में करे न कोय ।

जो सुख में सुमिरण करे दुःख काहे को होय ।।

अतः केन्द्र का यह अनुभव है कि प्राणी-मात्र को सर्वप्रथम नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्र जप कर या करवा लेना चाहिए ताकि जीवन सुखमय व्यतीत हो जाए और मन को यह समझा लेना चाहिए कि मंत्र जप यहाँ वहाँ कवच बनकर जीव मात्र की रक्षा करता है । अर्थात मरने के बाद भी काम आता है इसीलिए निरन्तर जप करते रहना चाहिए ।

उपरोक्त को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट हो गया तथा प्राणी-मात्र को ज्ञात भी हो गया कि तंत्र और मंत्र में क्या फर्क है । प्राणीमात्र उपरोक्त को पढ़कर मंत्र की गरिमा से परिचित होते हुए तंत्र और मंत्र के अस्तित्व को पहचान सकेंगे । यदि फिर भी कोई शंका पनपे या विश्वास न हो तो थोड़े दिन मंत्र जप अवश्य करें और मंत्र के प्रभाव का प्रत्यक्ष फल देखें । अतः मंत्र ही प्राणीमात्र के लिए लौकिक व पारलौकिक सुख प्रदान करने में सामर्थवान हैं ।

मंत्र महामणि विषय ब्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ।।

भगवान सूर्य

सूर्य ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ सूर्य स्तोत्र

(वेदों-पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुङ्गवाहनः ।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

सूर्य ग्रह सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

आत्मा कारक संसार पालक

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित सूर्य संबंधी कृति में प्रस्तुत है हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता सूर्य के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष-शास्त्र, हस्त-रेखा शास्त्र, अंक शास्त्र में सूर्य का महत्व तथा विश्व सहित भारत में सूर्य पूजा की परम्परा, आदि की प्रामाणिक जानकारी ।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय :--

1. सूर्य की उत्पत्ति
2. सूर्य का परिवार
3. द्युलोक में सूर्य की स्थिति
4. सूर्य के रथ का विवेचन
5. वेदों में सूर्य, सूर्योपनिषद
6. कृष्ण पुत्र साम्ब की सूर्य भक्ति
7. भास्त में सूर्य पूजा और सूर्य मंदिर
8. भारतीय पुरातत्व में सूर्य, सूर्य की प्रतिमाएं
9. सूर्य के नक्षत्र, उन नक्षत्रों में जन्में जातक के गुण धर्म
10. नक्षत्र विज्ञान और सूर्य
11. द्वादश भावों में सूर्य, सूर्य की महादशा
12. सूर्य के रत्न
13. हस्त रेखा शास्त्र में सूर्य
14. अंक शास्त्र में सूर्य
15. आदित्य स्तोत्र का रहस्य और उसका महत्व । सूर्य संबधी दोषों के निराकरण के सिद्ध उपाय

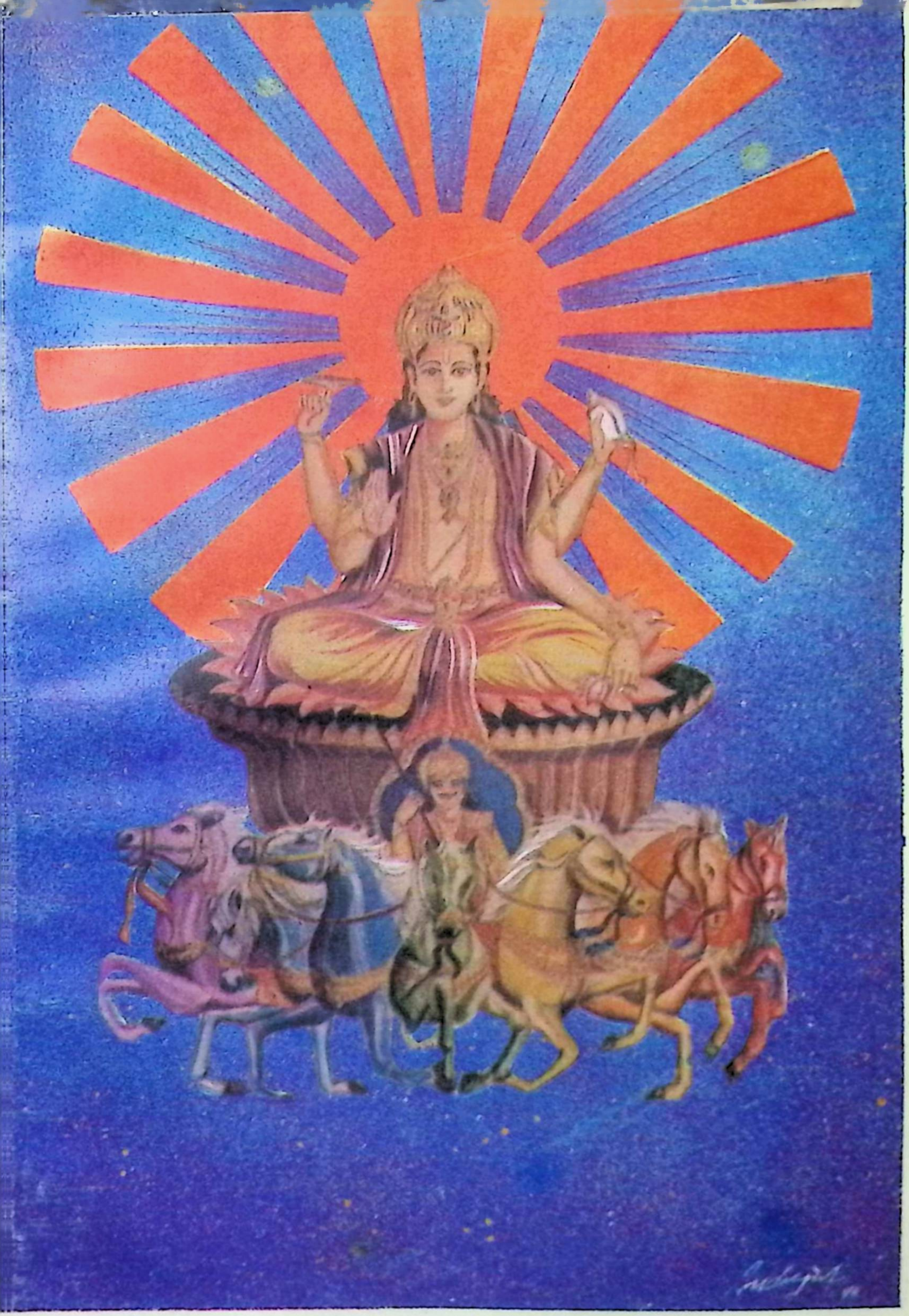

भगवान सूर्य

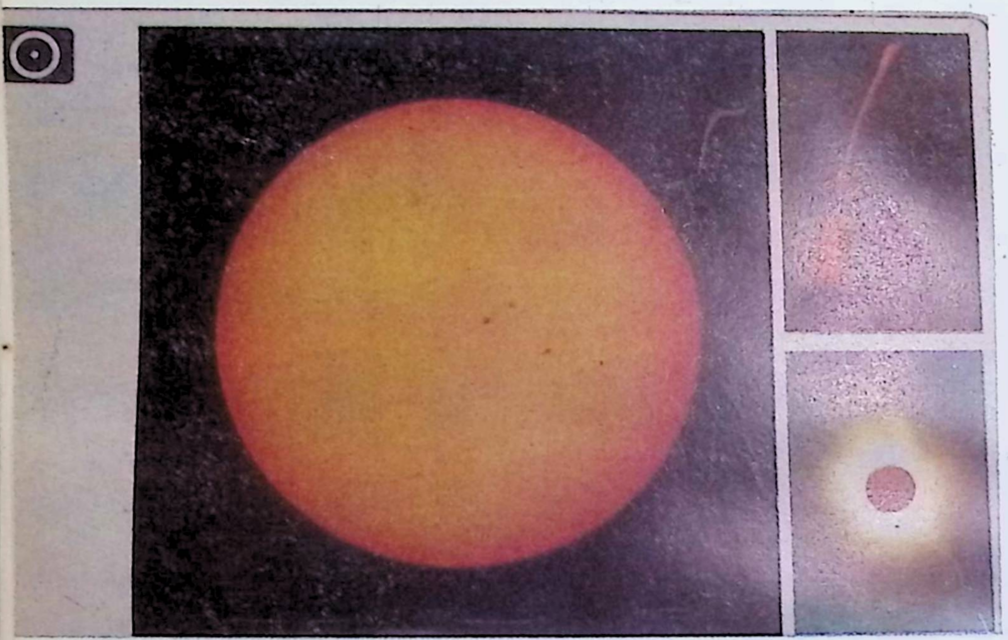

आकाश मण्डल में सूर्य की वास्तविक स्थिति टेलीस्कोप द्वारा, सूर्य पर धब्बे भी दिखाई दे रहे हैं।

सूर्य आत्मा जगतस्तथुषश्च -ऋग्वेद

ज्योतिषां रविरंशुमान । - गीता

वेदों में सूर्य को जगत का आत्मा कहा गया है । समस्त चराचर जगत की आत्मा सूर्य ही है । सूर्य से ही इस पृथ्वी पर जीवन है, यह आज एक सर्वमान्य सत्य है । वैदिक काल में आर्य सूर्य को ही सारे जगत का कर्ता-धर्ता मानते थे ।

सूर्य का शब्दार्थ है 'सर्व प्रेरक' । वह सर्व प्रकाशक सर्व प्रेरक और सर्व प्रवर्तक होने से सर्व कल्याणकारी है । ऋग्वेद के देवताओं में सूर्य का महत्वपूर्ण स्थान है । यजुर्वेद में 'चक्षो सूर्यो जायत' कहकर सूर्य को भगवान का नेत्र माना गया है । छान्दोग्यपनिषद में सूर्य को प्रणव निरूपित कर उनकी ध्यान-साधना से पुत्र प्राप्ति का लाभ बताया गया है । ब्रह्मवैवर्त पुराण तो सूर्य को परमात्मा का प्रतिरूप मानता है । प्रसिद्ध गायत्री मंत्र सूर्य परक ही है । सूर्योपनिषद में सूर्य को ही संपूर्ण जगत की उत्पत्ति का एकमात्र कारण निरूपित किया गया है और उन्हीं को संपूर्ण जगत की आत्मा तथा ब्रह्म बताया गया है । सूर्योपनिषद की श्रुति के अनुसार संपूर्ण जगत की सृष्टि तथा उसका पालन सूर्य ही करते हैं । सूर्य ही संपूर्ण जगत की अंतरात्मा है ।

अतः कोई आश्चर्य नहीं कि वैदिक काल से ही भारत में सूर्योपासना का प्रचलन रहा है । पहले यह सूर्योपासना मंत्रों से होती थी । बाद में जब मूर्ति-पूजा का प्रचलन हुआ तो यत्र-तत्र सूर्य मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ । भविष्य पुराण में ब्रह्मा-विष्णु के मध्य एक संवाद में सूर्य पूजा एवं मंदिर निर्माण का महत्व समझाया गया हैं । अनेक पुराणों में यह आख्यान भी मिलता हैं कि दुर्वासा के शाप से कुष्ठ रोग ग्रस्त कृष्ण पुत्र साम्ब ने सूर्य की आराधना कर इस भयंकर रोग से मुक्ति पायी थी । प्राचीन काल में भी भगवान सूर्य के अनेक मंदिर भारत में बने हुए थे । उनमें से आज तो कुछ विश्व प्रसिद्ध हैं ।

वैदिक साहित्य में ही नहीं आयुर्वेद, ज्योतिष, हस्तरेखा शास्त्र विषयक ग्रंथों में सूर्य का महत्व प्रतिपादित किया गया है ।

वेदों, उपनिषदों, पुराणों, में सूर्य संबंधी आख्यानों के विस्तृत अध्ययन के लिए पढ़िए लेखक की कृति------**'वृहद् सूर्य ग्रह पीड़ा निवारण विधि'** ।

खगोलीय विज्ञान में सूर्य

खगोल की दृष्टि से सूर्य पृथ्वी के सर्वाधिक निकट एक स्वयं प्रकाशित तारा है । वह एक गैस पिंड है, स्वयं के प्रकाश से प्रकाशवान । अन्य ग्रह जैसे चंद्र, पृथ्वी उसी से प्रकाशित हैं । इस दृष्टि से सूर्य तारा हुआ लेकिन फलित ज्योतिष में उसे तारा न मानकर ग्रह माना गया है ।

पृथ्वी से दूरी

सूर्य की पृथ्वी से मध्यम दूरी ९,२९,५७,२०९ मील है । उसका व्यास ८,६५,००० मील है । पृथ्वी से सूर्य का आयतन तेरह लाख गुना तथा परिमाण तीन लाख तैंतीस हजार गुना है । सूर्य का नाभिकीय तापमान ४,००,००,००० फैरनहीट अंश है ।

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को आत्मा का कारक माना गया है । सूर्य से संबंधित नक्षत्र– कृतिका, उत्तराषाढ़ा और उत्तराफाल्गुनी हैं । यह पांचवीं राशि सिंह का स्वामी है । इन नक्षत्रों में सूर्य की स्थिति के फल के लिए लेखक की सूर्य संबंधी कृति का अध्ययन करें ।

मंत्रेश्वर के अनुसार

सूर्य मधु पिंगल नेत्र, अस्य चतुरस्त्र देह, शुचि, पित्त प्रकृति, बुद्धिमान, अल्पकेशी पुरुष ग्रह है । कल्याण कर्ता सूर्य को मधु पिंगल नेत्र, अल्पकेशी पुरुषग्रह मानते हैं । उन्होंने उसे बुद्धिमान, सुंदर स्वरूप, गंभीर स्वर, सम शरीर, शूर, प्रतापी और स्थिर बताया है ।

भारतीय ज्योतिष में कुछ विद्वान् सूर्य को पाप ग्रह और क्रूर ग्रह मानते हैं । पाश्चात्य ज्योतिष सेफारियल सूर्य को शुभ मानते हैं । कुंडली में सूर्य को लग्न, नवम और दशम भाव का स्थिर कारक माना गया है ।

द्वादश भावों में सूर्य की स्थिति

प्रथम भाव - स्वाभिमानी, शूरवीर, पर्यटन प्रिय, क्रोधी, परिवार से व्यथित, धन में ह्रास- वृद्धि, वायु पित्तादि से शरीर कृश तथा क्षीण ।

द्वितीय भाव - भाग्यशाली, पूर्ण सुख की प्राप्ति, धन अस्थिर लेकिन उत्तम श्रेणी के कार्यों में व्यय, स्त्री के कारण परिवार से कलह, मुख, नेत्र, रोग ।

तृतीय भाव - प्रतापी, पराक्रमी, विद्वान्, विचारवान, कवि, राज्य सुख, मुकदमों में विजय, भाईयों से पीड़ा ।

चतुर्थ भाव - सुंदर, गुप्त विद्या प्रेमी, विदेश गमन, युद्ध, वाद-विवाद मुकदमों में पराजित, व्यथित मन ।

पंचम भाव - कुशाग्र बुद्धि, क्रोधी, वंचक, धन शनैः शनैः एकत्र, उदर-व्याधि ।

षष्ठ भाव - नीरोगी, न्यायवान, शत्रुनाशक, मातृ कुल से कष्ट ।

सप्तम भाव - कठोर, आत्मरत, राज्य वर्ग से पीड़ित, व्यापार में हानि, स्त्री कष्ट ।

अष्टम भाव - धनी, धैर्यवान, कार्य तत्पर क्रोधी, चिंतायुक्त, आलस्य से धन नाश, नशे से स्वास्थ्य हानि ।

नवम भाव - योगी तपस्वी, ज्योतिषी, साधक, सुखी, लेकिन स्वभाव से क्रूर ।

दशम भाव - व्यवहार कुशल, राज्य मान्य, उदार, ऐश्वर्य संपन्न, माता को कष्ट, स्वजन से विछोह ।

एकादश भाव - धनी, सुखी, बलवान, स्वाभिमानी, सदाचारी, शत्रुनाशक, अनायास संपत्ति लाभ, संतान से कष्ट, उदर पीड़ा ।

द्वादश भाव - उदासीन, आलसी, नेत्र रोगी, मस्तिष्क रोगी, युद्ध वाद-विवादों में विजयी

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि सूर्य चार, आठ, बारह भावों में जन्म का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नहीं है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले सूर्य के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए । ताकि सूर्य प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो।

हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य

जीवन पर पड़ने वाले सूर्य के प्रभाव को हाथ देखकर जाना जा सकता है । हाथ में अनामिका के मूल में हथेली पर सूर्य पर्वत की स्थिति निर्धारित की गई है । अनामिका को सूर्य की अंगुली माना गया है । सूर्य पर्वत पर स्थित रेखा या रेखाएं सूर्य रेखा कहलाती हैं ।

अंक शास्त्र में सूर्य ग्रह तथा सूर्य प्रधान जातक

ज्योतिषीय विद्याओं में से अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही प्रश्न कर्ता को स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं । अंक विद्या में १ का अंक सूर्य को प्राप्त हुआ है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है । अतः अंक एक का स्वामी सूर्य है । जिस तारीख को आपका जन्म हुआ है, गणित करिये और जो अंक आये वही आपका अंकाधिपति है । जैसे आपका जन्म १ तारीख को हुआ हो, १० तारीख को हुआ हो, १९ तारीख को एवं २८ तारीख को हुआ तो आपका अंकाधिपति सूर्य हुआ । यथा २८ तारीख तो २+८=१०, १+०=१ अर्थात एक अंक आया ।

अंक एक सभी अंकों का आधार स्तम्भ है और इसी अंक से अन्य अंकों का उद्गम हुआ है । अंक एक वाला व्यक्ति स्वाभिमानी और ईमानदार तथा किसी के सामने न झुकने वाला होता है । वह किसी के अधीन नहीं रहना चाहता, अधीन रखना चाहता है । अंक एक वाले जातकों को अपने ही अंक में कार्य करना चाहिए सफलता अच्छी मिलेगी ।

अंक एक वाले व्यक्तियों को सवा पाँच रत्ती का माणिक्य धारण कर सूर्य का जप करना चाहिए ऐसा करने से चहुमुखी विकास होगा ।

सूर्य प्रधान जातक बहुत तेजस्वी सद्‌गुणी, विद्वान्, उदार, स्वभाव, दयालु, एवं मनोबल आत्मबल युक्त होता है । वह स्वतः ही कार्य करता है, नौकरी सरकारी करता है और कुशल प्रशासक होता है ।

भोजन एवं रहन सहन में नियम रखते हैं फलतः स्वस्थ्य खराब नहीं होता और चालाक संशोधन, सामाजिक कार्यकर्ता, सत्ताप्रिय एवं शरीर अच्छा होता है । सूर्य प्रधान जातक में बहुत सद्‌गुण होते हैं और वह हमेशा ईमानदारी बर्तता है जिससे यश भी प्राप्त होता है ।

सूर्य प्रधान जातक में सब अच्छाई ही नहीं होती है कुछ बुराई भी बहुत महत्वपूर्ण होती है जैसे, अभिमान, लोभ, अविनय, आलस्य, बाह्य, दिखावा, जल्दबाजी, अहंकार आदि उसके जीवन में भरे रहते हैं जिससे उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता है और दुश्मनों को नहीं पहचान पाता, गुस्सा बहुत आता है और हर कार्य में दखल देता है हर बात में टाँग अड़ाता है फलस्वरूप कई बार अपनों का प्रेम भी खो बैठता है ।

सूर्य ग्रह सम्बन्धी अन्य विवरण

सूर्य प्रत्यक्ष देवता है, वह समस्त जगत का नेत्र हैं, इन्हीं से दिन रात का सृजन होता है । इनसे अधिक निरन्तर रहने वाला अन्य देवता नहीं है । इन्हीं के उदय होने पर ही सभी का उदय होता है और अस्त होने पर सब अस्तंगत हो जाते हैं । सूर्य ही कालचक्र के प्रणेता हैं सूर्य से ही दिन रात्रि, पल, मास, पक्ष तथा संवत् आदि का विभाजन होता है । सूर्य सम्पूर्ण संसार के प्रकाशक हैं, इनके बिना सब अंधकार है ।

सूर्य आत्मकारक ग्रह है, यह राज्य सुख, सत्ता, ऐश्वर्य, वैभव, अधिकार आदि प्रदान कारक ग्रह है । यह सौर मण्डल का प्रथम ग्रह है । सारे सौर मण्डल का आधार स्तम्भ है अर्थात् सारा सौर मण्डल, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि सूर्य से शक्ति पाकर इसके इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं । यह सिंह राशि का स्वामी हैं । परमात्मा ने सूर्य को ब्रह्मांड में प्रकाश करने व संचालन करने, तेज रूप से शरीर में ज्योति प्रदान करने तथा जठराग्नि के रूप में आमाशय में अन्न को पचाने का कार्य सौंपा है । ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को मस्तिष्क का भी अधिपति बताया गया है । ब्रह्मांड में विद्यमान प्रज्ञा शक्ति तथा चेतना तरंगों से मस्तिष्क की गतिशीलता, उर्वरता एवं सूक्ष्मता के विकास अथवा ह्रास में भी सूर्य का योगदान महत्वपूर्ण है । यह संसार के सभी जीवों द्वारा किये गये सभी कर्मों का साक्षी है तथा प्रथम न्यायाधीश है । यह जातक को उचित तथा अनुचित का ज्ञान कराता है और उसे कार्य करने की प्रेरणा देता है ।

जो जातक अपनी शक्ति तथा ऐश्वर्य के मद में चूर होकर जानते हुए भी निन्दनीय कर्म कर दूसरों का शोषण करता है और माता-पिता की सेवा न कर उन्हें नाना प्रकार के कष्ट पहुंचाता है और सताता है तो सूर्य उसके इस कर्म का भुगतान उसकी विद्या, यश, धन आदि पर पूर्णतया रोक लगाकर उसे बुद्धि से दीन-हीन बनाकर पग-पग पर अपमानित करवा कर उसका कर्मभोग करवाता है । नेत्रों की ज्योति कम या बिल्कुल अन्धा भी कर देता है । अथवा व्यक्ति जन्म से ही अन्धा होता है । श्रेष्ठ कर्म करने वालों को सद्बुद्धि, विद्या, धन, यश आदि प्रदान करवाता है । उन्हें उत्तम यश का भागी बनाकर कर्म भोग करवाता है । अध्यात्मवादियों को भगवान के रसास्वादन में लगाकर उनके आध्यात्मिक बल को बढ़ाता है । सूर्य से लाल स्वर्ण रंग की किरणों का ताप न मिले तो कोई भी वनस्पति उत्पन्न नहीं हो सकती । इसी से यह जगत स्थिर रहता है तथा चेष्टाशील होता हुआ दिखलायी पड़ता है ।

जातक अपना हाथ देखकर स्वयं निर्णय कर लें । यदि सूर्य रेखा हाथ में बिल्कुल नहीं है या मामूली सी है तो उसके फलस्वरूप विद्यार्थी स्मृति हीन होगा । उसका पढ़ा

लिखा उसको याद नहीं रहेगा । धनवान धन को नहीं रोक पायेंगे । पिता-पुत्र में विवाद की स्थिति बनी रहेगी । यदि इस रेखा में द्वीप है तो निश्चित ही इल्जाम लगेंगे । अपराध कोई और करेगा और भुगतान कोई और करेगा ।

सूर्य क्रूर ग्रह भी है और जातकों के स्वभाव में तीव्रता देता है । यदि ग्रह नीच है तो नीच तीव्रता जातक के लिए घातक होती है । दुनियाँ की कोई औषधि, यन्त्र, जड़ी, बूटी नहीं है जो इस तीव्रता को अनुकूल कर सके । केवल मन्त्र में ही इतनी शक्ति है जो इस तीव्रता को अनुकूल कर देता है ।

सूर्य जीव मात्र को प्रकाश देता है । जिन जातकों को सूर्य आत्म में प्रकाश नहीं देता है वे जातक गलत से गलत, निन्दनीय तथा दूषित कार्य कर बैठते हैं और यह भी याद रहना चाहिए कि जो कर्म कर दिया है, उसका भुगतान उसी को करना पड़ता है । जिन जातकों के हाथ में सूर्य रेखा प्रबल साफ सुथरी होती है, उन्हें यह समझना चाहिए कि उन्हें सूर्य पूर्ण प्रकाश दे रहा है । ऐसे जातक कभी गलत और निन्दनीय कार्य नहीं करते और उनका ओज और तेज सराहनीय होता है ।

सूर्य ग्रह से सम्बन्धित रोग, उनके उपशमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न, रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी बूटियों को धारण करने की विधि, ग्रह शान्ति के लिए दान तथा सूर्य ग्रह सम्बन्धित व्यापार और नौकरी आदि का विवरण इस प्रकार है:—

रोगः सिरदर्द, ज्वर, नेत्रविकार, मधुमेह, टाईफाईड, पित्त रोग, हैजा, हिचकी आदि ।

यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाये तो ग्रह का प्रकोप अर्थात ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा लगी हुई समझनी चाहिए और बिना किसी के पूछे मन्त्र जाप, रत्न, जड़ी बूटियों को धारण करना चाहिए । इससे रोग हल्का होगा और ठीक होने लगेगा ।

रत्न/उपरत्नः माणिक्य, लालड़ी, तामड़ा, महसूरी ।

पांच रत्ती का रत्न रविवार को कृत्तिका नक्षत्र में अनामिका अगुंली में धारण करना चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव कम होना आरम्भ हो जाता है और अच्छा रत्न पहनते ही ४० प्रतिशत राहत प्राप्त होती है ।

रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती है, वह रत्न पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता है । इसलिये रत्न पहनने से पहले अर्थात अँगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य कर लेनी चाहिए क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही है । जिस प्रकार किसी मूर्तिकार के घर से लाई हुई किसी भी

देवता की मूर्ति को जब मन्दिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व प्राण-प्रतिष्ठा विधान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है, इसी प्रकार अँगूठी में रत्न जड़वाने के बाद उसमें भी प्राण-प्रतिष्ठा आवश्यक है ।

जड़ी-बूटियां :- बेलपत्र की जड़ रविवार को हस्त नक्षत्र या कृत्तिका नक्षत्र में लाल धागे में दांये बाजू में बांधनी चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव कम होना शुरू हो जाता है ।

दान: कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों में :- स्वयं के वजन के बराबर गेहूँ, लाल और पीले मिले हुए रंग के वस्त्र, लाल फल, लाल मिठाई, सोने का कण, गाय, गुड़ और तांबा आदि । दान श्रद्धापूर्वक दक्षिणा सहित ब्राह्मण को संकल्प पूर्वक दान करना चाहिए ।

व्यापार और नौकरी :- यदि सूर्य अधिक अंशों में बलवान हो तो निम्नलिखित व्यापार तथा नौकरी में विशेष लाभ होता है ।

व्यापार :- स्वर्ण का व्यापार, शस्त्रादि का निर्माण, ऊन का व्यापार, पर्वतारोहण, औषधि विक्रय, जंगल की ठेकेदारी, लकड़ी बेचना या फर्नीचर का निर्माण करना, विद्युत सम्बन्धी व्यापार, फोटोग्राफी आदि ।

नौकरी :- सैक्रेट्री, उच्च अधिकारी, एवं मजिस्ट्रेट पद, प्रबल राजयोग अर्थात राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, राज्य मन्त्री, संसद सदस्य इन्जीनियर, न्याय सम्बन्धी कार्य, राजदूत तथा व्यवस्थापक आदि ।

सूर्य ग्रह सम्बन्धित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र, मन्त्र तथा गायत्री आदि यहां पाठकों की सुविधा के लिए दिये जा रहे हैं, जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । सूर्य के सामने खड़े होकर नित्य 108 बार स्तोत्र का पाठ करने से चमत्कारी लाभ होता है । सूर्य रेखा बनने लगती है और स्मृति लौट आती है ।

अथ आदित्य मंत्र

विनियोग :- *ॐ आकृष्णेनि मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपांगिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।*

(नीचे कोष्ठक में लिखे गये अंगों को हाथ की पाँचों उँगलियों से छूते रहें ।)

देहांगन्यास :- आकृष्णेन शिरसि (सिर) । रजसा ललाटे (माथा) । वर्तमानो मुखे (मुंह) । निवेशयन् हृदये (हृदय) । अमृतं नाभौ (नाभि) मर्त्यं च कट्याम् (कमर)। हिरण्ययेन सविता ऊर्व्वोः (छाती) । रथेना जान्वोः (घुटना) । देवो याति जंघयोः (जांघ) । भुवनानि पश्यन् पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- आकृष्णेन रजसा अंगुष्ठाभ्यां नमः । वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नमः । अमृतं मर्त्यं च मध्यमाभ्यां नमः । हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नमः । सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नमः । देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः (हृदय) । वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा (सिर) । अमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट् (शिखा) । हिरण्येन कवचाय हुँ । (दोनों कन्धों) । सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)। देवो याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट् (दायें हाथ को सिर के ऊपर घुमाकर दांये हाथ की पहली दोनों उंगलियों से बांये हाथ पर ताली बजायें ।)

अथ ध्यानम् :- *पद् मासनः पद् मकरो .द्विबाहुः पद् मद्युतिः सप्ततुरंगवाहनः ।*
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

सूर्यगायत्री :- ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

सूर्य बीज मंत्र :- ॐ हाँ हीं हौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः– *ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः हौं हीं हाँ ॐ सूर्याय नमः ।*

जपमंत्र :- ॐ हाँ हीं हौं सः सूर्याय नमः नित्य जप 7000 प्रतिदिन

सूर्याष्टक स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवं-सन्धिच्छेद सहित

आदिदेव:, नमस्तुभ्यम्, प्रसीद, मम भास्कर ।
दिवाकर, नमस्तुभ्यम्, प्रभाकर नमो, अस्तु, ते ।।
सप्त, अश्वरथम्, आरूढम्, प्रचंडम्, कश्यप, आत्मजम् ।
श्वेतम्, पद्मधरम्, देवम, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम् ।।
लोहितम्, रथम्, आरूढम्, सर्वलोकम्, पितामहम् ।
महा, पापहरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम् ।।
त्रैगुण्यम्, च महाशूरम्, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वम् ।
महा, पापहरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम् ।।
बृंहितम्, तेज:, पुंजम्, च, वायुम्, आकाशम्, एव, च ।
प्रभुम्, च, सर्वलोकानाम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम् ।।
बन्धूक, पुष्प्, संकाशम्, हार, कुण्डल, भूषितम् ।
एक-चक्र-धरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम् ।।
तम्, सूर्यम्, जगत्, कर्तारम्, महा-तेज:, प्रदीपनम् ।
महापाप-हरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम् ।।
सूर्य-अष्टकम्, पठेत्, नित्यम्, ग्रह-पीड़ा, प्रणाशनम् ।
अपुत्र:, लभते, पुत्रम्, दरिद्र:, धनवान्, भवेत् ।।
आमिषम्, मधुपानम्, च य: करोति, रवे:, दिने ।
सप्त, जन्म भवेत्, रोगी, प्रतिजन्म, दरिद्रता ।।
स्त्री, तैल, मधु, मांसानि, य: त्यजेत्, तु, रवेर्, दिने ।
न, व्याधि: शोक, दारिद्रयम्, सूर्यलोकम्, च, गच्छति ।।

नोट :- सूर्याष्टक सिद्ध स्तोत्र है । प्रातः स्नानोपरान्त ताँबे के पात्र से सूर्य को अर्घ देना चाहिए, तदोपरान्त सूर्य के सामने खडे होकर सूर्य को देखते हुए 108 पाठ नित्य करने चाहिए । नित्य पाठ करने से मान सम्मान, नेत्र की ज्योति जीवनपर्यन्त बनी रहेगी ।

सूर्य क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या ये खाली बैठा है ? क्या इसके पास कोई काम नही है ?
क्या ये शुभ ग्रह होते हुए भी शत्रुता कर रहा है ?
समस्त भ्रांतियों का रहस्य

सूर्य जगत् का पिता एवं आत्मकारक ग्रह है । सूर्य प्राणीमात्र को प्रकाश देता है और इन्हीं के प्रकाश में प्राणी सारे कर्म करता है । यदि सूर्य प्रकाश न दे तो सृष्टि का संचालन हो ही नहीं पाएगा । वृक्ष, फल, फूल, औषधि वनस्पति आदि कुछ भी नहीं होगी, क्योंकि ये सब सूर्य की ही किरणों से ऊष्णता लेकर अंकुरित होते हैं । जलचर, थलचर, नभचर आदि सभी जीवों को सूर्य की किरणों से ही जीवन-शक्ति मिलती है । स्वयं नारायण ही सूर्य का रूप धारण कर त्रिलोक को प्रकाशित कर, पालन करते हैं । अथर्ववेद में कहा गया है कि हे सूर्य नारायण तेरी एक किरण मस्तिष्क तथा नेत्र में प्रवेश कर मस्तिष्क में चेतना शक्ति और नेत्र में देखने की शक्ति प्रदान करती है । एक किरण हृदय में प्रवेश कर हृदय को क्रियाशील कर शरीर को गतिशील करती है । एक किरण जठराग्नि में प्रवेश कर पाचन शक्ति को क्रियाशील करती है, जिससे मानव जीवन शक्ति प्राप्त कर जीवित रहता है । शास्त्र के अनुसार **तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञान विज्ञान मोक्षदम् । महापाप हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्** ॥ अर्थात् वेद, उपनिषद, पुराण, श्रुति, स्मृतियों में सूर्य की महिमा का प्रचुर मात्रा में वर्णन है ।

पिछले संदर्भ में सूर्य महिमा की अलग-अलग रूप से व्याख्या की गयी है । इन संदर्भों में हम स्पष्ट करते हैं कि सूर्य क्यों प्रताड़ित करता है ।

याद रखें, पूर्वार्जित संस्कारों तथा देवकृपा से जातक धन-धान्य, समृद्धि, वैभव-ऐश्वर्य प्राप्त कर उपभोग करता है । जब उसका ऐश्वर्य बढ़ता है, तब वह धन के वशीभूत होकर सूर्य के प्रकाश में अति निन्दनीय कार्य आरंभ कर देता है । धन को कई गुणा अधिक बढ़ाने के लिए बेईमानी, बदमाशी, फरेबी तथा धोखा-धड़ी आदि घृणित कार्य करता है । घृणित निकृष्ट कार्य करते समय उसे आभास नहीं होता कि मैं कितना अनर्थ कर रहा हूँ । मदान्ध होकर कार्य करता है, और दूसरों का शोषण कर आनंदित होता है । समाज, कुल, परिवार किसी की नहीं सुनता और अपने को ईश्वर मानता है । अंधेरे-उजाले में क्रूर दलित, गलित कुकृत्य करता है । परन्तु भगवान सूर्य कर्म साक्षी हैं अतः प्राणीमात्र का कर्म पिटारा उनके समीप रहता है जिसका यथावत् भुगतान प्राणी के न चाहने पर भी निरन्तर करावाते हैं।

अब आप हार्दिक विचार करें कि इसमें भगवान् सूर्य नारायण का क्या दोष है । सूर्य ने तो प्रकाश दिया लेकिन जातक ने प्रकाश को प्रकाश नहीं माना और अपनी मनमानी की । ऐसे जातक को सूर्य दण्ड न दे तो प्रकृति का संचालन व सन्तुलन बिगड़ जाएगा । सत्य और धर्म की दुहाई देने वाले नहीं रहेंगे ।

अब चिंतन करें कि जो हमने निंदित अत्याचार, पापाचार, निकृष्ट, क्रूर कर्म, किये हैं, उन सबका यदि भगवान सूर्य यथावत् भुगतान करा शुद्ध कर रहे है तो अपराध हमारा है या भगवान् सूर्य का । क्या कर्म का कर्मफल प्राप्त नहीं होना चाहिए ? आत्म मंथन करें तो स्पष्टतः प्रत्यक्ष हो जाएगा और भगवान् सूर्य नारायण की उदारता व उनकी कृपा का अनुभव प्राप्त हो सकेगा ।

याद रखें, कर्म का भुगतान करानें के लिए सूर्य द्वितीय या बारहवें भाव में बैठता है नेत्र की ज्योति को समाप्त कर देता है और उसको अपमानित कराता है, तथा देखते हुए भी उसे नहीं दिखाई देता है । वह जानते हुए भी नहीं जान पाता और सात जन्मों तक नेत्रों में रोशनी नहीं रहती इस प्रकार सूर्य जातक को कर्मभोग भुगवाता है ।

यदि आप पुरुष या स्त्री है

पूर्व जन्म के अति शुभ कर्मों के अनुसार सूर्य की कृपा से आपको पूर्ण राज्य वैभव मिला । धन-धान्य, संमृद्धि एवं वैभव से आप परिपूर्ण हुए । सूर्य राज्यपद प्राप्त कराता है, इसलिए सूर्य ने आपको सफल राजनैतिक बनाया । परन्तु आप श्री और ऐश्वर्य के मद में आकर मदान्ध हो गये और अपनी पत्नी को छोड़ अन्य से नाता जोड़ लिया, अपनी पत्नी से दुर्व्यवहार किया और वह दुखी होकर रो-रो कर तड़प-तड़प कर मर गयी, आपने उसकी एक न सुनी और समाज व कुल की भी परवाह नहीं की ।

सूर्य की कृपा से ही उपरोक्त सब कुछ आपको प्राप्त हुआ था परन्तु आपने उसका दुरुपयोग किया । उपरोक्त कर्मों के भुगतान हेतु परमात्मा लिंग परिवर्तन कर देगा, स्त्री हैं तो पुरुष, पुरुष हैं तो स्त्री बना देगा और सूर्य कर्म के भुगतान हेतु पत्नि में इतनी क्रूरता और हिम्मत देगा कि वह पुरुष से डरे नहीं और पुरुष से मुकाबले का युद्ध करे और सूर्य के कारण उसमें इतनी क्षमता पैदा हो जाएगी कि पुरुष को भयंकर गाली-गलौच और कटु शब्द बोल-बोल कर उसके प्राणों का शोषण करेगी । स्त्री शब्दों से ही पुरुष को नाच नचा डालती है और पुरुष की एक नहीं सुनती, सामने खड़ी होकर पूर्ण मुकाबला करती है और झुकने या कहना मानने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता । कारण कि सूर्यप्रधान जातक टूट सकता है झुक नहीं सकता, इसलिए स्त्री भी झुकने का नाम नहीं लेती, टूट तो सकती है, भगायी जा सकती है और मारी भी जा सकती है परन्तु झुकने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता ।

तुमने क्रूरता से पत्नि को सताया है, पत्नि सूर्य का बल पाकर तुम्हें सता रही है इसमें सूर्य का कोई दोष नहीं, दोष तुम्हारा ही है ।

इसका बोध जन्मांक से होता है, सूर्य जन्मांक में सप्तम भाव में बैठता है और सप्तम भाव में बैठकर पत्नि या पति को इतनी क्रूरता देता है कि सारा जीवन गृहस्थ का आनन्द नहीं ले पाते । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम भाव का सूर्य (किसी भी राशि का हो) पति-पत्नि में विवाद अवश्यमेव प्रदान करेगा । यदि पाप की ओर अधिकता होगी तो सूर्य के साथ मंगल, शनि और राहु भी साथ आ बैठते हैं या दृष्टि सम्बन्ध हो जाता है तो भयंकर युद्ध की स्थिति प्रबल हो जाती है और लाख प्रयत्न करने के बाद भी जीवन गृहस्थ सुख, दाम्पत्य सुख से वंचित रह जाता है ।

यदि आप सच्चरित्र हैं, एक पत्निव्रतधारी हैं, पत्नि के साथ सद्व्यवहार, सद्विचार, तथा प्रेमपूर्वक उसका लालन-पालन कर रहे हैं तो, हर परिस्थिति में अनुकूलता बनी रहती है । अगले जन्म में भगवान सूर्य परम प्रसन्न होकर उच्चतम पढ़ी लिखी विदुषी, अच्छे कुल से सम्बन्ध रखने वाली, अच्छे विचार वाली पतिपथगामिनी, पतिपरायणा सुशील भार्या प्रदान करेगा । स्वर्गतुल्य सुख का उपभोग कराएगा और उसी भार्या के गर्भ से बड़ी-बड़ी महान आत्माएं उत्पन्न होंगी जो मरणोपरान्त भी आपकी यश, कीर्ति को बढ़ाएंगी जिससे आपका परलोक भी सुधरेगा ।

यदि आप विद्यार्थी हैं

विद्या का महत्त्व :-

आदिकाल से ही विद्या का महत्त्व अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है और आज भी है तथा हमेशा रहेगा । बचपन से ही जातक को विद्यालय में प्रवेश दिलवाया जाता है ताकि जातक शनैः शनै विद्या को प्राप्त करता हुआ शिखर तक पहुँच जाए । कारण विद्या ही एक ऐसा धन है जो हर वक्त संग रहता है और हर वक्त काम आता है । इसको भाइयों में बांटा नहीं जा सकता चोर चुरा नहीं सकता, ऐसी है यह विद्या । विद्या से ही विनय प्राप्त होता है, विनय से योग्यता और योग्यता से धन प्राप्त होता है और धन से धर्म होता है तभी शान्ति और सर्वसुख की अनुभूति होती है । विद्यावान जातक कभी भूखा नहीं मरता । चाणक्य ने तो स्त्री के लिए भी लिखा कि यदि पढ़ी-लिखी गुणवान पत्नि घर में हो तो वह सुचारु रूप से घर की रक्षा कर सकती है । आकाश पर न तो कोई जा सकता है और न ही वहाँ से सीधा सम्पर्क ही किया जा सकता है लेकिन विद्वानों ने हजारों मील की ऊँचाईयों पर बसे इस आकाश के चाँद सितारों का हिसाब तक लगा लिया । इसे आप विद्या और बुद्धि की शक्ति ही कहेंगे । अतः प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विद्या का उच्च स्थान है ।

शास्त्र का मत है कि विद्या के बगैर प्राणी पशु के समान है तथा वह पृथ्वी का भार है और पशुवत कार्य कर जीवन यापन कर रहा है ।

अतः विद्या प्राप्त करना सभी के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । हर किसी को आद्योपरान्त विद्या प्राप्त करते रहना चाहिए जिससे आपकी यश कीर्ति वैभव की पूर्ण पताका फहरा सके ।

लेकिन विचार करें कि प्रत्येक जातक विद्या प्राप्त करना चाहता है और प्रत्येक मां बाप अपने बच्चे को विद्यावान बनाना चाहते हैं । अच्छे उच्चकोटि के विद्यालयों में प्रवेश दिलवाते हैं, ट्यूशन पढ़वाते हैं लेकिन सभी कुछ करने के बाद भी वो यह ध्यान नहीं देते हैं कि हमारे सभी कुछ करने के बाद भी हमारा बच्चा विद्या प्राप्त क्यों नहीं कर रहा है, क्यों नहीं पढ़ रहा है । यदि इस बात पर मां बाप गौर करें तो वह जातक पूर्ण विद्या अवश्य प्राप्त करेगा ।

अरुचि के कारण

एक विद्यार्थी बहुत अच्छी प्रकार से विद्या अध्ययन कर रहा है लेकिन अचानक उसकी पढ़ने से अरुचि हो गयी तो अब वह पुस्तकों को छूना तक नहीं चाहता है । जो जातक हर बार उच्चतम अंक प्राप्त करता आ रहा था आज वह परीक्षा नहीं देना चाहता क्या कारण है विचार करें ।

पूर्व जन्म कृत पुण्य पाप के अनुसार ग्रह जातक को सुख दुःख प्रदान करते हैं । जो जातक पूर्वजन्म में विद्यार्थी थे, श्रेष्ठ कुल व श्री सम्पन्न घर में जन्म हुआ था या किसी अन्य के यहाँ जन्म हुआ था, विद्यार्थी काल में आपने जिस प्रकार से दूसरों को सताया उन्हें विद्या प्राप्त नहीं करने दी, मारा तथा अन्यान्य प्रकार के कुकृत्य किये, जिससे एक सच्चा विद्यार्थी विद्या से वंचित हो गया तथा असहाय होकर घर बैठ गया । इस प्रकार के निरन्तर क्रूर कर्म हुए तथा विद्यार्थियों की बद्दुआ ली । अथवा अपनी विद्या के द्वारा लोगों के संग छलावा किया या बुद्धि (विद्या) का सहारा लेकर किसी का सर्वस्य लूटा अथवा किसी भी प्रकार का धोखा किया तथा विद्यावान होकर अन्यान्य प्रकार से लोगों का शोषण किया । ऐसे जातकों को ही सात जन्म तक विद्या प्राप्ति नहीं होती है और विद्या प्राप्त न होने से वह पशु के समान दर-दर ठोकर खाता फिरता है लेकिन कहीं राहत नहीं मिलती ।

याद रखें, जातक का जैसा कर्म होगा ठीक उसी अनुपात में वह विद्या प्राप्त करेगा उसी अनुपात में उसे सुख दुःख की प्राप्ति होगी । यदि पूर्व के अशुभ कर्म ज्यादा होते हैं तो शनि-राहु जन्मांक में चतुर्थ भाव में आ बैठते हैं । जिसके कारण विद्यार्थी की

बुद्धि मलीन हो जाती है और वह विद्या प्राप्त नहीं कर पाता है । पाप के ही अनुपात में साढ़ेसाती का आना होता है जो विद्यार्थी को उसी अनुपात में तबाह कर देती है । विद्या का स्थान है चतुर्थ भाव और पंचम भाव । यदि इन स्थानों पर राहु बैठे हों या चतुर्थेश पंचमेश को शनि, राहु देख रहे हों अथवा चतुर्थेश पंचमेश 6, 8, 12 भावों पर बैठे हों तथा पापग्रहों से दृष्ट हों तो लाख चाहने पर तथा माँ-बाप के कोटि भरसक प्रयास करने पर भी वह विद्यार्थी विद्या नहीं पढ़ सकता ।

यदि जातक पूर्व का शुभ कर्मी है तो बचपन में ही शुभ स्थानों की शुभ ग्रहों की दशा प्रारंभ हो जाती है जिससे निर्विघ्नता पूर्वक जातक शीघ्र ही उच्च विद्या का अर्जन करता है । बुध गुरु उच्च के होकर चतुर्थभाव में बैठते हैं तथा चतुर्थ पंचम का भाग्य लाभ से सम्बन्ध होता है अथवा चतुर्थेश पंचमेश लाभ में बैठे होते हैं तथा पापग्रहों द्वारा द्रष्ट नहीं होते हैं तभी जातक निर्विघ्नता पूर्वक श्रेष्ठ विद्या प्राप्त करता है । सूर्य उच्च का होकर केन्द्र में बैठता है फलस्वरूप जातक स्वाभिमान पूर्वक उच्च विद्या प्राप्त करता हुआ अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करता है ।

परामर्श :- याद रखें, विद्या पढ़ने या पढ़ाने में आप प्रयास करेंगे विद्यार्थी प्रयास करेगा तो विद्या प्राप्त कर लेगा ऐसा नहीं है । यदि उसे ग्रह पढ़ाएं और ग्रह उसको पढ़ने दें तभी वह विद्या प्राप्त कर सकेगा । अतः इसमें विद्यार्थी का कोई अपराध नहीं है । उसके पूर्व जन्म का पाप है जो उसे अन्यान्य प्रकार की बाधाएं डालते हुए विद्या से वंचित करा रहा है। अतः प्रत्येक माँ-बाप का कर्तव्य है कि यदि उनका बच्चा विद्या नहीं पढ़ रहा तो क्यों नहीं पढ़ रहा, किसी सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श लें और ग्रहों के विधिवत मंत्र जप कर या करा, विद्यार्थी को पूर्ण विद्या प्राप्त कराने में सहायक हों । याद रखें, ग्रहों की पीड़ा को मंत्र ही निकाल सकता है अन्य कोई भी साधन नहीं है । अतः यदि विद्यार्थी विद्या नहीं पढ़ रहा हो तो किसी सुयोग्य दैवज्ञ से परामर्श लें, तुरन्त मंत्र जाप प्रारंभ करें । जातक तुरन्त विद्या अध्ययन करने में तल्लीन होगा ।

जिस पुस्तक को वह देखना नहीं चाहता था या जिस पुस्तक को हाथ में लेते नींद आ जाती थी, आज उसी पुस्तक को कभी भी अपने से दूर नहीं रख रहा, यह क्या चमत्कार है । तब यह मानना पड़ता है कि कोई नियन्ता है कोई हमारे ऊपर है जो हमारे कर्मानुसार हमें फल प्रदान करता है । अतः ग्रह शक्ति है और ग्रहों की चाल के अनुसार ही सभी को विवश होकर चलना पड़ता है । इसीलिए भंलीभांति विचारें और ग्रहों की आराधना कर अपने बच्चे को पूर्ण विद्यावान बनायें ।

केन्द्र का अनुभव

विशेष :- पूर्वजन्म के कर्म अनुसार जब ग्रह विद्यार्थी को विद्या न पढ़ने दें, उस समय विद्यार्थी को जो ग्रह बाधा दे रहा है उसका जप सविधि करना चाहिए । जप करने से सिर पर बैठा ग्रह अपना प्रभाव कम कर देगा । जप एक घन्टे करें इसके बाद पुनः पुस्तकें पढ़ना प्रारम्भ कर दें पढ़ने में विद्यार्थी का मन अवश्य लगेगा । दो चार घन्टे के बाद फिर ग्रह अपना प्रभाव दिखायेगी और मन को उखाड़ेगी फिर मन्त्र जप करें इस प्रकार ग्रहों को जपते हुए अपनी विद्या को आगे बढ़ायें ।

छुट्टियों में यदि बालक उस ग्रह का 24 लाख मन्त्र जप कर लेगा तो ग्रह बार-बार विद्यार्थी को प्रताड़ित नहीं करेगा ये केन्द्र का अनुभव है । हजारों विद्यार्थियों पर केन्द्र ने ये प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है । याद रखें ग्रह प्रभाव के हटाने या अनुकूल बनाने का एकमात्र साधन मन्त्र जाप है । ये मन्त्र जाप सबसे सरल सस्ता और टिकाऊ उपाय है ।

विद्यार्थी उपरोक्त का सहारा लेकर पूर्ण विद्या अध्ययन कर मंजिल तक पहुँचे, यही विद्यार्थी के लिए केन्द्र की शुभकामनाएँ हैं । केन्द्र का अनुभव है कि जातक जैसे कर्म करता है उसे वैसे ही फल भोगने पड़ते हैं । इसमें ग्रहों का अपराध नहीं है यदि अपराधी है तो वह है जातक । अंतः ग्रहों पर वृथा दोषारोपण न करते हुए उनके मंत्र जाप कर अपने पूर्वकृत को निर्मूल कर लें और निरन्तर प्रगतिशील हों ।

केन्द्र की सूर्य ग्रह सम्बन्धी खोज

जिन जातकों को सदा सिरदर्द (आधा शीश/पूरा शीश) बना रहता हो, तेज या मंद ज्वर न छोड़ता हो, बालक विद्या अध्ययन न करता हो, धन न टिकता हो, नौकरी में उन्नति प्राप्त न हो रही हो और सारे यत्न करने पर भी आगे न बढ़ पाया जा रहा हो, हर तरह से सन्तोष पूर्वक काम करने पर भी मान प्राप्त न हो तो ऐसे जातक को मस्तिष्क में ज्योतिष्मति (माल कंगनी) का तेल लगाकर सूर्य स्तोत्र आँदि का पाठ प्रातः उगते सूर्य के सामने खड़े होकर उन्हें देखते हुए १०८ बार करना चाहिए । नित्य ऐसा करने से सूर्य की कल्याणकारी किरणें (बैंगनी रंग वाली तथा अवरक्त किरणों को छोड़कर) आपके नेत्रों, हृदय तथा मस्तिष्क में प्रवेश कर उन्हें प्रकाशित कर देंगी । जीवन में नयी शक्ति आ जायेगी और सारा काम करने के बाद भी मस्तिष्क ठण्डा बना रहेगा तथा निर्णय शक्ति बलवती हो जायेगी और सारे कार्य सहज ही बन जायेंगे । सूर्य रेखा अगर हाथ में नहीं है तो बनने लगेगी और मामूली सी है तो बलवती हो जायेगी और स्मृति लौट आयेगी । ऐसा केन्द्र का अनुभव है ।

सूर्य की धातु स्वर्ण है तथा अनाजों में अनाज गेहूं है । जब सूर्य नीच का चल रहा हो तथा भारी संकट या भीषण रोगों ने घेर रखा हो तो सूर्य की स्वर्ण की मूर्ति बनाकर दान करें । अगर ऐसा करने में असमर्थता हो तो अपने वजन के बराबर गेहूं में अंशमात्र स्वर्ण डालकर रविवार के दिन तुलादान करें और लाल कपड़े, फल, फूल आदि भी दान करें । ऐसा करने से काफी राहत प्राप्त होगी । यदि तुलादान ग्रहण काल के मध्य भाग में किया जाये तो अति उत्तम है ।

प्रायः देखा गया है कि जिन जातकों के हाथ में सूर्य रेखा प्रथम पोर से चल कर मस्तिष्क रेखा को प्रकाशित करती हुई जीवन रेखा में मिल जाती है तो वह जीवन में लाख चाहने या दबाव देने पर भी गलत कार्य नहीं कर सकता क्योंकि उसका जीवन सूर्य से प्रकाशित होता है । इसके विपरीत जिन जातकों के हाथ में सूर्य रेखा नहीं होती है वह लाख चाहते हुए भी गलत कार्य करने से अपने आप को रोक नहीं सकते हैं । धन का संग्रह भी बहुत कम कर सकते हैं । जितना भी कमा लें सब खर्च होता चला जाता है । अगर पुत्र लाभ हो गया हो तो पिता पुत्र में सदा ठनी रहेगी और सब अशान्त रहेगा । इसलिए सूर्य रेखा निर्माण हेतु प्रयास करना चाहिए । इसके बारे में केन्द्र से सम्बन्ध स्थापित कर विशेष जानकारी प्राप्त करें ।

प्रभु के उपासकों को सूर्य की उपासना बहुत लाभकारी सिद्ध होगी । सूर्य से प्राप्त शक्ति और प्रकाश अध्यात्म मार्ग को प्रकाशित कर देगा और परमात्मा में रमण हो सकेगा। सूर्य की उपासना से ब्रह्मचर्य स्थिर होता है और आँखें बुरे विषयों पर नहीं जाती हैं । यदि

सूर्य बल नहीं होगा तो जातक अध्यात्म मार्ग में आगे बढ़ने की बजाय गलत कार्यों में न चाहते हुए भी लग जाएगा और अपने उद्देश्य से भ्रष्ट हो जायेगा । भगवान सूर्य सम्पूर्ण ग्रहों के राजा हैं । जिस प्रकार घर के मध्य उज्ज्वल दीपक ऊपर नीचे संपूर्ण घर को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार अखिल जगत के अधिपति सूर्य हजारों रश्मियों से ऊपर नीचे के भागों को प्रकाशित करते हैं । जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से तारागण आदि नहीं चमक सकते उसी प्रकार जिस जातक में सूर्य बल बढ़ जाएगा तो सभी उसके सामने नतमस्तक हो जायेंगे ।

राज्य योग को बढ़ाने में अर्थात ऊँची सरकारी नौकरी, मन्त्री पद पाने आदि में इसकी उपासना अपना चमत्कार दिखाएगी । जो व्यक्ति राज्य सत्ता यानि मन्त्री, एम० पी०, एम० एल० ए०, या उच्च अधिकारी बनने की इच्छा रखता हो उसे सबसे पहले सूर्य के एक करोड़ मंत्र जाप कर या करवा लेना चाहिए । सूर्य राज्य योग का कारक ग्रह है । जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश से चन्द्र और तारों के प्रकाश को सारहीन कर देता है, उसी प्रकार जिस मानव में सूर्य बल होता है उसके सामने कोई टिक या बोल नहीं सकता है । और वह संसार में ऐसे कार्य कर जाता है कि मरने के बाद उसकी प्रशंसा होती रहती है । समाज में उसकी मान प्रतिष्ठा सदा सराहनीय ही बनी रहती है । बुद्धिमान प्राणियों को विचार कर अपना सूर्य बल बढ़ा लेना चाहिए । राज्य योग बढ़ाने में अर्थात ऊँची सरकारी नौकरी, मन्त्री पद पाने आदि में इसकी उपासना अपना चमत्कार दिखाएगी, ऐसा हमारे केन्द्र का अनुभव है ।

उपासना दो प्रकार की होती है । एक साधारण, दूसरी विशेष (पुरश्चरण, पाठ आदि) । साधारण उपासना का फल साधारण है और विशेष उपासना का फल अति शीघ्र प्राप्त हो जाता है क्योंकि इस उपासना में विधि पूर्वक अर्चना पूजा की जाती है । यदि ग्रह की मार अधिक हो तो पाठ करना चाहिए ताकि तुरन्त राहत प्रांप्त हो सके । एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य सूर्य ग्रह मंत्र की जाप करके एक वर्ष में एक करोड़ मंत्रों का जाप बड़े आराम से कर सकता है । यदि करोड़ मंत्र जाप करने की शारीरिक सामर्थ्य न हो तथा करवाने के लिए धन का अभाव हो तो मानव को चार बार अर्थात २४-२४ लाख के चार चरण सुविधा अनुसार श्रद्धापूर्वक जीवन में कर लेने चाहिएं । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है तभी इसमें सफलता प्राप्त होगी । अगर इतना भी नहीं किया जा सकता तो कम से कम प्रातः उदय होते हुए सूर्य के सामने खड़े होकर सूर्याष्टकस्तोत्र का अधिक से अधिक १०८ बार पाठ तथा जाप नित्य करने से चमत्कारी लाभ होगा । सूर्य रेखा बनने लगेगी और स्मृति लौट आएगी । केन्द्र में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा यह एक करोड़ मंत्र जाप २१ या कम दिनों में पूर्ण विधि तथा शास्त्रोक्त रीति अनुसार किया जाता है ।

वेदों में सूर्य

सूर्य की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में सूर्य की पूजा की जाती है ।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् आकृष्णेन, रजसा, वर्तमानः, निवेशयन्, अमृतं, मर्त्यम्, च ।
हिरण्ययेन, सविता, रथेना देवाः याति भुवनानि पश्यन् ॥

सूर्य ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला जप करना चाहिए । परन्तु साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केंद्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहां सूर्य रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केन्द्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

सूर्य बीज मंत्र:

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।

सूर्य-मंत्र सरल हिन्दी भाषा में:

ॐ हाम् हीम् हौम सः सूर्याय नमः ।

मंत्र कभी किसी को धोखा नहीं देते । मृत्यु के बाद भी काम आते हैं । गायत्री, भगवती आदि के मंत्र शापित हैं । बिना शाप विमोचन किये फल दायक नहीं होते हैं । दूसरे मंत्र जपने में मन नहीं लगा तो भी फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति नहीं होती । परन्तु ग्रहों के मंत्रों को किसी ने शाप नहीं दिया है । बिना मन लगाये ही केवल बीज मंत्र उच्चारण करने मात्र से ही पूर्ण फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति हो जाती है ।

केन्द्र में सूर्य दोष से पीड़ित लोगों ने स्वयं मंत्र जाप कर एवं केन्द्र के निष्ठावान ब्राह्मणों द्वारा मंत्र जाप करवाकर न केवल पीड़ा से मुक्ति पायी है, वरन सुख-शान्ति और समृद्धि भी प्राप्त की है ।

नोट:-अधिक जानकारी के लिए सूर्य ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें ।

भगवान चन्द्रमा

चन्द्र ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ चन्द्र स्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः ।
चद्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ।

चन्द्र सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विव

अमृत रस का संचारक
मन का प्रतीक
चंद्रमा

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित चन्द्र संबंधी कृति में प्रस्तुत है हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन में शीतलता प्रदाता चन्द्र के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र, अंक शास्त्र में चन्द्र का महत्व तथा विश्व सहित भारत में चन्द्र पूजा की परम्परा, आदि की प्रामाणिक जानकारी।

मनुष्य के जीवन में चंद्रमा कौन-कौन से शुभ एवं अशुभ प्रभाव डालता है, इसका विस्तृत विवेचन तथा केन्द्र में चंद्रमा संबंधी सफल प्रयोगों के परिणामों का विवरण। **इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय में पढ़िये :**

- **चंद्रमा की उत्पत्ति**
- **अंतरिक्ष में चंद्र की उत्पत्ति**
- **वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य साहित्य में चंद्रमा का वर्णन**
- **नक्षत्र विज्ञान और चंद्रमा**
- **चंद्रमा के नक्षत्र, इन नक्षत्रों में जातकों के गुण-धर्म**
- **द्वादश भावों में चंद्रमा**
- **चंद्रमा की महादशा**
- **चंद्रमा के रत्न, उपरत्न, जड़ी बूटियां**
- **हस्तरेखा शास्त्र में चंद्रमा**
- **अंक शास्त्र में चंद्रमा**
- **चंद्रमा स्त्रोत - मंत्र, बीज मंत्र**
- **चंद्रमा के दोषों को दूर करने के सरल उपाय**
- **चंद्रमा: वनस्पतियों में अमृत रस का संचारक**

चन्द्र धरातल पर क्रेटर (गड्ढों) के चित्र

पिन होल क्रेटर

on images from Mariner 9 and Viking

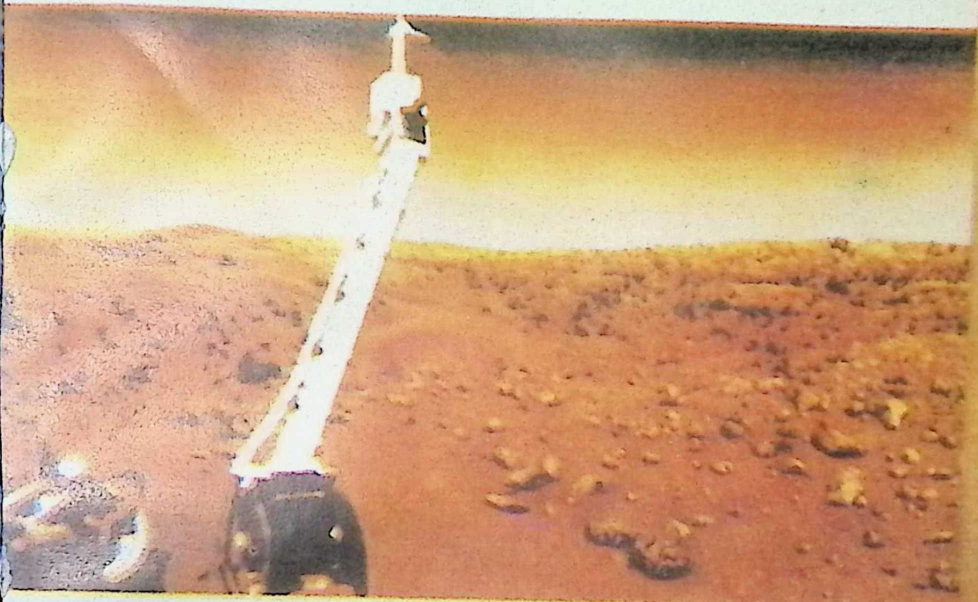

As the Martian seasons change, so do the

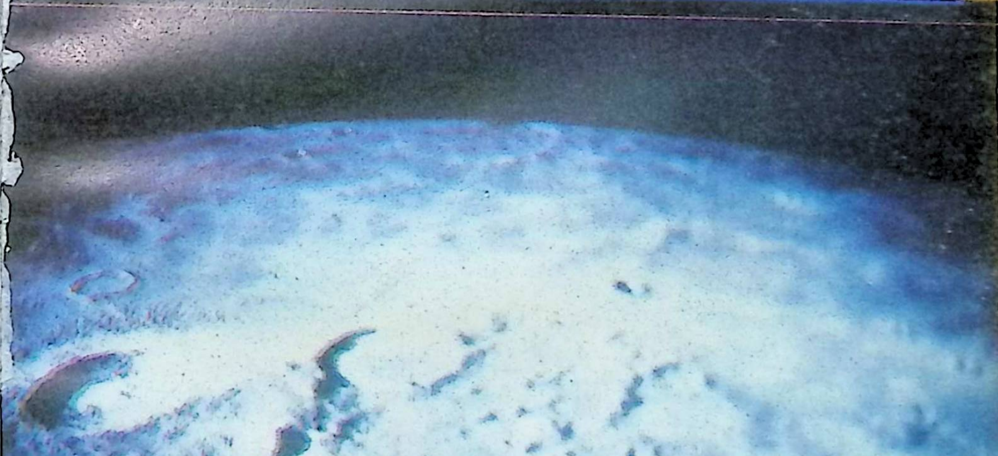

वाईकिंग यान द्वारा चन्द्र धरातल का चित्र

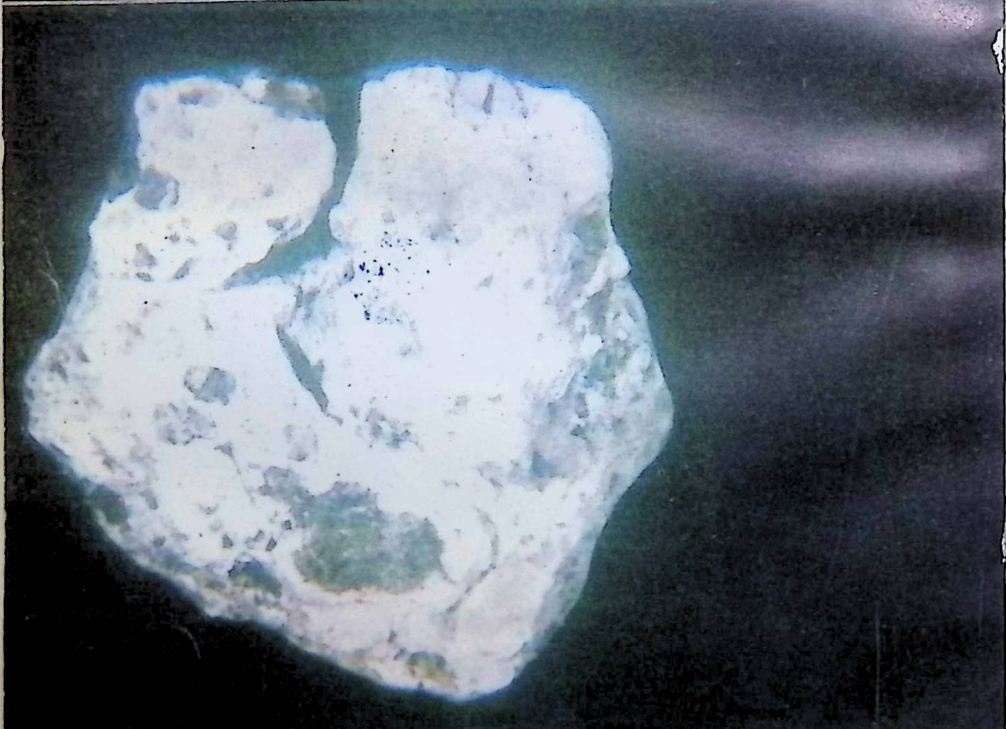

चन्द्रमा से लाई गई चट्टान का चित्र।

चन्द्रमा

श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः ।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

चंद्रमा हमारी पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह तथा सर्वाधिक निकट है । सर्वाधिक निकट होने के कारण मनुष्य, वनस्पति, समुद्र, एवं मौसम पर चंद्रमा का गहरा अनुभव किया जा सकने वाला प्रभाव पड़ता है । वेदों में चंद्रमा की चर्चा विस्तृत है । पुराणों में चंद्रमा के विषय में अनेक सुंदर आख्यान-उपाख्यान प्राप्त होते हैं । साहित्य में भी चंद्रमा का महत्वपूर्ण स्थान है । काव्य के प्रेमी अपनी प्रियतमा को चंद्रमा की उपमा देते हैं । चंद्रमा के अनेक नाम हैं--- यथा सोम, इन्दु, तारापति, शीतांशु, शशि, राकापति । फारसी में चंद्रमा महताब कहलाता है । अंग्रेजी में चंद्रमा का नाम सर्वविदित है - मून । विश्व के पौराणिक साहित्य में चंद्रमा को लेकर अनेक कथाएं प्राप्त होती हैं । सूर्य के साथ चंद्र का अभिन्न संबंध है । चंद्रमा को धरती का अंश माना गया है, जो सूर्य के प्रकाश से आलोकित होता है । चंद्रमा से परावर्तित होकर धरती में आनेवाली सूर्य किरणें ही चंद्र किरणें कहलाती हैं । इन चंद्र किरणों के कारण वनस्पतीय जगत में परिवर्तन होता है और वे औषधियां बन जाती हैं ।

चन्द्रमा महर्षि अत्रि के पुत्र हैं । महर्षि ने ब्रह्मा जी की आज्ञा से घोर तप किया । उस तप के प्रभाव से जगत के कष्टों का विनाशक और इन्द्रिय से परे जो परमानन्द है तथा जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश के प्रदेशों में निवास करने वाला है वही उन प्रशान्त मन वाले महर्षि के मन एवं नेत्रों में स्थित हो गया क्योंकि उस समय उमापति ने भी अत्रि के मन, नेत्रों को अधिमय बनाया था अतः ललाट में ही चन्द्रमा प्रकट हो गया । उसने अपने प्रकाश से अखिल जगत चराचर को उद्दीप्त कर दिया । वही जलज सम्भूत धाम तेज अत्रि का पुत्र कहलाया । यानि अत्रि का सम्पूर्ण तप तेज ही चन्द्रमा है । चन्द्रमा के दिव्य तेज से औषधियों का प्रादुर्भाव हुआ इसलिए चन्द्रमा समस्त षट्रस को देने वाला वनस्पति, जड़ी, बूटियों में अलग-अलग रस देने में समर्थ हुआ । यही कारण है जिस वनस्पति को चन्द्रमा की किरणें प्राप्त नहीं होती हैं, वह वनस्पति रस हीन होती है । इसलिए इसे सोम भी कहा जाता है । चन्द्रमा को रसाधिपति एवं जलाधिपति होने के कारण अमृतमय एवं अन्नमय भी कहा जाता है । चन्द्रमा को रसाधिपति एवं जलाधिपति होने के कारण अमृतमय एवं अन्नमय भी कहा जाता है ।

श्रीमद्भागवत् पुराण में शुकदेव जी ने कहा है, 'चन्द्रमा अन्नमय और अमृतमय होने के कारण समस्त जीवों का प्राण और जीवन है । सोलह कलाओं से युक्त मनोमय,

अन्नमय, प्राण स्वरूप भगवान चन्द्रमा ही देवता, पितर, मनुष्य, भूत, पशु-पक्षी, और वृक्ष आदि समस्त प्राणियों का पोषण करते हैं इसलिए इन्हें सर्वमय भी कहते हैं ।'

अतः महर्षि अत्रि के शान्त मन में अवतरित परमानन्द ब्रह्मा का तप ही मूर्तिमान चन्द्रमा है । इसी कारण सारे प्राणीमात्र को आनन्द उल्लास से नित्य ही ओत प्रोत रखता है। रति सुख, का मालिक भी यही है । इसीलिए जितने भी विवाह होते हैं, चन्द्रमा के बल में होते हैं ताकि गृहस्थ जीवन अमृतमय हो । सूर्य बल में किया हुआ विवाह गृहस्थाश्रम के आनन्द को नहीं लेने देता । अतः अध्यात्मवादी यदि चन्द्रमा की उपासना कर लेंगे तो निश्चय ही उनका मन काबू में आ जायेगा और इसी जन्म में वे परमात्मा को प्राप्त कर सकेंगे । भौतिकवादी यदि चन्द्रमा की उपासना कर जायेंगे तो जीवन सरस व आनन्दमय बीत जायेगा । चन्द्रमा नक्षत्रों का राजा है । जिस प्रकार सूर्य आत्मकारक ग्रह है, उसी प्रकार चन्द्रमा मन का कारक है । चन्द्रमा की उपासना से मन वशीभूत हो जाता है और मन वशीभूत होने से जातक स्वयं का स्वामी हो जाता है ।

खगोल विज्ञान में चंद्रमा

खगोलीय दृष्टि से चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है लेकिन ज्योतिष शास्त्र में इसे ग्रह माना गया है । इसका व्यास है 2,160 मील है । यह द्वादश राशियों की एक परिक्रमा 27 दिन 7 घंटे और 43 मिनट में पूर्ण करता है ।

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा को स्थूल शरीर युवा, कृश, श्वेतवर्ण, काले केश, सुंदर नेत्र वाला, रक्त प्रधान, जल तत्व तथा मृदुवाणी माना गया है । चंद्रमा को स्थूल और कृश: कहा गया है । ये उसके शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष के प्रतीक है ।

ज्योतिष शास्त्र में मानसिक स्थिति का विचार करने के लिये चंद्रमा का विचार किया जाता है क्योंकि उसे मन का स्वामी माना गया है ।

चंद्रमा को रोहणी, श्रावण तथा हस्त नक्षत्रों का स्वामी माना गया है, वह कर्क राशि का अधिपति है । चंद्रमा वृष राशि में उच्च का तथा वृश्चिक राशि में नीच का माना जाता है । वह चतुर्थ भाव का स्थिर कारक है । जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उसी के आधार पर जातक की राशि तथा विंशोत्तरी दशा निर्धारित होती है ।

अंक शास्त्र में चन्द्रमा तथा चन्द्र प्रधान जातक

ज्योतिषीय विद्याओं में से अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही प्रश्नकर्ता को स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं । अंक विद्या में 2 का अंक चन्द्रमा का सूचक माना गया है अर्थात अंक 2 का स्वामी चन्द्रमा है । जिस तारीख को आपका जन्म हुआ है गणना कीजिए यदि दो का अंक आता है तो आपका अंकाधिपति चन्द्रमा है ऐसा समझना चाहिए । जैसे-11=1+1=2/29=2+9=11=1+1=2 इस प्रकार गणित करें ।

अंक 1 का स्वामी सूर्य है और अंक दो का स्वामी चन्द्रमा है तो एक अंक वाला जातक और अंक दो वाला जातक स्वभाव से भिन्न होंगे लेकिन उनका वर्चस्व एक दूसरे के अनुरूप होगा इसलिए ये दोनों अंक एक दूसरे के लिए पूरक हो सकते हैं ।

अंक 2 में जन्में जातक के गुण स्वभाव की श्रेष्ठता तभी प्रकट होती है जब उनका जन्म चन्द्रमा के काल में हुआ हो अर्थात 20 जून से 27 जुलाई तक । मुख्यतः 20 जुलाई तक के ही दिन प्रमुख होते हैं और इस समय में कोई कार्य किया जाएगा तो विशेष सफलता प्राप्त होने के आसार रहते हैं । अतः अंक दो वाले जातकों को 2, 11, 20, 29 आदि दिनांकों में ही अपनी योजनाओं को कार्य रूप देने का प्रयत्न करना चाहिए । कारण यह तारीखें उनके अंक के लिए लाभकारी होती हैं ।

अंक 2 वाला जातक चंचल स्वभाव तथा दिलफैंक एवं भावनाओं का अधिपति होता है और वह जैसा वातावरण होता है वैसे में परिणित हो जाता है तथा निराश भी जल्दी हो जाता है । ऐसा जातक नई-नई खोजों में संलग्न रहता है परन्तु विचारों की दृढ़ता न होने के कारण वह अपनी खोज को नया रूप देने में असमर्थ रहता है । अंक दो वाले जातक को मोती की माला पहननी चाहिए और चन्द्रमा की आराधना कर चन्द्र कृपा प्राप्त कर लेना चाहिए तभी इच्छित लाभ संभव है ।

चन्द्र प्रभाव वाला जातक शान्त स्वभाव का होता है, स्मरण शक्ति तीव्र, लज्जावान सेवाभावी, कलाकौशल, सुन्दर, एवं सौन्दर्य का उपासक होता है । इनका लेख सुन्दर, स्वभाव शान्तप्रिय, मित्र ज्यादा एवं ठंडी वस्तुएँ ज्यादा पसन्द करता है । उन्हें नजला, जुकाम, जल संबंधी बीमारियों का शिकार भी होना पड़ता है । चन्द्र प्रधान व्यक्ति सफेद वस्तु, कला, शृंगार का व्यापार करे तो अच्छी सफलता प्राप्त होती है लेकिन कमियाँ भी कुछ कम नहीं होती जैसे जातक भावुक, लापरवाह, शंका करने वाला होता है । उनका संकल्प पूर्ण नहीं होता है । चन्द्र की चंचलता की तरह वह आवास, नौकरी, व्यवयास में परिवर्तन करता है तथा शत्रु की ओर भी करुणाभाव रखता है । चन्द्रमा स्त्रियों के मन के अतिरिक्त स्वभाव, गर्भाधान, मासिक धर्म, सौन्दर्य में भी अहम भूमिका निभाता है । जिस नारी का चन्द्र खराब होता है, उसे जीवन में निराशा, मानसिक तनाव, हिस्टीरिया और दर्दों का सामना करना पड़ता है । चन्द्रमा जल तत्व एवं मन का स्वामी है ।

द्वादश भावों में चन्द्रमा

चन्द्रमा जल का स्वामी है इसलिए जैसे जिस बर्तन में जल रख दिया जाता है जल वैसा ही रंग बदल लेता है । ऐसे ही चन्द्रमा जिस घर में होता है अर्थात् जिस ग्रह के साथ होता है उसी ग्रह के अनुसार गुण रूप धारण कर लेता है ।

प्रथम भाव - पाश्चात्य ज्योतिषी एलेन लियो के अनुसार प्रथम भाव में चंद्रमा हो तो ग्रहण शक्ति अच्छी होती है । शांत-प्रवृत्ति मिलनसार, उदार बनाता है।

द्वितीय भाव - पुत्र सुख, परिवार-सुख, लोकप्रिय, विजयी, बलवान, प्रवास प्रिय ।

तृतीय भाव - बलवान, सदाचारी, संतोषी, भाई-बहिनों का पूर्ण सुख ।

चतुर्थ भाव - जातीय तत्वों में धन प्राप्ति, स्त्री, वाहन, संतान सुख, पुण्यात्मा, उदार, सत्ताधीश, विद्वान्, भाग्यवान ।

पंचम भाव - रूपवान तेजस्वी, सावधान, सुशील कलाप्रिय, संतान में कन्याएं अधिक ।

षष्ठ भाव - कोमल शरीर, तीव्र कामेच्छा, अत्यधिक शत्रु, विफलता अधिक ।

सप्तम भाव - कष्टमय जीवन, दुःख, परस्त्री आसक्त, अनेक शत्रु ।

अष्टम भाव - उद्विग्न, चिंतातुर, बाल्यकाल में रोगी ।

नवम भाव - बुद्धिमान, धार्मिक, धनवान, धर्म और शास्त्रों का प्रेमी, योगी, अपार कल्पना शक्ति युक्त ।

दशम भाव - पितृ भक्त, राज्य मान्य, सफल, शांत, संतोषी ।

एकादश भाव- धनवान, रूपवान, उदार, नेतृत्व के गुण, विद्वान ।

द्वादश भाव - आलसी, सदैव अपमानित, दुर्बल, मित्र अधिक नहीं ।

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि चन्द्रमा छः, आठ, बारह भावों में किसी भी राशि का विशेषकर नीच का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नहीं है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले चन्द्रमा के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए । ताकि चन्द्रमा प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो ।

हस्त रेखा शास्त्र में चंद्र

हस्त रेखा शास्त्र में चंद्र पर्वत की स्थिति हथेली में बायीं ओर नीचे, कलाई के ऊपर बनायी गयी है : उस पर्वत पर स्थित रेखाएं ही चन्द्र रेखाएं कहलाती हैं ।

चन्द्रमा ग्रह सम्बन्धी अन्य विवरण

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा को शुभ ग्रह माना गया है किंतु कभी-कभी यह अशुभ फल भी देता है और अपने स्थान का फल नष्ट कर देता है । शुक्ल--प्रतिपदा से दशमी तक चंद्रमा मध्य बली होता है । इसके बाद दस दिनों तक अति बलवान और अति शुभ फल दाता होता है । अंतिम दस दिनों में चंद्रमा बलहीन होता है । प्रायः यह देखा गया है कि पागल या मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों को पागलपन के दौरे पूर्णिमा के निकट पड़ते हैं । इसी प्रकार चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार पुरुषों को पुरुषगत रोगों में विशेष प्रभाव पड़ता है । इसका मुख्य कारण कुंडली में चंद्रमा का प्रभावित होना है ।

जिस जातक का चंद्रमा उच्च का होता है तो उसे अपार ऐश्वर्य, रूप, भोग आदि प्रदान करता है और देश-विदेश की यात्राएं करवाता है । अनायास ही भाग्य उदय हो जाता है, सब सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं । स्वास्थ्य ठीक बना रहता है । जिनका चंद्रमा नीच का होगा, उन्हें सदा जल सम्बन्धी रोग, खांसी, जुकाम, नजला आदि घेरे रहेंगे । जिस जातक के कुंडली में वृश्चिक राशि का चंद्रमा हो उसको औषधि लेने के पश्चात भी खांसी, जुकाम, नजला आदि बनाए रखता है तथा बुद्धि भी मंद करता है । सब कुछ प्राप्त होने पर भी मन की शांति नहीं होगी । मन की चाल बिगड़ जाएगी और सब कुछ डगमगा जाएगा । उसे बुद्धि से कमजोर बना कर पग-पग पर अपमानित करवा कर जातक का कर्म-क्षेत्र कमजोर करता है । जातक बहुत भावुक बन जाता है और बहुत बड़ी योजनाएं बनाता है और उनके पूरा न होने के कारण संताप को प्राप्त होता है ।

चन्द्र ग्रह से सम्बन्धित रोग, उनके उपशमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न, रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी बूटियों को धारण करने की विधि, ग्रह शान्ति के लिए दान तथा चंद्र ग्रह से सम्बन्धित व्यापार और नौकरी आदि का वर्णन इस प्रकार है :-

रोग :- तिल्ली, पांडु, यकृत, कफ, उदर सम्बन्धी विकार मनोविकार । यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाये तो ग्रह का प्रकोप अर्थात् ग्रह की महादशा या अंतर्दशा लगी हुई समझनी चाहिएं और बिना किसी से पूछे मंत्र जाप, रत्न, जड़ी बूटियाँ आदि धारण करनी चाहिएं । इससे रोग हल्का होने लगेगा ।

रत्न/उपरत्न :- मोती, निमरु, चन्द्र मणि, सफेद पुखराज, ओपल । सोमवार को रोहिणी नक्षत्र में धारण करें । अच्छा रत्न पहनते ही 40 प्रतिशत राहत हो जाएगी ।

रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती वह पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता है । इसलिए रत्न पहनने से पहले अर्थात् अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य क्र लेनी चाहिये क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही है । जिस प्रव... किसी मूर्तिकार के घर से लाई हुई किसी भी देवता की मूर्ति । मूर्ति को जब मंदिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व उसकी प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक है ।

जड़ी बूटियाँ :- खिन्नी की जड़ सोमवार को रोहिणी नक्षत्र में सफेद धागे में दांयें बाजू में बांधनी चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव कम होना शुरू हो जाता है ।

दान :- रोहिणी, हस्त, श्रवण नक्षत्रों में स्वयं के वजन बराबर चावल, श्वेत वस्त्र, कपूर, चाँदी, शुद्ध सफेद चंदन, वंश फल, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि दान श्रद्धापूर्वक दक्षिणा सहित ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक ग्रह के नक्षत्र काल में दान करना चाहिए ।

व्यापार/नौकरी :- यदि चंद्र अधिक अंशों में बलवान हो तो निम्नलिखित व्यापार, नौकरी में विशेष लाभ होता है ।

व्यापार :- चाँदी से सम्बन्धित व्यापार, मणि-मणिक्य का व्यापार, वस्त्रों का व्यापार, मिल खरीदना या बेचना, घी का व्यापार, तिल अथवा तेल का व्यापार । दवाइयों का व्यापार, अनाज, किराना वस्तुओं का व्यापार, काँच के कारखाने, आयात, निर्यात, काव्यत्व एवं कवि कर्म ।

नौकरी :- प्लांट्स आफिसर, वन विभाग का अधिकारी, राज्य से सम्बंधित कार्य, नेवी में नौकरी, तैराकी आदि ।

चंद्र ग्रह सम्बंधित पाठ पूजा आदि भी यहां पाठकों की सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं, जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । नित्य 08 पाठ करने से चमत्कारी लाभ होता है।

श्वेत: श्वेताम्बरधरो दृढाश्व: श्वेतभूषण: |
गदापाणिर्द्विबाहुश्च पातु मां वरद: शशी |

****

अथ चंद्र मंत्र

विनियोग :- ॐ इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

(नीचे कोष्टक में लिखे अंगों को दाहिने हाथ से छुयें:)

अथ देहांगन्यास :- इमं देवा शिरसि (सिर) । असपत्न ठँ. ललाटे (माथा) । सुवध्वं नासिकायाम् (नासिका) । महते क्षत्राय मुखे (मुख) । महते ज्येष्ठ्याय हृदये (हृदय) । महते जानराज्याय उदरे (पेट), इन्द्रस्येन्द्रियाय नाभौ (नाभि), इममुष्य कट्याम् (कमर), पुत्रममुष्यै मेढ्रे । पुत्रमस्यै ऊर्वोः (छाती), विशऽएष वो जान्वोः (घुटने), मीराजा जंघयोः (जांघे), सोमोऽस्माकं गुल्फयोः (गुल्फ) ब्राह्मणाना ठँ. राजा पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- इमन्देवाऽअसपत्न ठँ. सुवध्वं अंगुष्ठाभ्यां नमः । महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय तर्जनीभ्यां नमः । महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय मध्यमाभ्यां नमः । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै अनामिकाभ्यां नमः । विशऽएप वो मीराजा कनिष्ठिकाभ्यां नमः । सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठँ. राजा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्याय :- इमन्देवाऽअसपत्न ठँ. सुवध्वं हृदयाय नमः (हृदय) । महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय शिरसे स्वाहा (सिर) । महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय शिखायै वौषट् (शिखा) । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै कवचाय हूँ । (दोनों कंधों को) विशऽएष वो मी राजा नेत्रत्रयाय वौषट (दोनों नेत्र) सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठँ. राजा अस्त्राय फट् । (दांयें हाथ को सिर के ऊपर घुमा कर दाँये हाथ की पहली दो उंगलियों से बांयें हाथ पर ताली बजायें) ।

अथ ध्यानम् :- श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः ।
चद्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ।

चन्द्रगायत्री :- ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

बीज मन्त्र :- ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः ॐ भूभुर्वः स्वः ॐ इमन्देवाऽअसपत्न ठँ. सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमीराजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणाना ठँ. राजा । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः श्रौं श्रीं श्राँ ॐ सोमाय नमः ।

जपमंत्र :- ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000, प्रतिदिन)

चन्द्रस्तोत्रम्

पदच्छेद-एवं-सन्धिच्छेद सहित

विनियोग :- अस्य श्रीचन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, चन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

चन्द्रस्य, शृणु, नामानि, शुभदानि, महीपते ।
यानि, श्रुत्वा, नरः, दुःखान्, मुच्यते, न, अत्र संशयः ॥
सुधाकरः, च, सोमः, च, ग्लौ, रज :, कुमुद, प्रियः ।
लोक, प्रियः, शुभ्र, भानुः, चन्द्रमा, रोहिणी, पतिः ॥
शशी, हिमकरः, राजा, द्विजराजः, निशाकरः ।
आत्रेयः, इन्दुः, शीतांशुः, ओषधीशः, कलानिधिः ॥
जैवातृकः, रमा, भ्राता, क्षीर, उदार्णव, सम्भवः ।
नक्षत्र, नायकः, शम्भुः, शिरः, चूडामणिः, विभुः ॥
तापहर्ता, नभोदीपो, नामानि, एतानि, यः पठेत् ।
प्रति, अहम्, भक्ति, संयुक्तः, तस्य, पीड़ा, विनश्यति ॥
तत्,दिने, च, पठेत्, यः, लभेत्, सर्वम्, समीहितम् ।
ग्रहादीनाम्, च सर्वेषाम्, भवेत्, चन्द्रबलम्, सदा ॥

चन्द्रमंगल स्तोत्रम्

चन्द्रः, कर्कटक, प्रभुः, सित, निभः, च, आत्रेय -गोत्र उद्भवः ।
च, आग्नेयः, चतुर्ः, अस्त्रः, वारूणमुखः, च, आपः अपि, उमा, अधीश्वरः ॥
षट्, सप्तानि, दशैक - शोभन, फल शौरिः, प्रियः अर्कः, गुरुः,
स्वामी, यामुनदेशजः, हिमकरः, कुर्यात्, सदा, मंगलम् ।

नोट :- रात्रि में चन्द्रमा को देखते हुए 108 उपरोक्त पाठ करने चाहिए । सब कुछ प्राप्त होने के बाद भी जिन जातकों को मानसिक अशांति बनी रहती हो या राहु के कारण ग्रहण योग हो तो वह जातक अवश्य यह पाठ करें । कारण कि चन्द्रमा शीतल ग्रह है, पाठ करने से शीतलता अवश्य प्राप्त होती है ।

चन्द्रमा क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या वह खाली बैठा है ? क्या इसके पास कोई काम नहीं है ?

क्या ये शुभ ग्रह होते हुए भी शत्रुता कर रहा है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

पूर्व संदर्भों में हमने चन्द्रमा की महिमा को अलग-अलग रूप से गाया है । इस संदर्भ में हम विशेष उल्लेख इसलिए कर रहे हैं कि चन्द्रमा कर्म का भुगतान बगैर हथकड़ी लगाये जीव से निरन्तर भुगवाता है । जातक बुद्धिमान होते हुए भी बार-बार क्यों प्रताड़ित होता है । अपने ही मन में रात दिन व्यर्थ के विचारों का सहारा लेकर क्यों व्यथित रहता है । यहां तक देखा गया है कि अपना मन अपने को खाने लगता है जिसके कारण जीव शान्ति खो बैठता है और जिन्दगी से ऊब तक जाता है । चन्द्रमा जातक को खांसी, जुकाम, दमा प्रदान कर उसकी समस्त चालों को रोक देता है । जातक चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाता ।

यद्यपि इस संदर्भ की चर्चा पूर्व में भी की गयी है फिर भी अवलोकनार्थ सूक्ष्मतः अंकित है । महर्षि अत्रि की घोर तपस्या के फलस्वरूप चन्द्रमा का प्रादुर्भाव हुआ । महर्षि अत्रि के मूर्तिमान तप स्वरूप ये शुभ ग्रह बने और परमात्मा की आज्ञा अनुसार शुभ कर्मी को शुभ कर्म फल स्वरूप धन-धान्य, स्मृति, ऐश्वर्य प्रदान करने वाले सामर्थवान बने । चन्द्रमा यदि लग्न में उच्च का बैठा हो, लाभ से या धनभाव से सम्बन्ध हो तो, ये अपनी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं में जातक को करोड़पति बनाकर ऐश्वर्य भोगने की समर्थता पैदा करता है । चन्द्रमा मन का स्वामी है और संसार का कार्य कलाप मन से ही होता है । मन जिस इन्द्रिय के साथ रहता है वही इन्द्रिय भोक्ता रहती है । बाकी सब गौण हो जाती हैं । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि यदि मन नेत्र के साथ है तो नेत्र उस वस्तु का बारीकी से अवलोकन कर उसका उपभोग कर आनन्द लेता है और उसी का उपभोग कर आनन्द मग्न होता है यदि नेत्र के साथ मन नहीं है तो उस वस्तु को देखेगा तो सही पर कोई कार्य कलाप नहीं करेगा आनन्दानुभूति नहीं करेगा । इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों को समझें ।

चन्द्रमा जल का स्वामी है । अतः जल का स्वामी होने के कारण कर्क लग्न वाले व्यक्ति महान् आत्मा होते हैं । बड़े-बड़े वैज्ञानिक, परमहंस, संत, महात्मा युग प्रवर्तक तथा महान राजा इसी लग्न में प्रकट हुए । चन्द्रमा से सम्बन्धित जातक शान्त, उग्रता से रहित, विनम्र, परोपकारी और ईश्वर भक्त होते हैं । चन्द्रमा के ही प्रभाव से योगी, भक्तजन, परमात्मा को प्राप्त करते हैं । यदि संत महात्मा में उग्रता बनी रहती है तो वह परमात्मा की प्राप्ति में बड़ी बाधा हो जाती है । क्योंकि उग्रता जातक के लिए हर क्षेत्र में बाधक है ।

यदि आप बहुत बड़े उद्योगपति या राजा हैं तो याद रखें, पूर्व जन्मों के अति शुभ कर्मों के प्रभाव से तथा चन्द्रमा की कृपा से ही जातक धन-धान्य, समृद्धि वैभव प्राप्त कर राजा बन जाता है । लेकिन लक्ष्मी के प्रभाव से वह अहंकार से युक्त हो जाता है । मन पर उसका कोई नियन्त्रण नहीं रहता है, जिसके कारण वह अति निन्दनीय क्रूर कर्म कर बैठता है फिर उसी अनुपात में न चाहने पर भी उसके किए हुए कर्मों का भुगतान चन्द्रमा निर्दयता पूर्वक करवाएगा जैसे उसने निर्दयता पूर्वक कर्म किये हैं वैसे ही चन्द्रमा निर्दयता पूर्वक कर्म-भुगतान कई जन्मों तक करवाएगा ।

यदि आप स्त्री या पुरुष है

पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के फलस्वरूप और चन्द्रमा की कृपा से जातक अपार धन-धान्य ऐश्वर्यशाली होने के बाद भी मन को नियन्त्रित किये हुए है । एक पत्निव्रत धारी है । पत्नि का धर्मोचित लालन-पालन कर रहा है । सद्व्यवहार सद्विचार और ईश्वर की भक्ति करने के साथ-साथ पत्नि को अर्धांगिनी समझता है । शास्त्र की आज्ञा के विपरीत कोई कार्य नहीं करता, आराम से जीवन यापन करता है ।

चन्द्रमा ऐसे जातक पर परम प्रसन्न होकर सुन्दर सुशील चन्द्रमुखी भार्या प्रदान करता है । पत्नि के चेहरे में चन्द्र के कारण इतनी लावण्यता सौन्दर्यता होती है, लोग प्रकृति की अनूठी देन तक कह देते हैं । उसके मृग जैसे नयन अर्थात मृगनयनी, सुन्दर कान्तियुक्त गोल कपोल तथा शुक जैसी नासिका, सुन्दर कन्दुक की तरह गोलाकार उभरे हुए उरोज, नितम्ब, स्तंभ कान्ति से युक्त गजगामिनी भार्या प्रदान करता है । उसमें इतना सौन्दर्य होता है कि उसको देखने के बाद जातक अन्य स्त्री की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखता, उसी से रमण करता है तथा देवांगनाओं की सूरत का अनुभव करता है ।

ज्योतिष की दृष्टि से जिसका उच्च का चन्द्रमा होगा, केन्द्र स्थित होगा, पापक ग्रहों से दृष्ट नहीं होगा, १० से २० डिग्री का होगा और हाथ में चन्द्र क्षेत्र में पद्म बना होगा तथा चन्द्र पर्वत सब पर्वतों से ऊँचा होगा, ऐसी भार्या के घर में आते ही घर पूर्ण वैभवशाली बन जाएगा। नित्य निरन्तर हर क्षेत्र में उसके पति की ख्याति कीर्ति होती है तथा वह अपार ऐश्वर्य को भोगता है ।

जातक के अति शुभ कर्मों का फल चन्द्रमा इस प्रकार भुगवा कर जीते-जी स्वर्ग के आनन्द जैसा फल देता है । अन्त में पत्नि के मन को भी ईश्वर में लगा कर दोनों को मुक्त कर देता है ।

यदि उपरोक्त से विपरीत कार्य किये तो याद रखना चन्द्रमा रूपवान, गुणवान पत्नि होने के बावजूद मन नहीं लगने देगा । जातक हमेशा व्यथित रहेगा लाख चाहने पर भी उसका मन पत्नि सुख नहीं लेने देगा इस प्रकार चन्द्रमा कर्म का भुगतान कराएगा ।

यदि आप विद्यार्थी हैं

यदि आप विद्यार्थी हैं, पूर्वजन्म के कुकृत्य सुकृत्य के अनुसार ही चन्द्रमा आपको विद्या अध्ययन करने देगा या विद्या अध्ययन में उसी अनुपात से मन को लगने देगा । लाख चाहने पर भी विद्यार्थी का विद्या अध्ययन कार्य पूरा नहीं होगा । चौथे भाव में राहु के साथ चन्द्रमा बैठेगा । 6, 8, 12 में होगा और ज्यादा अंशों में खराब होगा तो बचपन से ही नीच की 6, 8, 12 की दशा चलेगी, विद्यार्थी के लाख चाहने पर भी विद्या नहीं पढ़ने देगा । यदि पढ़ भी लिया तो जिस समय वह परीक्षा देने बैठेगा, प्रयास भी करेगा तो लिख नहीं सकेगा अन्त में विद्यार्थी को परेशान होकर विद्या छोड़नी पड़ती है ।

याद रखें, इसमें चन्द्रमा का कोई दोष नहीं है दोष तो विद्यार्थी का है, उसने जैसा किया है उसका भुगतान चन्द्रमा करवा रहा है । यदि विद्यार्थी की ऐसी स्थिति हो जाए तो घबराएं नहीं चन्द्रमा का जप कर चन्द्रमा को अपने अनुकूल कर अपनी विद्या को पूर्ण करें ।

अब आप चिन्तन मनन करें, इसमें चन्द्रमा का क्या दोष है । यदि चन्द्रमा कर्म का फल न दे तो सारी प्रकृति का संचालन ही समाप्त हो जाए । फिर तो मनमानी करने वाले ही जीएँ और सत्य धर्म धारण करने वाले धार्मिक व्यक्ति को जीने का अधिकार ही न रहे । इसीलिए यदि जीव कुकर्म करने से बाज नहीं आता तब चन्द्रमा उसको मारने से बाज नहीं आवेगा ।

पूर्व संदर्भों में हम बराबर बताते चले आ रहे हैं कि चन्द्रमा मन का स्वामी है और मन ही मोक्ष बन्धन प्रदान करने का एकमात्र मूल कारण है । चन्द्रमा की उपासना से मन स्वच्छ सुन्दर आनन्ददायक हो जाता है ।

चन्द्रमा की महानता

चन्द्रमा सबसे पहले शंकर के पास पहुँचे और बोले, हे ! सदाशिव, मैं कलंकित हो गया हूँ । हे उमानाथ मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ मुझे आप आशीष दें । भगवान् शंकर ने सोचा, चन्द्रमा मन का स्वामी है इसीलिए इसे मैं यदि मस्तक पर धारण कर लूँगा तो ये सदा के लिए समाहित हो जाएगा और मेरी राम भक्ति पूरी होगी । तब शम्भु ने कहा चन्द्र तुम्हारी द्वितीया की किरण को मैं अपने मस्तक पर धारण करता हूँ । तब चन्द्र ने कहा, नाथ, आपने

चन्द्रमा भगवान् राम के पास पहुँचे और कहा, हे ! प्रभु मैं तुम्हारी शरण में हूँ । प्रभु, मैं दूषित हूँ यदि आप अपने नाम के साथ मेरा नाम जोड़ लें तो आपकी अति कृपा होगी नाथ आपके साथ मेरा नाम जुड़ने से मैं आपका मन ठीक कर दूँगा और आप जग का मन ठीक कर देंगे । तब भगवान ने एवमस्तु कहा और नाम रामचन्द्र अंकित कर दिया । इस प्रकार चन्द्रमा ने अपने नाम को प्रभु नाम के साथ जोड़कर अखण्ड श्रेय, श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया । यही कारण है, लोग आज भी चन्द्रमा के नाम से बच्चे का नाम रखते हैं लेकिन रावण, कंस आदि नाम नहीं रखते । सावित्री सीता आदि नाम लड़कियों के रखते हैं लेकिन पूतना सूर्पणखा, ताड़का आदि नाम नहीं रखते । कारण चन्द्रमा ने प्रभु शरण प्राप्त कर प्रायश्चित कर लिया था ।

चन्द्रमा हरिहर के परम उपासक थे । उन्होंने भगवान् श्री कृष्ण से प्रार्थनापूर्वक कहा, नाथ, आप अपने नाम के साथ मेरा नाम जोड़ लें तो मेरा और जनता का कल्याण होगा और मैं आपके दिव्य रस का रसपान कर सकूँगा । आप महारास जब करेंगे तो मैं अपनी किरणों से अमृत की वर्षा करूँगा । हे प्रभु ! मैं आपकी शरण में हूँ । तब भगवान् ने चन्द्र को एवमस्तु कह दिया तभी प्रभु कृष्णचन्द्र कहलाए । इस प्रकार चन्द्रमा ने अपना और जगत् का कल्याण किया अतः जीवन में चन्द्रमा की उपासना प्रत्येक प्राणी के लिए अत्यन्त आवश्यक है ।

जन्मांक द्वारा यह पता चल जाता है कि प्राणी सुकर्मी है या कुकर्मी । जन्मांक में यदि चन्द्रमा 6, 8, 12 में बैठा है, नीच का है या पापकर्मी योग बनाये बैठा है या राहु के साथ बैठा है तो यह मानना पड़ता है कि जातक पूर्वजन्म का पापकर्मी है । इसने मन के वशीभूत होकर निन्दनीय नीच कर्म किये हैं । उनके कर्म के भुगतान हेतु चन्द्रमा जन्मांक में दूषित हो जाता है और कर्म भोग भुगवाता है ।

मन पर नियन्त्रण न रहने के कारण वह मनचला हो जाता है और मनचला होने के कारण धन का दुरुपयोग करना आरंभ कर देता है । अपने ही उद्योग में काम करने वाले आदमियों को बुरी तरह से रौंदना आरंभ कर देता है । उनकी एक नहीं सुनता अत्याचार, अनाचार, पापाचार करने में उसे तनिक भी हिचक नहीं होती है । वह इतनी बेईमानी करता है कि उनके पूर्ण वेतन का भी भुगतान नहीं करता है ।

याद रखें, अनाचार, पापाचार, अत्याचार से कमाया हुआ पैसा अपना सद् प्रभाव नहीं दिखाएगा फलस्वरूप उसकी बुद्धि मलीन कर देता है । वही जातक उसी पैसे के प्रभाव से जुआरी, शराबी, वेश्यागामी हो जाता है और उसे यह बोध नहीं रहता कि मैं क्या कर रहा हूँ । इस प्रकार अपने हाथों ही अपना पूरा पैसा गँवा देता है । इसी कारण वह निर्धन, दलित, गलित, निन्दनीय जीवन जीने को मजबूर हो जाता है ।

दैत्य दानवों ने घनघोर तपस्या कर अमोघ वरदान प्राप्त कर लिए परन्तु ये घोर तमोगुणी थे । वरदान प्राप्त करने के बाद तमोगुण पूर्ण उभर कर ऊपर आया और उन्होंने संसार

का विध्वंस करना आरंभ कर दिया और तमोगुण के प्रभाव से दया, सत्य, ईश्वर को नकारते हुए स्वयं ईश्वर बन बैठे। जगत् विध्वंस देखकर भगवान विष्णु को अनेक अवतार धारण करने पड़े और राक्षसों का संहार किया। इसका दूसरा प्रमाण यह है कि त्रेता से कलियुग तक बुराइयों के प्रतीक माने जाने वाले रावण कुंभकरण आदि के पुतले हर वर्ष जलाए जाते हैं। अतः जनता जनार्दन को बोध कराया जाता है कि इस जन्म में जातक जनता पर अत्याचार, पापाचार, अनाचार न करे नहीं तो तुम्हारा भी यही हाल होगा।

याद रखें, परमात्मा प्रकृति और शास्त्र के विरुद्ध कोई कार्य सहन नहीं करता है। यदि जातक मनमानी करता है तो उसका कुकर्म ही उसे नष्ट कर देता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि राक्षसों ने घनघोर तप किया और ब्रह्म रुद्र से अमर होने के वरदान मांगे। अमर होकर भी उनकी कीर्ति यश अखण्ड नहीं रही। अतः मन को बार-बार समझाए और पूर्व कृत कर्म को समझते हुए भोगें तथा चन्द्रमा का हार्दिक मनन, भजन, यज्ञ जपन आदि विधिवत् करें ऐसा करने से मनः स्थिति सुधरेगी और चन्द्र कृपा से मन शुभ कर्म शुभ धर्म तथा प्रभु भजन करेगा जिससे जातक लौकिक पारलौकिक सुखों का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर मानव जीवन सार्थक कर सकेगा।

केन्द्र की विशेष खोज

जिस जातक का जल तत्व खराब हो जाता है अर्थात जल सम्बन्धी रोग जैसे खांसी, नजला, जुकाम आदि हो या मन बहुत अशान्त रहता हो उसे रात्रि में चंद्र दर्शन करते हुए चन्द्रमा का पाठ, पूजन आदि करना चाहिए । मन की शान्ति तथा उसके संयम के लिए चंद्र ग्रह की उपासना करनी चाहिए । इससे मन शांत हो जाएगा और जीवन यात्रा आसान हो जायेगी । इसके लिए चंद्र दर्शन करते हुए चन्द्रमा के बीज मन्त्र **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः** का कम से कम ग्यारह हजार जप नित्य करना चाहिए । चंद्र दर्शन करने से चंद्रमा की अमृतमयी किरणें उसमें आह्लाद उत्पन्न कर मन प्रफुल्लित करेंगी और मन की गति भी शांत हो जायेगी । चंद्र मंत्र का जप मोतियों की माला पर करने से विशेष लाभ होता है । मोती के अभाव में श्वेत चंदन की माला का प्रयोग किया जा सकता है । मनोविकार के रोगियों में इसका प्रयोग कर लाभ उठाया जा सकता हैं । सोमवार इसका दिन है और इस दिन इसका व्रत करना चाहिए और श्वेत वस्तुओं का सेवन करना चाहिए । नमक का सेवन न करें तो अच्छा है । श्वेत मोती की माला धारण करने से लाभ होगा ।

अध्यात्मवादियों को इसके जप, पूजन से विशेष लाभ होता है क्योंकि चंद्रमा मन का स्वामी है । मन के स्वामी की उपासना करने से मन की अबाध गति सध जाएगी और ईश्वर उपासना में मन साथ देगा । जिसने मन को जीत लिया, उसने सारे संसार को जीत लिया । मन की शांति प्राप्त किये बिना सब बेकार हैं । मन की अबाध गति सधने से अक्षुण्ण शांति प्राप्त होती है । इसके बिना कुछ भी नहीं है । सारे मंत्र सफल हो जाते हैं । इसी कारण भगवान शंकर ने द्वितीया के चंद्रमा को मस्तक पर धारण कर रखा है ।

चंद्रमा की धातु चांदी है तथा अनाजों में धान (चावल) है । जब चंद्रमा नीच का हो और जीवन में कष्टों की भरमार हो गई हो तथा असाध्य रोग औषधि सेवन करने से वश में ना आ रहे हों तो जातक को चन्द्रमा की चांदी की मूर्ति बनाकर दान करनी चाहिए तथा अपने वजन के बराबर चावल का तुलादान सफेद कपड़ों तथा फल फूलों के साथ करना चाहिए । यदि तुलादान ग्रहण के मध्य में किया जाए और इसके साथ अपने पहने हुए कपड़े तथा नये कपड़ों का जोड़ा भी दान किया जाये तो इस तरह दान करने से काफी राहत मिल जाएगी । इस क्षणिक राहत से जातक में निष्क्रियता तथा बौद्धिक जड़ता नहीं आनी चाहिए बल्कि और जोश के साथ उपासना में आगे बढ़ना चाहिए और मन्त्र जाप करना या करवा लेना चाहिए । चंद्रमा के बीज मन्त्र **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः** का ग्यारह हजार जप और स्त्रोत पाठ नित्य करना चाहिए । जप मोती की माला पर करना चाहिए और जप के उपरांत उसे पहन लेना चाहिए । इस प्रकार मंत्र जप करा करके केन्द्र ने बहुत से जातकों की भावुकता और चन्द्र प्रदत्त रोगों को समाप्त करने में सफलता प्राप्त की

शांति भी प्राप्त हुई है । हाथ तथा कुण्डली में चंद्रमा की जैसी स्थिति हो वैसे ही जाप करें। 6 व 12 लाख मंत्रों का जप करने से स्थिति अनुकूल हो जाये तो ठीक है नहीं तो 24 लाख मंत्र जप करना चाहिए । विश्वासपूर्वक मंत्र जप करने से मन की पीड़ा एकदम शांत तथा रोग ठीक हो जाएंगे ऐसा केंद्र का अनुभव है ।

बुद्धिमान श्रद्धालु अध्यात्मवादियों तथा सब कुछ प्राप्त होने पर भी अशान्त रहने वाले प्राणियों को चंद्रमा के एक करोड़ मन्त्र जप मोती की माला या साधारण माला पर कर या करवा लेने चाहिए ताकि मन सब कुछ या कुछ भी न होने पर शांत बना रहे । मन की शांति एक बड़ा भारी धन है । कारण यह है कि जितने भोग धन आदि बढ़ते जाते हैं उतनी अशांति भी अपने आप बढ़ने लग जाती है और यह अशांति तथा चिंता बहुत सारे कष्टों का कारण बन जाती है । जिसके मन में शांति आ जाती है, उसके सारे मंत्र फलदायक हो जाते हैं और आत्मा परमात्मा में मग्न हो जाती है । याद रखें, जिनके जन्मांक में चंद्रमा 6, 8, 12 भाव में बैठा हो, या राहु तथा चंद्रमा एक साथ बैठे हों या दृष्टि सम्बन्ध हो या पाप कर्तरी योग हो ऐसे जातकों का मन अधिक चिन्ता कराकर स्वयं को खाने लगता है । अधिक चिन्ता के कारण निर्णय शक्ति भ्रमित हो जाती है । अपने हाथों अपना विनाश हो जाता है । ऐसे जातक चंद्रमा का अवश्य जाप करें ।

एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य चंद्रमा ग्रह की जाप करके एक वर्ष में एक करोड़ मंत्रों का जाप बड़े आराम से कर सकता है । यदि करोड़ मंत्र जप करने की शारीरिक सामर्थ्य न हो तथा करवाने के लिये धन का अभाव हो तो मानव को चार बार में अर्थात् 24-24 लाख के चार चरण सुविधा अनुसार श्रद्धापूर्वक जीवन में कर लेने चाहिए । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है तथा इसमें सफलता प्राप्त होगी । केंद्र में 30 वैदिक ब्राह्मणों द्वारा यह एक करोड़ मन्त्र 21 या कम दिनों में पूर्ण विधि तथा शास्त्रोक्त रीति अनुसार किया जाता है ।

वेदों में चन्द्रमा

चंद्रमा की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में चंद्रमा की पूजा की जाती है ।

ॐ इमं देवाऽअसपत्न ठं सुवध्वम्महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठं. राजा ।।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् इमम्, देवा, असपत्नम्, सुवध्वम्, महतेक्षत्राय, महते ज्यैष्ठाय, महते जानराज्ज्याय, इन्द्रस्य-इन्द्रियाय ।। इमम्-अमुष्य पुत्रम्-अमुष्यै, पुत्रम्-अस्यै, विश, एष, वो, अमी, राजा, सोमो अस्माकं ब्राह्मणानाम्, राजा ।।

चंद्रमा ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला जप करना चाहिए । कारण, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केंद्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहाँ चंद्र रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केन्द्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

चंद्रमा बीज मंत्रः

ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः ।

चंद्रमा बीज मंत्रः सरल हिंदी भाषा में:-

ॐ श्राम् श्रीम् श्रौम् सः चन्द्रमसे नमः ।

अधिक जानकारी के लिए लेखक की चंद्रमा ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें।

भगवान मंगल

मंगल ग्रह पीड़ा निवारण विधि
तथा
ऋणहर्ता अमोघ मंगल स्तोत्र
(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत् ।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः ।।

मंगल सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

रक्त बल मज्जा कारक अग्निभय व युद्ध नियामक तथा पराक्रम का प्रतीक

मंगल ग्रह के संबंध में एक ज्ञानवर्द्धक प्रामाणिक कृति

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित मंगल संबंधी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता मंगल के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा, शास्त्र, अंक शास्त्र में मंगल का महत्व तथा विश्व सहित भारत में मंगल पूजा की परंपरा आदि की प्रामाणिक जानकारी ।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय--

- मंगल की उत्पत्ति
- द्युलोक में मंगल की स्थिति
- वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में मंगल संबंधी पठनीय सामग्री
- मंगल के नक्षत्र, इन नक्षत्रों में जन्में जातकों के गुण धर्म
- नक्षत्र विज्ञान और मंगल
- द्वादश भावों में मंगल
- मंगल की महादशा
- मंगली दोष कब? भ्रांतियों का निवारण
- मंगल के रत्न और जड़ी बूटियां
- हस्तरेखा शास्त्र में मंगल
- अरिष्ट नाशक मंगल यंत्र
- मंगल स्त्रोत एवं मंत्र तथा वीज मंत्र
- मंगल सम्वन्धी दोषों के निराकरण के सरल उपाय
- मंगल ग्रह तथा रक्तचाप का निदान ।

मंगल

मंगल के नदी नाले तथा मंगल धरातल का वास्तविक चित्र

मंगल

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगंदाधरः ।
चतुर्भुजः श्वेतरोमा वरदः स्याद्धरासुतः ।। *मत्स्यपुराण*

मंगल को पृथ्वी पुत्र कहा गया है और मंगल के संबध में की गयी आधुनिकतम खोजों में भी यही संकेत मिलता है कि मंगल अतीत में कभी पृथ्वी का हिस्सा था । मंगल के अनेक नाम है । यथा 'लोहितांग', 'कुँज', 'भौम' ।

मंगल की उत्पत्ति के विषय में पुराणों में भी अनेक आख्यान मिलते हैं । एक कथा के अनुसार पूर्व काल में दक्ष यज्ञ का विनाश करने के लिए जब रौद्ररूप त्रिशूल धारी शंकर कुपित हो गये तो उसी क्षण उनके ललाट में पसीने की एक बूंद टपक पड़ी । अगले क्षण यह बिंदु अनेक मुखों, नेत्रों और दस सहस्त्र हाथ पैरों से युक्त एक पुरुषाकृति में बदल गया । यही वीरभद्र था, जिसने देखते देखते दक्ष यज्ञ का विनाश कर दिया । अब वह समस्त त्रैलोक को ध्वस्त करने पर उद्धृत हुआ । यह देख शिवजी ने उससे अपना क्रूर कर्म बंद करने को कहा और वरदान दिया कि वह सभी ग्रहों के लिए शांति प्रदायक बने । शिवजी ने कहा, "पृथ्वी नंदन, तुम अंगारक नाम से विख्यात होगे और देवलोक में तुम्हारा अनुपम रूप होगा ।"

उसी क्षण पृथ्वी पुत्र वीरभद्र मंगल ग्रह में परिवर्तित हो गया ।

गणेश पुराण में भी मंगल की उत्पत्ति के विषय में एक कथा प्राप्त होती है । उसमें भी मंगल को पृथ्वी पुत्र बताया गया है ।

कथा इस प्रकार है:- वाराहकल्प की बात है । भगवान् वाराह ने रसातल से पृथ्वी का उद्धार कर उसे उसके कक्ष में स्थापित कर दिया । वाराह के तेजस्वी रूप पर पृथ्वी आसक्त हो गयी और वह उनको पति रूप में पाने की कामना करने लगी । वाराह ने पृथ्वी की मनोकामना पूरी की । उनके साथ सहवास से पृथ्वी गर्भवती हो गयी और कालान्तर में उसने मंगल नामक ग्रह को जन्म दिया ।

ऐसे अनेक पौराणिक आख्यान हैं जो पृथ्वी और मंगल के घनिष्ठ संबंध को प्रतिपादित करते हैं । मंगल ग्रह की बहुत सी बातें पृथ्वी से मिलती-जुलती हैं ।

खगोलीय विज्ञान में मंगल

मंगल की पृथ्वी से मध्यम दूरी ४,८५,४३००० मील है । उसका भूमध्यीय व्यास ४,२१९ मील है । मंगल पंद्रह मील प्रति सैकड की गति से भ्रमण कर ६८७ दिनों में सूर्य की परिक्रमा पूर्ण करता है ।

ज्योतिष शास्त्र में मंगल

ज्योतिष शास्त्र में मंगल को सेनापति का पद दिया गया है । ज्योतिष शास्त्र के अनेक आचार्यों ने मंगल के मूल स्वरूप का वर्णन किया है । सभी ने इसे रक्तवर्णी, तेजस्वी, वीर, पराक्रमी, क्रूर साथ ही उदार भी माना है । मंगल शक्ति का प्रतीक है । इसका रंग लाल है । यह ग्रह अग्नि तत्व का है। इसे नैसर्गिक पाप ग्रह कहा गया है ।

मंगल के नक्षत्र हैं मृगशिरा, चित्रा एवं धनिष्ठा और राशियां हैं-मेष एवं वृश्चिक। मकर राशि के २१ अंश पर यह परमोच्च तथा कर्क राशि के २८ अंश पर परम नीच होता है । दशम भाव में मंगल की स्थिति उत्तम मानी गयी हैं । मंगल जहां स्थित होता है, वहां से चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता हैं ।

मंगल महान पराक्रमी रक्त कारक ग्रह है और अनावश्यक उग्रता तथा अवांछनीय शांति इसे अप्रिय है । मंगल कटु पदार्थों को जन्म देता है । अतः मंगल लड़ाई- झगड़े का कारक ग्रह माना गया है और झगड़े, कलह तथा विरोध का प्रेरक है । मंगल को पृथ्वी का पुत्र कहा गया है । ग्रहों के कुटुम्ब में रवि, मंगल के पिता के स्थान में है और चन्द्र माता के स्थान में है । इसलिए मंगल में रवि और चन्द्र दोनों के गुणों का कुछ कुछ मिश्रण पाया जाता है । इसका आकार बड़ा होता है, वर्ण अशोक व किंशुक के फूलों जैसा लाल होता है । किरण स्वच्छ और मनोहर होती है, कान्ति तपे हुए तांबे के समान होती है और यह जब उत्तर मार्ग से चलता है तब राजा और प्रजा के लिए कल्याणकारी होता है ।

बड़ी दुर्घटनाएं होना, आग लगना, भूकंप आना, सूखा पड़ना आदि इसके प्रभाव के कारण होते हैं । यह सत्वगुण प्रधान तथा शक्तिशाली क्षत्रिय वर्ण व नेतृत्व गुण वाला ग्रह है । दक्षिणायन, रात्रि, दक्षिण दिशा तथा दशम् भाव में बली होता है । अपने दिवस में, अपनी होरा में, अपने मास में, अपने पर्व और काल में बुद्धिक्रम से अधिक बलवान होता है । इसका देवता षडानन कार्तिकेय है। यह पुरुष तामस ग्रह है और ग्रीष्म ऋतु का स्वामी है । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुंडली में मंगल के दोष को शनि शमन करता है । इसके विकृत होने पर उच्च या निम्न रक्तचाप आदि दोष होते हैं ।

लाल और सफेद मिला हुआ रंग मंगल का है और लाल रंग की किरणें पृथ्वी पर छोड़ता है । यह प्राणी मात्र के देहबल और मनोबल को पुष्ट करता है और शरीर में कंठ व कान में स्थित है । इसका शरीर के मज्जा भाग पर विशेष अधिकार है अर्थात जिसकी जन्म कुंडली में मंगल बलवान होगा उसके शरीर की मज्जा बलवान होगी और जिसके मंगल लग्न में पड़ा होगा, वह मनुष्य पचास वर्ष की अवस्था में भी तीस वर्ष का जवान प्रतीत होगा ।

भूमि पुत्र होने से भूमि, मकान आदि खरीदना, बनाना, भूमि गर्भ विशेषज्ञ होना, सफल डाक्टर, पुलिस तथा सेना में नायक आदि जातक को बनाने का काम करता है । यदि यह उच्च का हो तो केन्द्र में स्थित होकर जातक को यह उत्तम वस्तुएं, पद प्रदान करेगा । जिस जातक ने पूर्व जन्म में अपने पराक्रम का दुरुपयोग कर दूसरों को सताया है और नाश किया है तो ऐसे कर्मों का भुगतान रक्तचाप रोग तथा रक्त विकार आदि को देकर करायेगा।

मूंगा इसकी मणि है जिसे धारण करने से यहं काफी शांत हो जाता है यदि मंगल ग्रह उच्च का है तो जीवन में कर्ज न होगा और जातक भूमि जायदाद का मालिक हो जाएगा मंगलवार को लिया गया कर्ज नहीं उतरता । मंगल की धातु तांबा है तथा अनाज है गेहूं और मक्का ।

द्वादश भावों में मंगल

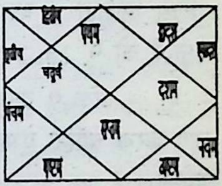

प्रथम भाव - साहसी, महत्वाकांक्षी, क्रूर, क्रोधी, सदैव चिंतित, स्त्री एवं संतान से कष्ट

द्वितीय भाव - कटु भाषी, धनाभाव से ग्रस्त, कौटुम्बिक क्लेश ।

तृतीय भाव - अनिष्टकारी लेकिन जातक शूरवीर, साहसी, पराक्रमी, गुणी, विपत्तिमय जीवन।

चतुर्थ भाव - प्रवासी, संतति युक्त, राज्य से विशेष उन्नति, विशेष वाहन सुख ।

पंचम भाव - कृष शरीर, क्रोधी, सन्तति से क्लेश ।

षष्ठ भाव - धैर्यवान, कुलीन, ऋषि, योगी, शत्रुहन्ता ।

सप्तम भाव - यायावर, राज भीरु, इर्ष्यालु, शत्रु पीड़ित, पत्नी विछोह ।

अष्टम भाव - जीवन में पग पग पर विघ्न, संकोची, व्यसनी, धन की चिंता ।

नवम भाव - नेता, यशस्वी, अभिमानी, तीक्ष्ण बुद्धि, क्रोधी विद्वेषी ।

दशम भाव - श्रेष्ठ, समादृत, यशस्वी, प्रतिभा संपन्न, प्रत्येक प्रकार से सुखी ।

एकादश भाव - न्याय प्रिय, साहसी, शत्रुहंता, क्रोधी ।

द्वादश भाव - साहसी, मिथ्यापवाद का शिकार, नेत्र रोगी ।

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि मंगल आठ, बारह भावों में किसी भी राशि का विशेषकर नीच का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नही है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले मंगल के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए । ताकि मंगल प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो । याद रखें अस्त मंगल भयंकर पीड़ा-जनक होता है चाहे वह किसी भी भाव का क्यों न हो ।

अंक शास्त्र में मंगल तथा मंगल प्रधान जातक

ज्योतिषीय विद्याओं में से अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही कर्ता को स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं । अंक विद्या में 9 का अंक मंगल को प्राप्त हुआ है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है अर्थात अंक 9 का स्वामी मंगल है । आपका जिस तारीख को जन्म हुआ है गणना करिए और जो अंक आये वही आपका अंकाधिपति है । जैसे आपका जन्म 9-18 या 27 तारीख को हुआ है तो आपका अंक स्वामी मंगल हुआ । यथा 18=1+8=9 या 27=2+7=9 ।

अंक 9 का भी अपना महत्व है और अंक नौ वाले जातक शूरवीर, कलहकारी तथा हट्टे-कट्टे एवं फौजी स्वभाव के होते हैं और उनके शत्रु अधिक हो जाते हैं तथा वह लड़ाई में खतरा भी शिरोधार्य करते हैं । वह हठी होते हैं और गाली गलौच तक कर बैठते हैं । दुर्घटनाओं के शिकार भी हो जाते हैं । वह परिश्रमी, कर्मठ, समाजसेवी, नेता या पुलिस मिलिट्री में कार्यरत होते हैं तथा भूगर्भ विशेषज्ञ तक बन जाते हैं । अंक 9 वाले जातकों को 9, 18, 27 तारीखों को कार्य प्रारंभ करना चाहिए अपार सफलता मिलेगी ।

अंक 9 वाले जातक को मूँगा धारण करना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए ऐसा करने से हर क्षेत्र में उन्नति प्राप्ति होगी और इच्छित लाभ प्राप्त हो सकेगा ।

मंगल प्रधान जातक स्वतंत्र विचार वाले तथा फुर्तीले होते हैं । वह चंचलता जल्दीबाजी, एवं खेल में आगे रहते हैं । वह स्पष्ट वक्ता, प्रभावशाली, स्वाभिमानी एवं शोधकर्ता होते हैं और बलवान एवं मनोबल युक्त होते हैं ।

मंगल प्रधान प्राणी में कमियाँ भी होती हैं जैसे क्रोध, अविश्वास, शंकाशीलता, अभिमान, धैर्य का अभाव, जल्दबाजी स्वार्थ आदि उन्हें जीवन में अनेकों बार कलह, वादविवाद परेशानी, स्पर्धा, संघर्ष आदि का सामना करना पड़ता है और गुस्सा अधिक आता है । नौकरी, व्यवसाय में अपने शक्ति के बल पर विकास करते हैं । कामवासना प्रबलतम होती है उसका लाभ नारी उठाती है और उसे ठग लेती है । जितनी वह मेहनत करते हैं उतना फल नहीं प्राप्त होता है ।

वह आक्रामक और कपटी होते हैं । दुर्घटना ऑपरेशन, जलने, चोट लगने से चेहरे पर कोई न कोई चिन्ह अंकित होता है । दूसरे के लिए कार्य करते हैं । अधिक बोलने से उन्हें यश नहीं मिलता तथा वह ऊँचे स्वर से आदेश देते हैं ।

* *

मंगल ग्रह से सम्बन्धित रोग तथां उनका उपशमन

मंगल ग्रह से संबंधित रोग उनके उपशमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न, रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी बूटियों को धारण करने की विधि, ग्रह शान्ति के लिए दान तथा मंगल ग्रह से सम्बन्धित व्यापार और नौकरी आदि का वर्णन इस प्रकार से है:–

रोग :- पित्त, वायु, कर्ण रोग, गूंगा, विशूचिका, खुजली, रक्त सम्बन्धी बीमारियां प्रदर, रज़, अंडकोष रोग, बवासीर आदि ।

यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाये तो ग्रह का प्रकोप अर्थात ग्रह की महादशा या अंतर्दशा लगी हुई समझनी चाहिए और बिना किसी से परामर्श लिए मंत्र जाप, रत्न, जड़ी बूटियां धारण करनी चाहिएं । इससे रोग हल्का होगा और ठीक होने लगेगा ।

रत्न/उपरत्न :- मंगलवार को मृगशिरा नक्षत्र में आठ रत्ती का मूंगा विद्रुम, मूंगी लाल रंग की, सूर्यास्त के समय धारण करें । अच्छा रत्न पहनते ही 40 प्रतिशत राहत प्राप्त होगी ।

रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती है वह रत्न पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता । इसलिए रत्न पहनने से पहले अर्थात अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य कर लेनी चाहिए क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही है । जिस प्रकार किसी मूर्तिकार के घर से लाई हुई किसी भी देवता की मूर्ति को मंदिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व प्राण प्रतिष्ठा विधान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। इसी प्रकार अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद उसमें भी प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक है ।

जड़ी बूटियां :- अनंतमूल की जड़ मंगलवार को मृगशिरा नक्षत्र में लाल धागे में दांये बाजू में बांधनी चाहिए । इससे ग्रह का दुष्टप्रभाव कम होना प्रारम्भ हो जाता है ।

दानः- ***मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों के काल में :-*** स्वयं के वजन के बराबर लाल मक्का या लाल मसूर, लाल वस्त्र, लाल फल, लाल पुष्प, चीनी, वृषभ, पृथ्वी, मूंगा, विद्रुम आदि । दान श्रद्धापूर्वक दक्षिणा सहित ब्राह्मण को संकल्प पूर्वक करना चाहिए ।

व्यापार/नौकरी :- यदि मंगल अधिक अंशों में बलवान हो तो निम्नलिखित व्यापार और नौकरी में विशेष लाभ होता है ।

व्यापार :- ताम्र और पारे का व्यापार, भवन बनाने सबंधी ठेकेदारी या भवन बनाने की सामग्री, कृषि सम्बंधी कार्य, दवाईयों का व्यापार आदि ।

नौकरी :- फौज अथवा पुलिस उच्च अधिकारी, भूगर्भ विशेषज्ञ, डाक्टर, वैद्य, चिकित्सा तथा कृषि पशुपालन आदि ।

मंगल ग्रह सम्बन्धित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र मंत्र, गायत्री मंत्र आदि भी नीचे पाठकों की सुविधा के लिए दिये जा रहे हैं जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । मंगल स्तोत्र के 108 पाठ करने से चमत्कारी लाभ होता है ।

अथ मंगल मंत्र

विनियोग :- ३ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

(कोष्ठक में लिखे अंगों को दायें हाथ से छुएं)

देहांगन्यास :- अग्निः शिरसि (सिर) । मूर्द्धा ललाटे (माथा) । दिवः मुखे (मुख)। ककुत् हृदये (हृदय) । पतिः उदरे (पेट) । पृथिव्या नाभौ (नाभि) । अयं कट्याम् (कमर) । अपा ठं. जान्वोः (घुटने) रेता ठं. सि गुल्फयोः (गुल्फ) । जिन्वति पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- अग्निर्मूर्द्धा अंगुष्ठाभ्यां नमः । दिवः ककुत् तर्जनीभ्यां नमः। पतिः मध्यमाभ्यां नमः । पृथिव्या अयम् अनामिकाभ्यां नमः । अपा ठं. रेता ठं. सि कनिष्ठिकाभ्यां नमः । जिन्वति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- अग्निमूर्द्धा हृदयाय नमः (हृदय) । दिवः ककुत् शिरसे स्वाहा (सिर) । पतिः शिखायै वषट् (शिखा) । पृथिव्या अयं कवचाय हूँ (दोनो कंधे) अपा ठं. रेता ठं. सि नेत्रत्रयाय वौषट् । जिन्वति अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम् :- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत् । धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः ।

भौमगायत्री :- ३ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ।

बीज मंत्र :- ३ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भूर्भुव स्वः ३ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ठं. रेता ठं. सि जिन्वति । ३ॐ स्वः भुवः भूः ३ॐ सः क्रौं क्रीं क्राँ ३ॐ भौमाय नमः ।

जपमंत्र :- ३ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः दशसहस्राणि 10000 प्रतिदिन।

ऋणमोचन मंगल स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवम्-सन्धिच्छेद सहित

मंगलः, भूमिपुत्रः, च, ऋणहर्ता, धनप्रदः ।
स्थिर, आसनः, महाकायः, सर्व-कर्म अवरोधकः ।।
लोहितः, लोहिताक्षश्च, सामगानाम्, कृपाकरः ।
धरात्मजः, कुजः, भौमः, भूतिदः, भूमिनन्दनः ।।
अङ्गारकः यमः, च, एव, सर्वरोग - अपहारकः ।
वृष्टेः, कर्ता, अपहर्ता, च सर्वकाम फलप्रदः ।।
एतानि, कुजनामानि, नित्यं, यः, श्रद्धया, पठेत् ।
ऋणम्, न, जायते, तस्य, धनम्, शीघ्रम्, अवाप्नुयात् ।।
धरणी, गर्भ, सम्भूतम्, विद्युत् - कान्ति - समप्रभम् ।
कुमारं, शक्ति, हस्तम्, तम्, मंगलम्, प्रणमामि, अहम् ॥
स्तोत्रम्, अङ्गारकस्य, एतत्, पठनीयम्, सदा, नृभिः ।
न तेषाम्, भौमजा, पीड़ा, स्वल्पापि, भवति क्वचित् ।।
अङ्गारक महाभाग भगवन् भक्त वत्सला ।
त्वाम्, नमामि, मम, अशेषम् ,ऋणम्, आशु, विनाशय ।।
ऋण-रोगादि - दारिद्रयम्, ये, च, अन्ये, हि, अपमृत्यवः ।
भय - क्लेश - मनः तापा, नश्यन्तु, मम, सर्वदा ।।
अतिवक्र, दुराराध्य, भोग - मुक्त - जित - आत्मनः ।
तुष्टः, ददासि, साम्राज्यम्, रुष्टः, हरसि, तत, क्षणात् ।।
विरञ्चि - शक्र - विष्णूनाम्, मनुष्याणाम्, तु, का, कथा ।
तेन, त्वम्, सर्वसत्वेन, ग्रहराजः, महाबलः ।।
पुत्रान्, देहि, धनम्, देहि, त्वाम्, अस्मि, शरणम्, गतः ।
ऋण - दारिद्रय - दुःखेन, शत्रूणाम्, च, भयात्, ततः ।।
एभिः, द्वादशभिः, श्लोकैः, यः स्तौति, च, धरासुतम् ।
महतीम्, श्रियम्, आप्नोति, हि, अपरः, धनदः युवा ।।

नोट :- ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का नित्य 108 पाठ करने से व्यक्ति का जीवन हमेशा ऋण से मुक्त रहता है । यदि ऋण हो भी जाए तो इसी का पाठ करने से उतर जाता है ।

मंगल क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या इसके पास कोई काम नहीं है?

क्या इसकी आपसे शत्रुता है ?

क्या यह खाली बैठा है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

पूर्व संदर्भों में हम मंगल की महिमा पराक्रम तथा क्रिया कलाप को गाते चले आ रहे हैं । इस लेख में हम ये बताने का प्रयास कर रहे हैं कि मंगल क्यों प्रताड़ित करता है । इसके पीछे क्या रहस्य है । जब जातक अपने बल पराक्रम, शक्ति का दुरुपयोग करता है शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन कर अपनी मनमानी करता है, बल के नशे में चूर होकर आततायी हो जाता है, समाज, परिवार किसी का लिहाज नहीं करता ज्यादातर उन लोगों को प्रताड़ित करता है जो लोग दूसरे से पैसा लेकर लोगों की हत्या कर देते हैं । एक अच्छे नेक इन्सान को मौत के घाट उतार देते हैं । याद रखें, पाप दोनों को लगता है हत्या करने वाले को तथा हत्या कराने वाले को ।

मंगल रक्त तथा मज्जा का स्वामी है । कानों में बैठकर सुनने की शक्ति देता है तथा मनोबल को कुछ भी न रहने पर भी बनाये रखता है । मंगल युद्ध का कारक ग्रह है इसलिए मिलिट्री, पुलिस में उच्च पदों को दिलाने में यही सहायक होता है । इसके प्रभाव वाले जातक मिलिट्री पुलिस की नौकरी प्राप्त करते हैं । इसका रंग लाल है और लाल रंग की किरणें निरन्तर पृथ्वी पर छोड़ता रहता है । याद रखें, यदि यह ग्रह जोश न प्रदान करे तो युद्ध हो ही नहीं सकता है और युद्ध जीता भी नहीं जा सकता ।

यदि आप महापराक्रमी, बलवान, पहलवान हैं

पूर्वजन्म के सुकृत और दान पुण्य तथा परोपकार के फलस्वरूप आपको धन-धान्य, समृद्धि, वैभव, तथा बल पराक्रम एवं सुन्दर निर्मल स्वस्थ्य शरीर तथा समस्त सुख उपलब्ध होते हैं । लेकिन धन के नशे में यदि चूर होकर आप धन को और अधिक बढ़ाने की लालसा में अपने बल पराक्रम का दुरुपयोग करने लगे, हत्या तक करने में हिचकिचाहट नहीं होती, खून खराबी, मारपीट कर व्यवसाय बढ़ाया तथा अहंकार के वशीभूत होकर दया धर्म को तिलांजलि दे दी । दूसरों से पैसा लेकर हत्या करना ही व्यवसाय बना लिया या डाकुओं की संगति में पड़ कर अपने बाहुबल द्वारा जनता-जनार्दन को लूटना मारना आरंभ कर दिया या भयंकर आतंकवादी होकर गाँव के गाँव जला डाले । बन्दूक की नोक पर धन कमाना आरंभ कर दिया यानि अपने बल पराक्रम और धन का पूर्ण

रूप से दुरुपयोग किया तथा शास्त्र की आज्ञा को नकारते हुए समाज और कुल धर्म के विपरीत कार्य किया तथा जघन्य अपराध किये ।

याद रखें, परमात्मा की आज्ञानुसार मंगल जातक के कर्म का भुगतान कराता है जब जातक समस्त मर्यादाओं का उल्लंघन करता है, प्रकृति से विरुद्ध चल पड़ता है प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ता है तो मंगल उसे प्रताड़ित करता है । जैसा उसने भयंकर कुकृत्य कर दूसरों को सताया है, ठीक उसी प्रकार मंगल उसको कई जन्म जन्मान्तरों तक सताता है।

जब तक उसके पाप का प्रायश्चित नहीं हो जाता मंगल भयंकर प्रताड़ित करता है । कारण जब जातक ने धन, वैभव, अहंकार दंभ के वशीभूत हो, बल का दुरुपयोग कर कुकृत्य किये फिर यदि मंगल उसके इस प्रकार की यातना न दे तो मंगल का प्रभाव ही क्या रहेगा । जातक सोचता है, इस जन्म में मैंने कोई पाप कर्म नहीं किया है, मैं धार्मिक, परोपकारी, समाजवादी हूँ फिर क्यों कष्ट प्राप्त हो रहे हैं । ऐसे जातक अपने पूर्व जन्म का स्मरण करें । याद रखें, प्राणी अपने कर्मानुसार ही सुख दुःख प्राप्त करता है । प्राणी पूर्व जन्म में जो कर्म कर आया है उसका फल इस जन्म में प्राप्त हुआ है और जो कर रहा है उसका फल उसे कालान्तर तथा अगले जन्मों में प्राप्त होगा ।

मंगल सबसे बड़ा दण्ड यह देता है कि योग्यता होने के बाद भी जातक का मनोबल गिरा देता है । जिससे जातक सारी उम्र घर में बैठा रहता है और सड़ता रहता है ।

कातिल का उदाहरण

हमारा ज्योतिष का विशाल प्रख्यात केन्द्र है और भारत के जनमानस का आज श्रद्धा बिन्दु बना हुआ है । ज्योतिष के माध्यम से यह बोध होता है कि यह जातक क्या है, पूर्व जन्म में यह क्या था और इस जन्म में यह क्या करेगा । एक दिन केन्द्र में हमारे पास एक कातिल आया । उसने कुण्डली दिखायी । कर्क लग्न थी, लग्न में राहु बैठा था और शनि से दृष्ट था, नीच मंगल की दशा में राहु का अन्तर चल रहा था । हमने उसका हाथ देखा । कुण्डली एवं हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन किया । उसके हाथ का अंगूठा यह बताता था कि यह आदमी क्रूर कातिल है । यदि अंगूठे का अगला पोर आलू की तरह मोटा हो जाए, अंगूठे का नाखून आधा रह जाए, अंगूठा सर्प के फन जैसा चौड़ा हो जाए, दूर से ही विकृत दिखायी दे तो जातक अतिक्रूर, कातिल होता है ।

अवलोकन कर हमने कहा 'तू तो कातिल दिखाई देता है । कत्ल करके आया है या करने जा रहा है' । उसने कहा, पंडित जी, मुझे कत्ल करने हेतु तीन लाख रुपया दिया गया है और मैं कत्ल करने जा रहा हूँ लेकिन आप यह बताएँ कहीं पकड़ा तो नहीं जाऊँगा, मैंने कहा, 'भइया, मैं कत्ल करने हेतु मुहूर्त निकालने वाला पंडित नहीं हूँ और न ही हमारे शास्त्रों में ऐसा उल्लेख है ।'

हमने कहना आरंभ किया कि पकड़ा तो तू अवश्य जाएगा, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में । यदि तू पुलिस को रिश्वत दे या चकमा देकर बच भी जाएगा लेकिन अगले कितने जन्मों में मंगल तेरी निर्मम हत्या करवाएगा और तूने यह जो तीन लाख की सुपारी ली है, यह तीन लाख रुपये कितने दिन चल सकेंगे । इस खून से सने पैसे का कितने दिन उपभोग कर सकेगा । पुनः उससे कहा कि क्या यमराज कहीं चले गये हैं और ड्यूटी तुझे सौंप गये हैं ? यदि तूने कत्ल कर दिया उसके परिजनों का शोक क्या तुझे नहीं व्यापेगा । जिसका घर तूने उजाड़ दिया क्या तेरा घर नहीं उजड़ेगा । याद रख, मंगल तेरा सर्वस्व छीन लेगा और कितने जन्मों तक भयंकर कष्ट प्रदान करेगा । तू प्रकृति के विरुद्ध कार्य कर रहा है क्या प्रकृति क्षमाकर देगी, परमात्मा ने तेरी भुजाओं में बल क्या दूसरों को सताने, मारने हेतु दिया है । इतना हृष्ट-पुष्ट शरीर है क्या तू परिश्रम कर धन नहीं कमा सकता है । याद रख, अपना खून पसीने का कमाया हुआ धन ही काम आता है । अतः विचार पूर्वक कार्य कर मूढ़ मत बन ।

इतना सुनते ही वह रोने लगा उसने कहा कि पंडितजी आपने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है कि मेरा अंतकरण शुद्ध हो गया है । मुझे स्मृति प्राप्त हो गयी है, अब मैं भूखा मर जाऊँगा लेकिन किसी का कत्ल नहीं करूँगा । इस सुपारी को लौटा दूँगा । हमने कहा, प्रभु कृपा से तुझे सद्बुद्धि प्राप्त हुई । संकल्प करो, नाक रगड़ो कि अब कभी भी किसी भी स्थिति में किसी का कत्ल नहीं करूँगा । इस प्रकार कहकर हमने उसे प्रतिज्ञा बद्ध किया और संकल्प कर वह चला गया ।

यदि आप डाक्टर हैं

याद रखें, मंगल भूमि का स्वामी है और पृथ्वी के गर्भ में ही सब जड़ी-बूटी औषधियाँ रहती हैं । इसलिए मंगल कृपा से ही ज़ातक सफल डाक्टर बनता है ।

श्री मद् से मदान्ध होकर अपनी डाक्टरी के अहंकार से आप पैसे लेकर मरीजों को जहर का इंजेक्शन लगाने लगे या मरीजों के साथ अत्याचार करने लगे उन्हें शुद्ध दवाई न देकर खराब दवाईयां इस्तेमाल कराने लगे और फैक्ट्री वाले जो औषधि बनाते हैं उनसे मिलकर पैसे खाने लगे, अपने व्यवसाय का दुरुपयोग किया तो याद रखना कि मंगल आपको निश्चित प्रताड़ित करेगा और कई जन्मों तक कहर बरसाएगा ।

30 वर्ष के शोध कार्य में हमने देखा कि इस जन्म में डॉक्टर तो बन गये परन्तु सफल डॉक्टर नहीं बन पाये । दुकान है पर ग्राहक नहीं अर्थात् डॉक्टर साहब बैठे हैं पर मरीजों का कोई अता पता नहीं । तब वह रोता है कि मेरे बगल वाले डॉक्टर के यहां मरीजों की लाइन लगती है परन्तु मेरे यहां एक मरीज तक नहीं आता है । यह प्रभाव है मंगल का । मंगल उसी डॉक्टर को हृदय रोग आदि देता है और मनोबल गिरा देता है ।

याद रखें, मंगल यदि जन्मांक में नीच का होगा या 6, 8, 12 में होगा या पाप ग्रहों से दृष्ट होगा तो वह जातक सफल डॉक्टर नहीं होता है यह जन्मांक द्वारा ही बोध होता है ।

यदि आप अपने बल पराक्रम का दुरुपयोग करते हैं

हमारा श्री बजरंग नवग्रह शोध संस्थान केन्द्र है जहाँ पर ग्रहों का शोध निरन्तर होता रहता है और जो शोध होता रहता है वह पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनता-जनार्दन के पास पहुँचा दिया जाता है । एक दिन हम केन्द्र में बैठे थे कि बेरी गाँव हरियाणा का एक लम्बा चौड़ा खूबसूरत पहलवान आया । बड़ी-बड़ी मूँछें थीं और सुन्दर 7 फुट का शरीर था उसको देखते ही हमने कहा, 'क्या करते हो ?' उसने कुछ उत्तर नहीं दिया हमने पुनः कहा, 'जीविका कैसे चलती है? ।' तब उसने कहा, 'पंडित जी सच बताऊँ ।' हमने कहा कहो, तब उसने कहा, 'पंडित जी मैं अपने इलाके का माना हुआ बदमाश हूँ । जिस लाला से जितने पैसे मांगता हूँ चुपचाप वह दे जाता है । इसी प्रकार ऐशोआराम से मेरी जीविका चल रही है ।'

तब हमने कहा, "परमात्मा ने तुझे बल पराक्रम दिया है तो इसका मतलब यह नहीं तुम बैठकर आराम से खाओ । तुम इस प्रकार अनाधिकार पापाचार कर शोषण करोगे तो मंगल तुम्हारे हजारों जन्मों को खराब कर देगा और जिस प्रकार से तुम आज दूसरों का शोषण कर रहे हो ठीक उसी प्रकार वही व्यक्ति हजारों जन्मों तक तुम्हें लूटेगा । अतः दूसरों का कभी शोषण नहीं करना चाहिए ।"

हमने कहा, 'पहलवान, तेरे में मच्छर जैसी शक्ति है । मंगल ग्रह में अनन्त शक्ति है, तुम्हें बख्शा नहीं जाएगा अब भी तुम हमारी बात मान लो शुभ कर्मों को करो अशुभ कर्मों को छोड़ दो । अतः तुम परोपकार करो और भुजाओं से कमाओ और प्रभु-भजन करो ।' तब उसने कहा, 'पंडित जी आज मुझे सच्चाई का बोध हो गया है अतः आज से मैं ईमानदारी, परोपकारी तथा सामाजिक जीवन निर्वाह करूँगा ।' इस प्रकार कह उसने सत्पथ पर चलने हेतु संकल्प किया और चला गया और आज खून पसीने की कमाई खा रहा है ।

पति–पत्नी विवाद

याद रखें, मंगल युद्ध का कारक ग्रह है । यदि यह जन्मांक में या लग्न सप्तम भाव में बैठा हो तो दाम्पत्य सुख विवादग्रस्त हो जाता है । पति पत्नी में भयंकर युद्ध होंगे। यदि नीच का हो तो निश्चित् नीच शब्दों का प्रयोग गाली गलौच आदि की बौछार होगी । यदि इनके साथ शनि और राहु बैठे हों तो आपस में युद्ध दुगने होंगे । पति पत्नी में वैमनस्यता हो जाती है । यही कारण है कि मंगली से मंगली का विवाह किया जाता है ।

विगत बीस वर्षों के अनुभव से हमें यह ज्ञात हुआ कि ऐसे क्रूर जातक पति पत्नि का सुख अर्थात दाम्पत्य सुख सात जन्म तक नहीं ले पाते हैं । चारों तरफ धक्के खाते हैं और कहीं पनाह तक नहीं मिलती है । मंगल उनके कर्म का भुगतान यथावत् कराता है और निन्दनीय जीवन जीने को बाध्य कर देता है । इसमें मंगल का दोष नहीं जैसा किया है वैसा भोगो, मंगल अपराधी को यथावत् कर्म भोग भुगवाते हैं ।

केन्द्र का अनुभव है कि जातक जैसे कर्म करता है उसे वैसे ही फल भोगने पड़ते हैं इसमें ग्रहों का अपराध नहीं है यदि अपराधी है तो वह है जातक । अतः ग्रहों पर वृथा दोषारोपण न करते हुए उनके मंत्र जाप कर अपने पूर्वकृत पाप को निर्मूल कर लें और निरन्तर प्रगतिशील हों ।

उपरोक्त का गहन अध्ययन कर मनन करें और विचार करें कि दोष हमारा है या मंगल का । पुण्य प्रभाव से जातक बल पराक्रम प्राप्त करता है लेकिन उसने यदि किसी प्रकार से दुरुपयोग किया तो मंगल उसको यथावत् भुगतान भी करवाता है । अब आप पुनः विचारें कि हमने जो कुकृत्य किए हैं उनका यदि यथावत् भुगतान न करायें तो मंगल की क्या सत्ता रही और मंगल के प्रभाव को मानेगा कौन तथा प्रभु सत्ता का क्या महत्व रहेगा और हमें यह कैसे ज्ञात हो सकेगा कि कोई हमारा नियन्ता है धर्म की सत्यता क्या है ? इसीलिए प्रकृति दूषित न हो वह कर्म भोग भुगवाता है और कर्म का प्रायश्चित प्रत्येक मानव को करना पड़ता है ।

अतः प्रत्येक जातक को जीवन में बल पराक्रम का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए तथा न ही किसी प्रकार का बलात् कर्म करें और न ही किसी को नाजायज सताएँ तथा ना ही किसी से किसी प्रकार की जबरदस्ती करें तथा ईमानदारी, कर्मठता से समाजसेवा करते हुए स्वच्छ जीवन जिएँ एवं मंगल ग्रह का यजन, जपन, यज्ञ, कर मंगल ग्रह कृपा प्राप्त कर लें । यदि मंगल ग्रह का जप एक करोड़ यज्ञ सहित कर लिया तो पूर्वकृत पापकर्म तो भस्म हो ही जाएगा साथ ही मंगल की कृपा प्राप्त होगी जिससे जातक हर क्षेत्र में प्रगतिशील होता हुआ मानव जीवन सार्थक करेगा । अतः इस धरा-धाम पर प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है कि सत्कर्म करे सत्पथ पर चले और सत्यता पूर्वक हरि स्मरण करते हुए जीवन निर्वाह करे ऐसा करने से जातक भव-पार होकर हरि ज्योति में समाहित हो जाएगा ।

केन्द्र की विशेष खोज

यदि लग्न में मंगल हो तो जातक के मस्तिष्क को अकारण गर्म बनाये रखता है जिसके फलस्वरूप बात-बात में क्रोध आ जाता है और जातक को झगड़े, कलह, विरोध के लिए प्रेरित करता रहेगा जिससे उग्रता बढ़ जायेगी और बगैर बुलाये हर कलह का नेतृत्व अपने हाथ में ले लेगा। इस कारण जातक की निर्णय शक्ति भ्रमित हो जायेगी जिसे कोई प्रयोग यानि औषधि, यंत्र, तंत्र, जड़ी बूटी नहीं निकाल सकती है। इसे केवल ऋषि प्रदत्त मंत्र द्वारा ही शांत किया जा सकता है। ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर अनुभव किया है।

रक्तचाप पीड़ित व्यक्ति मूंगे की माला पर इसके बीज मंत्र **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः** का कम से कम दस हजार जाप नित्य करें और साथ ही अनन्त मूल की जड़ के चूर्ण का सुबह तथा सायं गाय के दूध के साथ मंत्र जाप करते हुए 3 माशे वजन में सेवन करें तथा इस औषधि को मंत्र के समय दोनों ज्योतियों के बीच रखकर अभिमंत्रित कर लें तो अच्छा रहेगा। ऐसा करने से रक्तचाप आदि रोग से छुटकारा प्राप्त हो जाएगा तथा पाप राशि भी समाप्त होगी। यह प्रयोग कंठ तथा कान के रोगों में भी बहुत कार्य करता है। इससे कंठ तथा कान के सभी रोग ठीक हो जाते हैं। कंठ बहुत सुरीला हो जाता है और जिस व्यक्ति की वाणी अचानक बंद हो गई हो वापस आ जाती है और कान की श्रवण शक्ति भी बढ़ जाती है ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर अनुभव किया है। यह रामबाण की तरह अचूक प्रमाणित हुआ है।

विभिन्न रोगों के लिए

मंगल की धातु तांबा और अनाजों में गेहूं, मक्का तथा मसूर की दाल है। केन्द्र का यह अनुभव है कि जिन जातकों का मनोबल बहुत गिर गया हो, शरीर में चलने की शक्ति न रही हो, शरीर में थकावट हो गयी हो, घुटनों में चलने की शक्ति न रही हो, दिल इतना कमजोर हो गया कि थोड़ी सी कठोर शब्दावली को सहन न कर सकता हो तथा धड़कने लग ज़ाता हो, स्त्रियों का दवा खाने पर भी रजोधर्म ठीक न रहता हो और रक्तचाप विकारों ने घेर रखा हो तो इन सबसे छुटकारा पाने के लिए मंत्र जाप के साथ जातक को मंगल ग्रह की तांबे की मूर्ति बना कर दान करनी चाहिए और अपने वजन के बराबर मक्का, गेहूं तथा मसूर की दाल का तुलादान लाल कपड़े में बांधकर और उसमें सोने का अंश मात्र डाल कर मंगलवार के दिन सुयोग्य ब्राह्मण को दान अवश्य करना चाहिए। ऐसा करते ही फौरन राहत मिल जायेगी। ऐसा केन्द्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर अनुभव किया है। इस प्रयोग के साथ मंगलवार के दिन बन्दरों को भुने हुए चने, मिठाई, फल आदि खिलाने

चाहिएं । सवा किलो मक्का, तांबे के कुछ टुकड़े डाल कर लाल वस्त्र में बांध कर बहते जल में छोड़ देना चाहिए । चमेली के तेल या देसी घी में सिन्दूर को मिलाकर हनुमान जी की प्रतिमा पर चढ़ाना चाहिए और इसके बाद घी तथा तेल का दीपक और धूप जला कर बूंदी का प्रसाद चढ़ाना चाहिए । यह कार्य पाँच मंगलवार को करने से लाभ होता है । इस सबके उपरान्त मूंगा की माला पहननी चाहिए तथा उसी पर मंगल के बीज मंत्र का जाप अवश्य करना चाहिए । जैसे-जैसे जाप तथा उपरोक्त प्रयोग आरंभ होगा सारे दोष अपने आप समाप्त हो जायेंगे और जातक को नया हर्षोउल्लास प्राप्त होगा ।

ऋण मुक्ति के लिए

जो जातक ऋण से ग्रस्त हो गये हों वह भी उपरोक्त प्रयोग से लाभ उठा सकते हैं । इसके साथ उन्हें ऋण मोचन मंगल स्तोत्र का नित्य अधिक से अधिक पाठ करना चाहिए और ऋण के प्रति पहले वर्णित सावधानियां बरतनी चाहिएं ।

उन्नति की कामना करने वालों के लिए

जो जातक सेना, पुलिस में उच्च पदों की इच्छा रखते हों भूगर्भ विशेषज्ञ बनना चाहते हों या सफल चिकित्सक होना चाहते हों, जमीन जायदाद तथा कृषि सम्बन्धित लाभ लेना चाहते हों तो उनको मंगल के एक करोड़ मंत्र जप कर या करवा लेने चाहिए । एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य मंगल मंत्र का जाप करके एक वर्ष में एक करोड़ मंत्रों का जाप कर सकता है । यदि एक करोड़ मंत्रजाप करने की शारीरिक सामर्थ्य न हो या करवाने के लिए धन का अभाव हो तो चार बार अर्थात 24-24 लाख के चार चरण सुविधा अनुसार श्रद्धापूर्वक जीवन में कर लेने चाहिए । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है सफलता तभी प्राप्त होगी । केंद्र में ब्राह्मणों द्वारा यह एक करोड़ मंत्र जप 21 दिनों में पूर्ण विधि तथा शास्त्रोक्त रीति अनुसार किया जाता है ।

विवाह के लिए

यदि वर या कन्या के लग्न या सप्तम भाव में मंगल हो या मंगल कहीं से भी सप्तम भाव को देख रहा हो तो वर या कन्या जिसकी कुण्डली में मंगल दोष हो उसे मंगल की पूजा, उपासना तथा मंत्र द्वारा उपचार कर या करवा लेना चाहिए । इसके लिए मंगल के 24 लाख जप अवश्य कर लेने चाहिए, जिससे आने वाला दाम्पत्य जीवन आपसी सहयोग और प्रेम भाव से गुजरेगा अन्यथा ऐसा न करने से गृहस्थ जीवन में पति पत्नी में कलह, वाद विवाद हमेशा बना रहेगा और वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं गुजरेगा । कारण कि जिसका गृहस्थ बिगड़ जाता है उसका सब कुछ बिगड़ जाता है ।

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद्धरासुतः॥

वेदों में मंगल

मंगल की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में मंगल की पूजा की जाती है।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ।
अपा ठ रेता ठ सि जिन्वति ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् अग्निम् मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अपा ठ रेता ठ सि जिन्वति ॥

मंगल ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला जप करना चाहिए। कारण, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है। केन्द्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है। कारण, इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं। शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहाँ मंगल रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है। ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है।

मंगल बीज मंत्र:

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ।

मंत्र सरल भाषा में:

ॐ क्राम् क्रीम् क्रौम् सः भौमाय नमः ।

मंत्र कभी किसी को धोखा नहीं देते। मृत्यु के बाद भी काम आते हैं। गायत्री, भगवती आदि के मंत्र शापित हैं। बिना शाप विमोचन किये फलदायक नहीं होते हैं। दूसरे मंत्र जपने में मन नहीं लगा तो भी फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति नहीं होती। परन्तु ग्रहों के मंत्रों को किसी ने शाप नहीं दिया है। बिना मन लगाये ही केवल मंत्र उच्चारण करने मात्र से ही पूर्ण फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति हो जाती है।

केन्द्र का विगत बीस वर्षों का अनुभव है कि ग्रह पीड़ा मंत्र जाप से निर्मूल की जा सकती है। अतः जीवन में हर एक जातक को मंगल के 1 करोड़ बीज मंत्र अवश्यमेव कर या करवा लेने चाहिए ताकि जीवन प्रकाशमय रहे तथा जब तक जीयें मनोबल, देह बल न गिरे, रक्त दोष हृदय रोग दुर्घटनाएं न हों। केन्द्र एक करोड़ बीज मंत्र विधिवत शास्त्रोक्त रीति से पन्द्रह दिन में सम्पन्न करवा देता है।

नोट:- अधिक जानकारी के लिए मंगल ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें।

भगवान बुध

बुध ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ बुध स्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी ।

चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ।।

बुध सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

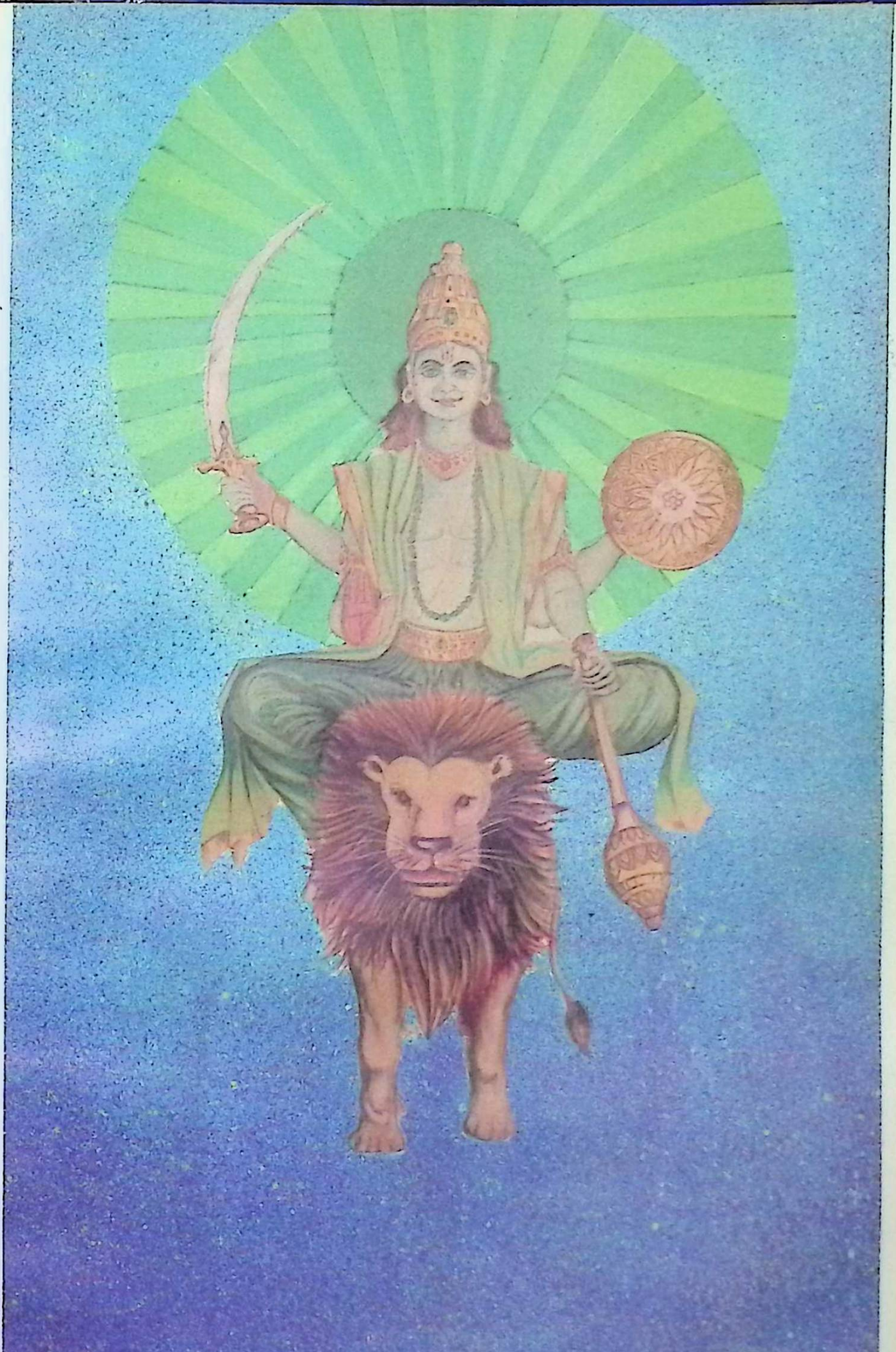

बुध

मेरीनस यान द्वारा लिया गया बुध के धरातल का वास्तविक चित्र

व्यापार सम्बन्धी समस्त उतार चढ़ाव का स्वामी हृदय का नियामक कल्याण एवं मंगलकारी बुध ग्रह के विषय में सांगोपांग अध्ययन

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित बुध संबंधी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता बुध के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र अंक शास्त्र में बुध का महत्व तथा विश्व सहित भारत में बुध पूजा की परंपरा, आदि की प्रामाणिक जानकारी ।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय

- बुध की उत्पत्ति
- अंतरिक्ष लोक में बुध की स्थिति
- पौराणिक ग्रंथों में बुध विषयक रोचक प्रसंग
- नक्षत्र विज्ञान और बुध
- बुध की राशि और नक्षत्र । इन नक्षत्रों में जन्में जातकों की विशेषताएँ
- द्वादश भावों में बुध
- बुध जब अस्त होता है
- बुध की महादशा के फल
- हस्त रेखा शास्त्र में बुध
- अंक शास्त्र में बुध
- फलदायी बुध मंत्र
- बुध स्त्रोत एवं मंत्र तथा बीज मंत्र
- बुध के रत्न तथा जड़ी बूटियां
- बुध सम्बन्धी दोषों के आसान उपाय

बुध

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः ।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः ।।

मत्स्यपुराण

बुध एक सौम्य ग्रह है । सूर्य, चंद्र, मंगल एवं अन्य ग्रहों की भांति बुध के विषय में भी अनेक पौराणिक आख्यान प्राप्त होते हैं ।

बुध की उत्पत्ति के संबंध में एक रोचक कथा प्राप्त होती है । कहा जाता है कि अत्रि पुत्र चंद्रमा देव गुरु बृहस्पति का शिष्य था । विद्या अध्ययन की समाप्ति के पश्चात जब उसने गुरु को दक्षिणा देनी चाही तो उन्होंने उससे कहा कि वह उस दक्षिणा को उनकी पत्नी तारा को दे आये ।

चंद्रमा जब गुरु पत्नी को अपनी दक्षिणा देने गया तो उसके रूप पर आसक्त हो गया और उसे साथ ले जाने का हठ करने लगा । गुरु पत्नी ने उसे बहुत समझाया पर वह न माना । जब बृहस्पति को यह बात मालूम हुई तो उसे शिष्य जान उन्होंने भी उसे बहुत समझाया पर चंद्रमा ने फिर भी दुराग्रह न छोड़ा । अंततः वह युद्ध के लिए तत्पर हुआ । बृहस्पति ने भी शस्त्र संभाले लेकिन युद्ध में वह अपने शिष्य चंद्रमा से परास्त हो गये । अब देवताओं ने चंद्रमा को समझाया लेकिन वह अपने हठ पर अड़ा रहा । जब शिवजी को चंद्रमा का यह अनाचार पता चला तो वे क्रोधित हो उठे और चंद्रमा को दंड देने चल पड़े । चंद्रमा फिर भी नहीं माना । उसने नक्षत्रों, दैत्यों, असुरों के साथ-साथ शनैश्चर और मंगल के सहयोग से शिव से युद्ध करने का निर्णय किया । अब घोर युद्ध शुरू हो गया । तीनों लोक भयभीत हो उठे। अंततः ब्रह्मा ने हस्तक्षेप का निर्णय किया । इस बार चंद्रमा झुक गया और उसने गुरु पत्नी तारा को लौटा दिया ।

एक वर्ष बाद तारा ने एक कान्तिवान पुत्र को जन्म दिया । उसका पिता चंद्रमा ही था। चंद्रमा ने उस पुत्र को ग्रहण कर लिया और उसका नाम बुध रखा ।

बुध के विषय में और भी अनेक आख्यान प्राप्त होते हैं । विदेशी पौराणिक आख्यानों में भी बुध के सम्बन्ध में अनेक कथाएं प्राप्त होतीं हैं । यूरोपीय जन इसे 'मरकरी' के नाम से जानते हैं ।

खगोलीय विज्ञान में बुध

बुध सूर्य के सर्वाधिक निकट ग्रह है । उसका व्यास ३,००० मील है तथा सूर्य से उसकी मध्यम दूरी ३६०,००,००० मील है । लगभग २७ मील प्रति सैकेंड की गति से बुध ८८ दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करता है । पृथ्वी से देखने पर यह सूर्य से कभी भी २७ अंश से अधिक दूर नहीं होता ।

ज्योतिष शास्त्र में बुध

ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन ग्रंथों में बुध को सुंदर देहधारी मधुर भाषी किन्तु स्पष्ट वक्ता एवं हरित वर्ण कहा है । इसे काल पुरुष की वाणी कहा गया है । सभी ग्रहों में उसे युवराज का पद दिया गया है । बुध से पांडित्य, वाक् शक्ति, कला, नैपुण्य, गणित और लेखन आदि का विचार किया जाता है । यह त्वचा प्रधान ग्रह है अर्थात बुध अच्छा होने से त्वचा अच्छी होगी और बुध के पापाक्रान्त होने से त्वचा के रोग होंगे । यदि यह जन्मकुण्डली में पीड़ित हो तो अपनी दशा, अंतर्दशा में वायु से, कफ से तथा पित्त से उत्पन्न तीनों प्रकार के रोग कर देता है । यह शरीर में तन्त्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) का अधिष्ठाता है और यदि बुध पीड़ित हो तो नर्वस सिस्टम में खराबी होगी । शरीर में इसे छाती तथा वाजुओं के अग्रभाग का स्वामी बनाया गया है । जिस जातक की कुण्डली में बुध चन्द्र इकट्ठे हों तो वे मजाक पसंद होते हैं और दूसरों का नुकसान करने में आनन्द मनाने वाले होते हैं । शुक्र से बुध की पराजय होती है और राहु के दोष बुध से दूर होते हैं । यह व्यापार आदि का भी स्वामी है ।

जिन जातकों ने पूर्व जन्म में निन्दनीय कार्य किये हैं और दूसरों को सता कर आनन्द लूटा होता है, ऐसे कर्मो के भुगतान के लिए बुध नीच का होकर दाम्पत्य जीवन का हरण कर लेता है अर्थात पति-पत्नी में मनमुटाव कलह, एक दूसरे के प्रति अविश्वास तथा सम्बन्ध विच्छेद तक करवा देता है । जातक को हृदय रोगी बनाकर इन पापों का भुगतान कराता है अर्थात जिस प्रकार दूसरों का आनन्द भंग किया था उसी प्रकार सब कुछ होने पर भी न तो दाम्पत्य जीवन का सुख ले सकता है और न ही संसार के और सुख भोग सकता है तथा रोगों से ग्रस्त होने पर अपने आप से ही परेशान हो जाता है । व्यापार आदि में घाटा ही घाटा रहता है । बुद्धिमान होने पर भी कोई बात नहीं बनती है । अच्छे कर्मो के भुगतान हेतु उच्च का होकर रोगों से मुक्त रखेगा । सफल व्यापारी बनाएगा । धन धान्य से पूर्ण करेगा और जीवन का पूरा आनन्द प्रदान करेगा । बुधवार इसका दिन है । पन्ना इसकी मणि है जिसके धारण करने से विशेष लाभ होता है । पीतल इसकी धातु है और अन्नों में हरा मूंग है ।

बुध के नक्षत्र हैः- *अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती* । बुध की राशि है : *मिथुन व कन्या*

स्वराशि कन्या में १५ अंश पर यह परमोच्च एवं मीन के १५ अंश पर परमनीच माना गया है ।

अंक शास्त्र में बुध तथा बुध प्रधान जातक

ज्योतिषीय विद्याओं में अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही प्रश्न कर्ता को स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं । अंक विद्या में ५ का अंक बुध को प्राप्त हुआ है । जो अपने आप में महत्वपूर्ण है । अतः अंक ५ का स्वामी बुध है । आपका जिस तारीख को जन्म हुआ है गणना करिये और जो अंक आये वही आपका अंकाधिपति है । जैसे आपका जन्म ५-१४-२३ तारीख को हुआ है तो आपका अंकाधिपति बुध हुआ । यथा १४=१+४=५/२३=२+३=५ आदि ।

अंक ५ वाले जातक प्रत्येक कार्य में जल्दबाजी करते हैं, निर्णय लेने में देरी नहीं करते और वह खोजी होते हैं तथा शीघ्र ही धन अच्छा कमाते हैं । वह बड़े से बड़ा व्यापार करने पर भी नहीं घबराते परिणाम चाहे जो कुछ आये । तनाव में रहते हुए भी सजग रहकर लक्ष्मीवान होकर सुन्दर होते हैं । बुधवार तथा शुक्रवार इन के लिए अच्छे दिन हैं । उनका स्वभाव शर्मीला, लचीला होता है और इसी अदा से वे दूसरों के मन को भी मोहित कर लेते हैं । ऐसे जातक बुध का रत्न पन्ना साढ़े पाँच रत्ती का धारण करें और गाय को प्रातः हरी घास खिलाये तथा बुध के बीज मंत्र का जाप करें ऐसा करने से कर्ता के बुध कृत सभी पीड़ा समाप्त होगी और बुध कृपा से हर क्षेत्र में विकास प्राप्त होकर मन इच्छित लाभ प्राप्त हो सकेगा ।

बुध प्रधान व्यक्ति, बुद्धिमान शोधक, संगीतप्रेमी, महत्वपूर्ण, वाक्पटुता, तथा कुशल व्यापारी होते हैं । वह शक्तिशाली, विचारवान सौन्दर्य का पुजारी, भावना प्रधान, विद्यावान एवं बुद्धिजीवी होते हैं । उनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है और वह प्रत्येक कार्य सोच समझकर करते हैं । लेखन स्वच्छ एवं सुन्दर होता है लेकिन मितव्ययी होते हैं और खुला स्थान उन्हें बहुत पसंद होता है । बुध प्रधान व्यक्ति, ज्योतिषी, डॉक्टर, वकील, दलाल, व्यापारी, लेखक, लिपिक, अर्थशास्त्री आदि होते हैं ।

उनकी कुछ विशेष कमियाँ भी हैं जो उन्हें प्रगति के पथ पर रुकावटें खड़ी करती हैं जैसे आलस्य, अकारण क्रोध, अधिक चिन्ता और ज्यादा बातचीत करना आदि इन्हीं कारणों से कुछ कठिनाइयाँ आती हैं । असफलता के विचार से उनको भय, शंका, दुःख, उत्पन्न होता है । बुद्धि का कार्य करते हैं मगर शारीरिक श्रम से दूर रहते हैं । जीवन साथी के अनुरूप होने की उन्हें मुख्य जरूरत रहती है । खाने पीने और बोलने में उनका नियन्त्रण नहीं रहता ।

द्वादश भावों में बुध

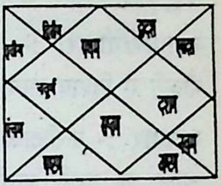

प्रथम भाव - स्वर्ण-समान कांति, दीर्घायु, गणितज्ञ, विनोदी, विद्वान्, धार्मिक कार्यों में रुचि।

द्वितीय भाव - सत्कर्म में प्रवीण, साहसी, बुद्धिमान, परिश्रमी, वकील, नेता ।

तृतीय भाव - लेखक, संपादक, कवि, विषयासक्त, सद्गुणी, अल्पभ्रातृवान, नम्र, उदार, व्यापारिक कार्यों में रुचि ।

चतुर्थ भाव - भाग्यवान, दानी, लेखक, नीतिवान, बुद्धिमान, स्थूल शरीर, पितृधन से वंचित।

पंचम भाव - स्वार्थी, प्रपंची, सन्तान का अभाव ।

षष्ठ भाव - कलह प्रिय, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, स्त्री प्रिय, पुरुषार्थी ।

सप्तम भाव - पत्नी के लिए सुखदायक, कान्तिवान, सौन्दर्यवान, सुंदर कुलीन, सम्पादक, उदार ।

अष्टम भाव - दीर्घायु, सुन्दर, वक्ता, अभिमानी, कृषि कार्य में निपुण, कवि न्यायाधीश, व्यापार से लाभ ।

नवम भाव - बुद्धिमान, तीर्थाटन प्रिय, कुल दीपक, कवि, गान विद्या निपुण, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी, भाग्यवान, शत्रु हन्ता ।

दशम भाव - विद्वान्, अल्पभाषी, व्यवहार कुशल, कवि, लेखक; मातृ-पितृ भक्त, न्याय निपुण ।

एकादश भाव - अपार संपत्ति, दीर्घायु, सदाचारी, विद्वान्, प्रसिद्ध कवि, लेखक, सम्पादक, पुत्रवान, शत्रु नाशक ।

द्वादश भाव - विद्वान्, धर्मात्मा, कुलीन, गुणी, शास्त्रज्ञ, आलसी ।

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि बुध छः, आठ, बारह भावों में किसी भी राशि का बैठा हो तो निश्चित ही पीड़ाजनक होगा इसमें कोई संशय नहीं है । समय से पहले बुध के बीज मंत्र का जप अवश्य कर लेना चाहिए । ताकि बुध प्रताड़ित न करे । याद रखें अस्त बुध भयंकर पीड़ा-जनक होता है चाहे वह किसी भी भाव का क्यों न हो ।

बुध सम्बन्धी अन्य विवरण

बुध ग्रह से सम्बन्धित रोग, उनके शमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न रत्नों के अभाव या न पहन सकने का कारण जड़ी बूटियों को धारण करने की विधि, ग्रह शान्ति के लिए दान तथा बुध ग्रह से सम्बन्धित व्यापार और नौकरी आदि का वर्णन इस प्रकार है :-

दान :- आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों के काल में - स्वयं के वजन के बराबर हरी मूँग, हरे वस्त्र, हरे फल, हरी मिठाई, कांसा, पीतल, हाथीदांत, `हरा वस्त्र, मूंग, पन्ना. स्वर्ण

कपूर, शस्त्र, फल, पट्रस भोजन, घृत सर्व पुष्प आदि अश्लेपा नक्षत्र में दान करें । दान श्रद्धापूर्वक दक्षिणा सहित ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक ग्रह के नक्षत्र काल में दान करना चाहिए ।

व्यापार/नौकरी :- यदि बुध अधिक अंशों में बलवान हो तो निम्नलिखित व्यापार और नौकरी में विशेष लाभ होता है ।

व्यापार :- कसीदाकारी, सिलाई मशीनों का व्यापार, वनस्पति घी का व्यापार, कबाड़ खाने आदि का कार्य, प्राचीन वस्तुओं के संग्रह का व्यापार और खेल आदि के सामान का व्यापार ।

नौकरी :- मंत्रीपद, विधायक पद, पुरातत्व विभाग की नौकरी, लायब्रेरियन, शार्टहैण्ड, बैंकिंग लाइन, एकउन्टेंसी की नौकरी आदि, इनकमटैक्स अधिकारी, डाक तार विभाग, ज्योतिष कार्य, हस्तरेखा ज्ञान, शेयर बाजार आदि ।

रोग :- खाँसी, ह्रदयरोग, वात रोग, ह्रदय सम्बंधी रोग, कोढ़, मन्दाग्नि, श्वास रोग, दमा तथा गूँगापन ।

यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाये तो ग्रह का प्रकोप अर्थात् ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा लगी हुई समझनी चाहिए और बिना किसी से पूछे मंत्र जाप, रत्न जड़ी बूटी धारण करनी चाहिए । इससे रोग हल्का होगा और ठीक होने लगेगा ।

रत्न उपरत्न :- पन्ना, संग पन्ना, मरगज़ तथा औनिक्स । यह कथित रत्न छह रत्ती वजन का हो, रत्न किसी भी समय बुधवार को अश्लेषा नक्षत्र में धारण करें । अच्छा रत्न पहनते ही 40 प्रतिशत राहत होगी ।

रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती है वह रत्न पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता है । इसलिए रत्न पहनने से पहले अर्थात् अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य कर लेनी चाहिए क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही है । जिस प्रकार किसी मूर्तिकार के घर से लाई हुई किसी देवता की मूर्ति को मन्दिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व प्राण प्रतिष्ठा का विधान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है ।

जड़ी बूटियां :- विधारा की जड़ बुधवार को आश्लेषा नक्षत्र में हरे धागे में दायें हाथ में बांधनी चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव कम होना प्रारम्भ हो जाता है ।

बुध ग्रह से संबंधित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र मंत्र तथा गायत्री आदि भी पाठकों की सुविधा के लिए दिये जा रहे हैं जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । नित्य 108 पाठ करने से चमत्कारिक लाभ होता है ।

अथ बुध मंत्र

विनियोग :- उदबुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

(कोष्ठक में लिखे अंगों को छूते रहें)।

अथ देहांगन्यास :- उदबुध्यस्वेति शिरसि (सिर) । अग्ने प्रति ललाटे (माथा)। जागृहि त्वं मुखे (मुख) इष्टापूर्ते हृदये (हृदय) स ठं. सृजेथामयञ्च नाभौ (नाभि) अस्मिन्त्सधस्थे कट्याम् (कमर) । अद्ध्युत्तरस्मिन् ऊर्वोः (छाती) । व्विश्वे देवा जान्वोः (घुटने) । यजमानश्च गुल्फयोः (गुल्फ) । सीदत पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वम् अंगुष्ठाभ्यां नमः । इष्टापूर्ते तर्जनीभ्यां नमः । स ठं. सृजेथामयं च मध्यमाभ्यां नमः । अस्मिन्त्सधस्थेऽद्ध्युत्तरस्मिन् अनामिकाभ्यां नमः । विश्वेदेवा यजमानश्च कनिष्ठिकाभ्यां नमः । सीदत करतलकरपृष्ठाभ्याम् नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वं हृदयाय नमः (हृदय) इष्टापूर्ते शिरसे स्वाहा । स ठं. सृजेथामयञ्च शिखायै वषट् (शिखा) अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् कवचाय हूँ । (दोनों कन्धे) विश्वेदेवा यजमानश्च नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र) सीदत अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम् :- पीताम्बारः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजः दण्डधरः च हारी ।
चर्मासिधृक् सोम सुतः गदाभृत् सिंहाधिरूढः वरदः बुधः च ॥

बुधगायत्री :- ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥

बीज मंत्र :- ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः भूर्भुवः स्वंः ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सठं. सृजेथामयञ्च अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत । ॐ स्वः भुवः भूः ब्रौं ब्रीं ब्राँ ॐ बुधाय नमः ।

जपमंत्र:- ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः । 19000 प्रतिदिन ।

बुधपंचविंशतिनामस्तोत्रम्

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीबुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रस्य प्रजापतिऋषिः।
त्रिष्टुपछन्दः बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।।

बुधः, बुद्धमताम्, श्रेष्ठः, बुद्धिदाता, धन प्रदः ।
प्रियंगु, - कलिकाश्यामः, कञ्ज, नेत्रः, मनोहरः ।।
ग्रहः, उपमः, रोहिणेयः, नक्षत्रेशः, दयाकरः ।
विरुद्ध, कार्यहन्ता, च, सौम्यः, बुद्धि-विवर्धनः ।।
चन्द्रात्मजः, विष्णुरूपी, ज्ञानज्ञः, ज्ञानीनायकः ।
ग्रहपीडाहरः, दार-पुत्र-धान्य-पशु प्रदः ।।
लोकप्रियः, सौम्य मूर्तिः गुणदः, गुणिवत्सलः ।
पञ्चविंशतिनामानि, बुधस्य, एतानि, यः, पठेत् ।।
स्मृत्वा, बुधः, सदा, तस्य, पीडा, सर्वा, विनश्यति ।
तत्, दिने, वा, पठेत्, यः, तु, लभते, स, मनोगतम्।।

बुध मंगल स्तोत्रम्

सौम्य, उदङमुखः - पीतवर्ण, मगधः, च, आत्रेय, गोत्र उद्भवः ।
बाण, ईशान दिशः, सुहृत्, शनि भृगुः शत्रुः सदा शीतगुः ॥
कन्या, युग्मपतिः, दशाष्टचतुरः, षड्नेत्रकः शोभनः ।
विष्णुः, पौरुषदेवते, शशिसुतः, कुर्यात् सदा मंगलम् ।।

नोट :- बुध हर प्रकार के व्यापार का जनक है । उपरोक्त 108 पाठ नित्य करने से जातक सफल व्यापारी बनता है और व्यापार के उतार चढ़ाव सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं ।

हस्त रेखा शास्त्र में बुध

हस्तरेखा शास्त्र में भी बुध का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है । हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हथेली में बुध पर्वत कनिष्ठ अर्थात सबसे छोटी उँगली कहलाती है । यदि बुध पर्वत पर कोई रेखा हृदय रेखा से चलकर पहुँचे तो सन्तान के बारे में बताती है । जितनी रेखाएं होती हैं उतनी ही सन्तानें होती हैं । यदि ये रेखाएं बुध पर्वत पर पहुंच जायें तो जितनी रेखाएं होंगी उतने ही उसके सम्बंधी होंगे । यदि विवाह रेखा जीवन रेखा के समान होती है तो उसे सफल विवाह रेखा कहते हैं । विवाह रेखा बुध की अंगुली की ओर मुड़ जाये तो पत्नी की अकाल मृत्यु होती है । यदि विवाह रेखा हृदय रेखा की ओर मुड़ जाये तो उसकी पत्नी रोगिनीं होती है । यह रेखा सर्प जिह्वा हो जाये तो पत्नी से तलाक होता है, और यदि विवाह रेखा से कोई रेखा बुध की उंगली की ओर जाती है या हृदय रेखा की ओर आती है तो उतनी ही पुत्रियों की सूचक है। यदि यह पर्वत सामान्य आकार का हो तो वह व्यापारी होता है । यदि यह पर्वत ऊंचा हो तो वकील जज या ऊंची पदवी पर होता है ।

बुध की अंगुली

हाथ में सबसे छोटी अंगुली (कनिष्ठ) को बुध की अंगुली कहा जाता है । यदि बुध की अंगुली (कनिष्ठ) का अन्तिम पोर से अन्दर की तरफ मुड़ी हो तो वह व्यापारी प्रकृति का होता है और यदि यह बाहर की तरफ मुड़ी हो तो वह असफल व्यापारी होता है तथा वृद्ध अवस्था में कष्टमय जीवन व्यतीत करता है । यदि इस अंगुली का बीच वाला पोर बाहर की तरफ मुड़ जाए तो अर्ध जीवन में अपंग हो जाता है। यह यदि अन्तिम पोर से बाहर की तरफ मुड़ी हो तो वह जन्म से अपंग तथा अल्प आयु होता है । यदि यह अंगुली सूर्य की तरफ मुड़ी हो तो भी यही बातें पाई जाती हैं तथा ज्यादा हानिकारक होती हैं । जैसे— चर्मरोगी, कोढ़ या हत्यारा आदि । यदि अंगुली ऊपर से बाहर की तरफ मुड़ी हो तो उसकी पत्नी जवानी में आत्महत्या करती है । यदि यह अंगुली ऊपर तरफ मुड़ी हो तो जातक दूसरों के द्वारा अचानक मार दिया जाता है, जैसे दुर्घटना आदि । यदि यह अंगुली बहुत छोटी है तो आदमी का कद छोटा और ऐसे लोग सर्कस के जोकर बनते हैं तथा वृद्ध अवस्था में अकस्मात मारे जाते हैं। ऐसे लोग सारा जीवन बिना कमाये खाते हैं और अकेले रहते हैं ।

बुध क्यों प्रताड़ित करता है

क्या ये खाली बैठा है ?

क्या इसके पास कोई काम नही है ?

क्या ये शुभ ग्रह होते हुए भी शत्रुता कर रहा है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

पूर्व संदर्भों में इसकी अलग-अलग व्याख्या की है । इस सम्बन्ध में हम यह बताना चाहते हैं कि व्यापारियों को बुध ग्रह बाधा क्यों देता है । आदमी व्यापार के काबिल होते हुए भी क्यों नहीं कमा पाता है । हम अपने जन्मांक से जानें की हम व्यापार क्यों नहीं कर पा रहे हैं । किस पाप के फलस्वरूप बार-बार बाधा उत्पन्न होती है ।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो अर्थात् बुध परम सौम्य बुद्धिमान ग्रह है । धन कारक एवं हृदय का स्वामी है । सारा गणित फलित इसी के माध्यम से होता है । बुद्धि में स्मृति बल यही देता है । यह चन्द्रसुत महाबली परम सुन्दर ग्रह है । भगवान् ब्रह्मा की आज्ञा से प्राणीमात्र के कर्मों का फल सतत् भुगवाता रहता है और कर्मफल का भुगतान करा, शुद्ध करता है । सूर्य के ६ डिग्री आगे पीछे यह अस्त हो जाता है । इसके अस्त होते ही व्यापार में उतार-चढ़ाव प्रारम्भ हो जाता है । यानि घाटा-नफा हानि-लाभ होता रहता है । जिन जातकों के जन्म का बुध अस्त हो और यदि उसकी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा चल जाय तो हानि अवश्य होती है ।

यदि आप व्यवसायी हैं

पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों के अनुसार आप धन-धान्य ऐश्वर्य से परिपूर्ण हैं । अर्थात् लक्ष्मी आपके पास है । श्री मद से मदान्ध होकर आप अपने व्यापार को कई गुणा बढ़ाना चाह रहे हैं । आपने बेईमानी का सहारा ले लिया है । दूसरों का शोषण करने लगे और माल उधार दिया और ग्राहकों से दुगने पैसे वसूल किए । बेईमानी ठगी आरंभ कर दी । इस प्रकार दूसरों का शोषण करना ही मुख्य धर्म हो गया । अपने आपको ईश्वर तक मानने लगे । ऐसे जातक याद रखें बुध की बड़ी सूक्ष्म दृष्टि है । आप दुनियां की दृष्टि से बच सकते हो लेकिन बुध की सूक्ष्म दृष्टि से नहीं बच सकते । यहां रिश्वत देकर बच सकते हो लेकिन बुध तुम्हारे कर्मों के लेखा-जोखा के अनुसार तुम्हें कर्म भोग अवश्य भुगवायेगा ।

जातक जिस किसी के साथ किसी भी प्रकार का कैसा भी धोखा करता है बुध महाराज भी अनेक जन्मों तक ठीक उसी प्रकार का धोखा उसके साथ भी बार-बार कराते हैं जैसा उसने किया था । कहने का तात्पर्य यह है कि जैसा तुमने किया है वैसा ही बर्ताव आपके साथ होगा । इन कर्मों के भुगतान हेतु जन्मांक में बुध ६-८-१२ में बैठ जायेगा तथा व्यापारी होते हुए भी तुम्हें सफल व्यापारी नहीं बनने देगा । व्यापार से इच्छित लाभ नहीं प्राप्त करने देगा । अर्थात् पछतावा शेष रहेगा । इस प्रकार जब जन्म का बुध अस्त होगा तो करोड़ों रुपये के नुकसान होंगे और स्थिति दयनीय हो जायेगी ।

एक बार हम ज्योतिष सम्मेलन में पाली (राजस्थान) गये वहां हमें एक सेठ मिला। उसकी कुण्डली देखी । पंचम में बुध नीच का बैठा था । बुध में शनि चल रहा था और राहु से दृष्ट था । फिर हाथ को देखा, देखने के बाद हमने कहा कि सेठ जी बेइमानी आपके रोम-रोम में बसी हुई है । ईमानदारी तो आपको छोड़कर कोसों दूर चली गयी है । आपके अन्दर अहम् की प्रवृत्ति इतनी बढ़ गयी है कि शेष जीवन में भी आप बेईमानी नहीं छोड़ सकते । लाला के जन्मांक एवं हस्तरेखाओं का फलित किया, फल सुनकर लाला अत्यन्त परेशान हो गया और खेद पूर्ण हाथ जोड़ कर बोला, 'पंडित जी इस पाली नगरी में मुझसे बढ़िया, मुझसे ज्यादा कोई बेईमान बनिया नहीं है । पहले मैं कम तोलता हूँ । दूसरे दुगना भाव लगाता हूँ तीसरे उधार के पैसे ज्यादातर मार पीट कर वसूल लेता हूँ और वह कितना रोए चिल्लाए उसकी करुण पुकार का मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । अतः मेरा मुख्य धर्म बेईमानी से पैसा कमाना है । मैं शास्त्र ईश्वर मर्यादाओं का पूर्ण उल्लंघन करता हुआ मात्र 'पैसा आये' तरीका चाहे कोई भी अपनाना पड़े ।'

हमने उसका पुनः हाथ देखा बुध की रेखा अपने क्षेत्र से आगे निकल कर हृदय रेखा को काटती हुई मस्तिष्क रेखा में प्रवेश कर रही थी । हमने तुरन्त कहा कि 'घरवाली ने जहर दिया' उसने तुरन्त कहा 'तीन बार दे चुकी और मैं तीन बार बच गया । वह इतनी सुन्दर है कि मैं उसे छोड़ नहीं सकता' हमने कहा, 'पुत्र भी तेरी आज्ञा नहीं मानते तथा बदमाश हैं । वह भी मौका लगते ही तुझे मार देंगे ।'

तब हमने कहा, 'तू दिल से विचार, तेरी बेईमानी करी हुई किस काम आयी । न पत्नी का सुख है न पुत्रों का सुख है । याद रख माल तूने कमाया, खाया तेरे परिवार ने, तो परिवार तो तेरा दुःखी होगा ही लेकिन तेरे किए हुए नीच कर्मो का फल बुध केवल तुझे ही हजारों जन्मों तक विधिवत् भुगवायेगा ।'

उदाहरण देने का तात्पर्य यही है कि जातक यह समझें कि प्राणी कैसे-कैसे कर्म करते है और बुध कर्म का भुगतान किस प्रकार कराता है, दोष इसमें बुध का है या जातक का ? यह स्वयं विचार करें।

याद रखें जिस कुल में जिस परिवार में इस प्रकार की बेईमानियाँ होती हैं उनकी आने वाली सात पीढ़ियों को भूखा मरना पड़ता है और उनको अपने पिता के किए हुए कर्मों का भुगतान कई जन्मों तक भोगना पड़ता है।

इसलिए कम खा लेना चाहिए परन्तु बुरे कर्म नहीं करने चाहिए और जब बुरे कर्म होंगे ही नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे। अतः जातक स्वतः आत्मचिन्तन करें कि जीव किस-किस प्रकार के कैसे-कैसे घृणित कार्य करता है और यदि उन कर्मों का यथावत् भुगतान बुध न कराये तो परमात्मा की सत्ता क्या रहेगी ? प्रकृति भी प्रदूषित हो जाएगी। याद रखें, बुध जीव-मात्र पर हमेशा कृपा करता है तथा उसको प्रायश्चित करा उसे सद्मार्ग पर लाकर हृदय में परमात्मा दर्शन तक करा देते हैं। ऐसे कृपालु बुध को प्राणी कोसे तथा अपने कर्मों को न कोसे यह जीव की अज्ञानता है।

अतः सद्कर्म करें और सद्पथ पर चलें। प्रत्येक जातक को जीवन में एक करोड़ बुध मंत्र जाप अवश्यमेव करना चाहिए ताकि जीवन में पापक्षय होते हुए बुध कृपा प्राप्त हो जाये। ऐसा करने से पूर्वकृत निर्मूल हो जाएगा और बुध कृपा प्राप्त होते ही लौकिक पारलौकिक सुखों की प्राप्ति होगी। अतः विपत्ति, हानि, असाध्य रोग होने पर बुध को नहीं कोसे। यदि कोसना है तो अपने कर्मों को कोसें और प्रतिज्ञा करें कि जीवन में हम कभी अशुभ कर्म नहीं करेंगे और जब अशुभ कर्म होंगे ही नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे।

यदि आप स्त्री या पुरुष हैं

पूर्व जन्म के शुभकर्मों के फलस्वरूप बुध ग्रह ने आपको पूर्ण व्यवसायी, उद्योगपति तथा सफल व्यापारी बनाया। आपने शास्त्र मर्यादा का पालन करते हुए अपनी धर्म पत्नि को अर्धांगिनी माना, उसका बड़े प्रेमपूर्वक धर्मोचित पालन किया उसकी हर विपत्ति को अपनी विपत्ति समझा और यह मानते हुए कि यह गृह लक्ष्मी है इसका अपमान नहीं करना चाहिए इसलिए पूर्ण साहस बनाये रखा पूर्ण वैभवशाली होने पर भी अन्य किसी स्त्री से कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं किया। एक पत्निव्रत धर्म जीवन पर्यन्त बनाये रखा।

उपरोक्त आपके शुद्ध आचरण को देखकर भगवान बुध आपका विवाह किसी धनाढ्य कन्या से करायेगा और उसके आते ही आपका घर पूर्ण धन-धान्य, समृद्धि से भरपूर हो जाएगा। बुध की कृपा से आप पूर्ण लक्ष्मी सुख का उपभोग करेंगे। पत्नि से जो सन्तान उत्पन्न होगी वह पूर्ण सफल व्यापारी होगी, आपके धन, यश कीर्ति को बढ़ायेगी और आज्ञाकारी होगी अन्त में स्वर्ग प्राप्त होगा और पीढ़ी दर पीढ़ी धन का उपभोग कर सकेगी।

यदि आपने उपरोक्त से उल्टा किया, अपनी पत्नि को धन के नशे में भगा दिया, दूसरी ले आये; धर्मपत्नि तड़प-तड़प के मर गई, आपने उसकी एक न सुनी तो अगले जन्म में बुध आपका घर बसने ही नहीं देगा तथा आपको नपुँसकता प्रदान करेगा ताकि आप स्त्री का उपभोग कर ही न सकें ।

विशेष :- वैश्य जाति धर्मात्मा जाति है, इस जाति में ही बड़े-बड़े धनाढ्य सनाढ्य होते हैं और माँ-बाप बचपन से ही सुसंस्कारों से युक्त बनाते हैं । जिसके फलस्वरूप आगे चलकर वे बड़े धर्मात्मा होते हैं और अपने धन का सदुपयोग करते हुए देवालय, घाट, विद्यालय, तथा जनहित कार्यों में रत रहते हैं । इन सभी पुण्यों के प्रभाव से वे एक पत्नीव्रत धारी होते हैं । उनका ये जन्म भी सुखमय तथा धर्म से भरा रहता है और अन्त में मरणोपरांत स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

जो वैश्य लोग अपने बच्चों को सुसंस्कृत नहीं करते उनकी सन्तान वैभव को पाकर धन से मदान्ध होकर गलत काम करने से नहीं हिचकते और सात पीढ़ियों को नष्ट कर डालते हैं । जो वैश्य जरूरत से ज्यादा बेईमानी कर पैसा कमाते हैं उनकी आने वाली सन्तान भूखों मरती है । ऐसा केन्द्र का अनुभव है ।

केन्द्र की महत्वपूर्ण खोज

पूर्व जन्म के पापानुसार व्यवसायी के यदि नीच ग्रह 6, 8, 12 वें भाव में बैठे हों तो लाख चाहने पर भी उसे व्यापार नहीं करने देंगे । बुध व्यापार का स्वामी है इसीलिए निर्णय शक्ति को भ्रमित कर देता है जिसके कारण व्यापारी का व्यापार चौपट हो जाता है और उसे निरन्तर हानि का सामना करना पड़ता है । अतः जिस किसी का भी बुध खराब हो अस्त, वक्री हो 6, 8, 12 वें भावस्थ हो अथवा 6, 8, 12 भाव की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा चल रही हो तो प्रतिदिन गाय को हरा चारा खिलाना चाहिए और खिलाते हुए कहना चाहिए हे बुध महाराज आपकी प्रसन्नता के लिए यह कृत्य कर रहा हूँ । अतः आप मुझ पर कृपा कर प्रगतिशील करें । बुध मन्त्र का जाप करें । ऐसा करने से व्यापारियों की निर्णय शक्ति भ्रमित नहीं होगी लाभ ही लाभ होगा ।

केन्द्र की विशेष खोज

बुध हृदय का स्वामी है । व्यापार, दाम्पत्य जीवन तथा हृदय रोगों आदि को प्रभावित करता है । बुध तन्त्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) का नियन्त्रण करता है । तंत्रिका तंत्र शरीर की उपपाचयी (मेटाबालिक) और स्वतः होने वाली क्रियाओं जैसे सांस लेना, दिल का धड़कना पलकें झपकना गुर्दों का काम करना और प्रजनन संबंधी गतिविधियों को नियंन्त्रित करता है । यदि हाथ में बुध पर्वत उन्नत है, बुध रेखा निर्दोष है तथा कुण्डली में उच्च भाव में है तो जातक को सफल व्यापारी बनाता है । ऐसा व्यक्ति जैसा भी व्यापार करे खूब चलेगा । दाम्पत्य जीवन को सुचारु रूप से चलाकर संतति की वृद्धि होगी । हृदयानन्द प्राप्त होगा । यदि हृदयरेखा में द्वीप बन जाए तो चाहे अध्यात्मवादी हो या व्यापारी सारी आयु तपमय हो जाने पर भी हृदयानंद प्राप्त नहीं होता है । इसके नीच होने से जातक को खांसी, दमा और श्वास सम्बंधी रोग हो जाते हैं । हृदयरोग घेर लेते हैं । इन दोषों की निवृत्ति के लिए जातक को चाहिए कि वह पन्ने की भस्म को अभिमंत्रित कर सुबह सायं गाय के दूध के साथ प्रयोग करे तथा पन्ने की माला या साधारण माला द्वारा बुध स्तोत्र तथा बीज मंत्र **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** का 19,000 नित्य जाप करें । इस प्रकार उपचार करके इन दोषों से छुटकारा पाने में काफी सहायता प्राप्त होती है । विशेष जानकारी के लिए केन्द्र से सम्बंध स्थापित करें ।

यदि गोचर में या कुण्डली में बुध पापाक्रान्त हो जिससे दाम्पत्य जीवन में परेशानी, व्यापार आदि में घाटा, हृदय रोग, त्वचा रोग और नर्वस सिस्टम में परेशानी हो तो जातक को सर्वप्रथम मूंग का तुलादान और हरे कपड़ों का दान बुधवार को करना चाहिए। 40 दिन तक हरा चारा, चना तथा गुड़ मिलाकर गाय या बैल आदि को श्रद्धापूर्वक पूजन कर खिलाना चाहिए । इससे अतिशीघ्र लाभ प्राप्त होता है । ऐसा केंद्र ने बहुत सारे जातकों पर प्रयोग कर अनुभव किया है । व्यापारियों को बुध ग्रह के एक करोड़ मंत्र निश्चयपूर्वक कर या करवा लेना चाहिए ताकि बाद में किसी प्रकार का व्यवधान किसी काल में न हो । हृदय के समस्त रोगों, दमा, आदि में राम बाण का काम करता है । एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य बुध ग्रह मंत्र की जाप्र करके एक वर्ष में एक करोड़ मन्त्रों का जाप बड़े आराम से कर सकता है । यदि करोड़ मंत्र जाप करने की शारीरिक शक्ति न हो तथा करवाने के लिए धन का अभाव हो तो मानव को चार बार में अर्थात 24-24 लाख के चार चरण सुविधा अनुसार श्रद्धापूर्वक कर लेने चाहिए । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है तभी इसमें सफलता प्राप्त होगी । केंद्र में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा यह एक करोड़ मंत्रजाप 21 या कम दिनों में विधिवत तथा शास्त्रोक्त रीति अनुसार किया जाता है ।

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमन्वितः ।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः ॥

वेदों में बुध

बुध की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र द्वारा सारे भारतवर्ष में बुध की पूजा की जाती है ।

ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते सर्ठं सृजेथामयञ्च ।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् उद्‌बुध्यस्व अग्ने प्रतिजागृहि त्वम् इष्ट आपूर्ते सर्ठं सृजेथाम् अयम् च ।
अस्मिन् सधस्थे अधि-उत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानः च सीदत ।।

पीड़ा निवारण के लिए बुध मंत्र

बुध ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला जप करना चाहिए । कारण, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केंद्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण, इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहां बुध रश्मियों की कमी हो गयी है, उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

बुध बीज मंत्र :- ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।

मंत्र सरल भाषा में:- ॐ ब्राम् ब्रीम् ब्रौम् सः बुधाय नमः ।

मंत्र कभी किसी को धोखा नहीं देते । मृत्यु के बाद भी काम आते हैं । गायत्री, भगवती आदि के मंत्र शापित हैं । बिना शाप विमोचन किये फलदायक नहीं होते हैं । दूसरे मंत्र जपने में मन नहीं लगा तो भी फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति नहीं होती । परन्तु ग्रहों के मंत्रों को किसी ने शाप नहीं दिया है । बिना मन लगाये ही केवल मंत्र उच्चारण करने मात्र से ही पूर्ण फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति हो जाती है । केन्द्र का विगत बीस वर्ष का अनुभव है ग्रह पीड़ा मंत्र जाप से ही निर्मूल की जा सकती है ।

अतः जीवन में हर एक जातक को बुध के 1 करोड़ बीज मंत्र अवश्यमेव कर या करवा लेने चाहिए ताकि जीवन प्रकाशमय रहे तथा जब तक जीयें व्यापार में कोई घाटा न हो । व्यापार उत्तरोतर बढ़ता रहे । ह्रदय में कोई दोष न आये । ह्रदय परमात्मा के रस से पूर्ण रहे और अविरल भक्ति प्राप्त हो । केन्द्र एक करोड़ बीज मंत्र विधिवत शास्त्रोक्त रीति से पन्द्रह दिन में सम्पन्न करवा देता है ।

अधिक जानकारी के लिए बुध ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें ।

भगवान बृहस्पति

बृहस्पति ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ बृहस्पति स्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः ।

तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् । ।

बृहस्पति सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

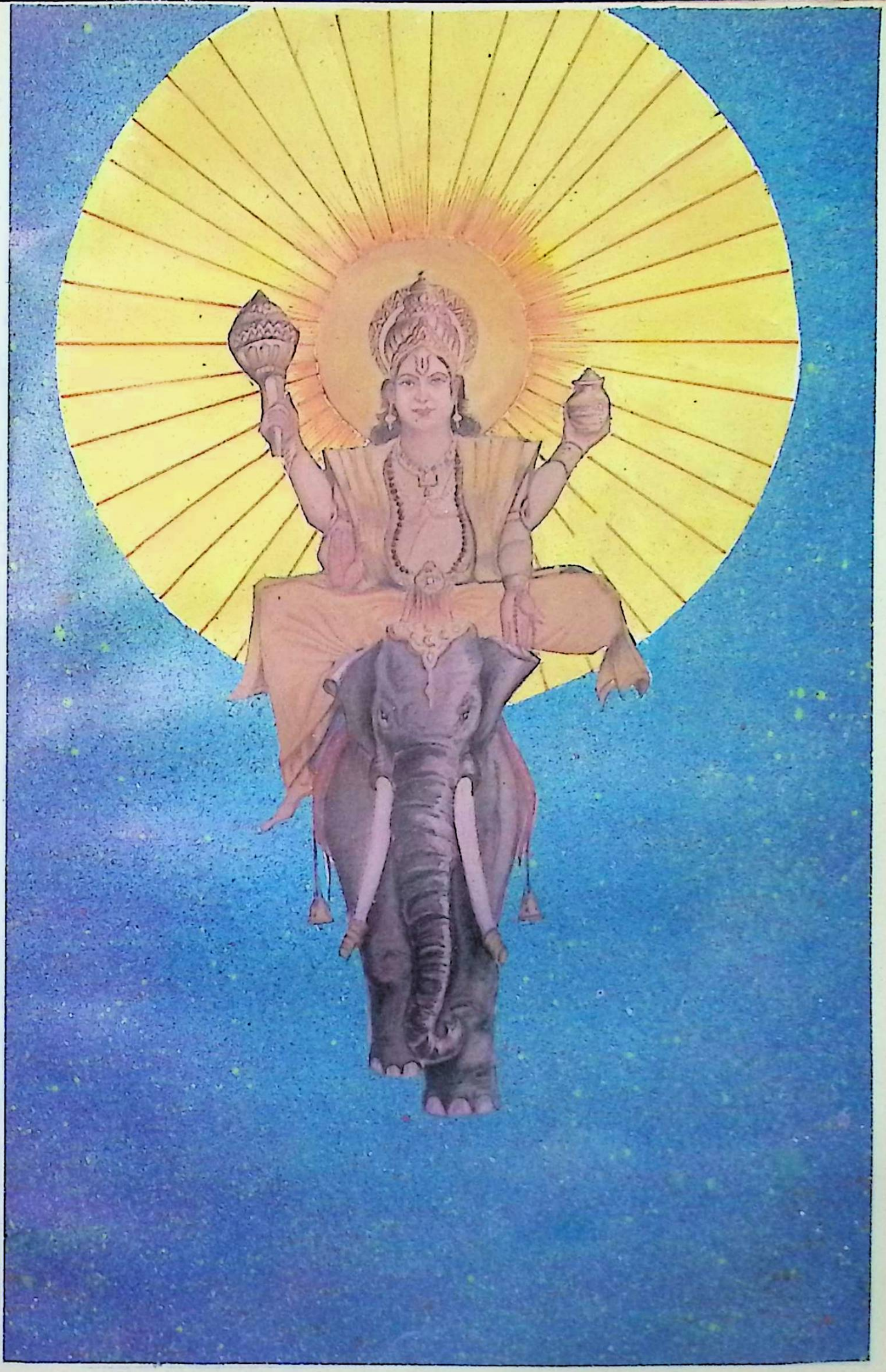

बृहस्पति

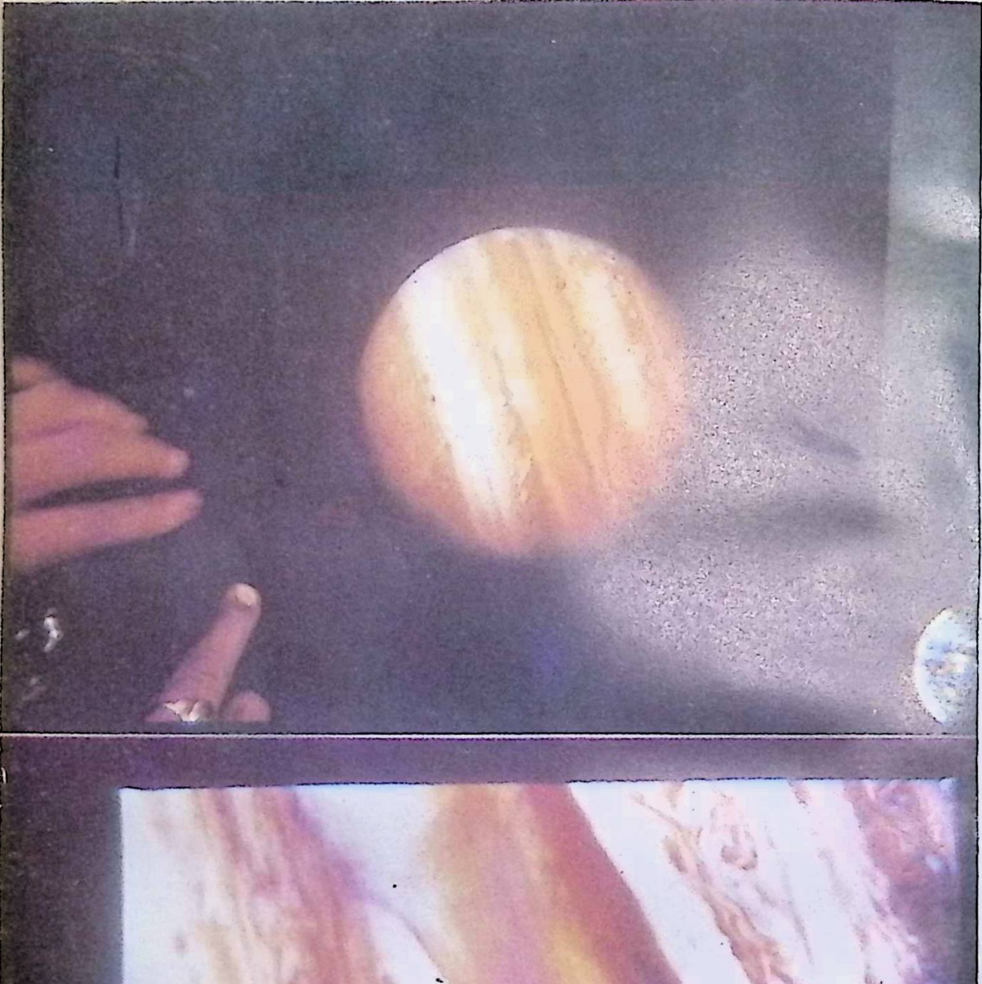

बृहस्पति की आकाश मण्डल में स्थिति तथा बृहस्पति के धरातल का चित्र

विद्वत्ता और विवेक का अधिपति

बृहस्पति

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित बृहस्पति संबंधी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता बृहस्पति के सम्बन्ध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा, शास्त्र, अंक शास्त्र में बृहस्पति का महत्व तथा विश्व सहित भारत में बृहस्पति पूजा की परंपरा, आदि की प्रामाणिक ज़ानकारी ।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय

- बृहस्पति की उत्पत्ति ।
- अंतरिक्ष में बृहस्पति की स्थिति ।
- बृहस्पति के चंद्र ।
- वेदों, उपनिषदों और पुराणों में बृहस्पति ।
- विश्व साहित्य में बृहंस्पति ।
- ज्योतिषशास्त्र में बृहस्पति ।
- बृहस्पति की राशियां ।
- बृहस्पति नक्षत्रों में जन्में जातकों की विशेषताएं ।
- द्वादश भावों: में बृहस्पति ।
- बृहस्पति की महादशा के फल ।
- हस्त रेखा शास्त्र में बृहस्पति ।
- अंक शास्त्र में बृहस्पति ।
- बृहस्पति के मंत्र ।
- बृहस्पति स्त्रोत तथा मंत्र एवं बीज मंत्र ।
- बृहस्पति के रत्न, उपरत्न, जड़ी बूटियां ।
- बृहस्पति के दोषों को दूर करने के उपाय ।

बृहस्पति (गुरु)

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

देव दैत्य गुरु तद्वत् पीत श्वेतौ चतुर्भुजौ ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्र कभण्डलू ।।

मत्स्य पुराण

बृहस्पति को महर्षि अंगिरा पुत्र एवं देवताओं का गुरु माना जाता हैं । अन्य ग्रहों की भांति भारतीय पुराणों एवं अन्य ग्रंथों में बृहस्पति की उत्पत्ति, प्रभाव, कार्यकलाप आदि के बारे में अनेक रोचक एंव प्रतीकात्मक आख्यान प्राप्त होते हैं ।

एक आख्यान के अनुसार महर्षि अंगिरा की पत्नी अपने कर्म दोष के फलस्वरूप मृतवत्सा हुई अर्थात वे निस्संतान रहीं । उनकी प्रार्थना पर ब्रह्मा ने उनसे पुत्र-प्राप्ति के लिए पुँसवन व्रत करने के लिए कहा । इस व्रत की संपूर्ण जानकारी पति-पत्नी को सनत्कुमार से प्राप्त हुई । मुनि पत्नी ने विधिपूर्वक व्रत किया और विष्णु की कृपा से उन्हें एक ऐसा पुत्र प्राप्त हुआ जो तेजस्वी और प्रतिभा से संपन्न था । यही पुत्र बृहस्पति के नाम से त्रैलोक्य में विख्यात हुआ ।

स्कन्द पुराण के अनुसार, बृहस्पति ने अपने अभ्युदय के लिए प्रभात तीर्थ में घोर तप किया । उनकी परम भक्ति से भगवान शंकर प्रसन्न हो गए । उन्होंने बृहस्पति को देव गुरु होने और गुरुत्व प्राप्त करने का वरदान दिया ।

महाभारत की एक कथा के अनुसार देव गुरु बृहस्पति की दो पत्नियां थी । एक का नाम था शुभा और दूसरी का तारा था । शुभा से बृहस्पति को सात पुत्रियां प्राप्त हुईं; जिनके नाम थे- भानुमति, राका, अर्चिस्मती, महीमती, महिष्मती, सिनोवाली और प्रविष्मती । तारा से उन्हें सात पुत्र एवं एक कन्या प्राप्त हुई, जिसका नाम स्वाहा था, तारा पर चन्द्रमा की आसक्ति तथा उसके बलात् अपहरण की विस्तृत कथा लेखक कृत बुध सम्बन्धी कृति में पढ़िए ।

भारद्वाज के भी बृहस्पति पुत्र होने की कथा मिलती है ।

महाभारत के एक आख्यान के अनुसार बृहस्पति के दो भाई थे-बड़े भाई का नाम उत्तथ और छोटे भाई का नाम संवर्तक था । महाभारत में बृहस्पति की वर-स्त्री नामक एक बहिन का उल्लेख मिलता है ।

खगोलीय विज्ञान में बृहस्पति

बृहस्पति ग्रह सूर्य से ४८,३३,००,००० मील की दूरी पर स्थित है । यह ग्रह सौर मंडल का सर्वाधिक विशाल ग्रह है । मध्य क्षेत्र पर इसका व्यास ८८,७०० मील है तथा ८ १ मील प्रति सेकेन्ड की गति से वह ११ वर्ष ९ माह में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है ।

ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति

ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति को एक शुभ ग्रह माना जाता है । जगद्‌गुरु बृहस्पति को गौर गात्र मानते हैं, जबकि मंत्रेश्वर पीत द्युति और कल्याण वर्मा कनक । मत्स्य पुराण के अनुसार बृहस्पति पीत वर्ण हैं । ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति को विशाल देह, पिंगल वर्णी केश एवं नेत्र, पुष्ट वक्षस्थल वाला बताया गया है तथा प्रवृत्ति कफ प्रधान कही गई है । इसे सर्व शास्त्रों का ज्ञाता भी कहा गया है । बृहस्पति सतो गुणी तथा आकाश तत्व का प्रमुख ग्रह है ।

ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति शास्त्र से जातक के सद्‌गुण; पुत्र, मंत्री, धर्म, सदाचरण, श्रुति, शास्त्र, अध्ययन, अध्यापन तपस्या आदि पर विचार किया जाता है ।

बृहस्पति के नक्षत्र हैंः पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद ।

राशियां हैं : धनु तथा मीन । बृहस्पति कर्क राशि के पांच अंश पर परम उच्च तथा मकर के पाँच अंश पर परम नीच होता है ।

कुंडली में बृहस्पति जिस भाव में होता है, उससे पंचम सप्तम एवं नवम् भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है ।

अंक शास्त्र में बृहस्पति तथा बृहस्पति प्रधान जातक

ज्योतिषीय विद्याओं में से अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही प्रश्न कर्ता को स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं। अंक विद्या में ३ का अंक बृहस्पति को प्राप्त हुआ है। अतः अंक ३ का स्वामी देव गुरु बृहस्पति है। आपका ज़िस तारीख को जन्म हुआ गणित करिये यदि तीन का अंक आता है तो आपका अंकाधिपति गुरु हुआ। जैसे आपका जन्म-३-१२-२१-३० तारीख को हुआ तो आपका अंक ३ आया यथा– १२=१+२=३/२१=२+१=३ आदि।

अतः अंक ३ वाले जातक विद्वान तथा सत्धर्मी एवं प्रभु के परम उपासक होते हैं। विद्या अच्छी प्राप्त करते हैं और सफलता उन्हें बहुत प्राप्त होती है। स्मरण शक्ति तीव्र होती है और वह जो निर्णय लेते हैं वह लाभदायक होता है। वे किसी उच्चपद पर आसीन हो कुशल प्रशासन देने में पूर्ण सफ्ल होते हैं। ऐसे जातक शान्तप्रिय होते हैं कलह से दूर रहते हैं और बहुत ऊँचे उठ जाते हैं। गुरु और मंगलवार इनके लिए शुभ वार हैं। ऐसे जातक पूर्ण सफल प्राप्ति हेतु गुरु के बीज मंत्र का जाप करें और पुखराज साढ़े पाँच रत्ती धारण करें ऐसा करने से उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

गुरु प्रधान व्यक्ति विद्वान, सत्यवादी, शांतिप्रिय चतुर तथा मिलनसार होता है। वे दंगाफसाद से दूर रहते हैं और दूसरों की कमियाँ देखते हुए हृदय से प्रभु का स्मरण करते हैं। धार्मिक कार्य, लेखन कार्य, वक्ता, समाज सेवी, अध्ययन, अध्यापन, शोधकर्ता, आदि गुरु की प्रधानता से सम्पन्न होते हैं। वह उदार होते हैं और अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त करते हैं। वे परोपकारी, प्रसन्नचित, शत्रुहन्ता, संस्कृतज्ञ यशवान एवं विशाल हृदयी होते हैं। सत्यवादी, तथा धार्मिक एवं गूढ़ साहित्य का अध्ययन उन्हें बहुत प्रिय होता है। उनकी कुछ कमियाँ भी होती हैं जो विकास पथ पर अड़चनें पैदा करती हैं जैसे--उन्हें परिवार का प्रेम कम प्राप्त होता है वह अपने कुटंब को खूब प्यार देंगे, जल्दी उत्तर देने से कभी-कभी मात खा जाते हैं।

अधीरता, अस्थिर विचार, तथा गैरों को अपनों जैसा मानते हैं और अति महत्वाकांक्षी होते हैं। उद्योग धन्धा, में वह सफलता प्राप्त करते हैं, शरीर मोटा, चर्बी, मधुमेह तथा ज्यादा सोचने से ब्लडप्रैशर तक से ग्रसित हो जाते हैं।

बृहस्पति सम्बन्धी अन्य विवरण

बृहस्पति ग्रह बुद्धि का स्वामी और धन प्रधान ग्रह है । यह देवताओं के गुरु और पुरोहित है तथा उनकी विपत्तियों का समाधान करता रहता है । इसका पीत वर्ण है और पृथ्वी पर पीले रंग की किरणें प्रतिदिन डालता है । यह सूर्य से ११ लाख योजन दूर स्थित है । यह स्थिर स्वभाव, सत्वगुण, कफ प्रधान, उदार, गंभीर सुन्दरवाणी वाला उत्तम बुद्धिमान है । यह मानव शरीर में बुद्धि तथा सभी अंगों के अग्रभाग में स्थित है अर्थात श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करने का कार्य भगवान ने इनको दिया है । इनसे विचार करने की शक्ति दृढ़ होती है अर्थात श्रेष्ठमति होना बृहस्पति का लक्षण है । इसी कारण यह देवगुरु कहलाया है बृहस्पति के बलवान होने से मनुष्य बहुत बुद्धिमान होता है । बृहस्पति यदि कुंडली में अच्छा होगा तो धन दिलाएगा । जन्मस्थ बृहस्पति जब पापाक्रान्त हो तो धननाशक होगा ।

जो जातक अपनी बुद्धि का दुरुपयोग कर दूसरों को कष्ट देता है और सताता है तथा जानते हुए भी अनाचार, अत्याचार को आश्रय देता है तो ऐसे कर्मों के भुगतान के लिए अष्टम भाव में या केन्द्र में नीच का होकर जातक की बुद्धि को बेकार कर देता है । उसकी अक्ल मारी जाती है और समय पर वह असमय की बात कर जाता है जिससे सारा करा कराया नष्ट हो जाता है जैसे अपनी बुद्धि के दुरुपयोग से दूसरों को दुखी किया था वैसे ग्रह की चाल उसे सताती है । कर्म का भुगतान तो करना ही पड़ेगा, इससे बचा नहीं जा सकता है । यदि अच्छे कर्म किये होंगे तो शुभ कर्मों के भुगतान के लिए उच्च का होकर केन्द्र में बैठता है और जातक को शास्त्र का ज्ञाता अर्थात ज्ञान प्रदान कराता है, पूर्ण अध्यात्मवादी बना कर प्रज्ञा बुद्धि प्रदान कर परमात्मा के मार्ग में आगे बढ़ने में भारी सहायता करता है । राजचिन्हों से सम्पन्न और लक्ष्मी को धारण करने वाला बनाता है । उच्च राजयोग देता है अर्थात महत्वपूर्ण पद दिलाता है । पुखराज इसकी मणि है । इसे तर्जनी (सबसे पहली उंगली) में पहनना चाहिए या इसकी माला पहननी चाहिए । इसका दिन बृहस्पति है और इस दिन इसका व्रत करना चाहिए ।

बृहस्पति ग्रह से सम्बन्धित रोग, उनके उपशमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न, रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी बूटियों को धारण करने की विधि तथा बृहस्पति ग्रह से संबंधित व्यापार और नौकरी आदि का वर्णन इस प्रकार है :–

रोगः- कुष्ट रोग, फोड़ा, गुल्म रोग, प्लीहा, गुप्त स्थानों के रोग ।

यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाए तो ग्रह का प्रकोप अर्थात ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा लगी हुई समझना चाहिएं और बिना किसी से पूछे मन्त्र जाप, रत्न, जड़ी बूटियाँ धारण करनी चाहिएं । इससे रोग हल्का होगा और ठीक होने लगेगा ।

रत्न/उपरत्न :- पुखराज, घीयाकेरू, केसरी, सुन्हला आदि नौ रत्ती का बृहस्पतिवार को पुनर्वसु नक्षत्र में धारण करें । अच्छा रत्न पहनते ही 40 प्रतिशत राहत होती है ।

रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती है वह रत्न पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता है । इसलिए रत्न पहनने से पहले अर्थात अँगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य करा लेनी चाहिए क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही है । जिस प्रकार किसी मूर्तिकार के घर से लाई हुई किसी भी देवता की मूर्ति । जब उस मूर्ति को मंदिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व प्राण प्रतिष्ठा विधान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है । इसी प्रकार अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद उसमें भी प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक है ।

जड़ी बूटियां :- नारंगी या केले की जड़ को बृहस्पतिवार पुनर्वसु नक्षत्र में पीले धागे में दाएँ बाजू में बांधनी चाहिए । ग्रह का दुष्प्रभाव कम होना प्रारंभ हो जाता है ।

दान :- पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों के काल में स्वयं के वजन के बराबर चने की दाल, पीले वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र, फल, मिठाई आदि का दान । पुनर्वसु नक्षत्र में किया गया दान अति उत्तम होता है । दान श्रद्धापूर्वक दक्षिणा सहित ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक ग्रह के नक्षत्र काल में करना चाहिए ।

व्यापार/नौकरी :- यदि बृहस्पति अधिक अंशों में बलवान है तो निम्नलिखित व्यापार, नौकरी में विशेष लाभ होता है । **व्यापार :-** पीली वस्तुओं का व्यापार, फलों का व्यापार, देसी घी का व्यापार, सुपर फाईन कपड़े का व्यापार, स्टेशनरी पुस्तक विक्रेता, शिक्षा संबंधी कार्य स्कूल कालेज खोलना, चन्दन या चन्दन के तेल का व्यापार, इत्र सेंट का व्यापार, घड़ी, टेलीविजन, टेप रिकार्डर, रेडियो का व्यापार । **नौकरी :-** शिक्षक, वेद पाठन कार्य, लेक्चरार. प्रोफेसर, गजेटेड आफिसर, नेतृत्व प्रधान कार्य, जज, सलाहाकार, लेखक, प्रकाशक का महत्वपूर्ण पद ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

द्वादश भावों में बृहस्पति

प्रथम भाव - सुंदर, सुखी, मृदुभाषी, पुत्रवान, धर्मात्मा स्पष्ट वक्ता, दीर्घायु सम्मानित

द्वितीय भाव - सुंदर, सुकार्यरत, कवि, प्रशासनिक क्षमता, भाग्यवान, दीर्घायुष्य ।

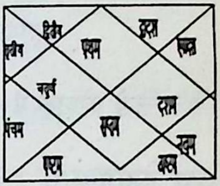

तृतीय भाव - समालोचक, लेखक, प्रवासी, योगी, आस्तिक, विदेश यात्रा प्रिय, भाग्यवान । लेकिन कठिनता से द्रव्य प्राप्ति ।

चतुर्थ भाव - सुंदर शरीर, उद्योगी, यशस्वी, लोकमान्य, व्यवहार कुशल, वाहन सुख, शत्रुओं द्वारा भी प्रशंसित ।

पंचम भाव - आस्तिक, ज्योतिषी, लोकप्रिय, संततिवान, वक्ता, कवि, लेखक, विलासी ।

षष्ठ भाव - विद्वान्, विवेकी, प्रसिद्ध, उदार, प्रतापी, शत्रुहन्ता ।

सप्तम भाव - बुद्धिमान, भाग्यवान, वक्ता, धैर्यवान, प्रवासी, परस्त्रीगामी ।

अष्टम भाव - विवेकी, मधुरभाषी, शांत, ग्रंथकार, रोगग्रस्त ।

नवम भाव - राजप्रिय, यशस्वी, विद्वान्, वेदांती, आलस्य प्रधान ।

दशम भाव - सदाचारी, सत्यकर्मी, ऐश्वर्यवान, चतुर, ज्योतिषी, चित्रकार, स्वतंत्र विचारक ।

एकादश भाव - ऐश्वर्यवान, दक्ष, धनिक, विद्वान्, पराक्रमी, परोपकारी ।

द्वादश भाव - योगाभ्यासी, सुखी, सम्पादक ।

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि बृहस्पति छः, आठ, बारह भावों में किसी भी राशि का विशेषकर नीच का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नहीं है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले बृहस्पति के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए । ताकि बृहस्पति प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो । याद रखें अस्त बृहस्पति भयंकर पीड़ा जनक होता है चाहे वह किसी भी भाव का क्यों न हो ।

बृहस्पति ग्रह संबधित पाठ, पूजा आदि के लिए स्त्रोत मंत्र तथा गायत्री आदि भी पाठकों की सुविधा के लिए यहां दिऐ जा रहे हैं जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । नित्य 108 पाठ करने से चमत्कारी लाभ प्राप्त होता है ।

अथ बृहस्पति मंत्र

विनियोग :- बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

(नीचे लिखे कोष्ठक में अंगों को छूते रहें) :

अथ देहांगन्यास :- बृहस्पते शिरसि (सिर) अतियदर्य्यो ललाटे (माथा) अर्हाद्युमत् मुखे (मुख) विभाति क्रतुमत् हृदये (हृदय) जनेषु नाभौ (नाभि) यद्दीदयत् कट्याम् (कमर) शवसऋतप्रजात ऊर्वोः (छाती) तदस्मासु द्रविणं जान्वोः (घुटने) धेहि गुल्फयोः (गुल्फ) चित्रं पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- बृहस्पतेऽअतियदर्य्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः । अर्हाद्युमत् तर्जनीभ्यां नमः। विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्यां नमः । जनेषु अनामिकाभ्यां नमः । यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः द्रविणंधेहि चित्रम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- बृहस्पतेऽअतियदर्य्यो हृदयाय नमः (हृदय) अर्हाद्युमत् शिरसे स्वाहा । विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट् (शिखा) । जनेषु कवचाय हुँ (दोनों कन्धे) यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र) । द्रविणं धेहि चित्रम् अस्त्राय फट् । (दायां हाथ सिर से धुमा कर बायें हाथ पर दो अंगुलियों से ताली बजाएं)

अथ ध्यानम् :- पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजः देव गुरुः प्रशान्तः।
तथा अक्ष सूत्रम् कमण्डलुम् च दण्डम् च विभ्रद् वरदः अस्तु मह्यम्।।

गुरुगायत्री :- ॐ अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।

बीज मंत्र :- ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः भूर्भुव स्वः ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् । ॐ स्वः भुवः भूः सः ग्रौं ग्रीं ग्राँ ॐ सः गुरुवे नमः ।

जपमन्त्र :- ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः एकोनविंशतिसहस्राणि 19000 प्रतिदिन ।

बृहस्पति स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवम्-सन्धिच्छेद सहित

विनियोग :- अस्य श्रीबृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद-ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः,
बृहस्पतिर्देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

स्त्रोतम् :- गुरुः, बृहस्पतिः, जीवः, सुराचार्यः, विदाम्बरः ।
वागीशः, धिषणः, दीर्घः, श्मश्रुः, पीताम्बरः युवा ॥
सुधाद्रष्टिः, ग्रहाधीशः, ग्रहपीड़ा, अपहारकः ।
दयाकरः सौम्य मूर्तिः, सुरार्च्यः, कुड्मल द्युतिः ॥
लोक पूज्यः, लोक गुरुः, नीतिज्ञः, नीति कारकः ।
तारापतिः, च, आंङ्गिरसः, वेद विद्या पिता महः ॥
भक्त्या, बृहस्पतिम्, स्मृत्वा, नामानि, एतानि, यः, पठेत् ।
अरोगी, बलवान्, श्रीमान्, पुत्रवान्, सः, भवेत्, नरः ॥
जीवेत्, वर्षशतम्, मर्त्यः, पापम्, नश्यति, नश्यति ।
यः पूजयेत्, गुरुदिने पीतगन्धा क्षतात्मजैः ॥
पुष्प दीप उपहारश्चः च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीडा शान्तिः भवेत् गुरोः ॥

बृहस्पति मंगल स्त्रोतम्

जीवः च आङ्गिर गोत्रज उत्तर मुखः दीर्घ-उत्तरा सस्थितः ।
पीत, अश्वत्थ, समिद्ध-सिन्धु जनितः च आपः, अथ, मीनाधिपः ।
सूर्येन्दु, क्षितिज - प्रियः, बुध सितौ शत्रू समाः च अपरे,
सप्ताङ्कात् विभवः, शुभः सुरगुरुः कुर्यात् सदा मंगलम् ।।

नोट :- भगवान बृहस्पति बुद्धि प्रदाता देव है, इसलिए यह देव गुरु हैं । बुद्धि विहीन जातक पशु तुल्य होता है । हर क्षेत्र में बुद्धि बल की आवश्यकता पड़ती है । अतः उपरोक्त स्तोत्र का नित्य 108 पाठ करने से बुद्धि वल समान रूप से जीवनपर्यन्त बना रहता है ।

बृहस्पति क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या यह खाली बैठा है ?

क्या इसके पास कोई काम नहीं ?

क्या यह शुभ ग्रह होते हुए भी शत्रुता कर रहा है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

पूर्व संदर्भों में हमने बृहस्पति की महिमा को पृथक-पृथक रूप से बताया लेकिन यहाँ पर मुख्यतः हम यह बताना चाह रहे हैं कि बुद्धिमान होते हुए भी जातक की बुद्धि कार्य क्यों नहीं करती है । सद्बुद्धि उद्दीप्त क्यों नहीं होती है । बुद्धि क्यों मलीन हो जाती है । क्यों काम नहीं आती क्यों जड़ हो जाती है । बृहस्पति अति शुभ ग्रह है फिर भी कष्ट क्यों प्रदान करता है । 6, 8, 12 की दशाएँ क्यों फल नहीं देतीं इसके पीछे रहस्य का सप्रमाण उल्लेख लोगों के ज्ञानवर्धन हेतु इस संदर्भ में किया गया है ।

देवगुरु बृहस्पति बुद्धि का एकमात्र अधिष्ठात्र देवता है । देवताओं पर जब-जब विपत्ति आती है तो समस्त आपत्तियों का देवगुरु बृहस्पति ही निवारण कराते हैं । बृहस्पति को जीव भी कहते हैं । ज्योतिष में जितने स्थान शनि को मिले हैं उतने ही देवगुरु बृहस्पति को प्राप्त हुए हैं अतः इसका प्रभाव शनि महाराज से कम नहीं आंकना चाहिए । प्राणी-मात्र के कर्मानुसार बृहस्पति बुद्धि प्रदान करते हैं और अध्यात्मवादियों को सुख संद्बुद्धि प्रदान कर ऐश्वर्य एवं ईश्वर दर्शन तक सुलभ कराते हैं । बृहस्पति ब्राह्मण हैं, परम कृपालु हैं जीव के परम हितैषी हैं तथा इस सृष्टि कार्य को चलाने में देवगुरु की अहम् भूमिका है ।

यदि आप बुद्धिजीवी हैं?

याद रखें पूर्व जन्म के शुभ कर्म फलस्वरूप ही भगवान बृहस्पति की कृपा आपके ऊपर बरसी है और आप को सद्बुद्धि प्राप्त हुई है । बुद्धि के कारण आप राजसत्ता से सम्मानित हुए तथा विद्वत् समाज में एवं यत्र-तत्र-सर्वत्र मान सम्मान प्राप्त हुआ । आपकी बुद्धि का सहारा लेकर राजा लोग बड़े आराम से अपनी प्रजा का पालन करते हैं और बुद्धि के कारण आपको प्रधान पद भी प्राप्त हो गया है ।

पूर्व जन्म के संस्कार के अनुसार यह सब आपको बृहस्पति की कृपा से प्राप्त हुआ है । लेकिन यदि पदासीन होने के बाद आपने अहँकार के वशीभूत होकर अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करना आरंभ किया । जैसे दो व्यक्ति आपसे सम्बन्ध रखते हैं आपको बुद्धिजीवी मानते हुए आपके पास आकर परामर्श लेते हैं लेकिन आप अपनी दिमागी

शतरंज के द्वारा दोनों को लड़ा देते हैं तथा उन दोनों को लड़ाकर उन दोनों के धन का स्वयं किसी भी प्रकार से उपयोग करते हैं या आपको कोई बुद्धिमान मानता है और आप उसे बुद्धि के द्वारा भ्रमित कर कोरे कागज़ पर दस्तखत करा और उसकी चल अचल संपत्ति के पूर्णतः स्वामी बन बैठते हैं । वह बहुत रोता गिड़गिड़ाता है लेकिन आपने उसे पूर्णतः नकारते हुए धक्के दिलवाकर घर से निकाल दिया और रोते कोसते कराहते हुए उसके प्राणान्त हो गये, या आवाज हमेशा के लिए बन्द करवाने हेतु उसका कत्ल तक करवा दिया ।

याद रखें, लालच लोभ के कारण बुद्धि कुण्ठित हो जाती है । यद्यपि सब जानते हैं कि मैं अकेले आया था अकेले जाऊँगा, न कोई साथ आया और न जायेगा, सब मिट्टी से निकला है और मिट्टी में मिल जाएगा लेकिन फिर भी वाह रे प्राणी तू सब कुछ जानता हुआ माया, मोह, ममता, पाखंड, अज्ञान से घिरा है । जीव के साथ केवल उसके शुभ-अशुभ कर्म ही जाते हैं शेष सब यहीं का यहीं रह जाता है लेकिन वास्तविकता का बोध होने के बाद भी प्राणी पूर्णतः भ्रमित है और कुकर्म, दुराचार, अत्याचार, पापाचार कर मात्र धनोपार्जन करना उसका उद्देश्य होता है । लेकिन वह इस तरफ कभी ध्यान नहीं करता कि वह परम प्रभु देवगुरु सब देख रहे हैं और तेरे निकृष्ट कर्मों का यथावत् भुगतान करोड़ों जन्मों तक तुझसे ही करायेंगे ।

आप पर जिन्होंने विश्वास किया था उनके साथ जमकर विश्वासघात किया तथा घर वालों को भी नहीं बख़्शा तथा जिस राजा ने आपको उच्च पद प्रदान किया था उसके साथ भी विश्वासघात कर स्वयं राजा बन बैठे अर्थात् अपनी बुद्धि के द्वारा राजा को गद्दी से विहीन कर स्वतः गद्दी आसीन हो गये या राजा का कत्ल करवा लोगों का मन जीत स्वतः महाराज बन गये । अर्थात् बुद्धि का दुरुपयोग करने में कहीं भी कोई कसर नहीं छोड़ी ।

भक्ति और बुद्धि का दुरुपयोग

प्रसंगवश पूर्व का एक प्रमाणिक प्रसंग याद आ रहा है । दिल्ली के एक शास्त्री जी थे । जीवन में उन्होंने एक हजार श्रीमद्भागवत सप्ताह यज्ञ किये । श्रीमद्भागवत् के प्रख्यात् विद्वान्, वेद शास्त्रों के ज्ञाता तथा मूर्धन्य पंडित थे । जब वह कथा करते तो आंखों से इस प्रकार अश्रुपात करते कि श्रोतागण समझते थे कि पंडित जी जितने विद्वान हैं उससे कहीं ज्यादा हरिभक्त, हरिदास है । पंडित जी श्रीमद्भागवत् जी की व्याख्या भी सरल, कर्णप्रिय करते थे ।

पंडित जी का एक शिष्य सरदार था । सरदार जी के लड़के का विवाह होने वाला था । शास्त्री जी पर उसका अटूट विश्वास था और शास्त्री जी ने उसे पूर्णतः बुद्धिमत्ता से बाँध रखा था । सरदार जी ने कहा, गुरु जी आपकी इस शहर में प्रतिष्ठा

ख्याति, चेले चंटारे हैं और यदि आप मेरे ऊपर कृपा कर विवाह हेतु किसी से उत्तम स्वर्णाभूषण दिलवा दें तो आपकी महती कृपा होगी । शास्त्री जी ने कहा ठीक है कल दिलवा देंगे यहाँ दूसरे चेले से शास्त्री जी ने कहा कि कल मैं 10 तोला सोना लेने आ रहा हूँ, तुम उसमें से 5 तोल: सोना मेरे लिए निकाल लेना कारण शास्त्री जी की बँधी हुई दुकान थी । गुरू चेला दुकान पर पहुँचे और सोना खरीदा और वापस आ गये । शादी में जब वह सोना लड़की को पहनाया गया तो देखने वालों ने तुरन्त पहचान लिया और कहा यह सोना खरा नहीं है । कन्यापक्ष के ये शब्द सुनकर शास्त्री जी के होशोहवास गुम हो गये । सरदार जी ने कहा, गुरू जी क्या शिष्यों के साथ इस प्रकार निकृष्ट घृणित कार्य करना चाहिए, क्या आपका मेरे प्रति यही कर्तव्य था ?।

यह कड़वा सच हमारे सामने ही प्रत्यक्ष घटा था । सरदार जी ने पूरी व्यथा सुनाई तब हमने शास्त्री जी से कहा कि आप महान् विद्वान हैं लेकिन आपकी समझ में माया ममता, पाखंड, लालच का ही भूत सवार रहा, हृदय में भक्ति का निवास न होकर लालच पाखंड का निवास रहा महाराज आपने क्या भागवत् पुराण का अध्ययन किया ? क्या भागवत् ऐसे निकृष्ट कर्म करने की ही प्रेरणा देती है ? क्या जनता जनार्दन का आप द्वारा इसी प्रकार से कल्याण होता है ? शास्त्री जी जिसका आचरण महान खराब है वह दूसरों को आचरणवान कैसे बनाएगा ? जिसने विद्या प्राप्त न की हो वह दूसरों को विद्या प्रदान करने में कैसे सक्षम हो सकता है ? इस प्रसंग को लिखने का तात्पर्य यह है कि इतनी बुद्धि विद्या होने पर शास्त्री जी कहाँ मात खा गये और श्रोताओं के समक्ष मुँह दिखाने लायक तक नहीं रहे । अब आप देवगुरू की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हुए सोचें यदि बृहस्पति ऐसे जातकों को प्रताड़ित न करे तो बृहस्पति महत्वहीन हो जाएगा । अतः अशुभ कर्मों का फल बृहस्पति करोड़ों जन्मों तक नाना प्रकार से कराते हैं । ऐसे क्रूर कर्मियों को देवगुरु बृहस्पति बुद्धि से पंगु कर देते हैं और सारा कार्य बुद्धि का ही है जैसे आटा, पानी, सब्जी आदि की सभी व्यवस्था है लेकिन जातक बुद्धि से पंगु है तो सामान सब रखा है लेकिन वह स्वतः बनाकर पेट पूजा नहीं कर सकता । भूखों मरता रहेगा और प्राणान्त हो जाएगा । इसी प्रकार बृहस्पति जीव को बुद्धि से पंगु कर देते हैं जिसके कारण जातक अपने हाथों अपना सर्वस्व लुटा बैठता है और फिर दर-दर की ठोकरें खाकर कुष्ठ रोगादि का सामना करता हुआ शरीर छोड़ता है इस प्रकार अशुभ कर्मियों को फल प्रदान करता है देवगुरू बृहस्पति ।

* *

ज्योतिष द्वारा गुमराह कर प्राणियों का दोहन

आज ज्योतिष का प्रचार देश विदेश में प्रचुर मात्रा में है । यद्यपि यह सनातन शास्त्र सनातन से ही दर्पण रहा है और सभी युगों में इसका ही सहारा लिया गया है । आज कुछ अल्पज्ञ ज्योतिषी जनता को गुमराह करते हुए प्रचुर अर्थोपार्जन कर रहे हैं । बड़े-बड़े होटलों में ज्योतिषी का निवास होता है समाचार पत्रों आदि के द्वारा पंडित जी का जोर शोर से प्रचार-प्रसार होता है दुःखी जनता शान्ति पाने हेतु ज्योतिषी के समीप श्रद्धावान होकर पहुँचती है लेकिन वह अल्पज्ञ पाखण्डी उन्हें अपने शब्द जाल में फंसा उनका शोषण कर उनके कष्ट को और बलवान बना देता है । कितने पाखण्डी भोली-भाली श्रद्धावान बहिन बेटियों की इज्जत से भी खिलवाड़ कर बैठते हैं अर्थात् हर प्रकार का शोषण करने से नहीं चूकते, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक आदि । आज तक वह अपने परिवार, घर, बहू, बहिनों के संकट हल नहीं कर पाये । अपने संकट हल नहीं कर पाये वह दूसरों के संकट क्या हरण करेंगे । मेरे साथ अगले पल क्या होने वाला है जिन्हें यह स्वतः ही बोध नहीं वह दूसरे का भविष्य क्या बतायेंगे ? ।

विगत वर्ष मैं पुष्कर गया हुआ था जहाँ पर एकमात्र ब्रह्मदेव का भव्य मंदिर स्थापित है । वहाँ पहुँच कर स्नान ध्यान पूजन कर ब्रह्मदेव के दर्शन किये और वापस आये तो रास्ते में ही एक ज्योतिषी जी अपना तामझाम रखे पूरे राजस्थानी वेषभूषा में शृंगार कर बैठे हुए थे । मैं उनके पास गया, वह बहुत प्रसन्न हुए और मैंने उन्हें कुण्डली दी, हाथ दिखाया, थोड़ी देर उन्होंने आँख बन्द कर ढोंग किया और बोलना आरंभ किया, पूरा फलित नकारात्मक किया । तब मैंने कहा दैवज्ञ जी आप अपनी पत्री और हाथ दिखाएं और जब मैंने फलित करना प्रारंभ किया तो दैवज्ञ के नेत्रों से भयंकर अश्रुपात होने लगा और वह बोला ठीक यही स्थिति मेरी है, मेरी बुद्धि, मेरा परिवार मुझे खाये जा रहा है । मैंने कहा ज्योतिषी जी आप जैसे राहुओं की वजह से ही ज्योतिष रूपी सूर्य को ग्रहण लगा है । ज्योतिष आज कमाई का सबसे उत्तम व बिना पूँजी का पूर्ण लाभदायक, बगैर परिश्रम कमाऊ, उत्तम लाभ दिलाने वाला, अच्छा खासा व्यापार बना हुआ है । आज ऐसे ही लोगों के कारण ज्योतिष विद्या की इतनी दुर्दशा हुई है ।

उसने कहा, 'पंडित जी मैं ज्योतिष में शून्य हूँ लेकिन शब्दों के मायाजाल से यजमानों को पटाने में कामयाब हो जाता हूँ और फिर जैसा मौका मिलता है वैसा शोषण बेहिचक करता हूँ ।' एक रोचक शोषण प्रसंग उन्होंने सुनाया जिसे जानना प्राणी-मात्र के लिए आवश्यक होगा और वह लुटने से अपने आप को बचा सकेंगे ।

उन्होंने गाथा प्रारंभ की और कहा, 'मेरे पास राजस्थान के एक धनवान लाला आये और मैंने उन्हें ज्योतिषीय चाल से फंसा लिया । प्रथम तीर्थ पुष्कर पर उसके कल्याण हेतु उससे एक लाख रुपया मांगा । लाला प्रभावित था एक लाख रुपया दे दिया । कारण शब्दों का मायाजाल जो बिछाया था लाला उसमें पूर्णतः फंस चुका था और पनाह पाने हेतु बुरी तरह से छटपटा रहा था इसीलिए तुरन्त एक लाख मुद्राएँ प्रदान कीं और लाला बोला ज्योतिषी जी मेरे क्रूर ग्रह का संशोधन विधिवत् कर देना और १०१ ब्राह्मणों को भोजन करा देना ।

'लाला के जाते ही मैंने पैसा अपनी तिजोरी में रखा और बड़ा प्रसन्न हुआ इसके बाद लाला से सम्पर्क बढ़ा और मैंने लाला का पूरा विवरण प्राप्त कर लिया । लालचवश मैंने एक जाल फैंका जिसकी बदौलत न मुझे कुछ मिला तथा लाला जान से भी हाथ धो बैठा । एक दिन की बात है कि लाला जहाँ शौच करने जाता था मैंने दुष्ट स्वभाव से डराने हेतु दो चार गुड़ियाँ तांत्रिक प्रयोग वाली बना कर गाड़ दी और अगले दिन स्वयं लाला के संग जाकर लाला जी को पूर्णतः स्थिति से अवगत कराया कि तुम्हारे ऊपर किसी ने भयंकर तंत्र का प्रयोग किया है उसको मैं अपनी विद्या द्वारा बाहर ले आया और ऐसा कहते हुए पहली गुड़िया उखाड़ दी वह खून सिन्दूर से सनी भयावह गुड़िया थी । देखते ही लाला कांपने लगा और पूर्णतः घबरा गया तथा उसका प्राणान्त भी वहीं हो गया ।

अतः लालाओं के पास पैसा होता है लेकिन दिल मजबूत नहीं होता है, इसीलिए तुरन्त फंस जाते हैं । अब विचार करें कि उन्होंने उच्छृंखल बुद्धि द्वारा पैसा भी लिया और अधिक स्वार्थ सिद्ध करने का जो व्यूह रचा वह लाला के प्राण तक ले बैठा अब ऐसे कराल, दुष्ट, पापाचारी प्राणी को बृहस्पति जन्म जन्मांतरों तक बुद्धि से पंगु रखकर करोड़ों जन्मों तक कुष्ठ रोग प्रदान कर भयंकर यातनाएं प्रदान करते हैं जिससे जातक नरकात्मक यातनाएं सहकर कराल कष्ट प्राप्त करता है ।

यह तो एक उदाहरण था लेकिन विचार करें कि लोग बुद्धि का सहारा लेकर कैसे-कैसे छलावा करते हैं और फिर 'बेचारे' बन जाते हैं । बड़े गर्व से कहते हैं इस जन्म में हमने चींटी तक नहीं मारी लेकिन अपने पूर्वखाता को नहीं खोलते । याद रखें शुभ-अशुभ कर्मों का ही फल प्राणीमात्र को सुख दुःख रूप में हजारों करोड़ों जन्मों तक प्राप्त होता रहता है ।

०००००००००००००००००००

यदि आप स्त्री या पुरुष हैं ?

पूर्व जन्मों में वेद शास्त्र पुराणों के अनुसार ईश्वर भक्ति करने के फलस्वरूप भगवान बृहस्पति ने आपको विमल बुद्धि प्रदान की, परम बुद्धिमान, श्रद्धावान, बुद्धिजीवी बनाया । परम भागवत होने पर भी आपको अहंकार नहीं हुआ । आपने शास्त्र की आज्ञा-अनुसार पत्नि का विधिवत पालन किया धर्मपत्नि को ही पत्नि समझा उसके साथ पूर्ण सौहार्द्र बनाए रखा उसकी हर विपत्ति को अपनी विपत्ति मान पूर्ण दाम्पत्य दायित्व निभाया ।

उपरोक्त शुद्ध आचरण से प्रसन्न होकर बृहस्पति तुम्हें बहुत पढ़ी लिखी विद्वान्, विदुषी, पतिव्रता, पतिपरायणा, पति-पथगामिनी, वेद शास्त्र की ज्ञाता उच्च परिवार से सम्बन्ध रखने वाली भार्या प्राप्त कराएगा । ऐसी स्त्री आपको ईश्वर प्राप्ति में सहायक होगी, वेदों और पुराणों की ज्ञाता होने के कारण आपको नित्य वेदों के प्रसंग सुना-सुना कर प्रसन्न करेगी और जब आप अप्रसन्न होंगे और व्यथित होंगे तब वो परमात्मा के गुणों का गान गा कर आपकी व्यथा को समाप्त कराने में आपकी सहायक होगी । पग-पग पर आपको परमात्मा की याद दिलाएगी, स्वयं प्रसन्न होगी और तुम्हें प्रसन्न रखेगी । जन्मांक में उसका बृहस्पति उच्च का केन्द्र स्थित होगा, पाप ग्रहों से दृष्ट नहीं होगा तथा उससे जो सन्तान उत्पन्न होगी वो महान विद्वान परम बुद्धिमान तथा राजयोग से सम्मानित होगी । उसको पाकर आपका यह लोक और परलोक दोनों सुधरेंगे मरने के बाद आपकी ख्याति, कीर्ति होगी, उनके द्वारा बहुत से नये शोध कार्य तथा पुस्तकों की रचनाएँ होंगी ।

इसके विपरीत आपने अपनी बुद्धि का दुरुपयोग किया अपनी बुद्धि से अपनी पत्नि को सताया उसकी एक न सुनी वो तड़प-तड़प कर मर गई, आपको दया तक न आई, अपने बुद्धि बल से अन्य स्त्रियों को आपने अपने जाल में फंसा लिया और उनको भोगा, राम नाम की ओढ़नी ओढ़ कर अन्य स्त्रियों के साथ व्यभिचार, अनाचार, पापाचार किया, उनके धन यौवन का शोषण किया तो बृहस्पति अगले जन्म में कुपित होकर इन कर्मों के भुगतान हेतु अनपढ़ स्त्री देगा और इतना बल देगा कि तुम्हारे सामने तुम्हारी स्त्री मुकाबला कर सके । जन्मांक में बृहस्पति ६-८-१२ भाव में बैठा होगा । पापक ग्रहों से दृष्ट होगा कर्मों के फलस्वरूप उसमें इतनी बल और क्रूरता आ जाएगी कि वह आपकी एक नहीं सुनेगी । जो आप कहेंगे उसकी समझ में एक नहीं आएगा आपका जीवन दूभर कर देगी जिसके फलस्वरूप गृहस्थ जीवन जीते जी नर्क बन जाएगा इस प्रकार बृहस्पति आपके कर्मों का फल प्रदान करेगा ।

केन्द्र का अनुभव है कि जातक जैसे कर्म करता है उसे वैसे ही फल भोगने पड़ते हैं इसमें ग्रहों का दोष नहीं है यदि दोषी है तो वह है जातक । अतः ग्रहों पर वृथा दोषारोपण न करते हुए उनके मंत्र जाप कर अपने पूर्वकृत को निर्मूल कर लें और निरन्तर प्रगतिशील हों ।

अब आप उपरोक्त को ध्यान से पढ़ें आपकी समझ में अवश्य ही आ जायेगा और आप अपने आप को पूर्णतः दुष्कर्मों से बचा सकेंगे । अब जिसने उपरोक्त कर्म किए हैं उनको बृहस्पति दण्ड न दे तो सत्य धर्म की दुहाई कौन देगा । इसीलिए बृहस्पति परमात्मा की आज्ञा से इन कर्मों का यथावत भुगतान कराते हैं । यदि जातक क्रूर कर्मी है तो यह परम शुभ ग्रह परम कराल हो जाता है और करोड़ों जन्मों तक प्रताड़ित करता है । जन्मांक में नीच का ६-८-१२ भावस्थ हो या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो विद्या पढ़ने ही नहीं देगा और जब विद्या कुछ प्राप्त नहीं होगी तो आदमी दर-दर की ठोकरें खाकर पशुतुल्य जीवन यापन करेगा । यदि कुछ विद्या किसी कारण से प्राप्त भी कर ली तो याद रखें गुरु प्रकोप से उसका कभी आप लाभ नहीं ले सकेंगे । गुरू एकदम दिवालिया बना देता है । बुद्धि को जड़ बना देता है इस प्रकार कल्प कल्पान्तरों तक कुकर्मों का प्रायश्चित कराते हैं भगवान बृहस्पति ।

इसको पढ़कर साधारण ही समझ में आ गया होगा कि आखिर गुरू बृहस्पति क्यों प्राणीमात्र को बुरी तरह से प्रताड़ित करते हैं । अब जातक विचारें कि दोषी देवगुरू बृहस्पति है अथवा स्वयं जातक ? याद रखें, जब तक जातक हृदय से प्रभु स्मरण मनन नहीं करेगा तब तक वह भक्त हो ही नहीं सकता और जब तक हृदय से भक्त नहीं होगा तो प्रभु भक्ति सुलभ हो ही नहीं सकेगी और जब तक भक्ति का उद्दीपन नहीं होगा तो सद्बुद्धि का प्रादुर्भाव होना असंभव ही है । अतः माया जाल से निवृत्ति हेतु प्रथम ग्रहों के मंत्र जप कर पाप का पर्दा प्रत्येक जातक को भस्म कर लेना चाहिए अर्थात् खोई हुई वस्तु को अंधेरे में ढूंढना चाहते हो तो प्रकाश लाना पड़ेगा तभी अंधेरे में गिरी हुई वस्तु प्राप्त हो सकेगी इसी प्रकार से अज्ञान, मायाजाल, माया, मोह, पाखण्ड, अंधकार भस्म हेतु तथा जन-जन कण-कण में व्याप्त उस परमात्मा के दर्शनार्थ हमें भक्ति रूपी प्रकाश का सहारा लेना पड़ेगा तभी हमारे मायारूपी मोहजाल के पर्दे कट सकेंगे और उस दयालु की हमें कृपा प्राप्त हो सकेगी तथा हम अपने आप को प्रभु ज्योति में समाहित कर आवागमन के चक्कर से मुक्त हो सकेंगे ।

हमारा भी ज्योतिष का बहुत बड़ा केन्द्र है, भारत में विख्यात है । हमारे यहां वर्ष पर्यन्त मंत्र जप होते रहते हैं तथा एक एक यजमान १२-१२ करोड़ मंत्र जाप कराते हैं । कभी-कभी यजमान एक दिन भी हमारे पास नहीं होता लेकिन उसका पाठ अनवरत् प्रतिदिन ८ घंटे हमारे केन्द्र के ब्राह्मणों द्वारा अवश्य सम्पन्न होता है । हम पूर्णतः सतर्कता बरतते हुए ब्राह्मणों पर हमेशा निगरानी रखते हैं कि वास्तव में जप हो रहा है या नहीं । बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू आदि सभी दुर्व्यसनों पर पूर्ण रोक होती है और ऐसा न करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ किया जाता है मात्र अनुष्ठान अवधि हेतु पाबन्दी होती है । दो आचार्य निरीक्षण हेतु बराबर तत्पर रहते हैं तथा विप्रों पर इतनी कठोरता बरती जाती है कि वह एक दूसरे से

अनुष्ठान अवधि में वातार्लाप तक नहीं कर सकते हैं । अर्थात् वैदिक सनातन पद्धति अनुसार अनुष्ठान में कहीं कोई त्रुटि अपनी तरफ से नहीं आने देते हैं ।

ऐसा करने से यजमान को पूर्ण फल प्राप्त होता है । याद रखें, हम ईश्वर तो नहीं हैं फलदाता मात्र परमेश्वर ही हैं लेकिन हम अपनी तरफ से कहीं कोई कर्म करने में कसर नहीं छोड़ते हैं । इसीलिए यजमान की दृष्टि में हमारी महत्ता बनी रहती है और भगवान बृहस्पति की दया भी निरन्तर बरसती रहती है तथा अन्य ग्रह भी पूर्ण प्रसन्न रहते हैं । दान न मैं लेता हूँ और न ही अपने बच्चों को लेने देता हूँ । समस्त दान ब्राह्मणों को दिलवाता हूँ । याद रखें यदि ब्राह्मण दान लेने के बाद जप नहीं करता है तो उसकी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है । अतः ब्राह्मण-जन दान लेने के बाद उसे हजम करने हेतु जप अवश्य करें जिससे वह व्यापे नहीं दुःखदायी न हो ।

विद्वत् समाज याद रखें जिसके निमित्त यजमान से पैसा लें उस कार्य को पूर्ण करें । यदि सवा लाख का संकल्प लिया तो एक तीस कर दें लेकिन एक चौबीस नहीं । कारण लालच में फंसकर यदि ऐसा कर बैठे तो यजमान को तो प्रभु फल देंगे परन्तु आपका सुकृत चला जाएगा जिससे इहजन्म या परलोक में भी नाना प्रकार की पीड़ा प्राप्त होती रहेगी । अतः प्रत्येक जातक को बृहस्पति के बीज मंत्र का जप अनुष्ठान कर गुरु कृपा प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

याद रखें, महामृत्युंजय बीज मंत्र अकाल मृत्यु निवारण हेतु किया जाता है और यदि इस पाठ में भी ब्राह्मण लापरवाही बरतता है तो उसे महान् हानि होती है और उसकी आयु में से प्रभु यजमान को आयु प्रदान कर देते हैं ।

हम देव गुरु बृहस्पति को बार-बार नमस्कार करते हैं । चौंसठ वर्ष तक तो बुद्धि शुद्ध रही, कहीं मलीनता नहीं है दूसरा उपकार शनि का है जो परम न्यायाधीश है इसीलिए हमें अन्याय नहीं करने देता हैं और नित्य हमारे साथ है । आज हमें जो कुछ भी प्राप्त है वह सब तपोबल का ही प्रभाव है इसमें किंचित मात्र भी असत्यता नहीं है ।

हमारे केन्द्र के रक्षक भगवान हनुमन्त लाल जी हैं और उन्हीं के नाम पर यह केन्द्र बना है । उन्होंने ही इस केन्द्र को बनवाया है । सर्वप्रथम प्रभु हनुमत् कृपा प्राप्त हुई इसके साथ ग्रहों का शोध प्राप्त हुआ है । जहाँ पर भी परेशानी आयी है हनुमान जी ने स्वतः ही उसका निवारण किया है, और उन्हीं की कृपा से ही सब कुछ प्राप्त हुआ है । अतः हम ऐसे परम कृपालु, उदार, रामसेवक भगवान हनुमान जी महाराज को शत्-शत् नमन करते हैं तथा भगवान बृहस्पति सद्शिक्षा सद्मार्ग सद्बुद्धि निरन्तर प्रदान करते रहें नमन करते हुए यही वरदान मांग रहे हैं ।

केन्द्र की महत्वपूर्ण खोज

यदि बृहस्पति कुण्डली में 6, 8 व 12 भाव में हो या नीच का किसी भी भाव में हो तो जातक की बुद्धि समय पर काम नहीं करती और बात बनती बनती बिगड़ जाती है । उसका बुद्धिबल बिल्कुल काम नहीं करता है । ऐसा अक्सर देखने में आता है । इसी प्रकार विद्यार्थी विद्यार्जन बहुत धीमी गति से करने लग जाता है । अध्यात्मवादी की गति और उड़ान भी अवरुद्ध होने लगती है और धन नाश होने लगता है ।

जातक में तीन प्रकार का बल होता है । 1. देहबल, 2. धनबल और 3. बुद्धिबल । देहबल और धनबल को बुद्धि नियन्त्रण करती है । इसलिए यह मानना पड़ता है कि बुद्धिबल ही सर्वोपरि बल है । एक बुद्धिमान व्यक्ति कई लाख मनुष्यों का संचालन कर सकता है और जिसमें बुद्धि नहीं होती है वह अपने को भी नहीं संभाल सकता है । बार-बार दूसरों की बुद्धि का सहारा लेकर अपनी बुद्धि को चलाता है । यदि बुद्धि नहीं होती है तो आया हुआ धन भी संभाल नहीं सकता और अपने हाथ से नष्ट कर डालता है । फिर सारी उम्र पछताता रहता है । इसलिए मानना पड़ता है कि बुद्धि बल ही सर्वोपरि बल है । इन तीनों बलों को ग्रह समाप्त कर देते हैं परंतु चौथा बल देव बल है उसको कोई हाथ नहीं लगा सकता है परंतु मानव उपासना से अपना समय चुराता रहता है और उसे देव कृपा अर्थात देव बल कम प्राप्त होने लगता है । इसलिए मानव को देव उपासना कर देव बल को अर्जित करते रहना चाहिए ।

बुद्धिबल को बनाए रखने के लिए जीवन के हर क्षेत्र में उच्चता प्राप्त करने और धन प्राप्ति के लिए बृहस्पतिवार के दिन पीली वस्तुएँ, वस्त्र, फल, अनाज आदि का दान करना चाहिए। उस दिन केले के पेड़ का पूजन कर जल, चने की दाल, पीले फूल आदि समर्पित कर धूप दीप आदि से पूजन कराना चाहिए । ऐसा करने से काफी राहत मिल जाएगी । इसके पश्चात् पुखराज की माला या हल्दी की माला अथवा साधारण माला द्वारा बृहस्पति के बीज **मन्त्र ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः** का नित्य 19000 जप करना चाहिए जिससे बृहस्पति द्वारा जीवन में आई रुकावटें दूर हो जाएंगी । यदि बृहस्पति उच्च का हो तो केवल 6 लाख मन्त्र में ही बुद्धि उज्ज्वल हो जाएगी । यदि नीच का है तो 12 लाख मन्त्र अवश्य जप करना चाहिए ।

उज्ज्वल तथा प्रतिभाशाली बुद्धिबल के लिए तथा उच्च कोटि की शिक्षा, धन तथा उच्च पदों की इच्छा रखने वाले जातक को अवश्यमेव बृहस्पति के एक करोड़ मन्त्र श्रद्धापूर्वक हृदय से कर या करवा लेने चाहिए । कारण यह है कि बुद्धिबल ही सर्वोपरि बल है । एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य बृहस्पति ग्रह की जाप करके एक वर्ष में एक करोड़ जाप बड़े आराम से कर सकता है यदि करोड़ मन्त्र जाप करने की शारीरिक सामर्थ्य न हो तथा करवाने के लिए धन का अभाव हो तो मानव को चार बार में 24-24 लाख के चार चरण सुविधा अनुसार श्रद्धापूर्वक जीवन में कर लेने चाहिएं । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है । तभी इसमें सफलता प्राप्त होगी केन्द्र में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा यह एक करोड़ मंत्र जाप 21 या कम दिनों में पूर्ण विधि तथा शास्त्रोक्त रीति अनुसार किया जाता है ।

वेदों में बृहस्पति

बृहस्पति की महिमा वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में बृहस्पति की पूजा क़ी जाती है:

ॐ बृहस्पतेअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवसऽॠत प्रजात तदस्मासुद्रविणधेहि चित्रम् ।।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् बृहस्पते अति यदर्य्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्ददीयत् छवस ॠत् प्रजात तदस्मासु द्रविण धेहि चित्रम् ।।

बृहस्पति ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला करनी चाहिएं । कारण कि, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केन्द्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण कि इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहां बृहस्पति रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केन्द्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

बृहस्पति बीज मंत्र :-

ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः ।

सरल भाषा में :

ॐ ग्राम् ग्रीम् ग्रौम् सः गुरुवे नमः ।

केन्द्र का विगत बीस वर्षों का अनुभव है ग्रह पीड़ा मंत्र जाप से निर्मूल की जा सकती है । अतः जीवन में प्रत्येक जातक को बृहस्पति के 1 करोड़ बीज मंत्र अवश्यमेव कर या करवा लेने चाहिए । ताकि जीवन प्रकाशमय रहे तथा जब तक जीयें नेत्र में कोई विकार न आए ।

अधिक जानकारी के लिए बृहस्पति ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें ।

भगवान शुक्र

शुक्र ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ शुक्र स्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः ।
तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

शुक्र सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

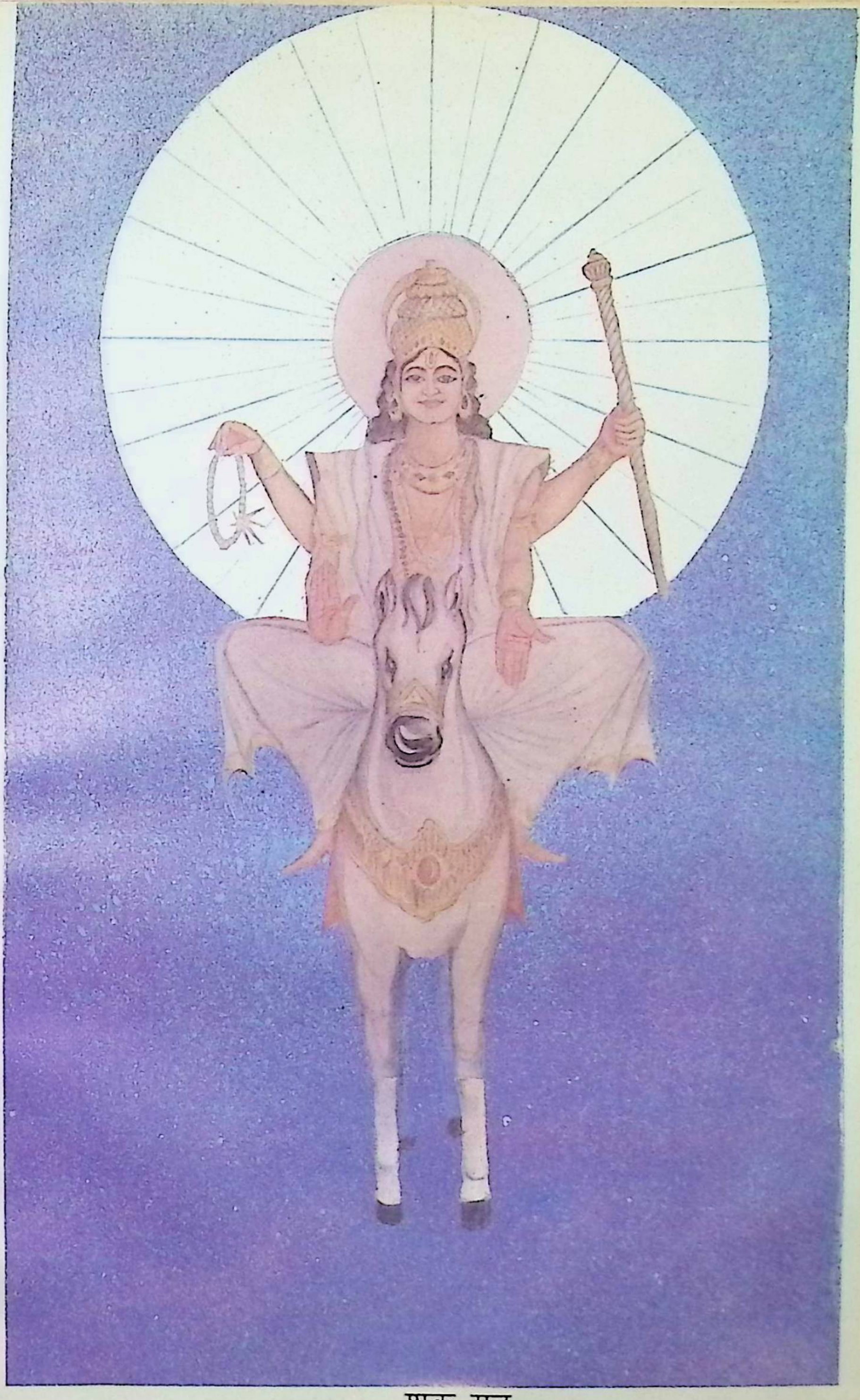

शुक्र ग्रह

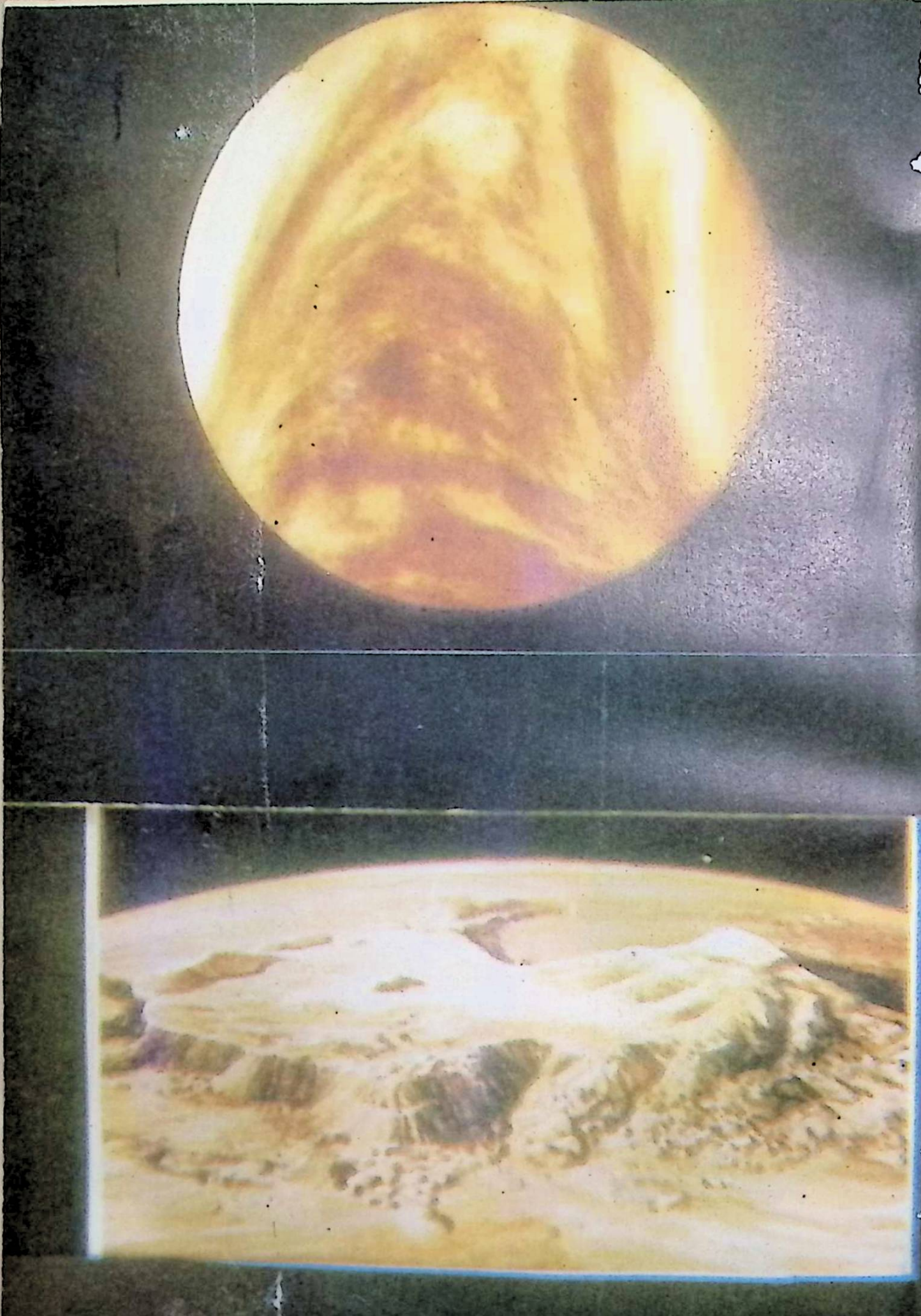

शुक्र की आकाश मण्डल में स्थिति तथा शुक्र धरातल का चित्र

काया और कला का नियामक गायन, वादन,अभिनय, नृत्य कला एवं रति सुख व समस्त ऐश्वर्य का प्रदाता शुक्र

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित शुक्र संबंधी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता शुक्र के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र, अंक शास्त्र में शुक्र का महत्व तथा विश्व सहित भारत में शुक्र पूजा की परंपरा, आदि की प्रामाणिक जानकारी ।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय

- ❊ शुक्र की उत्पत्ति
- ❊ अंतरिक्ष में शुक्र की स्थिति
- ❊ वेदों उपनिषदों में शुक्र
- ❊ पुराणों में शुक्र
- ❊ विश्व साहित्य में शुक्र
- ❊ शुक्र की राशियाँ
- ❊ शुक्र के नक्षत्रों में जन्में जातकों का परिचय
- ❊ ज्योतिष शास्त्र में शुक्र
- ❊ द्वादश भावों में शुक्र
- ❊ शुक्र की महादशा के फल
- ❊ हस्त रेखा शास्त्र में शुक्र
- ❊ शुक्र के मंत्र
- ❊ शुक्र के स्तोत्र तथा मंत्र एवं बीज मंत्र
- ❊ शुक्र के रत्न, उपरत्न तथा जड़ी-बूटियाँ
- ❊ शुक्र के दोषों को दूर करने के उपाय

❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊

शुक्र

अत्यर्क मत्यग्नि च ते तेजो कोम्न्यति तारकम् ।
देदीप्य मानं कविता ग्रहाणां प्रवरो भव ।।
शिव शर्मन् महाबुद्धे शुक्र लोकोऽयमद्भुतः ।
दानवाकां च देत्श्यानी गुरुरत्र वत्ये कविः ।।

शुक्र एक तेजकारक ग्रह है । अन्य ग्रहों की भांति शुक्र के संबध में भी पुराणों में अनेक रोचक आख्यान प्राप्त होते हैं । मत्स्यपुराण और महाभारत के आख्यानों के अनुसार शुक्र भृगु ऋषि पुत्र हैं । उनकी माता का नाम ख्याती था । इंद्र की पुत्री जयंती से शुक्र का विवाह हुआ था इनकी दूसरी पत्नी गो है जो पितरों की कन्या थी । गो से शुक्र के त्वष्ठा, बरूत्री, शंड और अमर्क नामक चार पुत्र हुए । शुक्र को दानवों का पुरोहित कहा जाता है । शुक्र ने अपने तपोबल से मृत संजीवनी विद्या प्राप्त की थी । इसी विद्या के बल पर शुक्र मृत दानवों को पुनः जीवित कर देते थे । बृहस्पति के पुत्र कच ने शुक्र का शिष्यत्व ग्रहण कर उनकी पुत्री देवयानी की सेवा कर संजीवनी विद्या प्राप्त की थी । शुक्र ने एक हजार वर्ष की अवधि वाले भंयकर धूमव्रत को सम्पन्न कर शिव से वरदान प्राप्त किया । शिव ने कहा कि 'तुम अकेले अपने तप, बुद्धि, शास्त्र ज्ञान, बल और तेज से समस्त देवताओं को पराजित करोगे ।' ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्र ने ग्रह रूप धारण किया ।

खगोलीय विज्ञान में शुक्र

सूर्योदय या सूर्यास्त के समय तीव्र द्युति वाले इस ग्रह को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है इसलिए इसे भोर का तारा या सांध्य तारा भी कहते हैं । सूर्य से शुक्र की मध्यम दूरी 6,72,00,000 मील है । इसका आकार भी पृथ्वी जैसा ही है । पृथ्वी का भूमध्यीय व्यास 7,927 मील है, जबकि शुक्र का 7,700 मील है । 218 मील प्रति सैकेंड की गति से शुक्र सूर्य की एक परिक्रमा 244 दिन 7 घंटे मे पूरी करता है ।

ज्योतिष शास्त्र में शुक्र

ज्योतिष शास्त्र में शुक्र को गुरु की भांति ही नैसर्गिक शुभ ग्रह माना गया है । शुक्र स्त्री-ग्रह, जल का स्वामी, ब्राह्मण जाति, रजोगुणी शुभ ग्रह है । इसका रंग सफेद है इसमें भी चंद्रमा की तरह सफेद किरणें फूटती हैं । शरीर में इसका स्थान जिह्वा तथा जनेन्द्रिय है । यह इन स्थानों से जीव को सब रसों का रसास्वादन कराता है अर्थात सभी

प्रकार के खाये पिये पदार्थों के रसों का अनुभव जिह्वा द्वारा प्रदान करता है । मैथुन काल में रस आनंद का अनुभव कराता है ।

शुक्र के अस्त होने के कारण कोई शुभ कार्य नहीं किया जाता है । जातक का शुक्र अस्त हो जाये तो उसे अनेक वीर्य विकार घेर लेते हैं और वह पागल तक बन जाता है । दिमाग में बेकार के विचारों का बंवडर उठता रहता है और जातक को बिना कारण परेशान करता रहता है। व्यर्थ के संकल्प विकल्प उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होते रहते हैं तथा भय उत्पन्न कर विकार बना देते हैं । इसकी धातु चांदी तथा अनाज चावल है । शुक्र ग्रह के कारण उत्पन्न परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए जातक को अपने वजन के बराबर चावल तथा दही का तुलादान, श्वेत वस्त्रों और फलों का दान शुक्रवार के दिन करना चाहिए । इससे काफी राहत मिल जाएगी । इसके पाठ, पूजा आदि से मैथुन आदि में संयम से काफी सहायता प्राप्त होती है और प्रभु के भक्तों को इसका शोध कर काम पर विजय पाने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे तेज प्राप्त होगा । शुक्र मीन में उच्च का तथा कन्या में नीच का होता है । शुक्र का रत्न है हीरा ।

शुक्र के नक्षत्र हैं :- *भरणी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी ।* राशियां हैं: *वृष तथा तुला ।*

द्वादश भाव में शुक्र

प्रथम भाव -	सुंदर, सुखी, मृदुभाषी, विद्वान्, राज्य कार्य दक्ष, दीर्घायुष्य, कामी
द्वितीय भाव -	प्रिय भाषी, लोकप्रिय, विद्वान्, साहसी, दीर्घजीवी
तृतीय भाव -	भाग्यवान्, विद्वान्, चित्रकार, आलस्य प्रधान, कृपण
चतुर्थ भाव -	आस्तिक, परोपकारी, व्यवहार कुशल, मातृभक्त
पंचम भाव -	कवि हृदय, आस्तिक, उदार, व्यवसायी, सुखी, कार्यप्रिय
षष्ठ भाव -	अशुभ, परस्त्रीगामी, सुख हीन
सप्तम भाव -	सुंदर पत्नी, उदार, लोकप्रिय, व्यभिचारी, चंचल, विलासी
अष्टम भाव -	रोगी, लेकिन दीर्घजीवी, परस्त्रियों पर धन व्यय
नवम् भाव -	अत्यंत धनी, गुणी, आस्तिक, सुखी जीवन, भ्रातृ सुख
दशम् भाव -	अनेक आजीविकाएं
एकादश भाव -	सुंदर, सुशील, धनवान, ऐश्वर्यशाली
द्वादश भाव -	संपन्न, विद्या प्रेमी, मितव्ययी, शत्रु हन्ता

चेतावनी :- **जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि शुक्र केवल छठे, भाव में किसी भी राशि का विशेषकर नीच का वैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नही है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले शुक्र के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए । ताकि शुक्र प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो । याद रखें अस्त शुक्र भयंकर पीड़ा जनक होता है चाहे वह किसी भी भाव का क्यों न हो ।**

हस्त रेखा शास्त्र में शुक्र

हस्त रेखा शास्त्र में हथेली पर ग्रहों के लिए स्थान नियत किये गऐ हैं । इन्हें पर्वत कहा जाता है । शुक्र पर्वत हथेली में अंगूठे के मूल के नीचे होता है । जीवन रेखा उस पर्वत को घेरती है ।

अंक शास्त्र में शुक्र तथा शुक्र प्रधान जातक

ज्योतिपीय विद्याओं में से अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही प्रश्नकर्ता को स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं । अंक विद्या में 6 का अंक शुक्र का सूचक माना गया है अर्थात अंक 6 का स्वामी शुक्र है । जिस तारीख को आपका जन्म हुआ है गणना कीजिए यदि 6 का अंक आता है तो आपका अंकाधिपति शुक्र है ऐसा समझना चाहिए । जैसे दिनांक 15=1+5=6 / 24=2+4=6 या 6 तारीख आदि इस प्रकार गणित करना चाहिए ।

अतः 6, 15, 24 तारीख को जातक का जन्म हुआ है तो शुक्र का प्रभाव स्पष्ट नजर आयेगा । ऐसा जातक अपनी योजनाओं को दृढ़तापूर्वक कार्यान्वयन करता है और वह प्रेमी होता है, उसका व्यक्तित्व आकर्षक होता है, वह अपने प्रेमी पर अपना सर्वस्व समर्पण कर देता है अर्थात् किसी भी प्रकार का कोई छल कपट नहीं रखता है । ऐसे जातक को देखने वाले कुछ और ही समझ बैठते हैं लेकिन उनका वास्तविक स्वरूप स्वच्छ निर्मल होता है । वह गणमान्य कलाकार व्यक्तियों का सम्मान अपना धन खर्च कर के भी करते हैं और मित्रों का भी पूर्ण स्वागत करते हैं लेकिन उनके प्रति कोई राग, द्वेष रखता हो, ईष्या करता हो उसे वह कतई पसंद नहीं करते हैं । अंक 6 वाला जातक किसी भी प्रकार के विरोध प्रतिरोध सहने की क्षमता नहीं रखता अर्थात् वो क्रोधवान होता है । वह दूसरों को पटाने में सिद्ध होता है तथा उसके मित्र अधिक होते हैं और वह अपने कार्य को कर्मठता-पूर्वक पूर्ण करता है । यदि 3, 6, 9, 12, 15, 18, 24, 30, 27 तारीख को शुक्रवार गुरुवार, मंगलवार हो तो यह 6 अंक वाले जातक को विशेष शुभ प्रद होता है । जिन जातकों का अंक 6 हो वह शुक्र ग्रह की विशेष पूजा-अर्चना, जप करे तथा हीरा-या जरकन अथवा फिरोजा साढ़े 5 रत्ती का धारण करें ऐसा करने से जातक शुक्र कृपा प्राप्त करेगा और अतुलित संपत्ति का अधिपति होकर इहलोक प्रलोक में अमर हो जाएगा ।

शुक्र प्रधान व्यक्ति प्रायः सुखी होते हैं । संगीत, काव्य-कला मनोरंजन में ज्यादा मन लगाते हैं । लड़ाई दंगे में ज्यादा मन नहीं लगाते और किसी पर जल्दी विश्वास नहीं करते हैं । हँसी मज़ाक करने वाले, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाले, बुद्धिमान, विनम्र, चतुर, प्रसन्नचित्त, कला प्रेमी, शांतिप्रिय, सौन्दर्य के उपासक, धन की इच्छा रखने वाले एवं भाग्यशाली होते हैं । वह देखते ही आदमी को पहचान लेते हैं कि यह किस लिए आया है । वह गायन, वादन, अभिनय शिक्षा प्राप्त करते हैं । उसका सुन्दर चेहरा, रसीली बातें आकर्षण का केन्द्र होता है और वह काम प्रधान होता है । शुक्र प्रधान जातक इश्कबाज, चंचल, मद्यपानी, एवं स्त्रियों से लाभ लेते हैं । खट्टी वस्तुओं के बहुत शौकीन, स्वभाव से भुलक्कड़ एवं तर्क वितर्क में दक्ष, अधिक कामी, स्वार्थी, जैसे तैसे वह धन प्राप्त करने में माहिर होते हैं । सौम्य, भोगी एवं सरल हृदयी होते हैं । वह सौन्दर्य प्रसाधनों का ज्यादा उपयोग करते हैं और औरतों को अधिक प्रिय लगते हैं ।

शुक्र सम्बन्धी अन्य फल

रोग:- प्रमेह, मन्दबुद्धि, वीर्य विकार, नंपुसकता, वीर्य या इन्द्रिय सम्बन्धित रोग ।

यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाए तो ग्रह का प्रकोप अर्थात् महादशा या अन्तर्दशा लगी हुई समझनी चाहिए और बिना किसी से पूछे मन्त्र जाप, रत्न जड़ी-बूटियां धारण करनी चाहिएं, इससे रोग हल्का हो जाता है और ठीक होने लगता है ।

रत्न/उपरत्न:- हीरा, करगी, सिम्मा ।

सवा पांच रत्ती वजन के रत्न को शुक्रवार के दिन भरणी नक्षत्र में धारण करें । रत्न धारण करते ही राहत प्रारंभ हो जाएगी । रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि- विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती है वह रत्न पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता है । इसलिए रत्न पहनने से पहले अर्थात अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य कर लेनी चाहिए क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही हैं । जिस प्रकार किसी मूर्तिकार के घर से लायी हुई किसी भी देवता की मूर्ति जब उस मूर्ति को मंदिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व प्राण-प्रतिष्ठा विधान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है । इसी प्रकार अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद उसमें भी प्राण-प्रतिष्ठा का होना आवश्यक है ।

जड़ी-बूटियां:- सरपोखा की जड़ शुक्रवार को भरणी नक्षत्र में सफेद धागे में दांये बाजू में धारण करनी चाहिए । इससे ग्रह का प्रभाव कम होना शुरू हो जाता है ।

दान: भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद स्वयं के वजन के बराबर चावल, चांदी, घी, सफेद वस्त्र, चन्दन, दही, गंध द्रव्य, चीनी, गाय, हीरा या जरकन, सफेद पुष्प, फल आदि दान श्रद्धापूर्वक दक्षिणा सहित ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक दान करना चाहिए ।

व्यापार/नौकरी:- यदि शुक्र ग्रह अधिक अंशों में बलवान हो तो निम्नलिखित व्यापार और नौकरी से विशेष लाभ होता है । **व्यापार :-** हीरों, स्वर्ण भूषण, लेन देन, ब्याज आदि का धन्धा, इत्र-सुगन्धित तेल, साबुन सोडा, मनिहारी या फैंसी स्टोर, फिल्म, पुष्प, फर्नीचर, पुरातत्व वस्तुओं, पशुधन, शराब का व्यापार आदि । **नौकरी:-** फिल्मी पत्रिका का संपादन, अभिनेता या अभिनेत्री बनना, फिल्मी गीत कहानी लेखक, डायरेक्टर, संगीत निर्देशक, फिल्म वितरक, संगीत, नृत्य, आकाशवाणी की नौकरी, हड्डियों के जोड़-तोड़ का विशेषज्ञ, नर्स, प्रशिक्षण, पुरातत्व विभाग की नौकरी ।

शुक्र ग्रह सम्बन्धित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र तथा गायत्री आदि भी पाठकों की सुविधा के लिए यहां दिये जा रहे हैं जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । नित्य १०८ पाठ करने से चमत्कारी लाभ प्राप्त होता है ।

अथ शुक्र मंत्र

विनियोग :- अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

नीचे लिखे कोष्ठकों में अंगों को छूते रहें :-

अथ देहांगन्यास :- अन्नात्परिस्रुतः शिरसि (सिर) । रसं ब्रह्मणा ललाटे (माथा) व्यपिबत्क्षत्रं मुखे (मुख) । पयः सोमं हृदये (हृदय) । प्रजापतिः नाभौ (नाभि) ऋतेन सत्यं कट्याम् (कमर)। इन्द्रियं विपान ठँ. गुदे (गुदा) । शुक्रं वृषणे (लिंग) । अन्धस ऊर्वोः इन्द्रस्येन्द्रियं जानुनोः (घुटने) । इदं पयः गुल्फयोः (गुल्फ) अमृतं मधु पादयोः (पैर) ॥

अथ करन्यास :- अन्नात्परिस्रुतो रसं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं तर्ज्जनीभ्यां नमः। पयः सोमम्प्रजापतिः मध्यमाभ्यां नमः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं अनामिकाभ्यां नमः। विपानर्ठं० शुक्रमन्धस कनिष्ठिकाभ्यां नमः । इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- अन्नात्परिस्रुतो रसं हृदयाय नमः । ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं शिरसे स्वाहा। पयः सोमं प्रजापतिः शिखायै वषट् । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुँ । विपानर्ठं शुक्रमन्धस नेत्रत्रयाय वौषट् । इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम् :- श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः ।
तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् । ।

भृगुगायत्री :-ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः कविः प्रचोदयात्

बीज मन्त्र :- ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः भूर्भुवः स्वः ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपानर्ठं शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयो मृतम्मधु । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः द्रौं द्रीं द्राँ ॐ सः शुक्राय नमः ।

जपमन्त्र :- ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः । षोडशसहस्राणि 16000 प्रतिदिन ।

शुक्रस्तवराजः

अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप् - छन्दः ।
शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।।
नमस्ते, भार्गव श्रेष्ठ, दैत्य - दानव - पूजितः ।
वृष्टि रोध प्रंकत्रे, च, वृष्टि कत्रे, नमो नमः ।।
देवयानि, पितः तुभ्यम्, वेद वेदांग पारग ।
परेण, तपसा, शुद्धः, शंकरः, लोक सुन्दरः ।।
प्राप्तः, विद्यां, जीवनाख्यां, तस्मै, शुक्रात्मने नमः ।
नमः तस्मै भगवते भृगु पुत्राय् वेधसे ।।
तारा मण्डल, मध्यस्थ, स्व भासा - सित - अम्बर ।
यस्य - उदये, जगत् - सर्वम्, मंगल - अर्ह, भवेत् - इह ।।
अस्तम्, यः - ते, हि-अरिष्टम्, स्यात् - तस्मै, मंगल रूपिणे ।
त्रिपुरा - वासिनः, दैत्यान्, शिव - बाण - प्रपीडितान् ।।
विद्यया, अजीवयः, शुक्रः, नमस्ते, भृगु नन्दन ।
ययाति, गुरवे, तुभ्यम्, नमस्ते, कवि, नन्दन ।।
बलि राज्य प्रदः जीवः, तस्मै, जीवात्मने, नमः ।
भार्गवाय, नमः, तुभ्यम्, पूर्व गीर्वाण वन्दितः ।।
जीव पुत्राय्, यः, विद्याम्, प्रादात्, तस्मै, नमः, नमः ।
नमः शुक्राय काव्याय्, भृगुपुत्राय् धीमहि ।।
नमः, कारण रूपाय्, नमस्ते, कारणात्मने ।
स्तवराजम् इमम्, पुण्यम्, भार्गवस्य, महात्मनः ।।
यः, पठेत्, शृणुयात्, वा, अपि, लभते, वाञ्छितम्, फलम् ।
पुत्रकामः, लभेत्, पुत्रान्, श्रीकामः, लभते श्रियम् ।।
राज्य कामः, लभेत्, राज्यम्, स्त्री कामः, स्त्रियम्, उत्तमाम् ।
भृगुवारे, प्रयत्नेन, पठितव्यम्, समाहितैः ।।
अन्य वारे, तु, होरायाम्, पूजयेत् भृगु नन्दनम् ।
रोगार्तः, मुच्यते रोगात्, भयार्तः मुच्यते भयात् ।।
यत् - यत् प्रार्थयते, जन्तुः तत् - तत् प्राप्नोति सर्वदा ।
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नतः ।।
सर्व पाप विनिर्मुक्तः प्राप्नुयात् शिव सन्नि धिम् ।।

नोट :- सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा पूर्ण रति सुख प्राप्ति हेतु नित्य 108 पाठ करने चाहिए ।

शुक्र क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या यह खाली बैठा है ?

क्या इसके पास कोई काम नहीं ?

क्या यह शुभ ग्रह होते हुए भी शत्रुता कर रहा है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

पिछले संदर्भों में हमने शुक्र की महिमा का अलग-अलग रूप से वर्णन किया है । इस संदर्भ में हम यह बताना चाहेंगे कि शुक्र अति शुभ ग्रह है लेकिन यह जातक को महान् कष्टों के सागर में क्यों और किस प्रकार फैंक देता है । क्यों जातक को कष्ट प्रदान करता है, क्यों कष्टों की बौछार शुक्र करता है या प्राणी अपने किए हुए अशुभ कर्मों का ही फल जन्मजन्मातर सुख दुःख रूप में प्राप्त करता है । शुक्र क्यों रतिसुख नहीं लेने देता है, क्यों रति सुख से वंचित कर देता है । सारा वैभव होते हुए उस वैभव का उपयोग क्यों नहीं करने देता है आदि तत्वों की सूक्ष्म प्रमाणिक स्पष्ट शास्त्रोल्लेखित सरस व्याख्या यहां करेंगे ।

शुक्र अति शुभ ग्रह है । शुक्र ने भगवान शंकर की घनघोर तपस्या कर वरदान में अमरत्व तथा मृतसंजीवन विद्या प्राप्त की । यही कारण था कि शुक्र मरे हुए राक्षसों को पुनः जीवन प्रदान कर देते थे । शुक्र प्राणी मात्र के ब्रह्मरन्ध्र में अमृत का संचार करता है । दूसरा वरदान यह मांगा था कि देवगुरू बृहस्पति से तीन गुणा अधिक बल प्राप्त हो ताकि मैं अपनी शक्ति से अतुलित संपत्ति वैभव प्रदान कर सकूँ । अर्थात् जो संपत्ति कठिन संघर्ष करने के बाद भी प्राप्त न हो सके उसे मैं सहज ही प्रदान कर सकूँ । तीसरा वरदान यह मांगा कि ६-८-१२ में सभी ग्रह प्रभावहीन हो जाते हैं और अपना प्रभाव नहीं दे पाते लेकिन मैं प्रभावशाली बनूँ । तब भगवान शंकर ने कहा कि छठे भाव को छोड़कर बाकी सभी भावों में तू महाबली होगा तथा ८-१२ भावों में बैठकर तू जातक को अतुलित संपत्ति प्रदान कर सकेगा । चौथा वरदान मांगा कि मेरी कृपा से जातक उच्च पदासीन हो तथा कुशल प्रशासक बने भगवान शंभु ने एवमस्तु कहा, इस प्रकार वरदान प्राप्त किए भगवान शुक्र ने ।

काम कला, रतिसुख शुक्र की कृपा से ही प्राप्त होता है । यदि शुक्र जीव को कामोत्तेजक न करे तो सृष्टि का सृजन ही न हो ! यद्यपि रति का स्वामी कामदेव है लेकिन बगैर शुक्र के काम नीरस है । जन्मांक में जब शुक्र अस्त तथा छठे भाव में होता है या

शुक्र पर्वत हथेली में नीचे बैठ जाता है तो जातक को सन्तान सुख नहीं प्राप्त होता । कारण वीर्य में शुक्राणुओं को रोक कर सन्तान पैदा होने ही नहीं देता ।

शुक्र के अस्त हो जाने से शादी विवाह आदि समस्त शुभकर्म बन्द हो जाते हैं और कहते हैं कि अभी रुको तारा डूबा है । भगवान शुक्राचार्य दैत्य गुरु हैं । दैत्य दानवों पर इनकी निरन्तर कृपा बरसती रहती है । महाराजा बलि जिनका नाम स्वर्णाक्षरों से शास्त्रों में अंकित है ऐसे अमर कीर्ति वाले राजा के गुरू थे महाराज शुक्राचार्य । याद रखें महाराज बलि जैसा राजा कभी दूसरा नहीं हुआ शास्त्रों का प्रमाण है । भगवान शुक्र महान तपस्वी, पराक्रमी, तथा प्रभु के अनन्य उपासक हैं ।

यदि आप स्त्री या पुरुष हैं

पूर्व जन्म की विशाल तपस्या, दान परोपकार, के फलस्वरूप ही भगवान शुक्र ने आपको महान् ऐश्वर्य, वैभव, यश, कीर्ति राजसत्ता प्रदान की है । यह सब पाकर भी आपने धर्म तथा शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया श्रीमद् से मदान्ध नहीं हुए, एक पत्निव्रत धर्म को धारण किए रहे, अपनी धर्मपत्नि को पूर्ण सुख दिया, विधिवत धर्मोचित उसका पालन पोषण किया तथा अन्यान्य औरतों की सुन्दरता, उनके कामुक हावभाव के वशीभूत नहीं हुए तथा किसी भी प्रकार से किसी भी स्थिति या परिस्थिति में पत्निव्रत भंग नहीं किया और शास्त्र निर्देशित मर्यादा में मर्यादित रहे । आपकी धर्म परायणता को देखकर भगवान शुक्र अगले जन्म में उच्च घराने की सुन्दर सुशील, सर्वगुण सम्पन्न पतिव्रतपरायण कन्या से विवाह करवायेगा । कारण शुक्र की कृपा से ही जातक सुन्दर सुशील सर्वगुण सम्पन्न भार्या प्राप्त करता है । धर्मपत्नि की सुन्दरता, आकर्षण के कारण जातक किसी काल में भी किसी परस्त्री के चुंगुल में नहीं फंसता है । जातक हर क्षेत्र में महान् प्रगति प्राप्त करता हुआ उस स्त्री के गर्भ से महान् आत्माएँ प्राप्त करता है । वह महान् आत्माएँ अपने माता-पिता का नाम रोशन करते हुए महान् धन, यंश, वैभव प्राप्त करते हैं तथा मातृपितृ भक्त होते हैं ।

लक्ष्मी वैभव, पराक्रम आदि पाकर तथा कामान्ध, मदान्ध होकर जो जातक प्रभु भजन नहीं करते या उन सब में अहं की उत्पत्ति हो जाती है, स्वार्थ बहुत बढ़ जाता है तो जातक उच्छृंखल हो बेहिचक कुकृत्य करने लगता है । कुल समाज का भय न मानकर मनमानी करता है तथा आततायी हो जाता है । एक स्त्री को भगा दिया दूसरी को ले आए तथा 5-10 रखैल एक साथ रख लीं और उन सबका उपभोग किया तथा जिस स्त्री ने उनकी नहीं मानी उसका कत्ल तक करवा दिया । हर जाति वर्ण की स्त्री से कामान्ध होकर रमण किया । विवाहिता पत्नी की एक न सुनी यदि उसने ज्यादा ही कहना आरंभ किया तो घर से निकाल दिया । तड़फ-तड़फ कर रोती हुई वह मर गयी । बहिन-मौसी, चाची, भाभी आदि पारिवारिक निकट सम्बन्धियों से भी कामान्ध हो काम पिपासा शान्त करने लगे । यहाँ

तक कि अपने वीर्य से उत्पन्न अपनी ही बेटी को नहीं बख्शा तथा बेटों की पत्नियों का तो गाजर मूली की तरह उपभोग किया । यदि किसी ने आवाज उठाई तो पैसा देकर डरा धमका कर मुंह बन्द किया और यदि फिर भी नहीं मानी तो कत्ल तक करवा दिया । इतने पतित हुए कि पशुओं से भी मैथुन करने लगे । अतः कर्मों का भोग तो हर प्राणी को सुख दु:ख रूप में भोगना ही पड़ता है ।

शुक्र ने यह वैभव इसलिए दिया था कि इस पैसे से धनादि धर्मः ततः सुखम् अर्थात् धन से धर्म करो तथा पूर्ण सुख की प्राप्ति करो । धन के माध्यम से जातक परोपकार, समाज सेवा, दरिद्रनारायण सेवा, लोकोपकार करे । लेकिन जातक श्रीमद से मदान्ध होकर कुछ और ही करने लगता है तथा मनमानी करते हुए अपने को समाप्त कर लेता है ।

एक बार हम सहारनपुर गये । सहारनपुर में एक वकील से भेंट हुई, उनके जन्मांक को देखा जन्मांक में कन्या लग्न थी और लग्न में ही शुक्र मंगल विराजमान थे तथा शनि राहु से दृष्ट थे लेकिन किसी शुभ ग्रह की दृष्टि उन पर नहीं थी न ही शुभ ग्रहों से कोई सम्बन्ध था परन्तु नीच शुक्र की महादशा चल रही थी ।

पिता ने मरते वक्त करोड़ों रुपये, चार बंगले, गाड़ियां पुत्र को दीं और कहा बेटा तू बैठा भी रहेगा तो भी राजा के समान ऐश्वर्य का उपभोग कर सकेगा लेकिन बेटा शराब और शबाब के चक्कर में मत फंसना वर्ना तुम्हारा सर्वस्व लुट जाएगा । उस वकील ने कहा ठीक है पिता जी आपकी आज्ञा शिरोधार्य है । पिता के मरते ही वह अपना वायदा भूल गया। नीच के शुक्र ने अपना चमत्कार दिखाना प्रारंभ किया, राहु से दृष्ट होने के बाद चेतना का भी हरण हो गया और परम सुन्दरियों के संग रात दिन कामकेलि (संभोग) करने लगा । धर्मपत्नी परमसुन्दरी थी लेकिन उसकी एक नहीं सुनी और मारपीट कर उसे मायके भगा दिया ।

हमने कुण्डली और हस्त रेखाओं का अवलोकन करने के बाद कहा वकील साहब आपने कितनी स्त्रियों के साथ रमण किया है । वह तुरन्त बोला पाँच सौ के करीब तो होंगी । तब उसने फलित सुनकर अश्रुपात करते हुए कहा पंडित जी मेरे पास 10 करोड़ रुपया चार बंगले, चार गाड़ियां थीं लेकिन शराब, शबाव के चक्कर में मेरा सर्वस्व लुट गया । बाप की अतुलित सम्पत्ति सब समाप्त हो गयी और आज मैं किराये का मकान लेकर निन्दनीय जीवन निर्वाह कर रहा हूँ । प्रचुर विलासिता के कारण मैं प्रचण्ड निन्दा का पात्र बन कर शक्ति तथा श्री विहीन हो गया जिसके कारण आज मेरे से कोई बात करने तक को राजी नहीं है । अर्थव्यवस्था पूर्णतः चरमराई हुई है । हमने कहा वकील साहब आप एक बात बताएँ आपने पाँच सौ स्त्रियों के संग रमण किया, कुंवारी ब्याही सभी के साथ रमण किया, लेकिन आप यह स्पष्ट बताएँ कि पाँच सौ औरतों से संपर्क करने में तुम्हें किस-किस के साथ कैसी-कैसी सुखानुभूति हुई ?।

उसने अपने दोनों हाथों से माथा पीटा और वेदना पूर्ण करुण स्वभाव से कहा कि पंडित जी स्वाद आनंद तो एक जैसा था लेकिन हावभाव अलग-अलग थे, अदायें अलग-अलग थीं काम कलाएँ अलग-अलग थीं । पंडित जी मेरी अक्ल मारी गयी थी मैंने सती सावित्री की तरह पवित्र धर्म पत्नी का तिरस्कार किया था लेकिन तिरस्कार करने के बाद भी जब मेरा सर्वस्व लुट गया किराये पर रहने लगा तो वह साथ में आकर रहने लगी और मेरी सेवा करने लगी, मेरा भरण पोषण करने लगी । इस समय मेरी सूर्य की दशा चल पड़ी है इसी के कारण मेरी इज्जत भी कुछ नहीं है और मुझे लग रहा है कि सूर्य मुझे भीख तक मांगने को विवश कर देगा लेकिन मरने नहीं देगा ।

अतः हार्दिक मनन चिन्तन मंथन करें तो स्पष्ट समझ में आ जाएगा कि जो आनन्द एक औरत के संग रमण करने में है वही आनन्द सभी औरतों से प्राप्त होता है केवल रूप रंग का ही फर्क है ।

अतः उपरोक्त से यह सिद्ध हो गया कि जो रतिसुख एक औरत के साथ रमण करने में होता है वही सुख दूसरी औरत के संग रमण करने में होता है लेकिन यह मन की विलासिता है जो नितनवनूतन नवेली को प्राप्त करने के लिए लालायित रहता है, इसीलिए गीता में भगवान ने कहा है अर्जुन मन ही मनुष्यों को बन्धन मोक्ष प्रदान करता है अर्थात् जिसने मन पर रोक लगा ली उसे मोक्ष मिला और जो मन के साथ बहने लगा उसे बन्धन प्राप्त हुआ ।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्पष्ट कहा है कि <u>राम विमुख सुत ते बड़ हानि</u> अर्थात् राम से विमुख होने पर हानि ही नहीं बहुत महान हानि होगी । जो लोग अत्याचार, पापाचार, अनाचार द्वारा वृहद् अर्थोपार्जन करते है याद रखें उस पैसे का सुख लड़के नहीं ले सकेंगे और न स्वयं । वह पैसा ही विनाश का एक दिन कारण बनेगा । अपना लड़का ही अपको अपमानित कर प्रताड़ित करेगा ।

विगत दो दशकों का अनुभव है कि जो जातक उपरोक्त घृणित कार्य करता है शुक्र उसके जीवन को जिन्दा जीते नरक बना देता है । इन्द्रिय में नाना प्रकार के असाध्य रोग प्रदान कर देता है जिससे जातक अपनी सुन्दर भार्या को छोड़ कर बाहर जाता है लेकिन वहाँ भी असफल होता है इस प्रकार कई जन्मों तक पापों का प्रायश्चित शुक्र कराता है ।

जब जातक का जन्म होता है और यदि शुक्र अस्त हो जाय तथा जन्मांक में छठे भाव में बैठ जाय तो जीवन में वह रति सुख ले ही नहीं सकता । सन्तान उत्पन्न वह कर ही नहीं सकता है । सन्तान और रति सुख से विहीन जातक पत्नी द्वारा धिक्कारा जाता है । आत्म हत्या करना चाहता है लेकिन शुक्र मरने नहीं देता और इस प्रकार अनेक जन्मों में पापों का प्रायश्चित शुक्र कराता है ।

याद रखें, जब जन्मांक में शुक्र मंगल एक साथ बैठे हों और शुक्र मीन राशि का हो तो जातक इतना कामावेश हो जाता है कि उसे अपने आप को रोक पाना असंभव हो जाता है । यदि यह नीच का हो तो जातक नीच स्त्रियों से संसर्ग बना, रमण करेगा । यदि पापक ग्रहों से दृष्ट हो तो नीचता कई गुणा और आयेगी ।

यदि आप अपने सुकृतों को बचाना चाहते हैं, काम के वशीभूत नहीं होना चाहते हैं तो वास्तविकता को जानने हेतु शुक्र के एक करोड़ विधिवत् मंत्र जाप करें । ऐसा करने से कामवासनाएँ तो नष्ट हो ही जायेंगी और दूसरी स्त्री की तरफ कभी निगाह तक नहीं जाएगी और अपनी धर्मपत्नी के संग ही सर्वानन्द की प्राप्ति होगी ।

यदि उत्तेजना अधिक होती है और कुमार्ग से बचना चाहते हैं तो विचलित न हों तुरंत ठंडे पानी से स्नान कर छत पर घूमें तथा शुक्र ग्रह के बीज मंत्र का जाप करें ऐसा करने से जातक पाप से तो बचेगा ही काम से लड़ने की क्षमता प्राप्त कर सकेगा ।

उपरोक्त का जो वर्णन किया है वह शाश्वत सत्य है । लेशमात्र भी असत्यता नहीं है । लेखक ने स्वयं शुक्र के एक करोड़ मंत्र जप कर शुक्र ग्रह का आनन्द प्राप्त किया है । यह अकाट्य सत्य है कि कामुकता निर्मूल हो जाती है तथा सहस्रसार से अमृत प्राप्त होने लगता है । शुक्र वाणी का स्वामी है इसलिए वाणी में मिठास आ जाती है । अतः बुद्धिजन श्रद्धालु भक्त सन्त अवश्यमेव जप करें और यह अवश्य देखें कि शुक्र जीवन सार्थक करने में कितना सहायक होगा । कामदेव सदा भजन में बाधक बना रहता है लेकिन शुक्र कामदेव को शान्त करता है कारण जब तक काम रंग में रंगे रहोगे तब तक राम रंग चढ़ेगा ही नहीं और जब राम रंग में रंग जाओगे तो कामदेव स्पर्श तक नहीं कर सकेगा ।

अतः प्रत्येक जातक को लौकिक पारलौकिक सुख प्राप्ति हेतु शुक्र की कृपा अवश्मेव प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

श्री शुक्राय नमः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि
हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि
यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि
रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि
सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं परिकल्पयामि

केन्द्र की विशेष खोज

ऐसा अक्सर देखा जाता है कि जिन जातकों के हाथ में शुक्र पर्वत ऊंचा होता है या कुंडली में किसी भी राशि का होकर बारहवें भाव में हो तो इस जातक को सुंदर पत्नि/पति, उत्तम वाहन, सुन्दर वस्त्र पहनने का शौक, अच्छे से अच्छा भोजन करने की रुचि, गायन नृत्य आदि में रुचि तथा समस्त भौतिक ऐश्वर्य भोगने की सामर्थ्य प्रदान करता है । जिन जातकों के हाथ में यह पर्वत नहीं हो अथवा हड्डी मात्र ही हो और कुण्डली में नीच का हो तो सारा कुछ उलट जाता है । इस दोष के कारण जातक बुरी संगत में पड़कर अप्राकृतिक तरीकों से अपरिपक्वता में वीर्य/रज का नाश करने लग जाता है । नपुंसकता या बाँझपन हो जाता है, शरीर में हर समय आलस्य छाया रहता है तथा निद्रा बहुत आती है । कमर का दर्द आदि हर वक्त बना रहता है । कई प्रकार के गुप्त रोग आ घेरते हैं । ब्रह्मचर्य का पालन नहीं हो सकता है तथा भगवान के भजन पूजन में मन नहीं लगता है । शुरू-शुरू में मन में कुछ अशान्ति आती है बाद में जिह्वा द्वारा ग्रहण की हुई वस्तु का स्वाद भी पता नहीं लगता है । गायन आदि क्रिया में शिथिलता आ जाती है । विद्यार्थी अध्ययन आदि में रुचि लेना बंद कर देता है । शुक्र गायन, वादन, अभिनय का मालिक है और इसकी कृपा से जातक इन कर्मों में अग्रसर होता है । शुक्र वाणी की मिठास का नियंता है, वाणी में विचित्र प्रकार का रस उत्पन्न कर गाने वाले के कंठ में मिठास भर सुनने वाले को रस में भिगो देता है । श्रृंगार रस, प्रधान रस है और इसका प्रदाता शुक्र ही है । इसकी कृपा से ही कवि श्रृंगार रस का सूक्ष्म से सूक्ष्म वर्णन करने में सामर्थ्यवान होता है और इसका इतना प्रभाव है कि आज आधे से अधिक साहित्य श्रृंगार के वर्णन से भरा पड़ा है । इसका काम पर पूर्ण अधिकार है जिससे सारी दुनिया इसके इशारे पर नाचती नजर आ रही है । आजकल रेडियो टेलीविजन ने इसका प्रचार कर नवयुवक/नवयुवतियों को पूरी तरह भ्रमित कर दिया है । टेलीविजन पर फिल्मों में उत्तेजक नृत्य आदि तथा वासना युक्त दृश्य देख देख कर मनुष्य अपने आपको समय से पूर्व ही नाश की तरफ ले जा रहा है ।

इस प्रकार जीवन में आए विकारों से छुटकारा पाने के लिए जातक को शुक्रवार के दिन शुक्र के प्रति चावल के तुलादान के साथ श्वेत वस्त्रों, फूलों और फलों का एक ब्राह्मण को बुला कर उसका सम्मानपूर्वक पूजन आदि कर दान दक्षिणा से संतुष्ट करना चाहिए । ऐसा करने से राहत प्राप्त होगी । हालांकि शुक्र शुभ ग्रह है परंतु निर्धनता भी देता है । इसलिए दान आदि के साथ इसके बीज मन्त्र ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः का 16000 जप तथा स्तोत्र का नित्य पाठ करना चाहिए । यह जप स्फटिक मणि या सफेद चन्दन की माला पर करना चाहिए । केन्द्र ने कुछ जातकों को जिनका विवाह नहीं हो रहा था या प्रेम आदि में सफलता हाथ नहीं लग रही थी, शुक्र के बीज मंत्र को जप करवाया

और परिणाम बहुत ही उत्साहवर्धक रहे हैं । इसके लिए जातक को दो दीपक जला कर, दायीं तरफ घी का दीपक और बायीं तरफ तेल का दीपक, दोनों दीपकों के बीच में तांबे के लोटे मे गंगाजल चांदी का सिक्का, रुद्राक्ष, पीपल की जड़ तथा तुलसी दल डाल कर मन्त्र तथा स्तोत्र जाप करने के बाद इस जल को छानकर तुलसी दल सहित पी लेना चाहिए और फिर उसी तरह सब कुछ डाल कर और ज्योतियां जलाकर जप करना चाहिए जो ४० दिन से तीन मास तक किया जाए । इससे उन जातकों के चेहरों पर रौनक लौट आई और कार्य भी बन गया। ऐसा करने से कुछ निःसंतान दम्पतियों के यहां संतान और पुत्र लाभ हुआ है पूरी जानकारी के लिए केन्द्र से सम्पर्क करें ।

जो जातक परमात्मा के रस का लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें तो इसका अवश्य जाप कर लेना चाहिए कारण जब तक काम पर संयम नहीं होगा तो कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकेगा । इसके संयम से सब कुछ सधने लगेगा । काम दादा है और इसी के कारण बड़े-बड़े ऋषियों मुनियों की बड़ी से बड़ी तपस्या भंग हुई है । इसका इतिहास साक्षी है । केन्द्र में सबसे पहले इसी के शोध कार्य पर जोर दिया जाता है ।

भौतिक सुख के लिए

जो जातक भौतिक पदार्थों के इच्छुक हों और पूर्ण एश्वर्य चाहते हों, राजनीति में सफलता पूर्वक प्रवेश पाना चाहते हों, स्त्री सुख तथा समस्त रसों के अभिलाषी हों अथवा गायन वादन, अभिनय, नृत्य की पूर्ण ख्याति की चाह रखतें हों अथवा जिनको पुत्र लाभ न होता हो, वीर्य में कीटाणु न बनते हों, केवल भोग शक्ति हो बीजारोपण शक्ति न हो तो ऐसे जातकों को एक करोड़ मन्त्र निश्चय पूर्वक श्रद्धा युक्त होकर कर या करवा लेने चाहिएं ताकि उपरोक्त सुखों मे व्यवधान उत्पन्न न हो । शुक्र वाणी का स्वामी है । जप होने के बाद वाणी में इतना रस आ जाता है कि गायक उस मधुर शब्द से चलते हुए लोंगो के कदम रोक लेते हैं स्वयं रस में भीग जाते हैं और दूसरों को भिगो देते हैं ।

एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य शुक्र मन्त्र की जाप करके एक वर्ष में एक करोड़ मंत्रों का जाप बड़े आराम से कर सकता है । यदि करोड़ मन्त्र जाप करने को शारीरिक सामर्थ्य न हो तथा करवाने के लिए धन का अभाव हो तो मानव को चार बार में २४-२४ लाख के चार चरण सुविधा अनुसार श्रद्धा पूर्वक जीवन में कर लेने चाहिएं । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है तभी सफलता प्राप्त होगी ।

केन्द्र में वैदिक ब्राहणों द्वारा यह एक करोड़ मन्त्र जाप २१ या उससे कम दिनों में पूर्ण विधि तथा शास्त्रोक्त रीति अनुसार किया जाता है ।

वेदों में शुक्र

शुक्र की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में शुक्र पूजा की जाती है ।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानठँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् अन्नात् परिस्रुतः रसम् ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम् पयः सोमम् प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियम् विपान ठँ शुक्रम् अन्धसऽइन्द्रस्य-इन्द्रियम् इदं पयोममृतम् मधु ॥

शुक्र ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र जप की एक या पांच माला करनी चाहिए । कारण, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केन्द्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण, इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहां शुक्र रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सुफलता प्राप्त की है ।

दण्डी दैत्यगुरुः स्वामी शुक्रः श्वेतश्चतुर्भुजः। वरदोऽभय-हस्तश्च कमण्डलुधरः सदा।

शुक्र बीज मंत्र :

ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

मंत्र सरल भाषा में :

ॐ द्राम् द्रीम् द्रौम् सः शुक्राय नमः

अतः जीवन में हर एक जातक को शुक्र के 1 करोड़ बीज मंत्र अवश्यमेव कर या करवा लेने चाहिएं । ताकि जीवन प्रकाशमय रहे तथा जब तक जिये अपार धन धान्य ऐश्वर्य तथा मन की पूर्ण शान्ति प्राप्त होती रहे । उच्च राज योग तथा वाहन का सुख बना रहे ।

अधिक जानकारी के लिए शुक्र ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें

भगवान शनि

शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ शंनिस्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृघ्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।

चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी ।।

शनि सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

कर्म का यथावत् कारक एवं मारक परम न्यायाधीश अतुलित संपत्ति तथा तप कारक

शनि

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित शनि सम्बन्धी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता शनि के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों से प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र, अंक शास्त्र में शनि का महत्व तथा विश्व सहित भारत में शनि पूजा की परम्परा, आदि की प्रामाणिक जानकारी । सरस सार से भरपूर शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि 'शनि शत्रु नहीं मित्र' पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है जो अत्यन्त लोकप्रिय हुई है और अब उसका द्वितीय संशोधित-परिवर्धित संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है, सभी पत्र-पत्रिकाओं ने इस कृति का सहर्ष अपार स्वागत भी किया है ।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय

1 परम न्यायाधीश शनि
2 शनि सम्बन्धी आख्यान
3 खगोल में शनि का विवरण
4 ज्योतिष शास्त्र में शनि
5 अँक शास्त्र में शनि
6 पुराणों के अनुसार हवन कुण्ड निर्माण विधि
7 जप यज्ञ विधान कहाँ और कैसे
8 क्या तंत्र ताबीज टोटके रत्नादि से ग्रह पीड़ा निवृत्त होना संभव है
9 ग्रह पीड़ा शमन करने में कौन पूर्ण सक्षम है तंत्र अथवा मंत्र
10 क्या कारण है जो चाहते हुए भी विद्यार्थी विद्या नहीं पढ़ पाते?
11 विवाह में विलम्ब और तलाक क्यों?
12 शनि सम्बन्धी अन्य विवरण
13 द्वादश भाव में शनि का फल
14 शनि की साढ़ेसाती
15 शनि परम कल्याण का प्रेरक
16 शनि स्तोत्र एवं मंत्र तथा बीज मंत्र
17 केन्द्र की खोज

शनि

वैदूर्य कांति रमलः शुभदः प्रजानां वाणातसी कुसुम वर्ण विभश्च शरतः ।

अन्यापि वर्ण भुव गच्छति तत्सवर्णाभ सूर्यात्मजः अव्यतीति मुनि प्रवादः ।।

आचार्य वाराह मिहिर

भावार्थः शनि ग्रह वैदूर्यरत्न अथवा बाणफूल या अलसी के फूल जैसे निर्मल रंग से जब प्रकाशित होता है तो उस समय प्रजा के लिए शुभ फल देता है यह अन्य वर्णो को प्रकाश देता हो तो उच्च वर्णो के लोगों का नाश करता है, ऐसा मुनि जन कहते हैं ।

शनि ग्रह के सम्बन्ध में अनेक आख्यान पुराणों में प्राप्त होते हैं । शनि को सूर्य पुत्र माना गया है लेकिन साथ ही पितृ शत्रु भी । शनि ग्रह के सम्बन्ध में अनेक भ्रांतियां हैं और इसीलिए उसे मारक, अशुभ, और दुख कारक माना जाता है । पाश्चात्य ज्योतिषी भी उसे 'इविल फेट ब्रिंगर' अर्थात दुख देने वाला मानते हैं । लेकिन शनि उतना अशुभ और मारक नहीं है जितना उसे समझा जाता है वस्तुतः वह शत्रु नहीं मित्र है । मोक्ष प्रदाता एकमात्र शनि ग्रह है । सत्य तो यह है कि शनि ही सन्तुलन तथा न्यायकर्ता ग्रह है । जो लोग अनुचित विषमता और अस्वाभाविक समता को आश्रय देते हैं, शनि केवल उन्हीं को पीड़ित करता है ।

शनि के सम्बन्ध में हमें पुराणों में अनेक आख्यान मिलते हैं । माता के छल के कारण पिता ने उसे शाप दिया । पिता अर्थात सूर्य ने कहा, 'तू क्रूरतापूर्ण दृष्टि देखने वाला मंदगामी ग्रह हो जाये' । यह भी आख्यान प्राप्त होता है कि शनि के प्रकोप से अपने राज्य को घोर दुर्भिक्ष से बचाने के लिए राजा दशरथ उनसे मुकाबला करने पहुंचे तो उनका पुरुषार्थ देख शनि ने उनसे वरदान मांगने को कहा । दशरथ ने विधिवत स्तुति कर उसे प्रसन्न किया । पद्म पुराण में उस प्रसंग का सविस्तार वर्णन है । ब्रह्मवैवर्त पुराण में शनि ने जगत जननी पार्वती को बताया है कि मैं सौ जन्मों तक जातक की करनी का फल भुगतान करवाता हूँ । एक बार जब विष्णु प्रिया लक्ष्मी ने शनि से पूछा कि तुम क्यों जातकों की धनहानि करते हो । क्यों तुम्हारे प्रभाव से सभी पीड़ित रहते हैं तो शनि का उत्तर था, 'मातेश्वरी, उसमें मेरा कोई दोष नहीं । परमात्मा ने मुझे तीनों लोकों का परम न्यायाधीश घोषित किया है अर्थात दोषी को दण्ड देना मेरा परम कर्तव्य है ।' एक और आख्यान प्राप्त होता है जिसमें बताया गया है कि शनि ने किस प्रकार अगस्त ऋषि की प्रार्थना पर राक्षसों

से उन्हें मुक्ति दिलाई । शिव की अर्द्धांगिनी पार्वती, विक्रमादित्य, राजा हरिश्चन्द्र, नल आदि पर भी शनि के प्रभाव के आख्यान हमें प्राप्त होते है ।

मत्स्य पुराण के अनुसार शनैश्चर की शरीर कांति इंद्र नीलमणि की सी है । वे गिद्ध पर सवार होते हैं और हाथ में धनुष बाण त्रिशूल और वरमुद्रा धारण किये रहते हैं । शनि का कराल विकराल रूप भयावना है । शनि पापियों के संहार के लिए उद्धृत हैं ।

यूरोपीय साहित्य में भी शनि विषयक अनेक आख्यान मिलते हैं । इटली में सातर्न 'सैटर्न-शनि' के अनेक मंदिर हैं । भारत में भी शनि के अनेक मंदिर हैं जैसे शिंगणापुर, वृदावन के कोकिला वन में, ग्वालियर में, दिल्ली में और अनेक नगरों में शनि के मंदिर हैं ।

शनिः खगोलीय विवरण

नवग्रहों के कक्ष क्रम में शनि सूर्य से सर्वाधिक दूर अर्थात ८८ करोड़ ६१ लाख मील दूर स्थित है । पृथ्वी से शनि की दूरी ७१ करोड़ ३१ लाख ४३ हजार मील है । शनि का व्यास ७५,१०० मील है । यह ६ मील प्रति सैकेंड की गति से २१.५ वर्ष में अपनी कक्षा पर सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है । शनि धरातल का तापमान २४० फोरनहीट है । शनि के चारों ओर सात वलय हैं । उसके १५ चंद्रमा हैं जिनमें से प्रत्येक का व्यास पृथ्वी से भी अधिक है ।

ज्योतिष शास्त्र में शनि

फलित ज्योतिष के शास्त्रों में शनि को अनेक नामों से संबोधित किया है यथा मंदगामी सूर्य पुत्र और शनैश्चर ।

शनि के नक्षत्र हैं पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद । यह दो राशियों मकर और कुंभ का स्वामी है । तुला राशि के २० अंश पर शनि परमोच्च तथा मेष राशि के २० अंश पर परम नीच अवस्था में होता है और नीलम शनि का रत्न है । शनि की तीसरी, सातवीं और दसवीं दृष्टि मानी जाती हैं । शनि सूर्य चंद्र, मंगल को शत्रु बुध शुक्र को मित्र तथा बृहस्पति को सम मानता है । शारीरिक रोगों में शनि वायु विकार, कंप, हड्डियों और दंत रोगों का कारक माना जाता हैं ।

द्वादश भावों में शनि

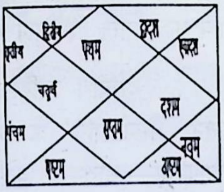

प्रथम भाव - परिवार के लिए शोक, जादू टोने और तांत्रिक विद्याओं में निष्ठावान बनाता है, संपत्ति प्रदाता, कामुकता में वृद्धि

द्वितीय भाव - धन संचय में बाधक, अशांति का कारक

तृतीय भाव - भाईयों से पृथकत्व, वाक पटु

चतुर्थ भाव - आजीवन कष्ट लेकिन तुला, धनु, मकर, कुंभ, मीन का शनि शुभ

पंचम भाव - मंत्र शास्त्र का ज्ञान, संतति में विलंब, नास्तिक वृत्ति

षष्ठ भाव - रोगों का जन्म दाता, शत्रु नाशक

सप्तम भाव - दुखी वैवाहिक जीवन, क्रोधी, कामी

अष्टम भाव - सदैव अर्थाभाव, अविवेकी

नवम भाव - भाग्य उदय में विलंब, जड़ एवं कुटिल बुद्धि

दशम भाव - उन्नति में विलंब, न्यायप्रिय, चतुर, धनदौलत

एकादश भाव - शुभ फल, हर प्रकार का लाभ, कुशल प्रशासक, सम्मानित

द्वादश भाव - पतन का कारण, कटु स्वभाव, विदेश गमन प्रिय

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि शनि चौथे, छठे, आठवें, बारहवें भाव में किसी भी राशि का विशेपकर नीच का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नही है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले शनि के वीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए । ताकि शनि प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो । याद रखें अस्त शनि भयंकर पीड़ा जनक होता है चाहे वह किसी भी भाव का क्यों न हो ।

* * * * * * * * * *

अंक शास्त्र में शनि तथा शनि प्रधान जातक

ज्योतिषीय विद्याओं में अंक विद्या भी एक महत्वपूर्ण विद्या है जिसके द्वारा हम थोड़े समय में ही प्रश्न कर्ता को स्पष्ट उतर दे सकते हैं । अंक विद्या में 8 का अंक शनि को प्राप्त हुआ है । शनि परम न्यायाधीश और परम तपस्वी ग्रह है । उनकी विशेषता पुराणों में विस्तृत प्रतिपादित है । आपका जिस तारीख को जन्म हुआ है गणना करिये और योग 8 आये तो आपका अंकाधिपति शनैश्चर होगा । जैसे 8, 17, 26 तारीख आदि । यथा 17=1+7=8/26 =2+6=8 ।

अंक 8 वाले जातक धीरे-धीरे उन्नति करते हैं और सफलता विलम्ब से प्राप्त होती है । परिश्रम बहुत अधिक करते हैं लेकिन पारिश्रमिक उतना प्राप्त नहीं हो पाता है । वह वकील या न्यायाधीश तक बन जाते हैं और लोहा आदि के व्यापार में लाभ प्राप्त करते हैं । मस्तिष्क कुछ अशान्त रहता है और वह परिवार से भी अलग हो जाते हैं तथा दाम्पत्य जीवन में कटुता आ जाती है । अतः अंक आठ वाले व्यक्तियों को प्रथम शनि के विधिवत् बीज मंत्र का जाप करना चाहिए तदोपरान्त साढ़े पाँच रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए । ऐसा करने से जातक हर क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करता हुआ अपना लक्ष्य शीघ्र प्राप्त कर सकेगा और तप भी कर सकेगा जिसके फलस्वरूप जातक का इहलोक तथा परलोक सार्थक होगा ।

शनि प्रधान जातक तपस्वी एवं परोपकारी होता है । वह न्यायवान, विचारवान, तथा विद्वान होता है, बुद्धि कुशाग्र होती है, शान्त स्वभाव होता है और अनेक वस्तुओं का व्यापार करता है । लेकिन लोहा सम्बन्धी व्यापार से उसे विशेष लाभ होता है । उनकी अन्तर भावना को कोई पहचान नहीं पाता और वह मानव परीक्षक होता है । वह कृपण आलसी, रोगी, तर्क-वितर्क करने वाले तथा मधुर भाषी होते हैं । दाम्पत्य जीवन समान्य होता है । अधिक परिश्रम करने के बाद भी धन धान्य कम ही होता है वह न ही समय से सोते हैं और न ही समय से जागते हैं, और चिन्ता ग्रस्त हो जाते हैं । वह लोहा स्टील, मशीनरी, ठेका, बीमा, पुराने वस्तु का व्यापार या राज कार्यो में काम करते हैं ।

शनि प्रधान जातक में कुछ कमियाँ भी हैं, जैसे वह नये कपड़े पहनेंगे तो जूते पुराने, शंका बहुत करते हैं, हठ करते हैं और प्राचीन विचार वाले होते हैं तथा अपनी विपत्ति सभी के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं । वह बन्धुओं से विरोध, धनहीन, रोगी, भाग्यहीन, पिता के धन से वंचित एवं अनाचार में अपव्यय करते हैं । मित्रों से विरोध रहता है तथा माँ के सुख से भी जातक वंचित रहता है ।

शनि सम्बन्धी अन्य विवरण

यह सन्तुलन तथा न्याय का ग्रह है तथा जो लोग अनुचित विषमता अथवा अस्वभाविक समता को आश्रय देते हैं, शनि उन्हें पीड़ित करता है । शनि के कुपित होने से पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम कहीं अन्याय और अनावश्यक विषमता का साथ तो नहीं दे रहे हैं । यह तपकारक ग्रह है अर्थात् तप को परिपक्व करता है । यह गहरे नीले रंग का होता है और इससे गहरे नीले रंग की किरणें निरन्तर पृथ्वी पर पड़ती रहती हैं । शरीर में इसका स्थान उदर और जंघाओं में है । सूर्य पुत्र शनि दुखदायक, शूद्रवर्ण, तामस प्रकृति, वात प्रकृति प्रधान तथा भाग्य हीन नीरस वस्तुओं पर अधिकार रखता है ।

शनि सीमा ग्रह कहलाता है क्योंकि जहां पर सूर्य का प्रभाव समाप्त होता है वहीं से शनि का प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है । जगत में सच्चे झूठे का भेद समझना शनि का विशेष गुण है । यह कष्ट कारक तथा दुर्दैव लाने वाला ग्रह है । विपत्ति, कष्ट, निर्धनता देने के साथ-साथ बहुत बड़ा गुरु तथा शिक्षक भी है । जब तक शनि की सीमा से प्राणी बाहर नहीं होता, संसार में उन्नति सम्भव नहीं है । शनि जब जातक को पीड़ित करता है तो चारों तरफ तबाही मच जाती है और जातक को कोई रास्ता चलने हेतु नहीं मिलता । सूक्ष्मतः करोड़पति को खाकपति और खाकपति को करोड़पति बना देता है यह शनि का ही चमत्कार है ।

अच्छे तथा शुभ कर्मों वाले जातकों का उच्च होकर उनके भाग्य को बढ़ाएगा । धन संपत्ति का सदुपयोग कराएगा, गृहस्थ जीवन सुचारु रूप से चलेगा तथा धर्म पर चलने की प्रेरणा देकर तपस्या को परिपक्व करेगा । यदि कर्म निन्दनीय तथा क्रूर हैं तो नीच का होकर भाग्य का हरण कर लेगा, महा कंगाली ला देगा, परन्तु मरने नहीं देगा, शनि के प्रतिकूल होने पर जातक का विवेक समाप्त हो जाता है, निर्णय शक्ति काम नहीं करती । प्रयास करने पर भी सभी कार्यों में असफलता ही हाथ लगती है । स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है । नौकरी करने वालों का अधिकारियों व साथियों आदि से झगड़े, व्यापारियों को लम्बी आर्थिक हानि होने लगती है । विद्यार्थियों का पढ़ने में मन नहीं लगता है । बार-बार अनुत्तीर्ण होते रहते हैं । जातक चाहने पर भी शुभ कार्य नहीं कर सकता है । उन्माद, वातरोग, भगन्दर, गठिया, स्नायुरोग, क्षयरोग, कैंसर, अल्सर आदि भयंकर रोग देकर उन दुष्ट कर्मों का भुगतान कराकर शुद्ध करेगा । जैसा कर आये हैं, वैसा ही पूरा-२ न्याय करेगा ।

शनि की मणि नीलम है । प्राणी मात्र के शरीर में लोहे की मात्रा सब धातुओं से अधिक होती है और इसकी थोड़ी सी कमी मनुष्य का चलना फिरना तक दुर्गम कर देती है और अनेक रोगों की उत्पत्ति का कारण बन जाती है । इसलिए इसके (लौह) कम होने से

आए रोगों की औषधि खाने से भी विशेष लाभ न हो तो जातक को समझ लेना चाहिए कि शनि खराब चल रहा है ।

शनि मकर तथा कुम्भ राशि का स्वामी है । इसका उच्च स्थान तुला राशि तथा नीच स्थान मेष राशि है । जहाँ धातुओं में शनि की धातु लोहा है तो अनाजों में चना और दालों में उड़द की दाल है ।

भारत में स्थित तीन शनि चमत्कारिक सिद्ध पीठ

प्रथम चमत्कारिक आलौकिक स्वयं प्रकट - महाराष्ट्र के शिंगणापुर गांव में शनि महाराज का अद्भुत प्राकट्य तथा चमत्कार :- शिंगणापुर में स्वयंभू शनि देव का अद्भुत चमत्कार है कि वहां घरों में कोई ताला नहीं लगाता । आज तक के इतिहास में किसी चोर ने वहां जाकर चोरी करने का प्रयास नहीं किया यदि प्रयास किया भी तो वह तुरन्त पीड़ित हुआ । दर्शन, पूजा तथा तेल का स्नान शनिदेव को करवाने से तुरन्त शनि पीड़ाओं से मुक्ति प्राप्त होती है यह अकाट्य सत्य है । पूर्ण जानकारी के लिए आप **"शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि"** के पेज न० 164 से 168 में पढ़ सकते हैं ।

द्वितीय सिद्ध पीठ - ग्वालियर स्थित शनिश्चरा मन्दिर :- भगवान हनुमान जी के द्वारा लंका से भारतवर्ष में फेंका हुआ पहाड़ी पर स्थित आलौकिक सिद्ध पीठ है । शनिश्चरी अमावस्या को यहां पर मेला लगता है और जातक शनि पर तेल चढ़ा कर गले लगकर मिलते हैं और पहने हुए कपड़े तथा जुते यानि समस्त दरिद्रताओं और कलेशों को छोड़कर नये वस्त्र पहन कर अपने-अपने गनतत्व स्थानों को चले जाते हैं । इस पीठ की पूजा करने का भी तुरन्त फल प्राप्त होता है । पूर्ण जानकारी के लिए उपरोक्त पुस्तक के पेज 162-163 का अवश्यमेव अवलोकन, करें तथा तीर्थ का आनन्द लें ।

तृतीया सिद्ध पीठ - कौकिला वन में स्थित सिद्ध शनि मन्दिर :- यह सिद्ध पीठ कोसी से छः किलो मीटर दूर और नन्द गांव से करीब सटा हुआ कौकिला वन है । इस वन में इसी द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण जो सोलह कला सम्पूर्ण ईश्वर हैं शनि को दर्शन दिया और आशिर्वाद दिया कि यह वन मेरा है इस वन की जो परिक्रमा करेगा और शनि की अर्चना पूजा करेगा वह मेरी कृपा से शनि कृपा प्राप्त कर सकेगा तथा उसे शनि कृत समस्त उपद्रव जीवन में नहीं व्यापेंगे । यहां पर हर शनिवार को मेला लगता है जातक अपने-अपने श्रद्धा अनुसार कोई दंडवत परिक्रमा या पैदल परिक्रमा करते हुऐ । शनि का महाराजा दशरथ कृत सिद्ध शनि स्तोत्र पाठ या शनि के बीज मंत्र का जप करते हुए परिक्रमा करते हैं उनको तुरन्त फल की प्राप्ति हो जाती है । विस्तार से इस कथा को आप उपरोक्त **"शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि"** के पेज न० 159-161 में पढ़ सकते हैं । तथा परिक्रमा कर ग्रह पीड़ा से निवृत्त हो सकते हैं ।

शनि की साढ़ेसाती

लग्न से साढेसाती

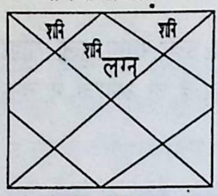

चन्द्र से साढेसाती

सूर्य से साढेसाती

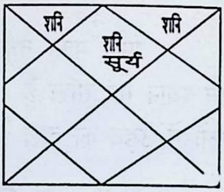

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि की साढ़ेसाती की मान्यताएं तीन प्रकार की होती हैं । 1. लग्न से, 2. चन्द्र से, 3. सूर्य से । उत्तर भारत में चंद्र से शनि की साढ़ेसाती की गणना का विधान है । अर्थात् चंद्रमा जिस राशि में होता है उसमें शनि के आने से साढ़ेसाती लगती है और वह एक राशि आगे और एक राशि पीछे भी प्रभाव डालता है ।

साढ़ेसाती के दौरान शनि जातक को नाना प्रकार के कष्ट देता है । इसकी समाप्ति पर जातक को शुभ फल भी प्रदान करता है । शनि की साढ़ेसाती से ग्रस्त अनेक लोगों के आख्यान प्राप्त हैं । जैसे विक्रमादित्य, राजा नल, हरिश्चंद्र आदि । साढ़ेसाती के दौरान शनि संत महात्माओं को भी प्रताड़ित करता है ।

याद रखें हर प्राणी को तीस वर्ष में एक साढ़ेसाती अवश्य आती है । यदि यह साढ़ेसाती धनु, मीन, मकर, कुम्भ राशि की होती है तो कम पीड़ाजनक होती है । **यदि यह साढ़ेसाती चार, छः, आठ, बारह भावों की होगी तो अवश्यमेव जातक को प्रताड़ित करेगी और तीनों सुखों में यानि (शारीरिक, मानसिक, आर्थिक) में पीड़ाजनक होगी।** इन साढ़ेसातीयों में कभी नीलम नहीं धारण करना चाहिए यदि किया गया तो कष्टों में वृद्धि होगी । नया उद्योग या कोई नया कार्य भूल कर भी साढ़ेसाती में आरम्भ नहीं करना चाहिए । आरम्भ करने से पहले ज्योर्तिविदों से अपने जन्मांक का अवश्यमेव अवलोकन करवा लेना चाहिए ताकि मूल धन नष्ट न हो ।

केन्द्र ने विगत 30 वर्षों में बड़े बड़े उद्योगपतियों के उद्योग शनि की साढ़ेसाती में बन्द होते देखे हैं और उनके लाख चाहने के बावजूद भी उनके उद्योग नहीं पनप पाए । अतः यह मानना ही पड़ेगा कि जब जातक को चार, छः, आठ, बारह भावों की साढ़ेसाती चलेगी तो उसका मूल धन नष्ट होना निश्चित ही है इसमें कोई संशय नहीं है यदि सावधानी बरती गई तो साढ़ेसाती से रक्षा अवश्य होगी ।

यदि सावधानी न बरती गई तो पछतावा मात्र शेष रह जायेगा और गया हुआ धन वापिस नहीं लौटेगा । अतः प्रत्येक प्राणीमात्र को साढ़ेसाती लगने से पहले ही जप, तप, यज्ञ तथा ग्यारह नारियल वाला प्रयोग जो पेज न० 211 पर है कर लेना चाहिए ताकि साढ़ेसाती के प्रभाव से बचा जा सके ।

परम कल्याण का प्रेरक शनि

शनि परम न्यायाधीश, कृपालु और जीव का परम हितैषी ग्रह है । ईश्वर परायण प्राणी जो जंन्म जन्मान्तर तपस्या करते हैं, तपस्या सफल होने के समय अविद्या, माया से सम्मोहित होकर पतित हो जाते हैं अर्थात तप पूर्ण नहीं कर पाते, उन तप मूर्तियों की तपस्या को सफल करने के लिए शनि परम कृपालु होकर भावी जन्मों में पुनः तप करने की प्रेरणा देता है ।

द्रेष्काण कुण्डली में जब शनि को चन्द्रमा या चन्द्रमा को शनि देखता है तो उच्च कोटि का संत बना देता है और पारिवारिक मोह से विरक्त महान वैराग्य प्रदान करता है । शनि पूर्वकृत तप को सफल करने के लिए उसकी समस्त मनोवृत्तियों को परमात्मा में लगाने के लिए उसको अन्तरहित भाव देकर उच्च स्तरीय महात्मा बना देता है ताकि इस जन्म में उसकी तपस्या सफल हो जाए और वह परमानंद का आनंद ले सके अर्थात प्रभु दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर सके । यह चन्द्रमा और शनि की ही उपासना से सुलभ हो पाता है ।

शनि तप करने की प्रेरणा देता है और चन्द्रमा उसके मन को परमात्मा में स्थित करता है । कारण कि नवग्रहों में शनि ही जातक के ज्ञान चक्षु खोलता है ।

ज्ञान चक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मज सूनवे । तुष्टो ददासि वैराज्यं रूष्टो हरसि तत्क्षणात् ।

(शनि स्तोत्र)

तप से असंभव को संभव किया जा सकता है । ज्ञान, धन, कीर्ति, नेत्रबल, मनोबल, स्वर्ग, मुक्ति, सुखशान्ति यह सब कुछ तप की अग्नि में तपाने से प्राप्त होता है । जब तक अग्नि जलती है उसमें उष्मा अर्थात गर्मी बनी रहती है । प्राणीमात्र को भी जीवन के अंत तक अपनी शक्ति को स्थिर रखना चाहिए । जीवन में शिथिलता आना असफलता है । सफलता हेतु गतिशीलता आवश्यक है अतः जीवन में तप करते रहना चाहिए । मनुष्य जीवन में सुख-शान्ति और समृद्धि की वृद्धि तथा जीवन में आए क्लेश, दुख, भय, कलह, द्वेष, आदि से त्राण पाने के लिए दान, मन्त्रों का जप, तप उपासना आदि बहुत ही आवश्यक है । इस कारण जातक चाहे वह सिद्ध ही क्यों न हो ग्रह चाल को देखकर दान, जप, आदि द्वारा ग्रहों का अनुग्रह प्राप्त कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करें । अर्थात ग्रहों का शोध अवश्य करें ।

जिस पर यह ग्रह परम कृपालु होता है उसको भी इसी तरह तपाता है । पद्मपुराण में राजा दशरथ ने कहा है शनि ने तप करने के लिए जातक को जंगल पहुंचा दिया । यदि वह तप में ही रत रहता है 'माया के लपेट में नहीं आता है' तप छोड़कर

अन्य कार्य नहीं करता, तो उसके तप को शनि पूर्ण कर देता है और इस जन्म में परमात्मा के दर्शन भी करा देता है । यदि तप न करके कुछ और ही करने लगे यथा 'आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास' माया के वशीभूत होकर कुछ और ही करने लगे । तो शनि देव उन पर कुपित हो जाते हैं ।

विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत, इस त्रिगुणमयी माया को जीतने हेतु तथा कंचन एवं कामिनी के परित्याग हेतु महान आत्माओं को बारह चौदह घंटे नित्य प्रति उपासना आराधना प्रभु चिन्तन करना चाहिए । अंतः करण से पूछना चाहिए कि जिसके लिए हमने संसार का त्याग किया सब कुछ त्यागा संकल्प करके चले कि हम तुझे ध्यायेंगे फिर भजन क्यों नहीं हो रहा है ।

यदि चित्त को एकाग्र करके शान्तिपूर्वक प्रश्न करेंगे तो निश्चय ही उतर मिलेगा मन को एकाग्र कर भजन पूजन में लगाने एवं जप द्वारा इच्छित फल प्राप्त करने का उपाय है । जातक नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्रों का सर्वप्रथम जाप कर या करवा लें ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

कासी में घनघोर तपस्या कर शनि देव ने ग्रहत्व प्राप्त किया

स्कन्दपुराण के काशी खण्डानुसार

छाया सुत श्री शनिदेव ने अपने पिता भगवान सूर्य देव से प्रश्न किया कि हे पिता ! मैं ऐसा पद प्राप्त करना चाहता हूँ, जिसको आज तक किसी ने प्राप्त नहीं किया । हे पिता ! आपके मंडल से मेरा मंडल सात गुणा बड़ा हो, आपसे मुझे सात गुणा ज्यादा शक्ति प्राप्त हो, मेरे वेग का कोई सामना न कर पाऐ चाहे वह देव, असुर, दानव, या सिद्ध साधक ही क्यों न हो । आपके लोक से मेरा लोक सात गुणा ऊंचा हो ।

दूसरा वरदान मैं यह प्राप्त करना चाहता हूँ कि मुझे मेरे अराध्य देव भवगान श्री कृष्ण के प्रत्यक्ष दर्शन हों तथा मैं भक्ति, ज्ञान विज्ञान से पूर्ण हो सकूँ । शनि देव की यह वात सुनकर भगवान सूर्य प्रसन्न तथा गद्‌गद् हो गऐ और कहा कि बेटा मैं भी यही चाहता हूँ कि तू मेरे से सात गुणा ज्यादा शक्तिशाली हो । मैं भी तेरे प्रभाव को सहन न कर सकूँ। इसके लिए तूझे तप करना होगा । तप करने हेतू तू काशी चला जा, वहां जाकर भगवान शंकर का घनघोर तप कर और शिवलिंग की स्थापना कर तथा भगवान शंकर से मन वांछित वरों को प्राप्त कर । शनि देव ने पिता की आज्ञा अनुसार वैसा ही किया और भगवान शंकर से वर प्राप्त कर ग्रहों में सर्वोपरि पद प्राप्त किया । पूर्ण जानकारी के लिए आप **"शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि"** के पेज 46 से 49 का अवश्यमेव अवलोकन करें।

अथ शनि मंत्र

शनि ग्रह से सम्बन्धित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र, मंत्र तथा गायत्री आदि पाठकों की सुविधा के लिए यहां दिये जा रहे हैं । जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे । नित्य 108 पाठ करने से चमत्कारी लाभ प्राप्त होगा ।

विनियोग :- शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

नीचे कोष्टकों में लिखे गये अंगों को उंगलियों से छुएं ।

अथ देहांगन्यास :- शन्नो शिरसि (सिर) । देवीः ललाटे (माथा) । अभिष्टय मुखे (मुख) । आपो कण्ठे (कण्ठ) । भवन्तु हृदये (हृदय) । पीतये नाभौ (नाभि) शं कट्याम् (कमर) । योः ऊर्वोः (छाती) । अभि जान्वोः (घुटने) । स्रवन्तु गुल्फयोः (गुल्फ) । नः पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- शन्नो देवीः अंगुष्ठाभ्यां नमः । अभिष्टये तर्ज्जनीभ्यां नमः। आपो भवन्तु मध्यमाभ्यां नमः । पीतये अनामिकाभ्यां नमः । शंय्योरभि कनिष्ठिकाभ्यां नमः । स्रवन्तु नः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- शन्नो देवीः हृदयाय नमः । अभिष्टये शिरसे स्वाहा । आपो भवन्तु शिखायै वषट् । पीतये कवचाय हुँ (दोनो कंधे) शंय्योरभि नेत्रत्रयाय वौषट । स्रवन्तु नः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् :- नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् । चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

शनिगायत्री :- ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

वेदमंत्र :- ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः । ॐ स्वः भुवः भूः प्रौं प्रीं प्राँ ॐ शनैश्चराय नमः ।

जपमंत्र :- ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः नित्य जप 23000 प्रतिदिन ।

शनि स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवं-सन्धिच्छेद सहित

नमः, कृष्णाय, नीलाय्, शिति कण्ठ निभाय् च ।
नमः, कालाग्नि, रूपाय्, कृत-अन्ताय् च वै नमः ।।
नमः, निर्मांस देहाय्, दीर्घ, श्मश्रु, जटाय च ।
नमः, विशाल नेत्राय्, शुष्क, उदर, भयाकृते ।।
नमः पुष्कल गात्राय्, स्थूल रोम्णे अथ वै नमः ।
नमः, दीर्घाय्, शुष्काय्, काल दंष्ट्र, नमः अस्तु ते ।।
नमस्ते कोटराक्षाय्, दुर्निरीक्ष्याय् वै नमः ।
नमः, घोराय्, रौद्राय्, भीषणाय् कपालिने ।।
नमस्ते सर्वभक्षाय् वलीमुख नमः अस्तु ते ।
सूर्य पुत्र, नमस्ते, अस्तु, भास्करे, अभयदाय् च ।।
अधो दृष्टे ! नमस्ते अस्तु संवर्तक नमः अस्तु ते ।
नमो मन्द गते तुभ्यम्, निः त्रिंशाय् नमः अस्तु ते ।।
तपसा, दग्ध देहाय्, नित्यं योग रताय् च ।
नमः नित्यं, क्षुधार्ताय्, अतृप्ताय् च वै नमः ।।
ज्ञान चक्षुः नमस्ते अस्तु, कश्यप-आत्मज सूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं, रूष्टो हरसि तत् क्षणात् ।।
देवासुर मनुष्याः च सिद्ध विद्याधरो-रगाः ।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशम् यान्ति समूलतः ।।
प्रसादं कुरू मे देव वराहो-अहम्-उपागतः ।
एवम् स्तुतः तदा सौरिः ग्रहराजः महाबलः ।।

(पद्म पुराण)

नोट :- पद्मपुराणानुसार यह महाराजा दशरथ कृत सिद्ध शनि स्तोत्र है । इसका नित्य 108 पाठ करने से शनि संबन्धी सभी पीड़ायें समाप्त हो जाती हैं तथा पाठ कर्ता धन धान्य समृद्धि, वैभव से पूर्ण हो जाता है तथा उसके सारे बिगड़े कार्य स्वतः बनने लग जाते हैं ।

शनि सम्बन्धित रोग, रत्न, जड़ीबूटी, दान व्यापार एवं नौकरी

शनि ग्रह से सम्बन्धित रोग, उसके उपशमन हेतु धारण करने योग्य रत्न, उपरत्न रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी-बूटियों को धारण करने की विधि, ग्रह शान्ति के लिए दान तथा शनि ग्रह से सम्बन्धित व्यापार और नौकरी आदि का विवरण इस प्रकार है।

रोग :- उन्माद, वात रोग, भगन्दर, गठिया, स्नायु रोग, टी० बी०, कैंसर, अल्सर।

रत्न/उपरत्न :- नीलम, नीलिमा, जमुनिया, नीला कटहला । सवा पांच रत्ती वजन में अच्छा रत्न शनिवार को पुष्य नक्षत्र में धारण करना चाहिए । इसे धारण करते ही 40 प्रतिशत राहत तुरन्त हो जाती है ।

जड़ी बूटियां :- बिच्छू बूटी की जड़ अथवा शमी (छोकर, जड़ी) की जड़ शनिवार को पुष्य नक्षत्र में काले धागे में दांयें हाथ में धारण करनी चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव कम होना आरम्भ हो जाता है ।

व्यापार/नौकरी :- काली वस्तुएं, लोहा ऊन, तेल, गैस, कोयले, चमड़े, हाथी दांत, मशीनों के पार्टस, पैट्रोल, पत्थरों, तिल और रंग का व्यापार । चतुर्थ श्रेणी की नौकरी, ड्राईवर, समाज कल्याण विभाग की नौकरी, राजदूत पद आदि ।

दान :- पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों के काल में स्वयं के वजन के बराबर काले चने, काले कपड़े, जामुन फल, काले उड़द, काली गाय, गोमेद, काले जूते, तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, कस्तूरी, सुवर्ण, दान करें ।

दानोपचार विधि :- जिस जातक ने जिस ग्रह का दान करना हो उस ग्रह के उक्त नक्षत्रों को पंचांग में भली भांति देखें कि नक्षत्र कब तक है। या किसी ज्योतिषी से पूछें उस दिन नक्षत्र के समय के अन्दर एक सुयोग्य ब्राह्मण को घर में बुलायें । चरण पखारकर फिर आसन दें ओंर भोजन करायें तथा भोजनपरान्त दक्षिणा अवश्य ही दें। फिर ब्राह्मण के हाथ में मोली (कलावा) बांधे और मस्तिष्क में तिलक लगायें । ब्राह्मण भी यजमान को मोली (कलावा) बांधे और तिलक लगायें। यजमान के हाथ में दान देने वाली समस्त वस्तुयें एवं दान वाले अन्न के भी कुछ दाने तथा दक्षिणा अक्षत् पुष्प जल लें और ब्राह्मण संकल्प पढ़ें और कहें कि ग्रह पीड़ा निवारणार्थ ग्रह कृपा पूर्णरूपेण प्राप्त्यर्थ अहं तुला दानं-ब्राह्मण का नाम गोत्र बुलवाकर अन्न के ऊपर 3 बार घुमाकर ब्राह्मण का हाथ अन्न के ऊपर रखवाकर ब्राह्मण के हाथों में दान की सतस्त सामग्री छोड़ दें। इसके बाद ब्राह्मण के चरणों में दक्षिणा रखकर सादर विदा करें। जब ग्रह चारों तरफ से जातक को घेर लें कोई न सूझे किमकर्तव्यबिमूढ़ हो जायें कोई भी मदद करने को तैयार ना हो और मन्त्र जाप करने की भी इच्छायें समाप्त हो गयी हों। उस समय दान करने से तुरन्त राहत मिलनी आरम्भ हो जाती है। सब से बड़ा लाभ यह होता है कि जातक मन्त्र का जाप करने लगता है और मन्त्र का जाप करते ही ग्रह अनुकूल होने लगते हैं। जातक की स्थिति में सुधार आने लगता है फिर से नव जीवन जीने की शक्ति आ जाती है।

शनि क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या शनि खाली बैठा है ?, क्या शनि के पास कोई काम नहीं है ?, क्या इसकी आप से शत्रुता है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य ।

आज के इस भीषण व्यस्त समय में प्राणी भौतिक सुखों की लालसा में तीव्र गति से निरन्तर दौड़ता जा रहा है और उसी गति से शान्ति भी उससे कई कोसों दूर चली जा रही है । लेकिन यह ध्यान रखें कि भौतिक सुखों से कष्टों और अशान्ति की ही प्राप्ति होती है परन्तु शान्ति आत्मिक सुख की उसे अनुभूति तक नहीं होती है ।

पुस्तक के बहुत से संदर्भों में हमने इसका उल्लेख अलग-अलग शब्दों में पृथक-पृथक रूप से कर जातकों को समझाने के उद्देश्य से भरसक प्रयास किया है परन्तु इस लेख में सरलात्मक रीति से थोड़े शब्दों में जनता की समस्त भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास मात्र है ।

पिछले संदर्भों में हम यह उल्लेख कर चुके हैं कि शनि ही तप करना सिखाता है । शनि जातक को ज्ञान, विज्ञान से परिपूर्ण करता है । याद रखें शनि परम न्यायाधीश है लेकिन जातक जब-जब क्रोध, लोभ, मोह के वशीभूत होकर अपना संतुलन बिगाड़ लेता है और जानते हुए अत्याचार, अनाचार, पापाचार, व्यभिचार को आश्रय देता है और अंधेरे में छुपकर बिना किसी को बताए दुष्कर्म करता है, यह समझकर कि कुकृत्य करते हुए मुझे कौन देख रहा है और जातक उपरोक्त कार्यों को धड़ल्ले से कर परम प्रसन्न होता है । अहंकार के वशीभूत होकर अपने को सर्वस्व मान बैठता है अर्थात ईश्वर को नकारता हुआ अपने को ईश्वर तक मान बैठता है । शास्त्रों की आज्ञा को नकारता हुआ मर्यादाओं का उल्लंघन कर अपनी ही चलाता है तो निश्चय ही वो यह समझ ले कि वो दण्ड का पात्र है ।

याद रखें शनि की बड़ी सूक्ष्म दिव्य दृष्टि है, कर्म के फल का प्रदाता है तथा परमात्मा की आज्ञा से जिसने जो कर्म किया है वो उसका यथावत् भुगतान कराते हैं । जब तक कर्म का भुगतान नहीं होता तब तक शनि उसका पीछा नहीं छोड़ता । भगवान शनि देव परमपिता आनन्द कन्द श्री कृष्ण चन्द के परम भक्त हैं और श्री कृष्ण की आज्ञा से ही प्राणी मात्र के कर्म का भुगतान निरन्तर कराते रहते हैं ।

शनि राखै संसार में, हर प्राणी की खैर । न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर ॥

कामदेव तथा कलियुग की समीक्षा

इस ब्रह्मण्ड में सृष्टि के निर्माण कर्ता भगवान ब्रह्मा और सृष्टि के संहारकर्ता भगवान शंकर पर कामदेव ने अपना प्रभाव दिखाया । दोनों कामदेव से विचलित हुए । ऋषि नारद जो भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं वो भी कामदेव से पीड़ित हुए और माया के वशीभूत होकर परमात्मा को भी शाप दे डाला । अन्य ऋषिगण भी कामदेव की चपेट में आये । विश्वामित्र जिन्होंने गायत्री को प्रकट कर गायत्री कृपा प्राप्त की ऐसे ऋषि पर भी कामद्देव ने हमला किया और इतना प्रभाव किया परिणाम स्वरूप शकुन्तला का जन्म हुआ । ऋषि पाराशर महान तपस्वी ऋषियों में अग्रगण्य अध्यात्म, विज्ञानवेत्ता भी कामदेव से पीड़ित हुए और व्यास जी का जन्म हुआ ।

कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे ऋषि, महर्षि, महान योगी, तपस्वी थे लेकिन काम पर विजय वो भी नहीं प्राप्त कर सके । काम के वशीभूत होकर गिरे लेकिन उन्होंने पुनः तपकर अपने पाप का प्रायश्चित किया जिसके कारण इनकी कीर्ति अमर रही और उसी के प्रभाव के अनुसार संसार उन्हें आदर की दृष्टि से देखता है और पूजता है । गोस्वामी जी ने रामायण में कहा है--

अति विचित्र रधुपति कर माया । छूटहिं राम करहिं जो दाया ।।
शिव चतुरानन देख डराहीं । अपर जीव के लेखे माहीं ।।
व्यापि रहे संसार महुँ, माया करक प्रचंड ।
सेनापति कामदि भट, दंभ कपट पाखंड ।।
सो दासी रधुवीर कै, समझें मिथ्या सौपि ।
छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहऊँ पद रोपि ।।

यह कलियुग है और कलियुग मल से परिपूर्ण है । महर्षि भृगु की वाणी के अनुसार कलियुग वायु में मिश्रित हो जाता है और वायु द्वारा कलियुग भक्त, विरक्त, सन्यासी बुद्धिजीवी के मस्तक को छूता है तो उनकी बुद्धि में विवाद उत्पन्न करता है और उसके प्रभाव से वो अपने श्रेय साधन से गिर जाते हैं तथा बुद्धि मलीन हो जाती है । केवल जिनको ईश्वर का ही सहारा है ऐसे भक्तगण कलि ग्रास नहीं बनते हैं ।

उपरोक्त को लिखने का मुख्य उद्‌देश्य यही है कि इस कामदेव ने देवाधि देव तक को नहीं छोड़ा तो इस भयंकर कलियुग में हमारा क्या हाल होगा, हम कब माया की चपेट में आ जाएंगे कुछ पता नहीं ।

याद रखें, जन्म जन्मान्तर की तपस्या को पूर्ण करने के लिए शनि महात्मा बनाता है । यदि जरा सी भी असावधानी बरती और शास्त्र आज्ञा का उल्लंघन किया और मनमानी कर बैठे तथा श्रेय साधन से गिर गए तो प्रायश्चित रूप में जन्म पर जन्म लेने पड़ेंगे और परमात्मा का दिव्य रस पान नहीं हो सकेगा । कबीरदास जी ने इसका विश्लेषण सुन्दर शब्दों में किया है ।

साधु कहावन कठिन है जैसे पेड़ खजूर ।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकनाचूर ।।

गोस्वामीं जी ने भी मानस में कहा है नारी के नेत्रों से किसका जिगर भेदन नहीं हुआ है । उदाहरण मिलता है केवल हनुमान जी, उन्हें नारी नयन सर नहीं लगा अर्थात् हनुमान जी को काम, क्रोध, मोह, अपना कोई प्रभाव नहीं दिखा सका और माया भी नहीं व्यापी । इसका मुख्य कारण यही था कि हनुमान जी ने अपनी सत्ता को सत्ता माना ही नहीं। उन्होंने भगवान राम को ही सब कुछ माना । इसलिए ये भक्तों में अग्रगण्य रहे और माया से विचलित नहीं हुए ।

है परमवीर बलवान मदन, इससे सब देव ऋषि हारे ।
तब मानव की क्या गिनती है, सोचो समझो दुनिया वारे ।।
कलियुग ने ग्रसे सब धर्म कर्म, पाखण्ड दम्भ प्रचण्ड किया ।
माया मोह का पास डाल, मानव जीवन पथ भ्रष्ट किया ।।
कलि मदन ग्रास नहीं हो सकते, हरिजन यदि हरि को सुमिरोगे ।
तब होगा सफल मानव जीवन, हरि हृदय में जाय समाओगे ।।

यदि आप संत महात्मा है

जन्म-जन्मांतर, युग-युगान्तर, कल्प-कलपान्तर की अधूरी तपस्या को पूर्ण करने हेतु तप संस्कारों के प्रभाव से ही इस जन्म में भी पुनः परमात्मा की कृपा से ही जातक अध्यात्म मार्ग का चयन करता है और तपरत हो अर्थात् सन्यास आश्रम ग्रहण कर मात्र प्रभु प्राप्ति ध्येय ही शेष रहता है । समस्त भोग, विलास, ऐश्वर्य भरी भौतिक सुखों को तिलांजलि देकर भगवे कपड़े पहिन संसार से विरक्त हो जाता है और जंगलों में जाकर तप के प्रभाव से परमात्मा को प्राप्त करता है । शनिदेव ऐसे जातक को देखकर परम प्रसन्न हो तप पूर्ण करने में सहायक होता है और जातक के ज्ञान चक्षु खोल देता है । जिससे जातक निर्विघ्न अपना तप पूर्ण कर आवागमन से रहित हो प्रभु ज्योति में समाहित हो जाता है ।

लेकिन महात्मा बनकर तप को न कर कुछ और ही करने लगे । धर्म की ओढ़नी ओढ़कर धर्म की आड़ में अनाचार, अत्याचार, व्यभिचार, अनाचार आदि करने लगे, जनता जनार्दन से विश्वासघात किया, श्रद्धावान स्त्रियों को वाकपटुता द्वारा अथवा कोई प्रलोभन देकर वशीभूत कर काम पिपासा शान्त करने लगे, तो याद रखें आप मानव को नजरअन्दाज करते हुए दुष्कर्म कर सकते हो अपने कुकर्म इन्सानों से छुपा सकते हो लेकिन शनिदेव से नहीं छुपा सकते कारण वह सर्वदृष्टा, सर्वसाक्षी हैं ।

अब आप विचार करें कि आपने अपनी शक्ति के वशीभूत होकर कितने निकृष्ट दलित गलित क्रूर कर्म किए हैं उन सबका यथावत् भुगतान कराना शनिदेव जी का कर्तव्य है उन्हें प्राणी के कर्मानुसार ही कर्मफल प्रदान करना पड़ता है किसी के साथ उनका द्वेष नहीं होता है । कर्म के भुगतान हेतु उसे कठोर से कठोर दण्ड देकर पाप का भुगतान कराना

भी शनि देव की कृपा ही है । याद रखें जब तक कर्म का भुगतान नहीं होगा शनि पीछा नहीं छोड़ेगा । अब स्वयं विचार करें कि इसमें शनि का क्या दोष है याद रखें हम कुकर्म करने से बाज नहीं आते और शनि देव हमें मारने से बाज नहीं आते इसमें दोष शनिदेव का नहीं दोष हमारा है और यह तो शनिदेव की परम कृपा ही है जो कर्मों का भुगतान करा हमें शुद्ध कर प्रभु मार्ग के पथिक बनाते हैं । श्री राम चरित मानस उत्तर काण्ड में गोस्वामी तुलसी दास जी ने उदाहरण देते हुए कहा है कि

जप-तप-नियम जलाश्रय झारी । होइ ग्रीषम सोषइ सब नारी ॥

अर्थात् जप-तप-नियम का तालाब ही क्यों न भरा हो लेकिन ग्रीष्म ऋतु बनकर नारी सबका शोषण कर लेती है ।

शास्त्रों द्वारा प्रमाणित है कि वर्षों की तपस्या स्त्री ने क्षणमात्र में ढेर कर दी इसीलिए गोस्वामी जी ने स्पष्ट उद्घोष किया । तप भंग हो जाने से जातक पतित होकर जहाँ से चला था वहीं पहुँच जाता है लेकिन तप के प्रभाव स्वरूप उसे कुछ प्रभु स्मरण रहता है । गौरांग महाप्रभु ने तो यहाँ तक स्पष्ट कहा कि यदि आप महात्मा हैं और काठ की बनी हुई स्त्री भी यदि छू ली तो उससे भी राग उत्पन्न हो जाएगा और आज जिन्होंने अन्यान्य प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करते हुए स्त्रियों को आश्रम में आश्रय दिया है उनकी क्या स्थिति होगी स्वतः विचारें ?।

राम और काम की समीक्षा करते हुए गोस्वामी जी ने मानस में उल्लेखित किया है—

जहाँ राम तहँ काम नहिं, जहाँ काम कहँ राम ।
तुलसी कबहुक नहीं रहि सकहिं, रवि रजनी एक ठाम ॥

गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्पष्टता पूर्वक चुनौती देते हुए कहा है कि जहाँ पर परब्रह्म परमेश्वर जगत्पिता राम हैं वहां पर कामदेव रह ही नहीं सकता और जहाँ पर पुष्पधनुष धारी मदन देव हैं वहाँ पर रमापति का निवास हो ही नहीं सकता है । यही स्पष्टता देते हुए महाकवि तुलसी दास जी ने कहा है कि जिस प्रकार रवि और रजनी अर्थात् प्रकाश और अंधेरा एक जगह नहीं रह सकते इसी प्रकार से राम और काम एक साथ नहीं रह सकते अर्थात् राम भजेंगे तो काम के वशीभूत नहीं होना पड़ेगा और यदि काम के वशीभूत हो गये तो राम का स्मरण नहीं हो सकेगा । अतः काम किस प्रकार शान्त होगा इसका प्रतिपादन तथा उपशमन भी मानस में गोस्वामी जी ने अंकित किया है :-

"बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा । थलबिहीन तरु कवहुँ कि जामा ॥"

अर्थात् जब तक एकाग्रता पूर्वक प्रभु का भजन नहीं होगा, हार्दिक स्मरण चिन्तन मनन नहीं होगा तब तक संतोष अर्थात् शान्ति की प्राप्ति नहीं होगी और जब तक काम पर विजय नहीं होगी तब तक परमात्म प्राप्ति अर्थात् सच्चा सुख सुलभ हो पाना परम दुर्लभ है । जिस प्रकार पृथ्वी के बिना वृक्ष हो ही नहीं सकता उसी प्रकार बिना राम भजन किए

कामदेव का निवारण हो ही नहीं सकता अर्थात् योगीजन हृदय से संसार का न्यास करते हुए मात्र हरि स्मरण करें तभी उन्हें ईश्वर प्राप्ति ईश्वर कृपा प्राप्ति होगी और जो वेश आपने धारण कर रखा है सार्थक हो सकेगा तथा समाज भी हमेशा गुणगान करता हुआ बताए हुए मार्ग का अनुसरण कर उन्नति सद्मार्ग प्राप्त कर सकेगा ।

किंतु अगर तुम ना बदले तो, शनिदेव यश मान हरेंगे ।
सन्त शब्द मत करो कलंकित, वर्ना वे शमशान धरेंगे ।।

यदि आप सच्चे मित्र हैं

यदि आप सच्चे मित्र हैं तो स्वतः अपने को झांककर देखें कि हम मित्रता कर रहे हैं कि मित्रता की आड़ में मित्र का सर्वस्व लूट रहे हैं । यहाँ तक कि मित्र की पत्नी तक का उपभोग करते हैं झूठे हस्ताक्षर करा कर उसकी संपत्ति तक हड़प कर लेते हैं । फिर उस धन का उपभोग कर अपने को सुखी मानने लगते हैं और अहंकार के वशीभूत हो किसी की नहीं सुनते । वह समाज से बच सकते हैं लेकिन उस परमात्मा से नहीं । गोस्वामी जी ने मित्र का अर्थ बताया है और कहा है कि

निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्रके दुख रज मेरू समाना ।।
जे न मित्र दुःख होहिं दुखारी । तिन्हहिं विलोकत पातक भारी ।।
गुरु संग कपट मित्र संग चोरी । कि होय निर्धन कि होय कोढ़ी ।।

अर्थात् सच्चे मित्र वही हैं जो अपने कष्ट को एक कण के समान समझते हैं और मित्र के कष्ट को सुमेरु पर्वत के समान मानते हैं तथा जो प्रिय मित्र के कष्टों से दुःख से दुःखी नहीं होते उनको महान पाप कष्ट भुगतना पड़ता है और जो गुरु के संग कपट और मित्र के साथ किसी प्रकार का छल करता है वह या तो निर्धन हो जाता है या कोढ़ी अर्थात् उसे भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ता है । अतः मित्र को अपने भाई से अधिक मानते हुए उसकी स्त्री को अपनी बेटी या माँ के समान मानते हुए उसका आदर करना चाहिए । ध्यान रखें यदि मित्र के साथ तुमने किसी प्रकार का किसी तरह से छलावा किया तो मित्र की नजर से, संसार की नजर से बच सकते हो लेकिन शनिदेव सब देख रहे हैं और जब कुकर्म का प्रायश्चित शनिदेव करायेंगे तो हजारों जन्म तक महान यातनाए कष्ट भोगने पड़ेंगे और जैसा धोखा तुमने किया है ठीक उसी प्रकार के धोखे तुम्हारे साथ अनेकों जन्मों में बराबर होंगे । अतः मित्र के साथ कभी भी किसी भी प्रकार का छलावा न करें ।

जो मित्र से धोखाधड़ी करके, सर्वस्व लूट ले जाते है ।
वो लूटते तो है इसी जन्म, उनके कई जन्म लुट जाते है ।।
न करना धोखा किसी के संग, धोखा धोखे का धोखा है ।
सब पड़ा यहीं रह जायेगा, जो दिखता है सब खोखा है ।।

यदि आप स्त्री या पुरुष है

जो स्त्रियाँ उच्छृंखल हो गईं हैं पति की सेवा सुश्रुषा नहीं करतीं पति की एक नहीं सुनती अथवा पुरुष अपनी ग्रहणी का धर्म मर्यादानुसार प्रतिपालन नहीं करती तथा व्यभिचार आदि दुष्कर्म करती है अथवा स्त्री किसी के वशीभूत होकर किसी लोभ में आकर पर पुरुष से रतिक्रीड़ा करती है तो ऐसे पति पत्नी अपने कुकर्म एक दूसरे से छिपा सकते हैं लेकिन उस सर्वनियन्ता से कुछ छिपा नहीं सकते अर्थात् क्षणिक सुख का कराल प्रायश्चित करोड़ों जन्मों में नाना प्रकार से सहना पड़ेगा ।

याद रखें, श्री मद् से मदान्ध होकर तथा जवानी के नशे में तथा बुरी संगति के अनुसार आपने समस्त मर्यादाओं का उल्लंघन किया, शास्त्राज्ञा का पालन नहीं किया अथवा माँ बाप की अवहेलना की, धर्मपत्नि को धोखा दिया, धर्मपत्नि रोती गिड़गिड़ाती मर गयी परन्तु उसकी एक नहीं सुनी ।

शनि कर्म के भुगतान हेतु सप्तम भाव या लग्न में आ बैठेगा या सप्तमेश से अपना सम्बन्ध बनाएगा । यदि जातक अधिक क्रूर कर्मी है तो लग्न में या सप्तम में शनि, राहु, मंगल बैठेंगे या सप्तमेश को प्रताड़ित करेंगे जिसके कारण जातक महान कष्ट प्राप्त करेगा और दाम्पत्य जीवन में जहर घोल देंगे । याद रखें ग्रह पत्नि के अन्दर बैठकर उसके स्वभाव को क्रूर बनायेंगे और वह कटु शब्द बाण से पल-प्रतिपल तुम्हारे हृदय को विदीर्ण करेगी । ऐसी कठोर शब्दावली का संधान करेगी जिसको सुनते ही बदन में ज्वाला भड़क उठेगी लेकिन जातक पत्नि का कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा । जैसा तुमने पहले पत्नि के साथ धोखा किया था इसी प्रकार वह पत्नि भी कई जन्मों तक यथावत् धोखा करेगी । जिस प्रकार से आपको कुल समाज की कोई परवाह नहीं थी ठीक उसी प्रकार वह भी किसी की परवाह न करते हुए तुम्हारा सर्वस्व छीन लेगी । पल-प्रति-पल अपमानित कर जीना कठिन कर देगी ।

अतः जातक विचार करे कि कर्म का भुगतान तो होगा और शनिदेव ने कर्म का भुगतान करवाना है यह उन्हें कार्यभार परमात्मा ने सौंपा है । क्या ऐसे कुकर्मी जातकों के कर्म का भुगतान नहीं होना चाहिए ? यदि कर्म का यथावत भुगतान नहीं हुआ तो प्रकृति का स्वच्छ संचालन कैसे होगा ? अतः इसमें शनिदेव का दोष नहीं है और न ही शनि देव को कोसना चाहिए यदि दोष है तो वह है हमारा और यदि कोसना हैं तो अपने को कोसना चाहिए कि रे मन मूर्ख तूने ऐसे कर्म किए हैं अब क्यों रोता है भुगतान कर और संकल्प कर कि अब हम कुकर्म बुरे कर्म नहीं करेंगे और याद रखें जब बुरे कर्म होंगे नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे ।

यदि आप व्यवसायी हैं

याद रखें जो व्यवसायी बहुत अधिक बेईमानी कर धनोपार्जन करता है उनको युग-युगान्तर तक नाना प्रकार की यातनाएँ सहनी पड़तीं हैं और उनकी आने वाली सात पीढ़ियों को भुखमरी के मुँह में जूझना पड़ता है । यदि आप बड़े उद्योगपति हैं बड़े-बड़े कारखानों के स्वामी हैं और आपके कार्यकर्ता आप से तंग होकर निरन्तर रो रहें हैं और आप बराबर उनपर जुल्म ढा रहे हैं लेकिन आप उनकी एक नहीं सुन रहे हैं और उनके साथ बेईमानी और अत्याचार करते चले जा रहे हैं । धन मद से मदान्ध हो अपने को नियन्ता मानने लगे हैं तो याद रखें जब तक तुम्हारा पुण्य है तब तक शनि कुछ नहीं कहेगा लेकिन पुण्य समाप्त होते ही खाकपति बना देगा, असाध्य रोग देगा और जातक को सड़क पर ला देगा जहाँ मांगने से भीख भी नहीं मिलेगी और कराहते हुए वेदना सहित शरीर का अन्त हो जाएगा । लेकिन जब तक कर्मों का भुगतान नहीं हो जाएगा शनि कल्प कल्पान्तरों तक नाना प्रकार से प्रताड़ित करता रहेगा । याद रखें जीवित रहने पर प्राणी को कर्मफल शनि प्रदान करते हैं लेकिन मरने के बाद यमराज प्राणी को कर्मफल प्रदान करते हैं ।

अतः धनिक बनिक विज्ञ पुरुष उपरोक्त को पढ़ें चिन्तन मनन करें और मनीराम से कहें कि मैंने जैसे कर्म किए हैं उनका प्रतिफल ही मुझे प्राप्त हो रहा है अतः धैर्यतापूर्वक कर्मफल का प्रायश्चित कर प्रभु चिन्तन करना चाहिए ।

हार्दिक विचार करेंगे तो स्पष्ट हो जाएगा कि शनि हमें प्रताड़ित नहीं करता है वह कृपा करता है इसीलिए कर्मफल का भुगतान करा तपरत् करता है, सद्बुद्धि प्रदान करता है जिस कारण शनि की कृपा ओर सहयोग से ही जातक प्रभु प्राप्ति कर पाता है । यदि शनि कर्मफल न भुगतवाये तो यह प्रकृति दूषित हो जाएगी और सत्य, तप दया, धर्म सब निस्सार हो जाएंगे । फिर सत्य की दुहाई कौन देगा । अतः शनि प्राणीमात्र के कर्म का प्रायश्चित ही कराते हैं । इसीलिए शनि जैसा जीव्र का परम हितैषी अन्य दूसरा ग्रह है ही नहीं । अतः शनि को परम कल्याणकारी ग्रह ही मानना चाहिए । करोड़ों जन्मों की तपस्या दया, दान आदि करने से अक्षय धन की प्राप्ति होती है और धन पाने के बाद कुकर्म के कारण पुनः नरकगति प्राप्त हो जाती है । कारण कि लक्ष्मी का वाहन, उल्लू है जो शुभ नहीं करता और दुष्कर्मों के फलस्वरूप वह पुनः नरकगामी होता है । यदि जातक तपरत रहा तो वह सद्कर्म करेगा जिस कारण उसे भौतिक आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होगी ।

कर्म कुकर्म तुम्हारे सारे शनि देव नित देख रहे हैं ।
कितना छुप कर लूट रहे हो, यह भी तुमको लेख रहे हैं ॥

....

राजनेता

देशसेवा जनसेवा की दुहाई देते हुए परमात्मा को साक्षी बनाकर महामहिम राष्ट्रपति जी पद एवं गोपनीय की शपथ दिलाते हैं, धर्मानुसार शपथ ग्रहण कर संकल्प करते हैं कि हम देश राज्य की गोपनीयता का पूर्ण पालन करेंगे, सत्यनिष्ठा कर्मठता पूर्वक जन सेवा करेंगे । परन्तु पदासीन होने के बाद न तो शपथ याद रहती और न ही सुपथ तथा न ही जनसेवा, केवल लोलुप स्वार्थ श्री अभिलाषा ही प्रचंड रूप धारण करती है और वह तिजोरी भरने के लिए सत्य को तिलांजलि देकर अंधेरे उजाले में प्रचुर अर्थोपार्जन करते हैं । बुरे कर्म सब जानते हैं लेकिन लोभ, मोह, लालच, वश कर बैठते हैं जिनका प्रायश्चित शनि कराल आपत्ति, विपत्ति, असाध्य रोग देकर करोड़ों जन्मों तक कराते हैं ।

अब हार्दिक चिन्तन मनन करें कि हमने अपनी सत्ता में कितने क्रूर निकृष्ट कर्म किए हैं यदि उनका प्रायश्चित न हो तो प्रभु सत्ता महत्वहीन हो जाएगी । इसीलिए प्रभु निर्देशानुसार शनिदेव कर्मों का भुगतान प्राणीमात्र से निरन्तर कराते रहते हैं । लेकिन वाह रे प्राणी अपना दोष न मान कर शनिदेव को दोष देते हैं । सत्य यह है कि शनि प्रायश्चित करा प्राणी को स्वच्छ कर प्रभु मार्ग में आसीन करते हैं और प्राणी ऐसे कृपालु दयानिधि शनिदेव को कष्टकारी कलहकारी कराल ग्रह कहते हैं जबकि शनि भगवान यशोदानन्दन भगवान कृष्ण के परम भक्त और सत्यस्वरूप तपोमूर्ति हैं ।

याद रखें शनि जब प्रसन्न एवं अनुकूल होते हैं तो महत्वपूर्ण पद अर्थात् मंत्री प्रधानमंत्री तक बना देते हैं लेकिन जब शनि अप्रसन्न असंतुष्ट हो जाते हैं तो उन्हीं राजनेताओं को काल कोठरी में बन्द करा तरह-तरह से प्रताड़ित कर धूल चटा देते हैं ।

शनि यदि प्रसन्न हों, तो सत्ता दिला दें ।
यदि हों अप्रसन्न, तो धूल में मिला दें ॥
कर शनि को प्रसन्न, धन यश तू कमा ले ।
शनि जप यज्ञ करके, कुकर्म मिटा ले ॥

अन्य समाज

यह सबका प्रत्यक्ष अनुभव है कि करोड़ों की डकैती करने के बाद भी चोर, डकैत अमीर नहीं हो पाये । पैसे का उपभोग नहीं कर सके और अमीर बन ऐश्वर्य का उपभोग नहीं कर पाये तथा चोरी करने के बाद भी जंगलों की खाक छाननी पड़ती है । सब कुछ होते हुए भूखा मरना पड़ता है । भय सदैव रहता और अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। पर हम परम पिता के नियन्त्रण का सूक्ष्मावलोकन करें कि जीव की मन मानी परमात्मा नहीं चलने देता और प्रकृति के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करने देता है तभी तो हम मानते हैं कि ईश्वर है, ईश्वरीय शक्ति है और कोई नियन्ता है ।

आदिनाथ, भुवन भास्कर भगवान सूर्यदेव कर्म साक्षी हैं और परमसन्त महाराज शनिदेव जीवित रहने तक कर्म के भुगतान करवाने वाले उदासीन ग्रह हैं । याद रखें हमारा जब जन्म हो जाता है तो शनिदेव कर्म भुगतान कराना प्रारंभ कर देते हैं और प्राणान्त होने पर यमपुरी के महाराजा यमराज कर्मानुसार भयंकर नरक यातनाएँ प्रदान करते हैं । भगवान शनिदेव भयंकर कठोर यातनाएँ प्रदान करते हैं तथा असाध्य रोग जीवन पर्यन्त बनाए रखते हैं । शरीर छूटने के बाद ही रोग से मुक्ति मिलती है । शनि अपनी महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तर दशा में जब-जब आता है तो शरीर में छुपे हुए रोग प्रकट कर देता है । चोर डकैतों से उनके मुख से ही उन्हीं का पाप प्रकट करा देते हैं जिस कारण जातक कठोर कारावास जीवन पर्यन्त भोगता है और भयंकर यातनाएँ सहनी पड़ती हैं ।

अतः उपरोक्त तथ्यों से यह सुस्पष्ट हो गया है कि **"शनि शत्रु नहीं मित्र है"** अतः शनि प्राणी मात्र को कष्ट प्रदान करने के लिए खाली नहीं बैठा है । शनि तो प्राणीमात्र पर कृपा कर कर्म का भुगतान करा शुद्ध करके परमात्मा परायण करता है अतः शनि जीव मात्र का परम हितकारी हितैषी कल्याणकारी कल्पवृक्ष है ।

इस लेख को पढ़कर शनि की वास्तविकता का स्पष्ट पता प्राणीमात्र को लग सकेगा कि शनि क्या है और शनि से भयभीत समाज शनि प्रिय होकर निडरता पूर्वक शनि आराधना करेंगे और उनका भय हमेशा के लिए जाता रहेगा । जातक सद्मार्ग पर चलते हुए सत्कर्म करेगा जिससे शनिदेव पूर्ण प्रसन्न हो जातक को लौकिक/पारलौकिक सुख प्रदान कर प्रभु प्राप्ति तक सुलभ करा देंगे ।

अतः इस प्रकार सद्कर्म शुभ कर्म करने से शनि कृपा प्राप्त होगी और शनि कृपा से ही तप पूर्ण होगा तथा परम पिता कि प्राप्ति शीघ्र हो सकेगी । अतः हृदय से सूक्ष्मता पूर्वक विचार करें कि भगवान शनिदेव जनकल्याणकारी है या जनकष्टकारी है विचार करने पर सभी शंकाएँ क्षण मात्र में ढेर हो जाएंगी । अतः यह सिद्ध हो गया कि शनिदेव को किसी से किसी प्रकार की शत्रुता नहीं है वह तो मात्र शुभ अशुभ कर्मों का नाना प्रकार से भुगतान कराते हैं । लेकिन जो अज्ञानी हैं या शनि के गुण, धर्म, स्वभाव, क्रिया कलाप, उदारता आदि से परिचित नहीं हैं वह शनिदेव को कराल कष्टकारी कहते हुए डरते हैं और अपना शत्रु मान बैठते हैं जबकि सत्य यह है कि कर्म ही शत्रु रूप में मारता है । हाँ शनिदेव कर्म का भुगतान अवश्य कराते हैं लेकिन उन्हें शत्रु समझना सरासर मूर्खता और अज्ञानता होगी । अतः शनिदेव से डरें नहीं उन्हें परमन्यायाधीश मानते हुए सत्कर्म करें और शनि का जप तप कर शनि कृपा प्राप्त करें ।

इस लेख का मुख्य कथन यही है कि एक तुच्छ प्राणी के पास भौतिक युग में एक मिनट का समय नहीं तो क्या परम तपस्वी शनिदेव के पास कोई कार्य नहीं? क्या वह खाली ही बैठे हैं? नहीं, उन्हें परमात्मा का आदेश है कि प्राणी को यथावत कर्मभोग भुगताओ जिसका सत्यता पूर्वक शनिदेव पालन करते हैं अतः इस लेख को पढ़कर भी यदि

फिर कोई शंका शेष रह गयी है वह केन्द्र से सम्पर्क करें और अपनी शंका का निवारण करें । अतः सत्चरित्र हो सद्कर्म करे सद्मार्गगामी हो शनि के सत्यस्वरूप सत्यनिष्ठा, सत्कार्यकलाप को जाने तथा पहचाने और विचारों का मंथन करें तो निर्णय रूपी नवनीत स्पष्ट रूप सामने आ जाएगा कि "शनि शत्रु नहीं मित्र है कष्टकारी नहीं कल्याणकारी है" पीडा दायक नहीं पीडा विदारक है । अतः शनि के परम कल्याणकारी मनोहारी वास्तविक स्वरूप को जानकर शनि आराधन, पूजन, जपन, मनन यजन कर शनि कृपा प्राप्त करें, डरें नहीं । जिन महानुभावों को यह लेख यदि किचित मात्र कटु लगे या जो सत्यता से विमुख हो रहे हों अथवा सत्यता को जानते हुए भी नकार रहे हों तब हम प्रार्थना करेंगे कि महाराज शनिदेव उन्हें भी सद्बुद्धि सद्मार्ग प्रदान करें । अतः कम खा लें लेकिन बुरे कर्म नहीं करें और जब बुरे कर्म होंगे नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे ।

अतः अब भी आपके मन में यदि कोई शंका संदेह हो तो उसका समाधान हम केन्द्र के द्वारा आपको अवश्य प्रदान करेंगे । कृपया आप अपने अमूल्य सुझाव, परामर्श या अन्य कोई महत्वपूर्ण जानकारी यदि आपके पास है तो हमें लिखित रूप से बताएं ताकि हम उसे भी इस क्रम में जोड़ सकें । हमें पूरा विश्वास है कि शनिदेव जी आप पर भी कृपा करेंगे और आप उनकी पूर्ण कृपा पाने के लिए अपने अमूल्य क्षणों में से कुछ क्षण केन्द्र पर आकर अवश्य प्रदान करेंगे ताकि हम आपके शनि सम्बन्धी सभी प्रकार के संदेहों का निवारण कर सकें । जिस प्रकार कोई अपराधी न्यायाधीश के क्रिया कलापों पर दोषारोपण करता है उससे न तो न्यायाधीश का चरित्र बदलता है और न ही उसका कर्म बदलता है। वह विधि विधान के अनुसार अपना निर्णय दण्ड देने के लिए मर्यादा में रहता है । सत्कर्मों पर वह पुरस्कार (इनाम) भी प्रदान करता है । वे पूर्णतः दोष मुक्त होते हुए सारे क्रिया कलाप निभाते हैं । अतः दोष दर्पण में नहीं दोष तो मुखाकृति में हो सकता है । अतः शनि को दोषारोपण करना निरर्थक है ।

भगवान शनि की प्रेरणा से प्रेरित होकर लेखक ने अपने कुछ उद्‌गार प्रकट किए हैं यदि किसी को तनिक भी अप्रिय लगें तो वह साधु भाव धारण करें और जान लें कि–

हम खाली हाथों आये थे और खाली हाथों जायेंगे ।
भौतिक सुख के सारे साधन, सब यहीं धरे रह जायेंगे ।।
कुछ भी साथ नहीं जाता प्यारे, तब संग्रह क्यों करते भाई ।
क्षण भंगुर है ये सारा जग, सब भौतिक सुख हैं दुःखदायी ।।
शनि पूजन, जपन-यजन करके, पूर्वाजित पाप को भस्म करो ।
कर शनि देव की कृपा प्राप्त, अपना मानव तन सफल करो ।।
शनि स्वभाव अति स्वच्छ है, ज्यों गंगा को नीर ।
करते जीवों पर दया, हरते सबकी पीर ।।
।। ॐ "जय श्री शनिदेव" ।।

केन्द्र द्वारा शोध

जिन जातकों के हाथ का रंग काला हो गया हो । पति पत्नी में विवाद बना रहता हो । झगड़ा, लड़ाई, मुकदमा बना रहता हो । सब कुछ प्राप्त होने के बाद भी मष्तिष्क में अकारण क्रोध आता रहता हो । शनि की उंगली के पोर सूखकर टेढ़ी हो गयी हो । व्यापार में बार-बार घाटा, पूरी बुद्धि लगाने के बाद भी लाभ न होता हो तो ऐसे जातक बिना ज्योतिषी से पूछे ये समझ लें कि उनके ऊपर शनि का पूर्ण प्रभाव है और उसके लिए उनको विधिवत उपाय कर लेना चाहिए ।

यदि लग्न में शनि हो तो जातक के मष्तिष्क को अकारण गर्म बनाये रखता है जिसके फलस्वरूप बात बात में क्रोध आता है । शनि जातक की सूक्ष्मवाहक नाड़ियों को गरम बनाये रखता है जिसके कारण उसकी निर्णय शक्ति भ्रमित हो जाती है । दुनियां की कोई औषधि जड़ी बूटी, यन्त्र तन्त्र और कोई पैथी शनि प्रदत्त गर्मी को नहीं निकाल सकती है । केवल ऋषि प्रदत्त मंत्र में ही शक्ति है जो अकारण क्रोध और सब काम को ठीक करती है । केन्द्र ने ऐसा प्रयोग बहुत से जातकों पर किया है और पूर्ण सफलता प्राप्त की है ।

केन्द्र ने शनि शोध के बारे में सर्वाधिक कार्य किया है तथा सर्वाधिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं । यदि जातक की उपरोक्त स्थिति बनी रहती है और सब उपाय करने के बाद भी स्थिति में सुधार न होता हो तो जातक को इन कष्टों से छुटकारा पाने के लिए शनि देव के स्तोत्र, बीज मंत्र का पाठ दान आदि विधिवत करने चाहिए । नीचे कुछ उपाय दिये जाते है जिन उपायों के करने से जातक का अत्याधिक भला हुआ है और केन्द्र का यह दावा है यदि श्रद्धा पूर्वक कार्य किया जाये तो निश्चय ही सब दुखों से छुटकारा मिल जाता है । इससे सारे अशुभ दूर हो जाते हैं तथा शान्ति प्राप्ति हो जाती है ।

१:- ग्यारह नारियल पानी वाले २- सवा किलो जौ ३- सवा किलो कच्चा कोयला ४-सवा किलो रांगा (सिक्का) ५- सवा किलो काला चना (२ लोहे की कील तथा २ कच्चे कोयले सहित) ।

नारियल तथा रांगा को छोड़कर बाकी तीनों वस्तुओं को अलग अलग कर काले कपड़े में बांध कर सभी पांचों वस्तुओं को एक एक कर अपने सिर के ऊपर से वार कर यमुना या गंगा नदी के जल में जल जन्तुओं (विशेष कर मछलियों) के लिए डालें । डालते हुए शनि तथा राहु ग्रह से अपने पूर्व कृत पाप कर्मों के लिए क्षमा याचना करते हुए प्रार्थना करें कि आपकी प्रसन्नता के लिए अर्पित कर रहा हूं जिसे आप ग्रहण कर मेरा हर प्रकार से कल्याण कर शान्ति प्रदान करें । (ऐसा करने वाले व्यक्ति को मांस मछली आदि भक्षण तथा मदिरा पान आदि नहीं करना चाहिए नहीं तो कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं होगा) ऐसा प्रयोग लगातार ग्यारह शनिवार तथा पूर्णिमा तिथि में करें । इस प्रयोग द्वारा जातकों को शत् प्रतिशत लाभ तुरन्त हो जाता है, ऐसा केन्द्र का अनुभव है ।

वेदों में शनि

शनि की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है । अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में शनि ी पूजा की जाती है :–

ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्यो रभिस्त्रवन्तु नः ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् शन्नो देवीः अभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंय्योः अभिस्त्रवन्तु नः ।

शनि ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला जप करना चाहिए । कारण, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केंद्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण, इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अव्ययों में व मस्तिष्क में जहाँ शनि रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केन्द्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

दण्डी नीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः। बाणहस्त-धनुर्धारी भक्तानाम भयप्रदः।

शनि बीज मंत्र :

ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।

शनि बीज मंत्र सरल भाषा में:

ॐ प्राम् प्रीम् प्रौम् सः शनैश्चराय नमः ।

केन्द्र का विगत दो दशकों का अनुभव है कि ग्रह पीड़ा मात्र मंत्र शक्ति द्वारा ही शत प्रतिशत निर्मूल की जा सकती है ।

अतः जीवन में हर एक जातक को शनि के 1 करोड़ बीज मंत्र अवश्यमेव कर या करवा लेना चाहिए ताकि जीवन प्रकाशमय रहे तथा किसी भी प्रकार का मस्तिष्क विकार न हो और निर्णय शक्ति उत्तम बनी रहे और शनि की परम कृपा प्राप्त हो । धन धान्य की कमी न हो, सफल राजनीतिज्ञ बनें और अन्त में तप को परिपक्व करें ।

अधिक जानकारी के लिए शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें ।

तीन दिन में शनि की पुस्तक पढ़ने से शनि के प्रत्यक्ष दर्शन हुए

एक सच्ची कहानी, घनश्याम की जुबानी

भगवान श्री शनि की असीम अनुकम्पा से 'शनि शत्रु नहीं मित्र' का तृतीय संस्करण जनमानस को बेहद पसन्द आया और इसकी लोकप्रियता शनि महाराज की कृपा से कई गुना हुई । क्या आज तक के इतिहास में किसी पुस्तक को सहसा पढ़ने पर उसके इष्ट का दर्शन हुआ है यह बात एक अजीबो गरीब है लेकिन शनि ग्रह पीडा निवारण विधि "शनि शत्रु नहीं मित्र" नामक कृति ने यह चमत्कार दिखाकर असंभव को संभव कर दिया और केवल तीन दिन में साधारण पाठ करने पर जिसे शनिदेव के दर्शन सुलभ हुए हैं वह खुश नसीब पुण्यात्मा हैं दिल्ली के श्री घनश्याम दास अरोड़ा जी प्रत्यक्ष ।

श्री घनश्याम अरोड़ा, सब्जी मण्डी, घण्टाघर, दिल्ली के निवासी ने केन्द्र से प्रकाशित "शनि शत्रु नहीं मित्र" का तृतीय संस्करण लेकर लगातार तीन दिन पाठ किया। तीसरे दिन पुस्तक के जब 20 पेज शेष थे तभी एक अलौकिक चमत्कार हुआ । दिनांक 8- 9-1998 मंगलवार को ठीक दिन के एक बजे आधे नेत्र सहसा खुले रहे आधे बन्द रहे तभी एक दृश्य सहसा दिखायी दिया कि तभी अचानक कमरे में एक मनोहारी घटना घटी, सूनशान कमरे में अचानक तेजस्वी प्रकाश छा गया और एक विशालकाय तेजस्वी अधोदृष्टि किए हुए काले वर्ण के काले कपड़े पहने हुए सोने के हार कुण्डों मुकट से सुशोभित शनि देव प्रकट हुए जिनके रोम-रोम से तेज निकल रहा था । पूछने पर उपस्थित देव ने कहा बेटा मैं शनि हूँ तेरे कई जन्मों की तपस्या एवं पुण्यों के फल देने हेतु मैं उपस्थित हुआ हूँ । अब मेरी कृपा से तू ज्योतिष को यद्यपि नहीं जानता है तद्यपि तू जिसकी कुण्डली देखेगा जो फलित करेगा, जो कह देगा वह सब सत्य हो जाएगा । जगत् में तेरी जय-जयकार होगी और तू यश धन कीर्ति से परिपूर्ण होगा ।

इसके बाद शनि देव ने कहा बेटा में इसलिये प्रसन्न हूँ कि तीन दिन में मेरी इस पुस्तक को किसी ने आज तक नहीं पढ़ी है और जो तीन दिन में हृदय से इसे पढ़ लेगा उसके कष्टों की निवृत्ति होनी आरम्भ हो जायेगी इसके साथ-साथ तूने मुझे हृदय से ध्याया भी है अतः वरदान मांग । तब हाथ जोड़कर मैंने कहा प्रभु मेरी शनि की महा दशा में राहु का अन्तर चल रहा है और सप्तम भाव में राहु बैठा है जिसके कारण पत्नी अत्यन्त क्रूर हो गयी है एवं आज तक उसने दाम्पत्य सुख की झलक भी मेरे पास नहीं

आने दी है । आज तक इस ने मुझे स्वल्पाहार बना कर भी नहीं दिया, मांगा तो गालियाँ दीं । मैं शनि से अतुलित संपत्ति मांगना चाहता था लेकिन मुँह से शब्द निकले कि प्रभु आप मुझे बृहस्पति देव के दर्शन करायें । क्षणमात्र में शनि द्वारा आवाहन करने पर गुरुदेव प्रगट हो गये, वह पीले वस्त्र जनेऊ धारण किये हुए थे तथा भव्य रूप था और गुरुदेव ने कहा बेटा तू पुण्यात्मा है अतः जग का कल्याण करेगा । इसके बाद शनि देव ने राहु का आवाहन कर राहु को बुलाया । राहु महाराज तुरन्त प्रगट हुए और बोले बेटा मैं आज से तेरी पत्नी को पीड़ित नहीं करूँगा तथा मेरे प्रभाव से तेरा योग मार्ग प्रशस्त होगा। तदोपरान्त शनिदेव ने कहा बेटा मेरा थोड़ा सा प्रभाव तुझसे सहन नहीं हो रहा है इसीलिए तेरा शरीर कम्पित हो रहा है तथा ज्वर १०७ डिग्री का है अतः मैं जा रहा हूँ और कहा हमारे जाने के बाद ये अपने मित्र को बुलायेगा और सारी घटना कह सुनायेगा और वह इस के आधे पुण्य को ले जायेगा । इस प्रकार कह कर वह अन्तर्ध्यान हो गये। तब काफी समय के बाद सचेत अवस्था की प्राप्ति हुई और अपने मित्र को बुलाकर अनूठी घटना का सत्यता पूर्वक सम्पूर्ण वर्णन किया ।

तारीख-१९-९-१९९८ को घनश्याम और उसका मित्र फरीदाबाद स्थित श्री बजरंग नवग्रह केन्द्र आये । लेकिन मार्ग में यह भाव बार-बार हिलोर ले रहा था कि यह अलौकिक दिव्य पुस्तक का जिसने लेखन किया है वह कितनी विमलात्मा एवं तपस्वी और शनि का कृपापात्र होगा । यह बात विचारणीय है कि जिस कृति का केवल तीन दिन पाठ करने से शनिदेव के दर्शन प्राप्त हुए ऐसे अलौकिक लेखक के दर्शन परम अनिवार्य हैं । सौभाग्यवश पूज्य वत्स जी के दर्शन हुए तथा विशिष्ट गोपनीय वार्तालाप हुई । तब पंडित जी ने कहा कि तुम्हें अवश्य शनिदेव के दर्शन सुलभ हुए हैं । शनि की कृपा से तुम महान ज्योतिषाचार्य कहलाओगे और तुम्हारे द्वारा किया हुआ फलित शत्-प्रतिशत सत्य होगा । लेकिन तुम्हारे पास तपोबल की पूर्णता नहीं हैं अतः सर्व प्रथम तपरत होकर पूर्णतः दैवीय कृपा प्राप्त कर लेना परम आवश्यक है । कारण यदि तुमने तप नहीं किया तो तुम्हारी शक्ति अविलम्ब जाती रहेगी और तुम्हारे पास भौतिकता के अलावा कुछ शेष नहीं रहेगा ।

याद रखो शनि की कृपा प्राप्त करना कुछ और बात है लेकिन शनि की कृपा को बनाये रखना कुछ और बात है । शनि के दर्शन हो जाना कुछ और बात लेकिन शनि के दर्शन होते रहना कुछ और बात है । धन कमाना कुछ और बात है लेकिन धन को संभालना कुछ और बात है अतः जब तक तुम पूर्ण तपोबल प्राप्त नहीं करोगे तब तक चिर शनि कृपा प्राप्त होना असंभव है । इसीलिए तुम जगत् में प्रसिद्ध हो इससे पहले शनि, गुरु, राहु के एक-एक करोड़ मंत्र, जप, यज्ञ विधिवत् करो अथवा सुयोग्य

विद्वानों से जप, यज्ञ सम्पन्न कराओ ताकि तुम्हारी शक्ति स्थिर रहे और तपोबल बरकरार रहे, तथा कलुषित संसार कोई आघात न कर सके ।

इतना परामर्श लेने के बाद चलने हेतु तैयार हुए लेकिन जाते जाते एक परमोत्तम प्रश्न किया, कहा पंडित जी यह विशाल सारगर्भित कृति आपने कैसे लिखी । आज तक के इतिहास में शंनि सम्बन्धी विशाल पुस्तक का लेखन कोई कर ही नहीं सका तथा परम गोपनीय प्रसंगों को उद्धृत ही नहीं कर सका है एवं विशिष्ट चमत्कृत उपायों को पिरो ही नहीं सका है, लेकिन यह सब आप द्वारा असंभव संभव कैसे हुआ । शनि के नाम से लोगों की पिंडलियाँ काँपती हैं लेकिन आपने यह विशाल कृति कैसे लिखी । तब पंडित जी ने कहा कि मैंने भी शनि के विधिवत् २ करोड़ मंत्र जाप किए हैं और उन्हीं की आज्ञा एवं कृपा से इस ग्रन्थ की संरचना हो सकी है इसीलिए जो इस पुस्तक में उपाय लिखे हैं वह शत्प्रतिशत सत्य एवं विपदानिवारक है इसीलिए पूर्णतः कारगर उपायों की दीपिका है यह कृति । अतः मेरा अन्तिम उपदेश यही है कि तुम भी प्रथम तप करो ।

२४-९-१९९८ को पुनः उसी समय शनिदेव दुबारा प्रगट हुए और डाँटते हुए बोले कि तू मेरे द्वारा मना करने पर भी नौकरी ढूँढने क्यों गया था, क्या तुझे इतना आभास नहीं कि वगैर मेरी मर्जी के क्या नौकरी मिल सकती है बेटा तू सुपात्र है इसीलिए तेरे से मुझे जग सेवा करवानी है इसीलिए जो तेरे गुरु ने आदेश दिया है तू उसका आलस्य रहित होकर पालन कर अर्थात तप-रत हो जा ।

विश्व में केवल एक ही ऐसा साधक सिद्ध सुजान है जो मुझे पूर्णतः जानता है अतः तू जिसके पास फरीदाबाद गया था जिसने तुझे दिग्दर्शन दिया है वही एक मात्र ऐसा तपस्वी पंडित है जो मेरी वास्तविकता को भली प्रकार से जानता है और मैं उसे जानता हूँ । इसीलिए वही तेरा गुरु है और वह जो तपरत होने की आज्ञा देता है उसकी आज्ञा शिरोधार्य कर तपरत हो जा । तभी तेरा पूर्ण कल्याण हो सकेगा और तू जन सेवा कर सकेगा और जब तक वह आज्ञा न दे तब तक किसी की भी कुण्डली का फलादेश नहीं करना । उदाहरण तेरे सामने है तूने अपने मित्र की भविष्यवाणी कर दी तो मुझे ढालबनकर तेरे वचनों की रक्षा करनी पड़ी अन्यथा वह जेल जाता और संकटों के जाल में बुरी तरह फस जाता तथा महान कष्ट को प्राप्त होता ।

कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि इसके ऊपर शनि की कृपा हो चुकी है यद्यपि तप करने के बाद ही संसार के समक्ष प्रस्तुत हों । तप पूर्ण हो जाने के बाद विश्व के समक्ष पेश कर दिया जाएगा तथा सत्यता पूर्वक जग का कल्याण कर शनि महिमा का प्रचुर बखान कर सकेगा ।

सिद्ध अवस्था की प्राप्ति तथा समीक्षा

जब जातक मन क्रम बचन को एक सूत्र में बांधकर जिस भी देवता को आर्त स्वर से पुकारता या भजता है तो परमात्मा को दया करके उसे दर्शन देना पड़ता है । चाहे वह कितना भी पातकी, दुरात्मा, नीच क्यों न हो ।

परमात्मा के दर्शनों के फलस्वरूप उसे सिद्ध अवस्था प्राप्त होती है । परन्तु देखने/समझने की बात यह है कि दर्शन कितने अंश का है । अर्थात आभास मात्र है या केवल परछाई है या दर्शन के समय देवता के अधिक प्रकाश के कारण नेत्र बंद तो नहीं हुए या केवल भावना प्रधान ही है । सिद्ध अवस्था में कितना बल है और भक्त उस परमात्मा की दया को कितने दिन संभाल सकेगा । याद रखना चाहिये कि परमात्मा की दया होना कुछ ओर बात है और उसको संभालना कुछ ओर बात है जैसे धन आना आसान है परन्तु उसको संभालना अति कठिन होता है । इसमें रात दिन का भेद होता है ।

प्रभु कृपा से जीवन में मेरा बहुत से सिद्धों से संपर्क हुआ और उनकी स्थिति का जायजा लिया और उनके जन्मांक को देखकर ग्रह गोचर की स्थिति के अनुसार उनको आंका और ग्रहों की स्थिति प्रतिकूल पाई । इन सिद्ध अवस्थाओं के बहुत से भेद देखे गये ।

जितने भी शाक्त तथा शैव्य होते हैं उन पर देवी तथा शंकर जी की कृपा बहुत जल्दी हो जाती है । उनके हृदय में बैठे हुए काम क्रोध आदि निर्मूल नहीं होते और पूर्व जन्म का पाप भी निर्मूल नहीं होता जिसके कारण वे अपने ही वर दाताओं को भूल जाते हैं और सिद्ध अवस्थाओं का दुरूपयोग करते हैं ।

याद रखना चाहिए बिना तपे जो भी परमात्मा की कृपा प्राप्त होगी और उससे जो सिद्ध अवस्था मिलेगी वह ज्यादा टिकाऊ नहीं होती कारण कि पूर्वजन्म का किया हुआ कुकृत्य उसको बार-बार पीछे धकेलता है । उपासना का बल कम होता है इसलिए भक्त अपने ही किये हुए कुकृत्यों की लपेट में आकर अपनी सिद्ध अवस्था को खो बैठता है ।

परन्तु जो पूर्णतः तप चुके हैं, जिनके हृदय के सारे दोष निकल चुके हैं, वह परमात्मा का पूर्ण आनन्द लेते हैं । भगवान राम ने अपने मुखारविन्द से उदघोष किया कि **"मम दर्शन फल परम अनूपा । जीव पाव निच सहज स्वरूपा ।।"** यानि परमात्मा के दर्शन होते ही जीव परमात्मा में लीन हो जाता है ।

जो जातक सिद्ध अवस्था प्राप्त कर उसका दुरूपयोग करेगा उसे निश्चित ही शनि प्रताड़ित करेगा । भगवान शंकर ने शनि को वरदान दिया है कि जो भी धर्म की औढ़नी औढ़ कर अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करे उसे तू प्रताड़ित कर । ऊपर सिद्ध अवस्थाओं की थोड़ी सी समीक्षा की है आशा है पाठक इनका अवश्य लाभ उठायेंगे ।

भगवान राहु

राहु ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ राहु स्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली ।
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम् । ।

राहु सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

राहू

We're Fluent In Pillow Talk

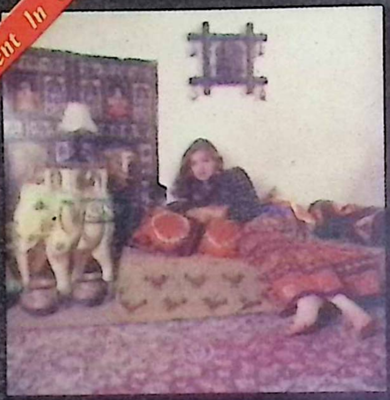

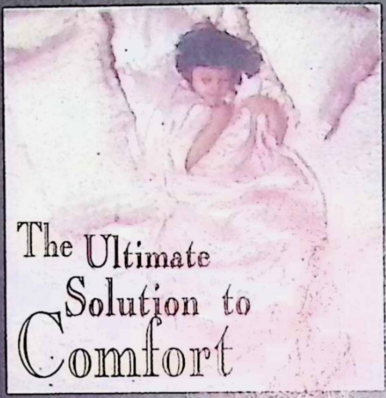

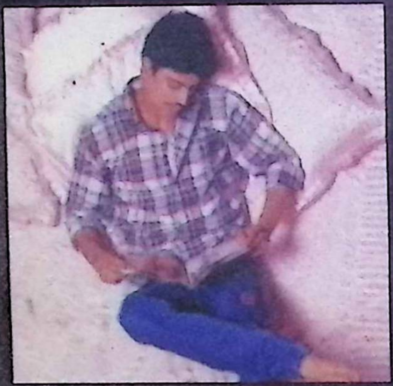

Fibre
PILLOWS

BEE EN FOAM PRODUCTS

B-74, Sector-VIII, Noida-201 301 (U.P.) India
Phone : 011-84555577, 84558713, 84528009 After Office : 011-84555401, 84555912

ब–७४, सैक्टर–८, नोएडा–२०१ ३०१ (यू.पी.) भारत
फोन : ०११–८४५५५५७७, ८४५५८७१३, ८४५२८००९ आफिस के बाद : ०११–८४५५५४०१, ८४५५५९१२

Available at all leading retail outlets in the country and
are available in three varieties : Diamond, Gold & Silver

BEE FOAM PRODUCTS also manufacturers Polyurthiane foam pillows

योग, अखंड शान्ति एवं कूटनीति का सूत्रधार राहु

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित राहु संबंधी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता राहु के सम्बन्ध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र में राहु का महत्व आदि की प्रामाणिक जानकारी।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय

- राहु की उत्पत्ति
- अंतरिक्ष में राहु की स्थिति
- वेदों, पुराणों एवं अन्य ग्रंथों में राहु का विवरण-विवेचन
- नक्षत्र विज्ञान और राहु
- राहु के नक्षत्र
- इन नक्षत्रों में जातकों के गुण धर्म
- द्वादश भावों में राहु
- राहु की महादशा
- राहु सबंधी भ्रातियों का निवारण
- राहु के रत्न, उप-रत्न, जड़ी-बूटियां
- हस्त रेखा शास्त्र में राहु
- अँक शास्त्र में राहु
- राहु स्त्रोत एवं मंत्र तथा बीज मंत्र
- राहु संबंधी दोषों के निराकरण के सरल उपाय
- ग्यारह नारियलों का प्रयोग, पीपर्ल की परिक्रमा
- राहु अशुभ नहीं, योग कारक राहु
- अखंड शांति का प्रदाता
- कूटनीति में निपुण बनाता है राहु
- सिद्ध तांत्रिक बनाता है राहु
- ग्रहण, क्यों, कैसे? ग्रहण का फल
- ग्रहण काल में मंत्र जाप का लाभ

राहु

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली ।

चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम् ।।

राहु (और साथ ही केतु) की प्रतिष्ठा शेष अन्य ग्रहों की भांति ही है, यद्यपि यह सूर्य, चंद्र, मंगल आदि की भांति कोई धरातल वाला ग्रह नहीं हैं इसलिए राहु (और केतु को भी) छाया ग्रह कहा जाता है । राहु के संबंध में अनेक पौराणिक आख्यान् हैं । शनि की भांति राहु से भी लोग भयभीत रहते है । दक्षिण भारत में तो राहु काल में लोग कोई भी कार्य नहीं करते ।

राहु के सम्बन्ध में समुद्रमंथन वाली कथा से प्रायः सभी परिचित हैं । एक पौराणिक आख्यान् के अनुसार राहु दैत्यराज हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका का पुत्र था । उसके पिता का नाम विप्रचिति था । विप्रचिति के सहवास से सिहिंका ने सौ पुत्रों को जन्म दिया उनमें सबसे बड़े पुत्र का नाम राहु था ।

देवासुर संग्राम में राहु ने भी भाग लिया तो वह भी उसमें सम्मिलित हुआ । समुद्र मंथन के फलस्वरूप प्राप्त चौदह रत्नों में अमृत भी था । जब विष्णु सुंदरी का रूप धारण कर देवताओं को अमृत पान करा रहे थे, तब राहु उनका वास्तविक परिचय और उनका हेतु जान गया । वह तत्काल माया से रूप धारण कर एक पात्र ले अन्य देवता गणों के बीच जा बैठा । सुन्दरी का रूप धरे विष्णु ने उसे भी अमृतपान करा दिया । तभी सूर्य-चंद्र ने उसकी वास्तविकता प्रकट कर दी । विष्णु ने अपने चक्र से राहु का सिर काट दिया, अमृत पान के कारण राहु का सिर अमर हो गया । उसका शरीर कांपता हुआ गौतमी नदी के तट पर जा गिरा । अमृत पान के कारण राहु का कटा धड़ भी अमरत्व प्राप्त कर चुका था ।

इस तथ्य से देवता भयभीत हो गए और शंकर जी से उसके विनाश की प्रार्थना करने लगे । शिवजी ने राहु के संहार के लिए अपनी श्रेष्ठ शक्ति चंडिका को मातृकाओं के साथ भेजा । सिर तो देवताओं ने अपने पास रोके रखा था लेकिन बिना सिर की देह भी मातृकाओं के साथ युद्ध करती रही ।

अपनी देह को परास्त होता न देख राहु का विवेक जागृत हुआ और उसने देवताओं को परामर्श दिया कि इस अविजित देह के नाश के लिए आप सबसे पहले उसे फाड़ दें ताकि उसका उत्तम रस निवृत्त हो जाए । इसके उपरांत शरीर क्षण मात्र में भस्म हो जाएगा । राहु के परामर्श से देवता उस पर प्रसन्न हो गए । उन्होंने उसका अभिषेक किया एवं ग्रहों के मध्य एक ग्रह बन जाने अर्थात ग्रहत्व प्राप्त कर लेने का वरदान दिया । बाद

देवताओं द्वारा राहु के देह के विनाश की युक्ति जान कर देवी ने उसका शरीर फाड़ दिया और अमृत-रस को निकाल कर उसका पान कर लिया ।

ग्रहत्व प्राप्त कर लेने के बाद भी राहु सूर्य और चंद्र को अपनी वास्तविकता के उद्‌घाटन के लिए क्षमा न कर पाया और पूर्णिमा तथा अमावस्या के समय चन्द्र और सूर्य को ग्रसने का प्रयत्न करने लगा ।

राहु के एक पुत्र मेघदास का भी उल्लेख मिलता है । उसने अपने पिता के बैर का बदला चुकाने के लिए घोर तप भी किया । पुराणों में राहु के संबध में और अनेक आख्यान भी प्राप्त होते हैं ।

खगोलीय विज्ञान में राहु

राहु (और केतु भी) आकाशीय पिंड नहीं हैं वरन् वह चंद्रमा और क्रांतिवृत का उत्तरी कटाव बिंदु हैं । पाश्चात्य लोग उसे 'नार्दर्न नोड' भी कहते हैं ।

ज्योतिष विज्ञान में राहु

भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में राहु (और केतु) को अन्य ग्रहों के समान महत्व दिया गया है । पाराशर ने राहु को तमों अर्थात अंधकारयुक्त ग्रह कहा है । उनके अनुसार धूमवर्णी जैसा नीलवर्णी राहु, वनचर, भयंकर, वात प्रकृति प्रधान तथा बुद्धिमान होता है । नीलकंठ ने राहु का स्वरूप शनि जैसा निरूपित किया है ।

सामान्यतः राहु (और केतु) को राशियों पर आधिपत्य प्रदान नहीं किया गया है । हां, उनके लिए नक्षत्र अवश्य निर्धारित हैं । तथापि कुछ आचार्यों ने जैसे नारायण् भट्ट ने कन्या राशि को राहु के अधीन माना है । उनके अनुसार राहु मिथुन राशि में उच्च तथा धनु राशि में नीच होता है ।

राहु के नक्षत्र हैं :- आर्द्रा, स्वॉति, शतभिषा ।

हमारे विचार से राहु का वर्ण नीलमेघ के समान है । यह सूर्य से 19,000 योजन नीचे की ओर स्थित है तथा सूर्य के चारों ओर नक्षत्र की भांति घूमता रहता है । शरीर में इसे पेट और पिंडिलियों में स्थान मिला है । जब जातक के विपरीत कर्म बन जाते हैं तो उसे शुद्ध करने के लिए अनिद्रा, उदर रोग, मस्तिष्क रोग, पागलपन आदि भंयकर रोग देता है । जिस प्रकार अपने निंदनीय कर्मों से दूसरों को पीड़ा पहुंचाई थी उसी प्रकार

भंयकर कष्ट देता है और पागल तक बना देता है । यदि जातक के कर्म शुभ हों तो ऐसे कर्मों के भुगतान कराने के लिए अतुलित धन संपत्ति देता है । इसलिए इन कर्मों के भुगतान स्वरूप उपजी विपत्ति से बचने के लिए जातक को राहु की शरण जाना चाहिए तथा पूजा, पाठ, जप, टान आदि द्वारा प्रसन्न करना चाहिए । गोमेद इसकी मणि है तथ' पूर्णिमा इसका दिन है । अभ्रक इसकी धातु है !

द्वादश भावों में राहु

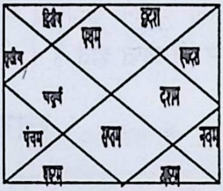

प्रथम भाव - शत्रुनाशक, अल्प संतति, मस्तिष्क रोगी, स्वार्थी, सेवक वृत्ति

द्वितीय भाव - कुटुम्ब नाशक, अल्प संतति, मिथ्या भाषी, कृपण, शत्रु हंता

तृतीय भाव - विवेकी, बलिष्ठ, विद्वान्, व्यवसायी

चतुर्थ भाव - स्वभाव से क्रूर, अल्प भाषी, असंतोषी, माता को कष्ट

पंचम भाव - भाग्यवान, कर्मठ, कुलनाशक, पत्नी सदैव रुग्ण

षष्ठ भाव - बलवान् , धैर्यवान, दीर्घवान, अनिष्ट कारक, शत्रु हंता

सप्तम भाव - चतुर, लोभी, वातरोगी, दुष्कर्म प्रवृत्त, एकाधिक विवाह

अष्टम भाव - कठोर परिश्रमी, बुद्धिमान, कामी, गुप्त रोगी

नवम् भाव - सद्गुणी, परिश्रमी, लेकिन भाग्योदय रहित

दशम भाव - व्यसनी, शौकीन, सुंदरियों पर आसक्त, नीच कर्म प्रवृत्त

एकादश भाव -मंदमति, लाभहीन परिश्रम, अनिष्टनाशक, सतर्क

द्वादश भाव - मंदमति, विवेकहीन, दुर्जनों की संगति

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि राहु प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, द्वादश भावों में किसी भी राशि का विशेषकर नीच का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नहीं है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले राहु के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए। ताकि राहु प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो । याद रखें अस्त राहु भयंकर पीड़ा जनक होता है चाहे वह किसी भी भाव का क्यों न हो ।

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

राहु की विशेषता

राहु छाया ग्रह है, ग्रन्थों में इसका पूरा वर्णन है और श्रीमद भागवत् महापुराण में तो शुक देव जी ने स्पष्ट वर्णन किया है कि यह सूर्य से 10 हजार योजन नीचे स्थित है और श्याम वर्ण की किरणें निरन्तर पृथ्वी पर छोड़ता रहता है । यह मिथुन राशि में उच्च का होता है और धनु राशि में नीच का हो जाता है । राहु और शनि रोग कारक ग्रह हैं । इसलिए यह ग्रह रोग जरूर देते हैं । काला जादू, हिप्नोटिज़्म में रुचि यही ग्रह देना है । अचानक घटनाओं के घटने के योग राहु के ही कारण होते हैं और षष्टांश में क्रूर होने पर हृदय रोग (हार्ट-अटैक) हो जाते हैं ।

राहु की अपनी कोई राशि नहीं है यह जिस ग्रह के साथ बैठता है वहां तीन कार्य करता है :

1. उस ग्रह की सारी शक्ति समाप्त कर देता है ।
2. उस की शक्ति स्वयं ले लेता है ।
3. उस भाव में अत्याधिक संघर्ष दिलाने के बाद सफलता देता है ।

कहने का भाव यह है कि बड़ा भारी संघर्ष करने के बाद सत्ता देता है बाद में उसको समाप्त कर देता है ।

राहु कूटनीति का सबसे बड़ा ग्रह है । राहु जहां बैठता है गले के ऊपरी भाग को यानि 'दिमाग' खराब कर देता है । दांतों के रोग भी देता है और दिमाग खराब करके उसी के हाथ से उसका सत्यानाश करा देता है । इस प्रकार जातक के पूर्व कर्मों को उसी रूप से प्रायश्चित् कराकर उसको शुद्ध कर देता है ।

इसलिए राहु का 12 वें घर में बैठना बड़ा अशुभ होता है क्योंकि यह जेल और बन्धन का मालिक है । 12 वें घर में बैठकर अपनी महादशा, अन्तर्दशा में या तो पागलखाने में या अस्पताल या जेल में जरूर भिजवा देता है ।

हजारों कुण्डलियों को देखिये, जो महापुरुष या नेता हुए उन्होंने बड़े-बड़े संघर्ष किये तब जाकर कहीं कुर्सियों पर बैठे, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल जिन्होंने जीवन में बड़ा संघर्ष किया तभी उन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ, हिटलर की कुण्डली में भी राहु दसवें घर में था ।

एक और अकाट्य सत्य है कि किसी भी कुण्डली में राहु जिस घर में बैठा है 19वें वर्ष में उसका फल जरूर देगा, सारे ग्रहों को छोड़कर, यदि किसी का राहु सप्तम भाव में बैठा है चाहे शुक्र बैठा हो, चाहे बुध या गुरु बैठा हो, 19वें साल में स्त्री है तो पति सम्बन्धी और पुरुष है तो स्त्री सम्बन्धी सुख 19वें साल में उसको जरूर देगा और 20वें साल में उस फल को नष्ट कर देगा । इसलिये जिनके विवाह 19वें वर्ष में हुए 20 साल में बड़ी भारी परेशानी हुई । क्योंकि 20 साल 8वां घर है । यह भाव मृत्यु और

परेशानियों का सूचक है । कारण कि राहु उसके साथ बैठे अन्य ग्रहों की सारी शक्ति स्वयं छीन लेता है और विशेषकर अगर प्लस, माईनस छः अंश पर बैठा हो तो उस ग्रह को नष्ट भी कर देता है ।

इसका समय 18 वर्ष है; राहु की दशा भी 18 वर्ष होती है, 18 और साढ़े 18 वर्ष या 19वें वर्ष और कुछ दिन उसी तारीख को वही तिथि वहीं पर आ जाती है, अगर 19 नबम्वर 1938 को त्रयोदशी थी तो उसमें 19 साल जोड़िये तो 19 नवम्बर 1957 को भी त्रयोदशी थी यानि ठीक 19 साल बाद वही तिथि आ जाती है ।

राहु की चाल बिल्कुल फिक्स है तीन कला ग्यारह विकला । इसलिए 19 वें साल में अच्छा या बुरा फल जरूर प्रदान करता है । इसलिये जातक के जीवन में राहु के प्रभाव से आयु में प्रत्येक 19 वर्ष के हिसाब से 19x2=38, 19x3=57, 19x4=76 38, 57, और 76 वर्ष की आयु होने पर अनेक घटनायें घटती रहती हैं ।

अब इसमें एक और विशेष फल यह है कि राहु-चन्द्र जब भी कहीं एक साथ किसी भी भाव में बैठे हुए होते हैं, तो चिन्ता का योग बनाते हैं । राहु के साथ चन्द्र होने पर ग्रहण हो जाता है चाहे कितनी ही दूर हो, चाहे अन्तर 29 अंश पर हो लेकिन ग्रहण योग हो जाता है, इसलिए राहु के साथ जब कभी भी चन्द्र होगा--ऐसे जातक को जीवन में चिन्ता बनी रहती है ।

राहु के साथ चन्द्र दूसरे और पाँचवें घर में होने पर जातक सट्टा खेलने का बड़ा शौकीन होता है । राहु के साथ बुध कहीं भी हो, किसी भी भाव में हो--सट्टा, लॉटरी, कमेटी, जुआ आदि ऐबों की तरफ बड़ा ध्यान जायेगा । दूसरे और पाँचवें घर में राहु हो तो कहना ही क्या है ! यदि बुध अस्त में हो तो जुए में लुट जाता है और विवश हो कर दरिद्रता का जीवन जीना पड़ता है । अतः बुध अस्त में जन्मा जातक जुआ न खेले ।

राहु के साथ मंगल होता है तो आदमी मार-धाड़ में बड़ा विश्वास रखता है और सुर्रे, पटाखे, अतिशबाज़ी बगैरह का बड़ा शौक रखता है ।

राहु के साथ जब बृहस्पति होता है तो राहु शुभ हो जाता है, राहु के साथ जब शनि होता है तो राहु बहुत खराब हो जाता है और जब कभी राहु में शनि या शनि में राहु महादशा में चलता है तो सारे कार्य चौपट हो जाते हैं ।

राहु सम्बन्धी अन्य विवरण

राहु ग्रह से सम्बधीत रोग, उनके उपशमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न, रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी बूटियों को धारण करने की विधि तथा राहु ग्रह से संबंधित व्यापार और नौकरी का विवरण इस प्रकार हैः—

रोगः-अनिद्रा, उदर रोग, मस्तिष्क रोग, पागलपन आदि ।

यदि औषध आदि के सेवन से भी रोग न जायें तो ग्रह का प्रकोप अर्थात ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा लगी हुई समझनी चाहिए और बिना किसी से पूछे मन्त्र जाप, रत्न जड़ी-बूटियां धारण करनी चाहिए । इससे रोग हल्का होगा और ठीक होने लगेगा ।

रत्न/उपरत्नः- गोमेद, तुरसा, साफा ।

बुधवार या शनिवार की मध्य रात्रि में आर्द्रा नक्षत्र में धारण करें । अच्छा रत्न धारण करने से ४० प्रतिशत राहत प्राप्त हो जाती है । रत्न की जब तक उसके ग्रह के अनुसार विधि विधान पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती है वह रत्न पूर्ण प्रभाव नहीं दे सकता । इसलिए रत्न पहनने से पहले अर्थात अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद इसकी प्राण प्रतिष्ठा अवश्य करा लेनी चाहिए । क्योंकि पत्थर अपने आप में पत्थर ही है । जिस प्रकार किसी मूर्तिकार के घर से लायी हुई किसी भी देवता की मूर्ति को मंदिर में स्थापित करते हैं तो उससे पूर्व प्राण प्रतिष्ठा विधान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है । इसी प्रकार अंगूठी में रत्न जड़वाने के बाद उसमें भी प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है ।

जड़ी-बूटियांः- सफेद चंदन बुधवार या शनिवार मध्य रात्रि आर्द्रा नक्षत्र में काले धागे में दांये हाथ में धारण करना चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव होना कम हो जाता है।

दानः आर्द्रा, स्वाति, शत्भिषा नक्षत्रों के कालं में अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्रपत्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा जौ, तलवार आदि संकल्प करके ब्राह्मण को दान करें ।

व्यापार/नौकरीः- यदि राहु अधिक अंशों में बलवान है तो निम्नलिखित व्यापार और नौकरी में विशेष लाभ होता है ।

व्यापारः- गांजा, अफीम, भांग, रबड़ का व्यापार, लाटरी, कमीशन एजेंट, सर्कस की नौकरी या प्रचार विभाग की नौकरी, उच्च राज योग, म्युनिसिपैलिटी, जिला परिषद, विधान सभा, लोकसभा का सदस्य आदि ।

अथ राहु मंत्र

राहु ग्रह सम्बंधित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र, मन्त्र तथा गायत्री आदि भी पाठकों की सुविधा के लिए यहां दिये जा रहे हैं जो काफी लभकारी सिद्ध होंगे । नित्य 108 पाठ करने से चमत्कारी लाभ होता है ।

विनियोग :- ॐ कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

(नीचे लिखे कोष्ठकों में अंगों को छूते रहें ।)

अथ देहांगन्यास :- कया शिरसि (सिर) । नः ललाटे (माथा) । चित्र मुखे (मुख)। आ कंठे (गला) । भुव हृदये (हृदय) । दूती नाभौ (नाभि) । सदा कट्याम् (कमर) । वृधः मेढ्रे सखा ऊर्व्वोः (छाती) । कया जान्वोः (जांघ) । शचिष्ठया गुल्फयोः (गुल्फ) । वृता पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- कया नः अंगुष्ठाभ्यां नमः । चित्र आ तर्ज्जनीभ्यां नमः । भुवदूती मध्यमाभ्यां नमः । सदावृधः सखा अनामिकाभ्यां नमः । कया कनिष्ठिकाभ्यां नमः । शचिष्टया वृता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयदिन्यास :- कयानः हृदयाय नमः । चित्र आ शिर्षे स्वाहा । भुवदूती शिखायै वषट् । सदावृधः सखा कवचायः हुँ । कया नेत्रत्रयाय वौषट् । शचिष्ठया वृता अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम् :- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली ।
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम् ।।

राहु गायत्री :- नीलवर्णाय विग्रहे सैहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ।

बीज मन्त्र :- ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया व्वृता ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौं भ्रीं भ्राँ ॐ राहवे नमः ।

जप मंत्र :- ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः 18000 प्रतिदिन ।

राहु स्तोत्रम्

राहुः दानव मन्त्री च सिंहिकाचित्त नन्दनः ।
अर्ध कायः सदा क्रोधी चन्द्र - आदित्य - विमर्दनः ॥
रौद्रः, रुद्र प्रियः दैत्यः स्वर्-भानुः - भानु भीतिदः ।
ग्रह राजः सुधा पायी, राकातिथ्य-अभिलाषुकः ॥
काल दृष्टिः काल रूपः श्री कण्ठहृदय-आश्रयः ।
विधुन्तुदः, सैंहिकेयः, घोर रूपः महाबलः ॥
ग्रहपीड़ा करः दंष्ट्री रक्त नेत्रः महोदरः ।
पञ्च विंशति नामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः ॥
यः पठेत् महतीं पीड़ाम् तस्य नश्यति केवलम् ।
आरोग्यम्, पुत्रम्, अतुलाम्, श्रियम्, धान्यम्, पशून्-तथा ॥
ददाति राहुः तस्मै यः पठते स्तोत्रम्-उत्तमम् ।
सततम् पठते यः तु जीवेत् वर्षशतम् नरः ॥

राहु मंगल स्तोत्रम्

राहुः सिंहल देश जश्च निऋतिः कृष्णांग शूर्पासनो ।
यः पैठीनसि गोत्र सम्भव समिद् दूर्वामुखो दक्षिणः ।
यः सर्पाद्यधि दैवते च निऋतिः प्रत्याधि देवः सदा ।
पट् त्रिंस्थः शुभकृत् च, सिंहिक सुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

नोट :- उपरोक्त स्तोत्र का नित्य 108 पाठ करने से राहु प्रदत्त समस्त प्रकार की कालिमा, भयंकर क्रोध, अकारण मस्तिष्क गर्मी, अनिद्रा, अनिर्णय शक्ति, ग्रहण योग, पति-पत्नी विवाद तथा काल सर्प योग सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं । स्तोत्र पाठ करने के फलस्वरूप अखंड शांति, योग की परिपक्वता, पूर्ण निर्णय शक्ति तथा राहु प्रदत्त समस्त प्रकार के कष्टों से निवृत्ति हो जाती है ।

राहु क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या यह खाली बैठा है ?

क्या इसके पास कोई काम नहीं है ?

क्या आपकी इससे शत्रुता है ?

समस्त भ्रान्तियों का रहस्य

पिछले संदर्भ में अलग-अलग रूप से राहु के कार्य कलाप तथा राहु पीड़ा क्यों देता है का वर्णन किया था । इस लेख में हमने इसको और स्पष्ट किया है और यह बताने का प्रयास किया है कि राहु का कोई दोष नहीं है दोष हमारा है । हम कुकर्म करने से बाज नहीं आते और राहु हमें मारने से बाज नहीं आता है ।

यह अकाट्य सत्य है कि जीव को अपने किए हुए कर्म निश्चित भोगने पड़ेंगे । जब जीव धोखेबाज, दगाबाज या कर्ज लेकर वापस नहीं करता है या पैसा नहीं लौटाता है, निकृष्ट, दलित, गलित, निन्दनीय कार्य करता है, समाज की, कुल की, तथा शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन करता है तो राहु उसे क्रूरता पूर्वक प्रताड़ित करता है । राहु राक्षस होने के कारण बड़ी कठोरता से प्रताड़ित करता है । कठोरता से कर्म फल भुगवाता है । पागलपन, अनिद्रा तथा मस्तिष्क की चेतना को समाप्त करता है जिसके कारण जातक की निर्णय शक्ति खत्म हो जाती है और जातक अपने ही हाथों से अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारता है ।

यदि जातक बहुत अधिक निन्दनीय कर्मी हैं तो बचपन से ही राहु उसकी चेतना का हरण कर उसे घर से भगा देता है और ये भी याद नहीं रहने देता की मैं कहां से आया हूँ, मेरा कोई माँ बाप है, मेरा घर कहाँ है, मैं किसका पुत्र हूँ इन सबकी विस्मृति करा देता है । यहाँ तक कि रोटी पानी के लाले पड़ जाते हैं और जातक को दर-दर की नारकीय यातनाएँ झेलनी पड़ती हैं । उस समय जातक की एक नहीं चलती उसे कर्मफल भोगना ही पड़ता है । इस प्रकार कर्म का भुगतान करा के राहु पुनः जीव को ईश्वरवादी बना देता है ।

यदि आप गृहस्थी हैं

आप गृहस्थ धर्म का पालन कर रहे हैं । ग्रह पीड़ा के कारण धन नहीं कमाया जा रहा है, दुर्भाग्य होने के कारण जिस काम में हाथ लगाते हैं वही चौपट हो जाता है । उससे दुःखी होकर आप चोरी, डकैती का सहारा लेते हैं या कर्ज ले लिया फिर दिया नहीं, धोखेबाजी की, अथवा पत्नि होते हुए परस्त्री-रत रहते हैं, पत्नि से, बच्चों से धोखा करते हैं

तथा अन्य किसी से भी धोखा करते हैं और धोखा करके प्रसन्न होते हैं कि मैंने सबको धोखा दे दिया और उन्होंने मेरा क्या बिगाड़ लिया । अहंकार के वशीभूत होकर दूसरों की हत्या करने में नहीं हिचकिचाते हैं और अपने को ईश्वर मानने लगते हैं ।

अब आप सूक्ष्म दृष्टि से विचार करें कि यदि ऐसे पुरुषों को परमात्मा दण्ड न दे तो सृष्टि का क्रम बिगड़ जाएगा और उसके कारण सत्य कर्म गौण हो जाएगा । परमात्मा ने प्राणी को केवल कर्म करने की स्वतन्त्रता दी है लेकिन फल भोगने में ठीक परतन्त्र रखा है ।

अब उदाहरण द्वारा हम यह बताना चाहेंगे कि महर्षि भृगु जी ने इसकी व्याख्या कैसे की । 1975 में हम होशियारपुर भृगु ऋषि जी के आश्रम में अपनी कुण्डली का फलादेश सुनने गए थे । वहाँ पर पंजाब के एक जातक आये हुए थे । उसने कहा पंडित जी मेरा हाथ देखना, हमने हाथ देखा, मस्तिष्क लाईन में एक बहुत बड़ा द्वीप था हमने तुरन्त कहा कि आपके दिमाग में पागलपन और अनिद्रा है तथा निर्णय शक्ति भी भ्रमित है कैसे इस प्रकार निन्दनीय जीवन जी रहे हैं । हमने कहा तुम्हारी कुण्डली का फलादेश जो भृगु महाराज जी ने सुनाया है वह हमें सुनाओ ।

उसने बताया महर्षि भृगु ने कहा कि पूर्व जन्म में मैं हरिद्वार में निवास करता था बड़ा धर्मात्मा था समाज की सेवा करता था नित्य गंगा स्नान करता था । अच्छा प्रतिष्ठित आदमी था । एक बार मेरा मित्र मेरे घर आया था और वह एक लाख रुपया साथ लिए था। उसने कहा कि मित्र पैसा रखा है मैं गंगा स्नान कर आऊँ । ऐसा कहकर वह गंगा स्नान करने चल दिया । मित्र के जाते ही मैंने मित्र के थैले में एक लाख रुपया देखा और मन में बेईमानी पैदा हो गयी । सोचा बिना कमाए इतना रुपया मेरे पास आ रहा है इसे अपने पास रख लूँ । यह मेरा क्या बिगाड़ लेगा, किसी के सामने इसने रखा थोड़ी है क्या सबूत है जो यह मेरे से पैसा मांग सकेगा । पैसा मेरे घर में रखा है अतः यह धन अब मेरा है ।

मित्र गंगा स्नान करके आया उसने अपना थैला देखा पैसे गायब थे, तब वह कहने लगा तेरे रहते हुए तेरे घर से मेरा पैसा कहाँ गया, वह रो पीट कर परम दुःखी हुआ उसने कहा मेरा पैसा तूने रख लिया है । जब वह और जोर से रोया चिल्लाया तो उसने उसकी पिटाई कर दी । तब उसने कहा मित्र तूने मेरे साथ धोखा किया है अतः मैं तुझे शाप देता हूँ तू सात जन्म तक पागल होगा और तेरे परिवार वाले तुझे ही धोखा देंगे । तेरे लड़के तेरे मित्र इसी प्रकार सात जन्मों तक तेरे से धोखा करेंगे । पत्नि भी तेरे साथ भयंकर धोखा करेगी तब तुझे बोध होगा कि धोखा कैसा होता है, गंगा माँ तुझको इसी प्रकार दण्डित करेगी, ऐसा कहकर वह चला गया । महर्षि भृगु के अनुसार मेरा यह सातवाँ जन्म है, किसी भी जन्म में संतान नहीं हुई और अब इस जन्म में मैं पागल सा ही हूँ ।

इस फलादेश को सुनने के बाद हमें यह बोध हुआ कि जीव जो लोभवश कुकर्म कर बैठता है उसका प्रायश्चित नाना जन्मों में नाना प्रकार से करना पड़ता है और परमात्मा उससे ठीक उसी प्रकार भुगतान करवाता है जैसे उसने कर्म किए थे । इस प्रकार राहु कर्म का भुगतान कर योग-रत करता है और योग को परिपक्व करा प्राणी को सुख प्रदान करता है, प्रभु प्राप्ति में सहायक होता है । लेकिन हाय रे प्राणी तू अपने को नहीं झाँकता और कभी यह नहीं देखता कि तूने कितने पाप कर्म किए हैं और राहु जो तुम्हें पाप कर्मों का भुगतान करवा कर तुम्हें शुद्ध करता है, ऐसें कृपालु राहु से द्वेष करना या रखना अज्ञानता ही होगी । अतः राहु का जप यज्ञ कर प्राणीमात्र को राहु कृपा अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

यदि आप स्त्री या पुरुष हैं?

याद रखें, श्री मद् से मदान्ध होकर तथा जवानी के नशे में तथा बुरी संगति के अनुसार आपने समस्त मर्यादाओं का उल्लंघन किया, शास्त्राज्ञा का पालन नहीं किया अथवा माँ बाप की अवहेलना की, धर्मपत्नि को धोखा दिया, धर्मपत्नि रोती गिड़गिड़ाती मर गयी परन्तु उसकी एक नहीं सुनी ।

याद रखें कर्म का फल प्राणीमात्र को अवश्यमेव भोगना पड़ता है । परमात्मा ने कर्म का फल यथावत् भुगतान कराने के लिए राहु को नियुक्त किया है अतः राहु बगैर भेदभाव के निरन्तर प्राणियों से यथावत् कर्मभोग भुगवाते हैं । पत्नि के साथ जैसा धोखा किया हुआ होता है ठीक सात जन्मों तक ऐसा ही धोखा राहु उस जातक को प्रदान करता है ।

राहु कर्म के भुगतान हेतु सप्तम भाव या लग्न में आ बैठेगा या सप्तमेश से अपना सम्बन्ध बनाएगा । यदि जातक अधिक क्रूर कर्मी है तो लग्न में या सप्तम में राहु शनि मंगल बैठेंगे या सप्तमेश को प्रताड़ित करेंगे जिसके कारण जातक महान कष्ट प्राप्त करेगा और दाम्पत्य जीवन में जहर घूल जायेगा । याद रखें ग्रह पत्नि के अन्दर बैठकर उसके स्वभाव को क्रूर बनायेंगे और वह कटु शब्द बाण से पल-प्रतिपल जातक के हृदय को विदीर्ण करेगी । ऐसी कठोर शब्दावली का संधान करेगी जिसको सुनते ही बदन में ज्वाला भड़क उठेगी लेकिन जातक पत्नि का कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा । जैसा तुमने पहले पत्नि के साथ धोखा किया था इसी प्रकार वह पत्नि भी कई जन्मों तक यथावत् धोखा करेगी। जिस प्रकार से आपको कुल समाज की कोई परवाह नहीं थी ठीक उसी प्रकार वह भी किसी की परवाह न करते हुए तुम्हारा सर्वस्व छीन लेगी । पल-प्रति-पल अपमानित कर जीना दुश्वार कर देगी ।

याद रखें, जैसा तुमने उसके साथ व्यवहार किया था ठीक उसी प्रकार राहु तुम्हारे साथ करवायेगा । जो जातक प्रकृति के विरुद्ध चलते हैं शास्त्र और समाज की अवहेलना करते है, उनको प्रकृति बार-बार प्रताड़ित करेगी । कारण जो जातक धोखेबाज, दगेबाज, मकरबाज होते हैं उनको राहु अवश्यमेव प्रताड़ित करता है । अतः जीवन में किसी के साथ किसी भी प्रकार का धोखा न करें ।

केन्द्र का अनुभव

कुछ वर्ष पूर्व एक बबली नाम की सरदारनी केन्द्र में आयी । बड़ी हताश और बड़ी उदास थी । कुण्डली देखी तो लग्न में राहु नीच का बैठा था शनि से दृष्ट था और राहु की ही दशा चल रही थी । हमने कहा बेटी तुझे पतिसुख है ही नहीं, तेरे जीवन में दाम्पत्य सुखानुभूति है ही नहीं, इतना सुनते ही वह रो पड़ी और बोली पंडित जी मैंने अपने हाथों से अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी है हमने कहा वह कैसे तब उसने अपनी गाथा सुनायी।

वह बोली पंडित जी हम दोनों आराम से सुखमय जीवन जी रहे थे कि कुछ दिनों से अचानक भूचाल आया और हम दोनों में अनबन हो गयी । एक दिन हम दोनों में भयंकर झगड़ा हुआ और झगड़े के दौरान ही मेरे मुँह से निकल गया कि मैं पीहर जा रही हूँ और तुम यदि मुझे लेने आए तो तुम इन्सान की औलाद नहीं कुत्ते की औलाद हो । इतना कहकर मैं तुरन्त अपने पीहर चली आयी । पति फिर भी लेने आया तो मैंने कहा कुत्ते की औलाद तू पीछे-पीछे क्यों आ गया ? फिर मेरे भाईयों ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। वह बोली पंडित जी गुणवान पति और खुशहाल घर है लेकिन पता नहीं मेरी खोपड़ी पर कौन सवार हो जाता है जिसकी बदौलत मैं कराल शब्दों का प्रयोग करती हूँ और अपने आप सुख को त्याग दुःख अपना लेती हूँ । अतः आज मैं छोड़ दी गयी हूँ और महान् कष्ट प्राप्त कर रही हूँ ।

बबली द्वारा उसकी करुण गाथा सुनकर हमें यह बोध हुआ कि कर्मभोग भुगवाने हेतु राहु ही जातक के मस्तक पर सवार हो कराल, कठोर, शब्दों का प्रयोग कराता है और क्रूर शब्दावली के कारण ही जीवन नरकात्मक हो जाता है ।

तब हमने बबली से कहा जो हुआ वो हो गया अब तुम क्या चाहती हो वह बोली मैं अपना ही घर और अपना ही पति चाहती हूँ तब हमने कहा इसके लिए तुम्हें महान् परिश्रम तपस्या मंत्र जप करना पड़ेगा । वह बोली आप जो कहेंगे करूँगी लेकिन मेरा घर मेरा पति मुझे प्राप्त हो जाय ।

तब हमने कहा इसके लिए तुम्हें पाठात्मक रूप से राहु का जप करना पड़ेगा विधि बतायी । उसने 10-12 घंटे लगातार ज्योति जलाकर विधिवत् पाठ किया । मंत्र बल के प्रभाव से उसका पूर्वकृत समाप्त हो गया और वह अपने आपको, अपने पति को, पति

की मर्यादा को पहचानने लगी तथा मंत्र के प्रभाव से प्रभावित होकर उसका पति भी उसे लेने आया और वह आराम से पति के घर गयी और एक नवीन जीवन का आनन्द प्राप्त किया तथा समय पर उसे सुन्दर सन्तान भी प्राप्त हुई । आज वह पति के साथ दुबई में है दोनों एक दूसरे के बगैर नहीं रहते और सुखमय जीवन यापन कर रहे हैं । यह सारा विवरण कादम्बिनी में सन् 1995 में भी प्रकाशित हुआ था । कहने का भाव यह है कि मंत्र जाप से पूर्व कृत पाप का प्रायश्चित हो जाता है और उसके फलस्वरूप ग्रह अनुकूल हो जाते हैं तथा बिगड़े हुए सभी कार्य स्वतः बनने लग जाते हैं ।

याद रखें ग्रह पीड़ा को निवृत्त करने में केवल मन्त्र जाप ही सक्षम है और मंत्र जाप सरल भी है । केवल उच्चारण मात्र से मन लगे या ना लगे पूर्ण फल दे देता है इसलिए हर समस्या का समाधान मन्त्र जाप से सम्भव है । आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है ।

विशेष :- जिसका घर ग्रह उजाड़ देते हैं वह कितना भी यत्न प्रयत्न करे उसका घर दुबारा नहीं बसता चाहे वो दस विवाह क्यों न कर ले । इसलिए जिनका तलाक हुआ है उनके 1-2 प्रतिशत ही घर बसे हैं अन्यथा किसी का भी घर नहीं बसता । इसलिए ऐसे जातकों को ग्रहों का जप बड़े श्रद्धापूर्वक कर या करवा लेना चाहिए ।

रखैल या उप-पत्नि से निवृति का अचूक उपाय

पत्नी के होते हुऐ जिन पुरुषों ने रखैल या उप-पत्नि रख रखी हो, पत्नी के लाख समझाने पर तथा रिस्तेदारों के बार-बार समझाने पर समाज की मर्यादाओं का उलंघन कर जो पुरुष चुप-चाप रखैल या उप-पत्नी रखते हों उनकी धर्म पत्नी हताश न हो । अधोलिखित प्रयोग अपने घर में ही बैठ कर करे निश्चित ही उसका पति उसे प्राप्त हो जायेगा यह अकाट्य सत्य है ।

प्रयोग :-

स्नानोपरान्त एक लकड़ी के पटटे पर काला कपड़ा बिछायें एक तांबे के पात्र में साधारण जल भरकर मध्य भाग में रख लें । दांयी तरफ घी का और बांयी तरफ तेल का दीपक जलायें । जितना समय मिले जल ज्योति के सामने बैठकर राहु के बीज मंत्र **"ॐ भ्राम् भ्रीम् भौम् सः राहुवे नमः"** का जप करें । फिर चलते-फिरते उठते-बैटते रोटी बनाते, कपड़े धोते यानि गृह का सारा काम-काज करते हुऐ जप करती रहे । अगले दिन उस अभिमंत्रित जल को सूर्य को अर्घ दे दे और प्रार्थना करे कि हे सूर्य देव ! आपकी किरणों के द्वारा यह जल वहाँ पहूंच जाये जहाँ मेरा पति रखैल के साथ हो और हे राहु महाराज ! आपसे से यह प्रार्थना करती हूँ कि उन दोनों में भयंकर युद्ध हो जाये और मेरा पति मेरे पास आ जाये । यह सच्चे हृदय से प्रार्थना करे । यह जप, प्रयोग तब तक करते रहना चाहिऐ जब तक उसका पति पूनः अपने घर में वापिस न लौट आऐ । सावधानी यह बरतें कि रजोधर्म में जप न करें । खाने और लघुशंका करने के बाद हाथ-मुंह अवश्य साफ कर लें यह प्रयोग शत् प्रतिशत् सत्य है आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है । अधिक जानकारी के लिए **"राहु ग्रह पीड़ा निवारण विधि"** का अवलोकन करें ।

केन्द्र की विशेष खोज

सूर्य और चन्द्र जैसे तेजपुंज ग्रहों को काला करने की क्षमता रखने वाला राहु यदि जातक पर अपना प्रभाव डालेगा तो क्या हाल कर देगा यह बात विशेष विचारणीय है। मस्तिष्क को काला कर देगा जिसके कारण य। तो जातक घर छोड़कर भाग जाएगा या पागल हो जाएगा । यदि कम अंशों में है तो निर्णय शक्ति को खत्म कर लाखों रुपये की मार उसके हाथ से करा देगा या बुरी संगत में प्रवृत्त कर सारी सम्पति का नाश करवा कर अपयश का भागी बना देगा जिसके कारण अगला जन्म भी बेकार हो जाएगा । इस प्रकार जातक के किये हुए कर्मों का भुगतान राहु कराता रहता है । जातक को कम खा लेना चाहिए पर बुरे कर्म नहीं करने चाहिएं और बुरे कर्म होंगे नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे ।

लग्न में राहु का दुष्परिणाम

यदि लग्न में राहु हो तो जातक के मस्तिष्क में अकारण क्रोध, सप्तम में हो तो पत्नी से अकारण लड़ाई झगड़ा, वैमनुष्यता बनाये रखता है, जिसके फलस्वरूप बात-बात में क्रोध आता रहता है । राहु जातक की सूक्ष्म वाहक नाड़ियों को गर्म बनाये रखता है जिसके कारण रात्रि की निद्रा भंग हो जाती है । दुनिया की कोई औषधि जड़ी बूटी यन्त्र तन्त्र और कोई अन्य क्रिया राहु प्रदत्त गर्मी को नहीं निकाल सकती है । केवल ऋषि प्रदत्त मन्त्रों में ही शक्ति है जो अकारण क्रोध और सब काम को ठीक करने की क्षमता रखते हैं ऐसा केन्द्र का अनुभव है ।

जिन जातकों पर राहु का कराल कुप्रभाव आ जाता है तो वह या तो पागल हो जाता है या घर छोड़कर भाग जाता है । अतः राहु से पीड़ित व्यक्तियों के लिए राहु का जाप करवाना चाहिए जिससे दशा का प्रभाव कम होते ही वह स्वयं घर वापिस आ जाएगा। जो जातक पागल हो गया हो उसे चन्दन की माला पहनाई जाए तथा उसके निमित्त राहु के बीज मन्त्र का जप गोमेद या सफेद चन्दन की माला पर करें तथा स्तोत्र का पाठ नित्य कराया जाए । भूरे रंग के कुत्ते को बूंदी के लडडू बुधवार या शनिवार को खिलाने चाहिए । इसके साथ बन्दरों को चना गुड़ और भूरे रंग की गाय को ग्रास देना चाहिए । मस्तिष्क रेखा में द्वीप जिस आयु में होगा ठीक उसी वर्ष में राहु पागलपन अवश्य देगा । उसके लिए भी राहु के उपचार से लाभ होगा ।

गोचर में भी अशुभ फल

जब राहु लग्न में हो या गोचर में नीच का होकर अशुभ फल दे रहा हो तो जातक की सूक्ष्म वाहक नाड़ियों को गर्म बनाये रखेगा जिसके कारण रात्रि की निद्रा भी भंग हो जाएगी, सिर भारी बना रहेगा तथा काम करने की इच्छा नहीं होगी, पेट में अपच होकर कब्ज जैसी बीमारी हो जाएगी और धीरे धीरे हाथों व चेहरे पर कालिमा भी आ जाएगी तो ऐसे जातकों को अपने वजन के बराबर जौ आदि का तुलादान पूर्णिमा तथा शनिवार के दिन कराना चाहिए ।

कर्म फल

प्रायः राहु से पीड़ित जातक जीवन के किसी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते क्योंकि जो राहु सूर्य चंद्र को भी काला कर देता है उसके आगे बेचारे प्राणी की क्या ओकात ! अगर दूसरे ग्रह उसे सब कुछ दे रहे हों और राहु कष्ट कारक, अकारक हो तो कुछ भी हाथ नहीं लगता है । कारण स्पष्ट है, 80 प्रतिशत प्राणियों को शनि अथवा राहु पीड़ित किये रहता है यह उसके पूर्व कर्मों के कारण होता है । इस राहु तथा शनि की मार से बचने के लिए केन्द्र ने एक अचूक प्रयोग खोज निकाला है जिसके अब तक शत प्रतिशत परिणाम सामने आए हैं । यह प्रयोग इस प्रकार है । (यह प्रयोग पेज न० 211 पर विस्तार से पढें) ऐसा करते ही फौरन राहत मिलने लग जाएगी और राहु अपनी मार कम कर देगा। इसके साथ मदिरा आदि व्यसन से छुटकारा पाने के लिए उपरोक्त प्रयोग के साथ जातक स्वयं या उसकी पत्नी व अन्य सम्बन्धी राहु के मन्त्र का इन व्यसनों से छुटकारा पाने का संकल्प लेकर दायें घी का दीपक तथा बायें तेल का दीपक जला कर और दोनों दीपकों के मध्य तांबे के लौटे में एक रुद्राक्ष, एक चांदी का रुपया, पीपल की जड़, तुलसी दल, मरवे के पत्ते तथा गंगाजल डालकर मन्त्र का जाप करें और दूसरे दिन प्रातः इस जल को छान कर तुलसी दल सहित पी लें या पिला दें और फिर दुबारा यह चीजें डाल कर मन्त्र जाप करें । ऐसा कम से कम 21 दिन या जब तक पीड़ा समाप्त न हो तब तक करना चाहिए । अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्ति हेतु निरन्तर करते रहना चाहिए । ऐसा करने से इन व्यसनों से छुटकारा अवश्य मिल जाएगा । इस प्रयोग से तंत्र आदि से पीड़ित जातक को भी राहत प्राप्त होती है । ऐसा केन्द्र ने बहुत से जातकों द्वारा करवाकर शत प्रतिशत उत्तम परिणाम प्राप्त किये हैं ।

इस प्रयोग को केन्द्र ने उन स्त्रियों द्वारा भी करवाया है जिनके पति सब कुछ होते हुए भी व्यसन और दूसरी नारियों के चंगुल में फंस जाने के कारण उन्हें मारते पीटते तथा तंग करते रहते थे, यहां तक कि सम्बन्ध विच्छेद हो गया था या सास बहू की आपस में सदा ठनी रहती थी आदि । इस प्रयोग के अनुभव आश्चर्यजनक एवं चमत्कारिक हैं । अतः केन्द्र का यह कहना है कि ऐसे जातक इस प्रयोग को अवश्य करें और लाभ उठाएं, स्त्री कोई कूड़ा करकट नहीं है, वह शक्तिमयी है और उसे अपनी शक्ति की पहचान कर इस प्रयोग द्वारा अपने जीवन में आए कष्टों का मुकाबला करना चाहिए । सफलता अवश्य मिलेगी ।

सत्ता के इच्छुक लोगों के लिए

जो जातक सफल कूटनीतिक तथा राज्य सत्ता के इच्छुक हों या अखण्ड शान्ति, योग चाहते हों उन्हें श्रद्धापूर्वक राहु के एक करोड़ मंत्रों का जाप हृदय से कर या करवा लेना चाहिए राहु राज्य की कूटनीति का कारक, गृहस्थ जीवन को सफल बनाने में सहायक

है । मानव को जीवन में एक करोड़ राहु मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए । घर से भागे हुए व्यक्ति के लिए उसके सम्बन्धी उनका संकल्प लेकर मन्त्र जाप करेंगे तो जातक अवश्य वापिस आ जाएगा क्योंकि राहु मस्तिष्क का कार्य कलाप बंद कर देता है । यदि एक करोड़ मन्त्र जाप करने की शारीरिक सामर्थ्य न हो या करवाने के लिए धन का अभाव हो तो चार बार में 24-24 लाख के चार चरण सुविधा अनुसार कर या करवा लेना चाहिए । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है तभी सफलता प्राप्त होगी । केन्द्र में इसे 21 या कम दिनों में शास्त्रोक्त विधि से वैदिक ब्राह्मणों द्वारा करवाने का प्रबन्ध है । इच्छुक व्यक्ति इसका लाभ उठा सकते हैं ।

हस्त रेखा शास्त्र में राहु

अन्य ग्रहों की भांति राहु के लिए भी हथेली में स्थान नियत है । इस स्थान पर दृष्टिपात कर जीवन में पड़ रहे राहु के प्रभाव को जाना जा सकता है ।

राहु के लिए केन्द्र की एक विशेष खोज :

पीपल पूजन एवं परिक्रमा: विस्तृत विवरण पृष्ठ 257 पर पढ़ें

वेदों में राहु

राहु की महिमा चारों वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में राहु की पूजा की जाती है ।

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया सचिष्ठया व्रृता ।

राहु ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र की एक या पांच माला जप करना चाहिए । कारण, साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केंद्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण, इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहां राहु रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

राहु बीज मंत्र : ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।
राहु बीज मंत्र सरल भाषा में :- ॐ भ्राम् भ्रीम् भ्रौम् सः राहवे नमः ।

करालवदनः खड्ग-चर्मशूलवरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुस्तन्त्रे प्रशस्यते।

अधिक जानकारी के लिए राहु ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें

भगवान केतु

केतु ग्रह पीड़ा निवारण विधि

तथा

अमोघ केतु स्तोत्र

(वेदों पुराणों से संकलित)

अथ ध्यानम्

धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।
किरीटकेयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः ।।

केतु सम्बन्धी सभी भ्रमों का निवारण करने वाला मौलिक, शोधपूर्ण विवरण

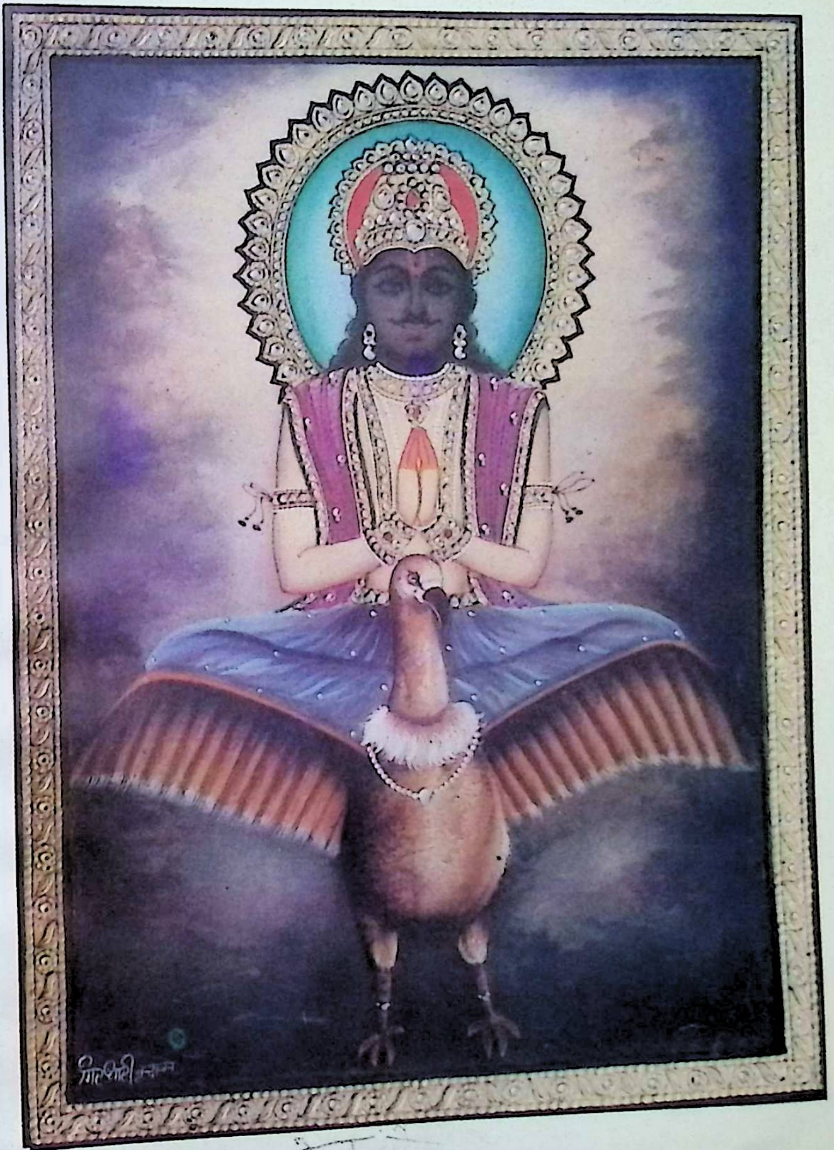

केतु

With Best Compliments from :

Kailash Hospital & Research Centre Ltd.

KHRC

H-33, Sector-27, Noida-201 301
Ph. : 91-4555444, 4533333, 4535455 (16 Lines)
Fax : 011-8-4552323
EMERGENCY LINE : 4546546, 4546000, 4546789

A 250 BED SUPER SPECIALITY & MULTI SERVICES HOSPITAL

- WHOLE BODY C.T. SCAN & 800 mA X-RAY.
- ONLY FULLY AUTO ANALYSER. HITACHI 704 JAPAN IN NOIDA, AUTO CELL COUNTER AND BLOOD GAS ANALYSER (DENMARK) WITH FULL TIME DOCTOR PATHOLOGIST, BIO-CHEMIST & MICRO-BIOLOGIST.
- LABORATORY, C.T. SCAN, X-RAY, CHEMIST SHOP & BLOOD BANK 24 HOURS & 365 DAYS A YEAR.
- Fully Equipped Baby Nursery with Latest Ventilators, Infant Warmers, Servo Incubators APNOEA Monitors, Pulse Oximeter.
- Four Major Operation Theatres with Zero Bacteria O.T. Equipped for Micro, Neuro, Plastic, Laparoscopic, Cardiothoracic Surgery.
- COLOR DOPPLER, Ultrasound, T.M.T. Dialysis, Lung Function Test, Uroflometry, EEG, Dental, Physiotherapy.
- Most Modern 20 Bed ICCU with Ventilators & Defribrilators, Cardiac Monitor and Burn Unit.
- 104 Specialist & Super specialist Doctors.
- GENERAL & EXECUTIVE MEDICAL CHECK-UP SCHEME.
- LITHOTRIPSY AND MAMMOGRAPHY MACHINES- FIRST IN NOIDA

1. First Aid Casuality Services have been made free for Economically Weaker Classes.
2. If you find any injured person by the roadside, kindly shift the patient to our hospital or inform on above mentioned telephone numbers. There will be no enquiry from you.
3. Our hospital charges are much less as compared with other similar hospitals. Yet, the quality of service at this hospital speaks for itself.
4. All Charitable Services are managed by KAILASH CHARITABLE TRUST (Regd.). All donations of this Trust are 100% Tax Exempted.

OUR GREATER NOIDA HOSPITAL at 23, INSTITUTIONAL AREA IS NOW FULLY FUNCTIONAL

उदर संरक्षक दुर्घटना एवं शल्य क्रिया का जनक तथा मोक्ष कारक केतु

पं० श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा रचित केतु सम्बन्धी कृति में प्रस्तुत हैं हमारे सौर मंडल के केंद्र, जीवन प्रदाता केतु के संबंध में वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य ग्रंथों में प्राप्त सामग्री का सार, ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र में केतु का महत्व तथा विश्व सहित भारत में केतु पूजा की परंपरा, आदि की प्रामाणिक जानकारी।

इस पठनीय और संग्रहणीय कृति के विशिष्ट अध्याय :

- **केतु की उत्पत्ति**
- **अंतरिक्ष में केतु की स्थिति**
- **पौराणिक ग्रंथों में केतु**
- **नक्षत्र विज्ञान और केतु**
- **द्वादश भावों में केतु**
- **केतु की महादशा**
- **हस्तरेखा शास्त्र में केतु**
- **केतु के स्त्रोत, मंत्र एवं बीज मंत्र**
- **केतु के दोषों के निवारण के अचूक उपाय**
- **केतु के रत्न, उपरत्न और जड़ी-बूटियाँ**

केतु

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः ।
ग्रध्रासनागता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः ।।
-मत्स्य पुराण

राहु की भांति केतु भी नवग्रहों में से एक है । राहु की ही भांति केतु का भी कोई आधार स्तम्भ नहीं है । चंद्रमा के कान्तिवृत का दक्षिणी कटाव बिंदु ही केतु कहलाता है । अंग्रेजी में इसे 'सदर्न कोड' कहते हैं । राहु की तरह ही केतु के विषय में भी अनेक पौराणिक आख्यान मिलते हैं । राहु दैत्यराज हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका का ज्येष्ठ पुत्र था, जबकि केतु कनिष्ठ ।

एक आख्यान के अनुसार जब समुद्र मंथन के पश्चात अमृत वितरण के समय राहु ने मायावी विद्या से देवरूप धारण कर अमृत पी लिया तो सूर्य-चंद्र ने उसकी वास्तविकता उद्घाटित कर दी । विष्णु ने अपने चक्र से राहु का सिर काट दिया । राहु की शीश विहीन देह ही केतु कहलाती है । बाद में चंडिका ने राहु के शरीर द्वारा देवताओं की बतायी गई विधि के अनुसार केतु का शरीर फाड़कर अमृत पी लिया और उसकी देह विलीन हो गयी । बाद में राहु की भांति केतु को भी ग्रहत्व प्राप्त हो गया ।

खगोलीय विज्ञान में केतु

खगोलीय विज्ञान में केतु का उल्लेख केवल चंद्रमा और क्रांतिवृत के कटाव बिंदु के रूप में मिलता है ।

ज्योतिष शास्त्र में केतु

केतु मोक्षकारक ग्रह है और इसका प्रभाव मंगल ग्रह की तरह है । केतु असंख्य हैं । इनमें धूमकेतु प्रधान है इसका रंग धूम्र के समान है । यह सूर्य से 10,000 योजन नीचे नक्षत्र की तरह घूमता रहता है । केतु को मानव शरीर में उदर के निचले भाग में तथा पैरों के तलवों में स्थान मिला है । यह उदर को ठीक ठाक रख, पाचन क्रिया को सही चलाकर पैरों द्वारा प्राणी को चलने की शक्ति प्रदान करता है । यह साधक को सिद्ध अवस्था प्राप्त करने में तथा उसके मन और बुद्धि की समस्त वृत्तियों को केन्द्रित कर उसके मनोबल को ऊर्ध्वगति प्रदान कर परमात्मा के चरणों का दिव्य रस पान करवाने में सहायक होता है । यदि उच्च का हो और इसकी महादशा हो तो परमात्मा में मन हठात् लगता है । अध्यात्मवादियों को मोक्ष दिलाने में यह बड़ी सहायता करता है ।

केतु के नक्षत्र हैं :- अश्विनी, मघा, मूल ।

द्वादश भावों में केतु

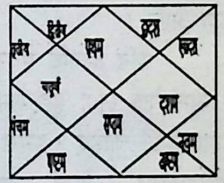

प्रथम भाव - अशांत मन, चंचल वृत्ति, बंधुओं को कष्ट, वायु प्रकोप से ग्रस्त

द्वितीय भाव - पितृ धन की कठिनता से प्राप्ति

तृतीय भाव - चंचल स्वभाव, ऐश्वर्यशाली, भूत प्रेत में आस्थावान

चतुर्थ भाव - मातृ- पितृ सुख से हीन, निरुत्साही

पंचम भाव - पराक्रमी, पर दास, अल्प संतति, बंधुओं से कष्ट

षष्ठ भाव - सुखी, निरोगी, मितव्ययी, प्रेत बाधा से पीड़ित

सप्तम भाव - अशांत मन, व्यर्थ की चिंता, पत्नी पुत्र को पीड़ा, जलभय

अष्टम भाव - तेजहीन, चतुर, स्त्री द्वेषी, धनाभाव

नवम् भाव - भाग्यशाली, परोपकारी, भातृ-भाव

दशम् भाव - भाग्यवान तथापि कष्ट भी, पितृ सुख हीन

एकादश भाव -धनी, सुखी, विद्वान्, सद्गुणी

द्वादश भाव - उच्च पदस्थ, तेजस्वी बुद्धिमान, शंकालु, कपटी

चेतावनी :- जातक अपने जन्मांक को स्वयं देखें यदि केतु प्रथम, द्वितीय, तृतीया, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, भावों में किसी भी राशि का विशेषकर नीच का बैठा हो तो निश्चित ही आर्थिक, मानसिक, भौतिक पीड़ाऐं अपनी महादशा, अन्तरदशा में देगा इसमें कोई संशय नही है । समय से पहले यानि महादशा, अन्तरदशा आरंभ होने से पहले केतु के बीज मंत्र का अवश्य जप कर लेना चाहिए। ताकि केतु प्रताड़ित न करे और वह समय सुखपूर्वक व्यतीत हो ।

केतु सम्बन्धी अन्य विवरण

अगर मनुष्य पूर्व जन्म में क्रूरकर्मी होता है अर्थात् चोरी डकैती आदि करके और अपने पराक्रम का दुरुपयोग करके दूसरों को सताता है तो यह नीच का होकर पहले विविध रोगों और कष्टों को देता है । उदर में बैठ कर अन्न जल को पचने न देकर बार-बार अतिसार और दस्त बनाये रखता है । यदि शनि का सहयोग साथ हो जाये तो दुर्घटना करा देता है । घर में ही फिसला कर हड्डी पसली तोड़ देता है । शल्य क्रिया बार-बार कराता है । गर्भपात करा कर शुद्ध कराता है । इसी प्रकार अगर शुभ कर्मी जातक होता है तो उदर के समस्त रोगों से रक्षा कर, दुर्घटनाओं तथा शल्यक्रिया आदि से बचाता है । अमावस्या केतु की पूजा का विशेष दिन है ।

केतु ग्रह से सम्बन्धित रोग, उनके उपशंमन हेतु धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्न, रत्नों के अभाव या न पहन सकने के कारण जड़ी-बूटियों को धारण करने की विधि तथा केतु ग्रह से सम्बन्धित व्यापार और नौकरी आदि का विवरण इस प्रकार है ।

रोग :- चर्म रोग, मस्तिष्क तथा उदर रोग तथा जटिल रोग, अतिसार, दुर्घटना, शल्य क्रिया आदि ।

यदि औषधि सेवन से भी रोग न जाये तो ग्रह का प्रकोप अर्थात ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा लगी हुई समझनी चाहिए और बिना पूछे मन्त्र जाप, रत्न एवं जड़ी-बूटियां धारण करनी चाहिएं । इससे रोग हल्का होगा और ठीक होने लगेगा ।

रत्न/उपरत्न :- वैदुर्य, लहसुनियां, गोदन्ती संगी ।

सवा पांच रत्ती वजन के बराबर मंगलवार या अमावस्या को अश्विनी नक्षत्र में धारण करें इससे लाभ होना प्रारम्भ हो जाएगा और 40 प्रतिशत लाभ होगा ।

जड़ी-बूटियां :- असगंध की जड़ मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र में काले रंग के धागे में दांये हाथ में धारण करनी चाहिए । इससे ग्रह का दुष्प्रभाव कम हो जाता है ।

दान :- अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों के काल में, कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वज, सप्तधान्य, उड़द, कम्बल, काले उड़द , सुवर्ण आदि संकल्प करके ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए ।

व्यापार/नौकरी :- यदि केतु अधिक अंशों में बलवान हो तो निम्नलिखित व्यापार, नौकरी में विशेष लाभ देता है । **व्यापार :-** ताम्र और पारे आदि का व्यापार, भवन बनाने सम्बन्धी ठेकेदारी या भवन बनाने की सामग्री, कृषि सम्बन्धी कार्य, दवाइयों का व्यापार आदि । **नौकरी :-** फौज अथवा पुलिस उच्च अधिकारी, भूगर्भ विशेषज्ञ, डाक्टरी नौकरी, वैद्यक, चिकित्सा, कृषि, पशुपालन आदि ।

अथ केतु मंत्र

केतु ग्रह सम्बन्धी पाठ, पूजा आदि के लिए स्त्रोत, मन्त्र तथा गायत्री आदि भी यहां पाठकों की सुविधा के लिए दिये जा रहे हैं जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे। नित्य 108 पाठ करने से चमत्कारी लाभ प्राप्त होता है।

विनियोग :- केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।।

कोष्ठकों में नीचे लिखे अंगों को छूते रहें :-

अथ देहांगन्यास :- केतुं शिरसि (सिर) । कृण्वन् ललाटे (माथा) । अकेतवे मुखे (मुख) । पेशो हृदये (हृदय) । मर्या नाभौ (नाभि) । अपेशसे कट्याम् (कमर) । सं ऊर्व्वोः (छाती) । उषद्भिः जान्वोः (घुटने) । अजायथाः पादयोः (पैर) ।

अथ करन्यास :- केतुं कृण्वन् अंगुष्ठाभ्यां नमः (अंगूठा) । अकेतवे तर्ज्जनीभ्यां नमः। पेशोमर्या मध्यमाभ्यां नमः । अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः । समुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । अजायथाः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास :- केतुङ्कृण्वन् हृदयाय नमः (हृदय) । अकेतवे शिरसे स्वाहा। (सिर) । पेशोमर्या शिखायै वषट् (शिखा) । अपेशसे कवचाय हुँ (दोनों भुजा)। समुषद्भिः नेत्रत्रयाय वौषट् (नेत्र) । अजायथाः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम् :- धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।
किरीटकेयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः ।।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

धूम्रो द्विबाहुः वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थः विकृत-आननः च ।
किरीट केयूर विभूषितः यः सदा-अस्तु मे केतु गणः प्रशान्तः ।।

केतुगायत्री :- अत्रवाय (धूम्राय) विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्

बीज मन्त्र :- ॐ स्त्राँ, स्त्रीं, स्त्रौं सः भूर्भुवः स्वः, ॐ केतुङ् कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथा । ॐ स्वः, भुवः, भूः, ॐ सः स्त्रौं, स्त्रीं, स्त्राँ, ॐ केतवे नमः ॥

जपमन्त्र :- ॐ स्त्राँ, स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः । 17000 प्रतिदिन ।

केतुपंचविंशतिनामस्तोत्रम्

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

केतुः कालः कलयिता धूम्र केतुः विवर्णकः ।
लोक केतुः महाकेतुः सर्व केतुः भयप्रदः ॥
रौद्रः रुद्र प्रियः रूद्रः क्रूर कर्मा सुगन्ध धृक् ।
पलाश धूम संकाशः चित्र यज्ञोपवीत धृक् ॥
तारागण विमर्दी च जैमिनेयः महाधिपः ।
पञ्चविंशति नामानि केतोः यः सततं पठेत् ॥
तस्य नश्यति बाधा च सर्व केतु प्रसादतः ।
धन धान्य पशूनां च भवेत् वृद्धिः न संशयः ॥

केतु मंगल स्तोत्रम्

केतुः जैमिनि गोत्रजः कुश समिद् वायव्य कोणे स्थितः ।
चित्रांङ्गः ध्वज लाञ्छनो हिम गुहो यो दक्षिणा शा मुखः ।
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्र सहितः प्रत्याधि देवः सदा ।
षट् त्रिंस्थः शुभ कृच्च बर्बर पतिः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

नोट :- नित्य 108 स्तोत्र पाठ करने से जीवनपर्यन्त दुर्घटनाओं तथा शल्य क्रियाओं से मुक्ति, समस्त प्रकार के उदर विकारों से निवृति, केतु कृत समस्त उपद्रव तथा शत्रुओं से निवृति अपने आप हो जाती है । याद रखें केतु मोक्ष कारक ग्रह है । पाठ के फलस्वरूप मोक्ष प्राप्ति हेतु इच्छाओं की पूर्ति तथा मोक्ष प्राप्ति हो जाती है ।

केतु क्यों प्रताड़ित करता है ?

क्या यह खाली बैठा है ?

क्या इसके पास कोई काम नहीं है ?

इसकी आपसे क्या शत्रुता है ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

पूर्व संदर्भ में हम केतु की महिमा का अलग-अलग रूप से वर्णन कर चुके हैं । इस संदर्भ में हम केवल यह बता देना चाहते हैं कि केतु क्यों पीड़ा देता है क्यों कष्ट देता है तथा किन कारणों से केतु जीव को बार-बार शल्य क्रियाएं तथा दुर्घटनाएँ प्रदान करता है और हर कार्य में यह क्यों बाधा-जनक हो जाता है ।

"क्षीणे पुण्येमर्त्यलोकेविशन्ति" के अनुसार जब पुण्य क्षीण हो जाते है तो प्राणी को मृर्त्यलोक में पुनः जाना पड़ता है । पुण्यों के प्रभाव से जीव स्वर्ग में निवास प्राप्त करता है और पुण्यों के उपभोग हो जाने पर पुनः मृत्युलोक में जन्म होता है । अतः जातक को स्वर्ग प्राप्ति का लक्ष्य न रखकर मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य रखना चाहिए ताकि पुनः-पुनः आवागमन का जंजाल ही न रहे ।

वह कैसे प्राप्त हो सकता है, यह विभाग परमात्मा ने केतु को प्रदान किया है अर्थात् केतु ही मोक्षकारक ग्रह है । केतु जिस किसी ग्रह के साथ बैठता है वैसा ही फल प्रदान करता है । बारहवें भाव के केतु को मोक्षदायी इसलिए माना गया है कि ये जीवन में हर सुख को रोकता है और बोध करवाता है कि तुमने संसार का सुख बहुत भोग लिया है अब प्रभु चरणों का सुख प्राप्त करो । इसका प्रमाण माँ कुन्ती के प्रसंग से स्पष्ट है । आखिर उन्होंने प्रभु आनन्द कन्द श्री कृष्ण चन्द जी से यह वर प्राप्त क्यों किया कि प्रभु यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे विपत्ति ही प्रदान करें । कैसा अद्भुत वर मांग था उन्होंने ? इसके पीछे रहस्य यही था कि जब कष्ट प्राप्त होता है तो 'हा राम' 'हे भगवान' आदि शब्दों का स्वतः उच्चारण हो जाता है । तभी कुन्ती ने कहा प्रभु वो सुख वैभव ऐश्वर्य मुझे नहीं चाहिए जो मेरे केशव से मुझे बंचित करा दे मुझे तो वो वर चाहिए जो पल प्रतिपल केशव का स्मरण कराये अर्थात् सांसारिक सुख नहीं चाहिए, आध्यात्मिक सुख चाहिए । गोलोकधाम में विश्राम चाहिए, मोक्ष चाहिए ।

छठे भाव का केतु हर सुख प्रदान कर प्रत्येक प्रतियोगिता में सफलता प्रदान करता है । मकान, गाड़ियों में झण्डा केतु कृपा से ही फहराता है । मंत्री, मुख्यमंत्री प्रधान मंत्री आदि महत्वपूर्ण पद आसीन कराने में केतु की ही विशेष भूमिका होती है । छठे भाव में केतु बैठकर हजारों दोषों को शान्त करता है ।

केतु का निवास उदर तथा तलवों में है । पूर्व जन्म के अर्जित सुकृत कर्मों के आधार पर जातक अतुलित लक्ष्मी प्राप्त करता है । जिन जातकों का पुण्य बल नहीं होता वे गरीब परिवार में जन्मते पनपते हैं और दरिद्रतामय जीवन गुजारते हुए मौत के गाल में समा जाते हैं ।

जब जातक श्रीमद् से मदान्ध होकर अनुचित से अनुचित घृणित कार्य करना आरंभ कर देता है । या जो जातक दूसरों को मारते काटते हैं, या पैसे के कारण हत्यारे बन जाते हैं अथवा रात दिन पशुओं पक्षियों को काटते हैं या अपनी तृप्ती, शान्ति हेतु शौक से निरपराध पक्षियों को मारते हैं या पैसे के कारण हत्यारे बन जाते हैं । किसी की एक नहीं सुनते, घर परिवार का उन्हें भय नहीं होता तथा हमेशा दूसरों को नाना प्रकार से प्रताड़ित करते रहते हैं ।

याद रखें, केतु को परमात्मा ने कर्म फल भुगतान हेतु ही ग्रह पद पर नियुक्त किया है । जैसा जो कार्य करता है ठीक उसी प्रकार उन कर्मों का फल केतु कई जन्मों तक भुगवाते हैं । इस जन्म में उन कुकर्मों के फलस्वरूप बार-बार शल्य क्रिया करवाकर दुर्घटना तक करवा देता है । अन्यान्य इसी प्रकार की दुर्घटनाएं घटित होती रहती हैं और हमेशा अतिसार बनाए रखता है जिससे जातक का जीना दुश्वार हो जाता है । नाना प्रकार की आधि-व्याधि जातक को घेरे रहती हैं । इस प्रकार उसे मिट्टी में मिला देता है केतु ।

विगत दो दशकों के अनुभव से यह ज्ञात हुआ कि जब केतु दुर्घटना कराता है तो सामने देखने के बावजूद भी दुर्घटना हो जाती है । कारण उसका पाप उसे अन्धा कर देता है और वह देख रहा है कि सामने गाड़ी है लेकिन मार देता है और दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है । यह अनुभव बहुत से जातकों के जन्मांकों पर कर, सत्यता को शाश्वत पाया तथा देवकृपा द्वारा ही अनूठे योगों का ज्ञान प्राप्त हुआ है यह उन्हीं की कृपा दया है ।

जो लोग धार्मिक हैं, परमात्मा परायण हैं, शुभकर्मी हैं तथा वेद सनातन परिधि में बंधे हुए हैं, परोपकारी हैं किन्हीं कारणों से माया जाल में फंसे हैं । यदि ऐसे लोग केतु का मंत्र, जप, यज्ञ कर केतु कृपा प्राप्त कर लें तो उन्हें शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त होता है । अतः प्रत्येक जातक को आत्मकल्याण हेतु केतु का जप यज्ञ कर या करवा लेना चाहिए ताकि इस जन्म मरण के चक्कर से न जूझना पड़े ।

उपरोक्त का हार्दिक पठन मनन चिन्तन करें और विचारें कि केतु का क्या दोष है। जैसा हमने किया है वैसा ही भुगवा रहा है इसलिए कम खा लेना चाहिए बुरे कर्म नहीं करना चाहिए और सांसारिक सुखों को तिलांजलि देते हुए केतु का जपन, मनन करना चाहिए लेकिन दोष केतु का न मानते हुए अपने दोषों को मानना, कोसना चाहिए तथा प्रायश्चित कर लेना चाहिए । आप चाहे कितना रोयें गिड़गिड़ाएं ग्रह आपको राहत नहीं देगा केवल उसी ग्रह का विधिवत जप यज्ञ कर या करवा लिया जाए तभी कष्ट निवृत्ति, वृद्धि मान सम्मान सद्कर्म तथा मोक्ष प्राप्त होता है ।

श्रीमद् की समीक्षा

लक्ष्मी का वाहन उल्लू है, और जब लक्ष्मी घर में प्रवेश करती हैं तो उसके साथ-साथ उल्लू का भी प्रवेश होता है । लक्ष्मी अपार वैभव, धन, ऐश्वर्य प्रदान करती है । और उल्लू बुद्धि को कुण्ठित, मलीन करता है । इसलिए जब बुद्धि और मन उल्लू के कारण मलीन हो जाते हैं तो जातक श्रीमद् से मदान्ध हो जाता है और मदान्ध होकर माँ लक्ष्मी का अनादर करने लगता है । धन रूपी शक्ति जो उसे बड़े तप दान पूजा और सत्कर्म, संतसेवा से प्राप्त हुई है उसका दुरुपयोग करना आरम्भ कर देता है । जिसके फलस्वरूप उसका सुकृत नष्ट होना आरंभ हो जाता है । सुकृत नष्ट होने से जातक पुनः नरकगामी बन जाता है तथा उल्लू के प्रभाव से उसकी चेतना शक्ति नष्ट हो जाती है और वह शास्त्र, समाज, कुल, परिवार किसी की परवाह नहीं करता और अहंकार के वशीभूत होकर भयंकर से भयंकर कुकृत्य कर डालता है ।

इससे बचने के लिए शास्त्र ने आज्ञा दी है कि तुम लक्ष्मी के साथ-साथ गणेश जी की भी पूजा करो कारण भगवान गणेश बुद्धि के अधिष्ठातृ देवता हैं और बराबर सद्बुद्धि बनी रहे तथा बुद्धि का कभी विनाश न हो तथा लक्ष्मी प्राप्त करने पर भी श्री मद् कुछ बिगाड़ नहीं सके इसीलिए लक्ष्मी के संग गणेशाराधन करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है । अन्त में प्रभु कृपा की भी निश्चित प्राप्ति होती है । गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में स्पष्ट उल्लेख किया है कि–

दोहा :-

श्री मद् बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥

गोस्वामी जी ने चुनौती पूर्ण कहा है कि श्रीमद् ने अन्धा किसको नहीं किया । कौन ऐसा माई का लाल है जो प्रभुता पाकर श्रीमद् से मदान्ध न हुआ हो तथा जिसे नारि-नयन रूपी सर न बेध गया हो । यदि यह सब बातें किसी पर लागू नहीं होती तो वह हैं श्री हनुमन्त लाल जी लेकिन नारि-नयन सर मदादि उन्हें क्यों नहीं व्याप सका विचार करें। इसका मूल कारण यह था कि हनुमान जी ने अपने अस्तित्व को माना ही नहीं भगवान श्री राम को ही सर्वस्व माना इसीलिए हनुमान जी को माया छू नहीं पाई, जिसके कारण हनुमान जी ज्ञानियों में अग्रगण्य, भक्त शिरोमणि तथा संसार का उद्धार करने में सामर्थशाली रहे और भगवान राम के कृपा पात्र बने । इसी प्रकार जो प्राणी अपना कुछ समझता ही नहीं है तथा तेरा तुझको अर्पण की भावना रखते हुए सद्कर्म करता है उसे भी माया नहीं व्याप्ती है।

कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय ।
या खाये बौराय नर, वा पाये बौराय ।।

याद रखना चाहिए धन का आना कुछ और बात है और धन को रोक पाना कुछ और बात है । धन वही रोक पाते हैं या धन का पूर्ण उपभोग वही कर पाते हैं जो पुण्यात्मा ईश्वर भक्त, परोपकारी, समाज सेवी हैं अन्यथा वही धन उन्हें महान् कष्टदायक, विनाशकारी होता है तथा नर्कगामी बनाने में एकमात्र सहायक होता है । याद रखें सोने में धतूरे से सौ गुणा अधिक नशा होता है, धतूरा खाने के बाद आदमी नशे में थोड़ी देर के लिये पागल होता है परन्तु धन पाकर आदमी तुरन्त बौखला जाता है । पागल हो जाता है ।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि श्री का मद तो अवश्यमेव पागल करेगा और पागल होने के बाद पागलों जैसा कार्य भी होगा । केवल ईश्वर भक्ति और ईश्वर प्रार्थना प्रभु आराधन ही इस नशे को समाप्त कर सकती है अन्यथा और कोई ऐसा साधन नहीं है जो जातक स्वयं को इस नशे से बचा सके । कारण कि ईश्वर भक्ति में अहम भाव नहीं आता और प्रभु कृपा के कारण ही धन का नशा नहीं होता है ।

उपरोक्त से यह स्पष्ट हो गया है कि प्राणीमात्र को ईश्वर भक्ति करनी चाहिए ताकि धन का नशा न व्यापे । नीति कहती है धनादि धर्मः ततः सुखम् अर्थात् धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है ईश्वर कृपा प्राप्त होती है । अतः प्राणीमात्र को अपने कल्याण हेतु धन मद से बचने हेतु प्रभुभक्ति करना दान यज्ञादिक कर्म करना आवश्यक नहीं अनिवार्य है ।

केन्द्र का अनुभव

यदि ईश्वर भक्ति में मन न लगे तो जातक को प्रथम नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्र जाप कर लेना चाहिए अथवा करवा लेना चाहिए । सूर्य से प्रकाश लें, चन्द्रमा से मन शुद्ध करें, मंगल से बल पराक्रम प्राप्त करें शनि से तप करना सीखें, राहु से योग परिपक्व करें और केतु से मोक्ष प्राप्त करें । इसके बाद मूल प्रकृति को जानने हेतु भगवती दुर्गा के नवार्ण मंत्र का एक करोड़ जप करें इसके बाद इष्ट आराधन कर सभी लौकिक पारलौकिक सुखों को प्राप्त करें ।

केन्द्र का यह अनुभव चुनौतीपूर्ण है कि नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्र करने के बाद बुद्धि कुण्ठित नहीं होगी और श्रीमद् भी मदान्ध नहीं कर पाएगा एवं हर प्रकार के व्यसनों से वचा जा सकेगा । याद रखें ग्रहों के मंत्र शापित नही हैं और बिना मन लगाए जपने मात्र से ही पूर्ण फल प्रदान करते है । शेष सभी मंत्र शापित है । कुछ दिन ग्रहों के मंत्रों का जाप कर प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करें । अन्य जानकारी हेतु केन्द्र से सम्पर्क करें ।

केन्द्र का महत्वपूर्ण शोध

जातक के उत्तम कर्मों के कारण जहां केतु ग्रह पूरा संरक्षण प्रदान करता है, विपरीत कर्मों के कारण उसमें कई प्रकार के दोष उत्पन्न कर उसे शुद्ध कर मोक्षदायी बनाता है । जब केतु नीच का होगा तो पैरों के तलवों में हमेशा दर्द बना रहेगा । केतु खराब होने से बार-बार दस्त आएंगे और अतिसार बना रहेगा । भंयकर दर्द भी हो सकता है । बवासीर जैसी भंयकर बीमारी घर कर लेगी । शल्य क्रिया आदि का बार-बार होना । गर्भपात जैसा उत्पात होगा । सारे शरीर में दर्द बना रहेगा । इस प्रकार के उत्पातों, दोषों को दूर करने के लिए मंगलवार को उबले हुए पाव भर बाजरे के चार लड्डू बना कर या बूंदी के लड्डुओं पर दही डाल कर लाल रंग के कुत्ते को खिला देना चाहिए ।

जो जातक मोक्ष के अभिलाषी हों या राज्य के अभिलाषी हों उन जातकों को केतु के एक करोड़ मन्त्रों को श्रद्धापूर्वक अवश्य ही जप कर या करवा लेना चाहिए । जाप होने के बाद जीवन में कभी भी कोई दुर्घटना या शल्य क्रिया तथा उदर के रोग नहीं व्यापते हैं एक व्यक्ति तीन सौ माला नित्य केतु ग्रह के मंत्र का जाप करके एक वर्ष में एक करोड़ मंत्र जाप कर सकता है । यदि करोड़ मंत्र जाप करने की शारीरिक सामर्थ्य न हो तथा करवाने के लिए धन का अभाव हो तो मानव को चार बार 24-24 लाख के चार चरण कर लेने चाहिएं । इस कार्य के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है तभी सफलता प्राप्त होगी। केन्द्र में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा एक करोड़ मन्त्र जाप 21 या कम दिनों में विधिपूर्वक किया जाता है ।

प्रायः सभी मन्त्र शापित हैं और जप करने से पहले शाप मुक्त करने के लिए विधान है, ग्रहों के बीज मन्त्र शापित नहीं हैं और जाप मात्र से ही शीघ्र फल प्रदान करने वाले हैं, बिना मन लगाए फलदायी हो जाते हैं । आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है ।

वेदों में केतु

केतु की महिमा वेदों में समान रूप से मिलती है और अधोलिखित वेद मंत्र से सारे भारतवर्ष में केतु की पूजा की जाती है ।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथा ।

केतु ग्रह पीड़ा निवारण के लिए उपरोक्त मंत्र से एक या पांच माला जप करना चाहिए । कारण कि साधारण आदमी के लिए शुद्ध वेद मंत्र उच्चारण करना बड़ा कठिन है । केंद्र का यह अनुभव है कि बीज मंत्र से ग्रह पीड़ा तुरन्त निवृत्त हो जाती है । कारण, इस मंत्र में तीन बीज मंत्र जुड़े हैं । शरीर के अवयवों में व मस्तिष्क में जहां केतु रश्मियों की कमी हो गयी है उस समस्त की पूर्ति बीज मंत्र से तुरन्त हो जाती है । ऐसा केंद्र ने बहुत से जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

केतु बीज मंत्र :

ॐ स्त्राँ स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः ।

केतु बीज मंत्र सरल भाषा में:

ॐ स्त्राम् स्त्रीम् स्त्रौम् सः केतवे नमः ।

अतः जीवन में हर एक जातक को केतु के 1 करोड़ बीज मंत्र अवश्यमेव कर या करवा लेना चाहिए । ताकि जीवन प्रकाशमय रहे तथा जब तक जीयें कोई विकार न आए ।

अधिक जानकारी के लिए केतु ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अध्ययन करें ।

चेनावनी :- नवग्रहों के वैदिक तथा बीज मंत्रों का हमने क्रमबद्ध वर्णन कर दिया है और बार-बार यह भी उद्घोष किया है कि ग्रह मंत्र शापित नहीं हैं बिना मन लगाये पूर्ण फल की प्राप्ति हो जाती है । यह अकाट्य सत्य है ।

इसलिए पुरुष वर्ग स्नानोपरान्त चलते-फिरते, गाड़ी चलाते, काम या सफर करते समय बीज मंत्र का उच्चारण कर सकते हैं । सावधानी यह बरतनी होगी कि शरीर पर जप करते समय चमड़े के जुते, पर्स और बैल्ट नहीं होनी चाहिऐं । खाने और लघुशंका करने के वाद मुख तथा हाथ स्वच्छ कर लेने चाहिऐं । धूम्रपान करते समय मंत्र जप न करें । कारण कि परमात्मा परम शुद्ध है और बिड़ी/सिगरेट परम अशुद्ध है। जिस मुंह में धूम्रपान की वदवू होती है उस मुख के द्वारा जपा हुआ मन्त्र फल दायक नहीं होता । मदिरा तथा अभक्ष पदार्थों का सेवन मंत्र जप के दौरान न करें ।

स्त्रियां रजोधर्म में पांच दिन जप भूल कर न करें । खाने और लघुशंका करने के बाद हाथ-मुंह अच्छी तरह से साफ कर लें । रोटी बनाते, कपड़े धोते, घर का सारा काम करते समय जप किया जा सकता है । उपरोक्त विधि से किया गया जप निश्चित ही फल दायक होगा । इसमें कोई संशय नही है यह अकाट्य सत्य है ।

श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान, संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र द्वारा हस्तरेखा/कुण्डली द्वारा ग्रह विश्लेषण ग्रहशोध एवं उपचार विधि

हरियाणा की औद्योगिक नगरी फरीदाबाद सैक्टर 11 स्थित श्रीबजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केंद्र आज वर्षों से अपने नाम को सार्थक कर ग्रहों की कराल चालों से प्रताड़ित लोगों की पीड़ा कष्ट दूर कर उनके जीवन को सुखी, समृद्ध और सात्विक बना रहा है । यह केंद्र एक आश्रम एवं प्रयोगशाला के रूप में है जहां संस्कृतज्ञ ब्राह्मण, सम्बन्धित ग्रह के प्रति दान, मंत्र जप, पूजन आदि के द्वारा 21 अथवा इससे कम दिनों में जातक का संकट निवारण करते हैं । पिछले 20 वर्षों से हजारों लाखों पीडित लोगों को परामर्श तथा केन्द्र द्वारा अपनाए जा रहे सुगम साधनों का अनुसरण करवा कर लाभ पहुंचाया गया है ।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि प्रत्येक वनस्पति औषधि है तथा प्रत्येक वर्ण मंत्र है आवश्यकता है केवल दक्ष योग्य तथा उपयुक्त प्रयोक्ता की । योग्यता तथा दक्षता से सब कुछ सिद्ध हो सकता है । यह बात केंद्र में विभिन्न उपायों और साधनों से सिद्ध की गई है। केंद्र का यह अनुभव सिद्ध निष्कर्ष है कि दाम्पत्य जीवन में आए तनाव को तलाक की स्थिति तक पहुंचने पर भी सुखमय बनाया जा सकता है । जिस दम्पति को पुत्र न हो, विवाह का योग न बन रहा हो, विद्यार्थी विद्या अध्ययन से विमुख हो रहा हो, ग्रह चाल के कारण बनते काम बिगड़ जाते हों, पग-पग पर अपमान तथा हानि उठानी पड़ रही हो, घोर निराशा तथा अशांति के कारण आत्महत्या तक करने के विचार त्रस्त कर रहे हों, इन सब परिस्थितियों से त्राण पाने के लिए जातक पर चल रही ग्रह चाल को देखकर और उस ग्रह से सम्बन्धित नक्षत्रों तथा अन्य सम्बंधी देवों के दान, मंत्र जप, पूजा, यज्ञ आदि द्वारा अनुकम्पा प्राप्त कर इक्कीस या इससे कम दिनों में कष्ट निवारण कर चमत्कारिक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं ।

ग्रह चाल जातक के पूर्वजन्मों कृत कर्मों के फल का भुगतान करा कर शुद्ध करती है । जातक ने जैसा क्रूर या सौम्य कर्म किया होगा वैसा भुगतान करना पड़ेगा ऐसा प्रकृति का नियम है । ग्रह हमारे शुभाशुभ कर्मानुसार अनुकुल प्रतिकूल होकर लाभ हानि इत्यादि प्रभाव दर्शाते हैं । इसमें ग्रह का कोई दोष नहीं है । क्योंकि जब मनुष्य बुरे कर्म करने से नहीं हिचकिचाता तो फल स्वरूप ग्रह भी पीड़ा देते हैं । इसलिए किसी ग्रह विशेष को क्रूर

या दुष्ट कहना उचित नहीं है । ग्रह उदार न्यायकारी हैं । ग्रह जो न्याय हमारे पूर्वकृत कर्मानुसार करते हैं उसमें न्याय का विवेक होता है नहीं तो न्याय का कोई मतलब नहीं रह जाता । सीधी सादी भाषा में न्याय में दया का मिश्रण रहता है तभी तो उचित न्याय होगा । आत्मौपम्य बुद्धि (सब को अपनी आत्मा मानना) के बिना न्याय बदले का रूप धारण कर लेगा । जिसने स्वयं को जीत लिया हैं वही सही न्याय कर सकता है । वास्तव में ग्रह हमारे सच्चे कल्याणकारी हैं और हमारे पूर्वकृत कर्मों का भुगतान करा हमें शुद्ध कर प्रभु के पथ का पथिक बनाते हैं । इसलिए आई हुई ग्रह चाल को सुगमता से पार करने के लिए उसकी शरण में जाकर उनकी पूजा, मंत्र जप, दान आदि करना बहुत उत्तम साधन हैं। केंद्र ने सुगम उपायों द्वारा सिद्ध किया है कि दान द्वारा जातक के पुण्य बल को पहले बढ़ा कर फिर मंत्र जप द्वारा जातक की कुण्डली में आए निर्बल ग्रह को सबल बना कर शुभ कारक बनाया जा सकता है और जातक को ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचाया जा सकता है तथा भविष्य में उनसे लाभ प्राप्त किया जा सकता है । इन सब उपायों को करने से किसी प्रकार का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है । संसारिक जीवन सुगमता पूर्वक चलने लगता है । आए हुए ग्रह प्रभाव को सहन करने की अपार शक्ति प्राप्त हो जाती है जिससे मन तथा बुद्धि में शान्ति बनी रहती है । इसका प्रभाव यह होता है कि इस सारी क्रिया से जातक में प्रभु के प्रति श्रद्धा तथा विश्वास दृढ़ होने लगता है और वह अपने जीवन के मूल उद्देश्य की तरफ बढ़ने लगता है तथा इस जीवन में निकृष्ट कर्मों के करने से बच जाता है और अद्योगति को प्राप्त नहीं होता है ।

इस केंद्र में अति दुर्लभ कार्य होता है, जिससे जातक पर आये किसी भी ग्रह के कुप्रभाव को रोका जा सकता है और वह ग्रह मारक की बजाय कारक बन जाता है । सम्बन्धित ग्रह के प्रति दान करा कर जातक का पुण्य बल बढ़ाया जाता है जिससे कुछ राहत मिल जाती है और बिगड़े काम बनने लग जाते हैं । जब ग्रह खराब होते हैं तो औषधि भी काम नहीं करती है मंत्र जप होते ही औषधि काम करने लग जाती है क्योंकि सारे रोग ग्रहों के माध्यम से आते है । सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि मन को एकदम शान्ति प्राप्त हो जाती है तथा जातक को यह महसूस होता है कि मुझे बहुत कुछ प्राप्त हो गया है मुझमें कुछ विलक्षणता आ गई है । ऐसा केन्द्र द्वारा किये गये निरन्तर अनुसंधानों तथा शोध परिणामों का प्रतिफल है । इस प्रकार जातक हर क्षेत्र में प्रगतिशील होता हुआ मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है ।

बजरंग नवग्रह केन्द्र

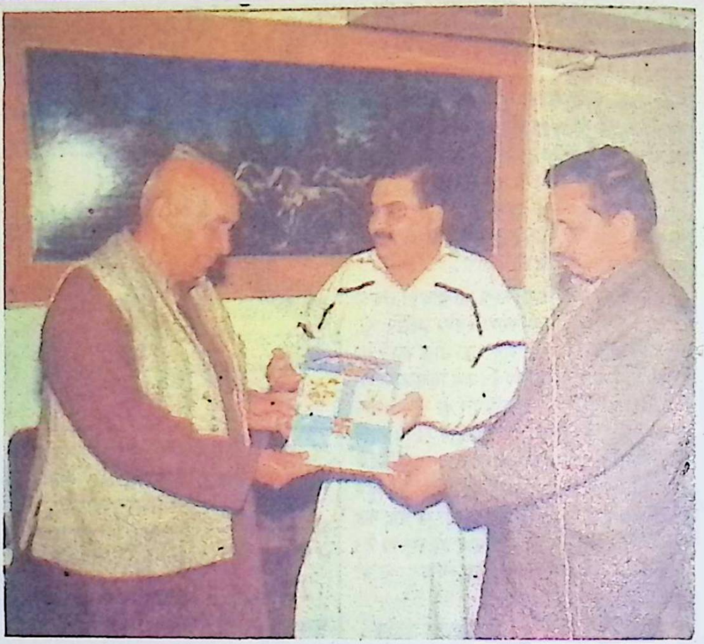

पं. श्याम सुन्दर लाल वत्स द्वारा नई शोधपूर्ण जन्मांक का विमोचन करते हुए, पंजाब केसरी के सम्पादक श्री अश्विनी कुमार

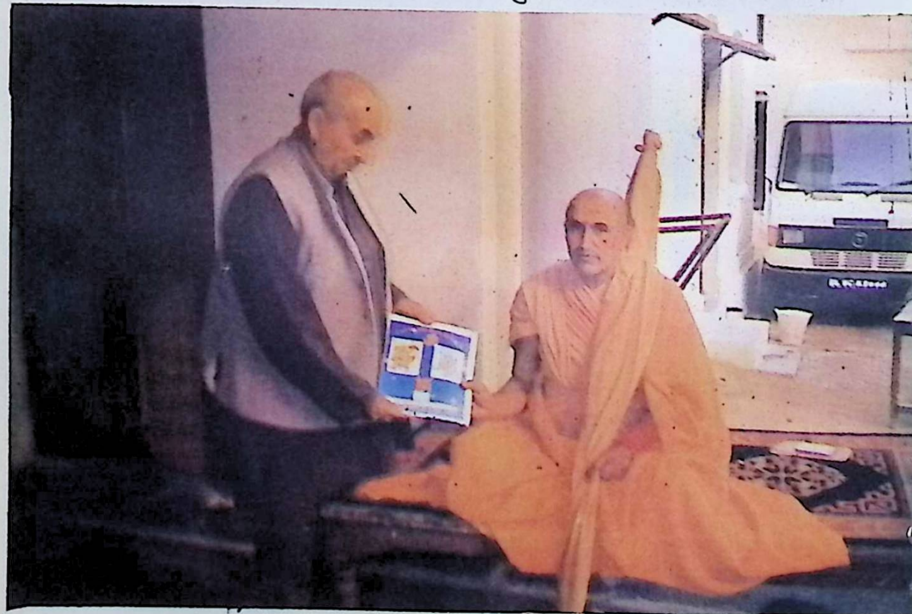

पं. श्याम सुन्दर लाल वत्स रचित जन्मांक का जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज द्वारा विमोचन

हस्तरेखा/कुण्डली द्वारा ग्रह विश्लेषण किस प्रकार

केन्द्र जातक की हस्तरेखा, जन्मांक तथा गोचर के ग्रहों तथा महादशा, अन्तरदशा के अनुसार फलादेश करता है । कुण्डली देखते समय यह विशेष ध्यान रखा जाता है कि जिन ग्रहों की महादशा, अन्तरदशा है वह कितने डिग्री के हैं तथा किस नक्षत्र के हैं और नक्षत्र का स्वामी कहां बैठा है । ग्रह अस्त या पूर्णअस्त है और जन्मांक में कहां स्थित है । इन सबके उपरान्त यदि शुभ ग्रहों की दशा भी चल रही हो तो षष्टांश में क्रूर तो नहीं है । पडवर्ग में कितने अंक मिले हैं और उस ग्रह को शनि तो नहीं देख रहा है ।

इन सबके उपरान्त वाधक स्थान की दशाओं का ध्यान रखना पड़ता है जैसे चर लग्न में लाभ वाधक है, स्थिर में भाग्य वाधक है और द्विस्वभाव में सप्तम भाव वाधक होता है । याद रखना चाहिये वाधक स्थान की वाधा केवल महामृत्युंजय के जप से निवृत्त होती है ।

उपरोक्त सबका निर्णय पांच मिनट में कर लिया जाता है और जातक का फलादेश दे दिया जाता है और उसके अनुसार उपाय बता दिये जाते हैं । केन्द्र के खोजे हुये उपाय अचूक हैं जो कभी विफल नहीं होते क्योंकि सब के सब उपाय देव प्रदत्त हैं ।

केन्द्र ने जातकों के जन्मांक में विशेषकर यह देखा है कि शुभ ग्रहों की दशा चल रही है अन्तरदशा भी शुभ है पर जातक को कोई फल नहीं मिल रहा है । खोजने पर शनि की साढ़ेसाती पाई। याद रखें यदि चार, छः, आठ, वारह भावों की साढ़ेसाती होगी तो शुभ ग्रहों की दशा भी कोई फल नहीं देगी । यदि साढ़ेसाती हो तो केन्द्र के द्वारा सुझाये हुए ग्यारह नारियल वाला प्रयोग जो पेज न० 211 पर विस्तार से वर्णित है कर लेना चाहिए ।

हस्तरेखा :- जन्मांक के साथ-साथ हस्तरेखा का भी अवलोकन किया जाता है यदि जन्मांक में सूर्य उच्च का हो और हाथ में सूर्य रेखा हो ही नहीं इसी प्रकार यदि चन्द्रमा उच्च का हो और हाथ में चन्द्र रेखा हो ही नहीं तो यह मानना पड़ता है कि जन्मांक बनाने में कहीं गलती रह गई है । इसी प्रकार अन्य रेखाओं तथा पांचों पर्वतों का अवलोकन किया जाता है । विशेष ध्यान मणिबन्ध, भाग्य रेखा तथा विवाह रेखा पर रखा जाता है । साथ-साथ जन्मांक के ग्रहों का भी मिलान हस्तरेखाओं के साथ किया जाता है । इन दोनों रेखाओं से भाग्य और संतान की गणना की जाती है । यदि फिर भी कहीं विरोध हो तो प्रश्न कुण्डली का सहारा लेकर निर्णय कर लिया जाता है और उसी के अनुसार फलादेश कर दिया जाता है ।

चेतावनी :- यदि कभी भी जीवन में किसी को भी छः, आठ, बारह भावों की महादशाएें या अन्तरदशाऐं चलेंगी तो अवश्यमेव आर्थिक, भौतिक, मानसिक विपतियां घेरेंगी और बड़े परिश्रम से शुभ ग्रहों में कमाया हुआ धन अपने ही हाथों से नष्ट होगा । यह अकाटय सत्य है। इसमें कोई संशय नहीं है । बुद्धिमान प्राणी यदि उपरोक्त सबका समय से पहले पता लगा लें तो उपरोक्त सब विपतियों से रक्षा अवश्य होगी परन्तु जन्मांक के बगैर इन सबका बोध नहीं किया जा सकता है । केन्द्र के एक अदभूत जन्मांक का विमोचन जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री माधव आश्रम जी महाराज जी के द्वारा किया गया है । जिसकी पूर्ण जानकारी के लिए पुस्तक के पेज न० 296 पर पढ़ें । केन्द्र में जन्मांक बनाया जा सकता है इसके लिए आपको जिस जातक के निमित जन्मांक बनाना है उसकी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान भेजना होगा ।

केन्द्र में ग्रह शोध के लिए अपनायी गयी विधि

मंत्र जप, पूजन आदि करने के लिए केंद्र के ऋत्विजों को विशेष प्रकार की स्थिति में रह कर कुछ नियम धारण व पालन करने पड़ते हैं तब ही मंत्र का फल प्राप्त होता है।

1. ब्रह्मचर्य
2. एक बार भोजन (सायंकाल)
3. केश, दाढ़ी आदि न कटवाना
4. पृथ्वी या तख्त पर शयन
5. सत्य भाषण

उपर्युक्त पांचों नियमों को धारण कर पीले वस्त्र पहन कर, मंत्र जप प्रातः 6 बजे आरम्भ कर देते हैं। मंत्र का विनियोग, अंगन्यास, करन्यास, गायत्री 5 माला, वेदोक्त ग्रह मंत्र की 5 माला जाप करके ग्रह मंत्र का जप प्रातः 6 बजे से 12, सांय 3 से 5 बजे तक करते हैं। 4 से 5 बजे तक खड़े होकर ग्रह के स्तोत्र का पाठ 108 बार नित्य करते हैं और जप के दशांश का यज्ञ ग्रह की समिधा तथा समस्त हवनीय सामग्री द्वारा विधिवत करते हैं।

मंत्र जाप शुरू करने से पहले सर्वप्रथम पांच वेदियों के ऊपर तांबे के कलशों की स्थापना कर कलशों में रुद्राक्ष, एक चांदी का रुपया, पीपल की जड़, गंगाजल, मरवे के पत्ते, तुलसी दल तथा सर्व औषधि डाली जाती है। पंच पल्लव लगा कर पूर्ण पात्र से ढक कर ऊपर नारियल रखा जाता है और कलश पीले वस्त्र से ढका जाता है और इसे चार वेदियों से युक्त सर्वतो भद्रमण्डल बना कर स्थापित किया जाता है। एक पटटे पर सप्त घृत मात्रिकाओं की स्थापना की जाती है। गाय के गोबर से यज्ञ मंड़प को लिपा जाता है। तथा ताजे गाय के गौबर से यमुना नदी को अंकित कर उसका आवाहन कर पूजन किया जाता है। तदोपरान्त पांच दीपक (मध्य में सोने, पूर्व में चांदी, दक्षिण में तांबे, पश्चिम में लौहे तथा उत्तर में कांसे का दीपक, सोने चांदी में गाय का घृत, तांबे तथा कांसे में तिल का तेल तथा लौहे में सरसों का तेल) डालकर दीपक प्रज्जवलित किये जाते हैं। इस प्रकार अन्य देवताओं की स्थापना कर विधिवत पूजन किया जाता है। ज्योति के सामने की गई उपासना का फल जातक को तुरन्त मिलता है।

इस प्रकार विधिवत कार्य करने से ग्रह पाठ पूरा करते ही जातक के मस्तिष्क में एकदम शान्ति प्राप्त हो जाती है।

केन्द्र की विशेष सावधानी

केन्द्र एक और विशेष सावधानी पाठ का पूरा फल प्राप्त कराने के लिए बरतता है । एक ब्राह्मण भगवान गणपति के बीज मंत्र का जाप करता है ताकि जीवन के समस्त विघ्न समाप्त हो जायें । दूसरा गायत्री जाप करता है, ताकि पाठ के सकल दोषों का अपने आप निष्पादन हो जाये । तीसरा भगवान शंकर का रुद्राभिषेक तथा मंत्र जप करता है ताकि तामसिक बुद्धि समाप्त हो और सात्विक प्रज्ञा उद्दीप्त हो । चौथा भगवान हनुमान जी का जाप करता है ताकि समस्त प्रकार के संकट दूर हो जायें और जातक भगवत परायण हो जाये । बाकी के सारे ब्राह्मण ग्रह मंत्र का जप 15 या 21 दिन तक धारावाहिक रूप में करते रहते हैं और इस प्रकार का आचरण करने से और विधिवत कार्य करने से ग्रह का समस्त दोष समाप्त हो जाता है और जातक को नया जीवन मिल जाता है ।

संकल्प पर निर्भर पाठ

पाठ का पूरा आधार संकल्प पर निर्भर रहता है जैसा संकल्प होता है वैसा ग्रह देव को फल देना पड़ता है । यजमान ब्राह्मणों को अपना पाठ कराने के लिए वरण करता है तत्पश्चात ब्राह्मण यजमान के इच्छानुरूप फल प्राप्ति हेतु संकल्प करते हैं और यजमान के हाथ में रख देते हैं फिर यजमान उसको भगवान गणपति पर चढ़ा देता है । प्रार्थना करता है कि हे प्रभु मेरा पाठ निर्विघ्न पूरा हो जाये और पाठ के दौरान सब प्रकार से अनुकूलता बनी रहे । ऐसा करने से अनुकूलता बनी रहती है और पाठ भी निर्विघ्न पूरा हो जाता है ।

सर्वतोभद्र मंडल युक्त यज्ञ शाला

केन्द्र में यज्ञशाला बनी हुई है । जो 4 वेदियों और सर्वतोभद्र मण्डल से युक्त हैं और इन्हीं यज्ञ शालाओं में पूजन जप यज्ञादि सम्पन्न होता है हर ग्रह की समिधा नक्षत्रों की जड़ी बूटी तथा मूल उपलब्ध है और इन सब का प्रयोग यथावत होता रहता है हर ग्रह के शुद्ध रत्न भी केंद्र में उपलब्ध हैं । केन्द्र में प्रत्येक ग्रह तथा देवी देवताओं शतचण्डी सहस्त्र चण्डी, महामृत्युंजय जप तथा रुद्राभिषेक होता है निवास की व्यवस्था भी केंद्र में है । दूर के रहने वाले जातकों का जप भी किया जाता है, केवल केन्द्र द्वारा भेजे हुए संकल्पित जल को भी पी लेने मात्र से पाठ का पूरा फल मिल जाता है ।

मंत्र जाप होने के पश्चात ब्राह्मण मंत्र जाप व पाठ जो उन्होंने किया होता है उस समस्त फल को संकल्प करके उस जल को यजमान के हाथ पर छोड़ देते हैं अर्थात उन्होंने जो मंत्र जप स्तोत्र पाठादि किए हुए होते हैं उन सबको वापस कर देते हैं और वह जल यजमान पी लेता है । ऐसा करने से मंत्र वापिस हो जाता है और यजमान का भला होना आरम्भ हो जाता है । जो जातक ब्राह्मणों से पाठ कराना चाहते हों उनको इस विधि का सहारा लेना चाहिए ।

मंत्र जप व पाठ करने से कभी किसी काल में कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है । ग्रह खराब हो तभी दान और जप हो ऐसा भाव नहीं रखना चाहिए । अच्छे समय में इनका जप कर या करा लेना चाहिए ताकि रोग, दोष, कलह, धनाभाव इत्यादि उत्पन्न हो ही नहीं ।

अब आगे केन्द्र द्वारा सुगम उपायों के द्वारा समय-समय पर किये गये सफल प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है । इसमें कुछ का संकेतिक वर्णन ग्रहों के वर्णन में भी दर्शाया जा चुका है और कुछ उपायों को एक से ज्यादा बार भी बताया गया है क्योंकि पाठकों को इन उपायों का हर स्थिति अनुरूप ज्ञान हो जाए और इसका अनुसरण करने से लाभ प्राप्त हो ।

शनि राहु, एवं भूत, प्रेत तथा समस्त तांत्रिक प्रयोगों से सहज छुटकारा पाने का सर्वोतम उपाय

शनि की कराल से कराल स्थिति, साढ़ेसाती उपद्रव, रोग दोष, मानसिक तनाव, पति-पत्नी वैमनस्यता, विद्या प्राप्ति तथा शनि ग्रह पीड़ा निवारण का कभी न असफल होने वाला अनोखा सरल उपाय । यह प्रयोग किसी भी अवस्था में असफल नहीं है । इस प्रयोग को करते ही मानव को उसी दिन उसी समय 20 प्रतिशत् लाभ तुरन्त ही प्राप्त होता है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि प्रयोग करने वाले जातक के मस्तिष्क में शान्ति, ताजगीपन और नवचेतना जागृत हो जाती है तथा कार्यक्षमता बढ़ जाती है । यह प्रयोग अपने नजदीक की किसी भी मुख्य नदी में जिसमें मच्छियां हों कर सकते है । जैसे (गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी) ।

1. गाय का पूजन करें फिर दो रोटी लेकर एक तेल से चुपड़ें और दूसरी को घी से चुपड़ें ।
2. काले या सफेद रंग के कुत्ते को कुछ मीठा रखकर पहले तेल चुपड़ी रोटी खिलायें फिर दूसरी घी की खिलायें ।
3. बन्दरों को भुने चने, मीठी खील, केले, और गुड़ हर शनिवार को खिलायें ।

विशेष प्रयोग इस प्रकार है

1. ग्यारह नारियल जटा सहित कच्चे पानी वाले लें । एक-एक नारियल दायें हाथ से पकड़ें और दायें कान की तरफ से बायीं ओर घुमाकर दोनों हाथ लगाकर जल में प्रवाहित करें । ऐसा **11** बार करें ।
2. सवा किलो जौ काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें ।
3. सवा किलो कच्चा कोयला काले कपड़े में बांधकर पोटली बनायें ।
4. सवा किलो चना काले कपड़े में दो कोयले, दो कील बांधकर पोटली बनायें ।
5. सवा किलो रांगा, लैड, सिक्का ।

श्रद्धापूर्वक गंगा स्नान करें । तदोपरान्त उपरोक्त क्रमशः एक-एक वस्तुओं को सिर पर से नारियल की तरह घुमाकर श्रद्धापूर्वक जल में प्रवाहित करें । घुमाते समय राहु एवं शनि देव का नाम लेकर कहें :- हे शनि देव और राहु देव, मेरी ग्रह पीड़ा निवृत्त हो जाये, मुझे सुख शान्ति धन धान्य आदि की प्राप्ति हो । ये कार्य मैं आपकी प्रसन्नता के लिये कर रहा हूँ । ऐसे ही हर वस्तु को सिर से घुमाते हुए प्रवाहित कर प्रार्थना करें । इसके बाद पुनः स्नान करें और हृदय से अपने कल्याण के लिये प्रार्थना करें तथा पहने हुए कपड़े, जूते, चप्पल, सब को घाट पर छोड़ दें और नये वस्त्र या धुले वस्त्र पहनकर घाट से बाहर आयें । (वस्त्र, कपड़े, जुते केवल एक ही बार गंगा पर छोड़ने चाहिए) इसके पीछे

रहस्य यह है कि पहने हुए कपड़े वस्त्र छोड़ने से दरिद्रता दूर हो जाती है । बाहर आकर एक पेड़ा गाय को और ब्राह्मण को भोजन करा दें । गंगा के किनारे जौ बोयें । जौ बोने से भयंकर पातक नष्ट हो जाते हैं । इस प्रयोग को करते ही राहु, शनि की पीड़ा निवृत्त हो जाती है और जातक प्रगतिशील हो जाता है ।

नोट :- इस प्रयोग को करने वाले माँस आदि अभक्ष्य वस्तु का सेवन किसी प्रकार न करें। कारण कि जौ, चना मछिलियां खाती हैं और इन्हीं को पकड़ कर हमने खा लिया तो हमारा किया गया प्रयोग निष्फल हो जाता है । अतः मछिलियां भूल कर न खाऐं ।

विशेष चेतावनी

यह सिद्ध प्रयोग है । जातक चाहे किसी धर्म का हो, किसी जाती का हो, किसी सम्प्रदाय का हो, आस्तिक हो, नास्तिक हो अपनी मानसिक शांति पूर्ण कार्य-कुशलता को प्राप्त करने हेतु उपरोक्त प्रयोग लगातार हर शनिवार को कम से कम ग्यारह बार अवश्य करके देखें निश्चित ही उसे मानसिक शांति तथा धनाभाव नहीं व्यापेगा । यह अकाट्य सत्य है । इसमें कोई संशय नहीं है । केन्द्र ने इस प्रयोग की सफलता को प्राप्त करने हेतु हर जाती के लोगों से यह प्रयोग करवा कर सफलता प्राप्त की है । और विशेष अनुभव केन्द्र को यह प्राप्त हुआ कि यह तो सबके लिए ही पूर्ण लाभदायक है । इसमें विशेष कारण यह है कि जो इस धरा-धर्म पर पैदा हुआ है उन सबके उपर ग्रहों का प्रभाव समान रूप से छाया रहता है इसको कोई नकार नहीं सकता ।

धनाभाव :- उपरोक्त प्रयोग लगातार हर शनिवार तथा पूर्णिमा को एक वर्ष या इससे भी अधिक समय तक करते रहना चाहिए । धनाभाव में ग्यारह नारियल के बजाय एक नारियल और सवा किलो रांगे के बजाये सौ ग्राम रांगा कर लेना चाहिए । वाकि जौ, चना, कोयला सवा-सवा किलो ही होना चाहिए ।

उपरोक्त प्रयोग लगातार करने से धनाभाव नहीं व्यापेगा, निर्णय शक्ति भ्रमित नहीं होगी । रिपु स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे और हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती रहेगी । यह प्रयोग अपने में पूर्ण है । केन्द्र ने जातकों पर लगातार एक वर्ष करवाकर सराहनीय सफलता प्राप्त की है ।

तांत्रकीय प्रयोगों का विध्वंसक ज्योति प्रयोग

प्रथम प्रयोग :-

आटे का चौमुखा दीपक बनायें और सरसों का तेल डालें तथा किसी पत्ते पर रख कर जलायें । दीपक के तेल में मुंह देखते हुए नवग्रहों के नौ बीज मंत्रों का उच्चारण करें । यह क्रिया करते समय कर्ता का मुँह दक्षिण की ओर होना चाहिए और नवग्रहों से प्रार्थना करें कि हमारे ऊपर किया हुआ तंत्र नष्ट हो जाय और हम पूर्ण सुखी हों तथा ग्रह प्रदत्त बाधा दूर हो तथा ग्रह कृपा प्राप्त हो । इस प्रकार अपना पूर्ण मनोभाव व्यक्त करें । इसके बाद दीपक को घर या आँगन पर दक्षिण दिशा की ओर रखें ऊपर से पानी की भरी हुई मटकी दीपक के ऊपर रखें और मटकी इस प्रकार रखें कि दीपक की चारों बत्तियां बुझ जानी चाहिए । इसके बाद हाथ धोकर हाथ जोड़ें और अपने कल्याण की भीख मांगें । निरन्तर ऐसा करने से सभी प्रकार का तंत्र नष्ट हो जायेगा और नवग्रह कृपा प्राप्त होगी अर्थात जीने के लिए मार्ग मिल जायेगा । यदि नदी के किनारे खड़े हों या नदी के समीप इस क्रिया को सम्पन्न कर रहे हैं तो दीपक को बहते हुए पानी में बहां देना चाहिए ।

द्वितीय प्रयोग :-

आटे का एक चौमुखा दीपक बनायें उसमें सरसों का तेल डालें और मध्य भाग में एक सवा रूपया रखें । दौना या किसी भी पत्ते के ऊपर रखकर अधोलिखित नवग्रहों के नौ बीज मंत्रों का उच्चारण कर अपना मुंह जलते हुए चौमुखे में दूर से देखें । तदोपरान्त शनि राहु के प्रार्थना करें कि किसी ने तांत्रिक प्रयोग कर दिया है तो वह समाप्त हो जाये और आगे कोई मेरे ऊपर तांत्रिक प्रयोग करे तो उसका प्रभाव मुझे न व्यापे । यह प्रयोग किसी भी बहते जल में शनिवार को किया जा सकता है । सबसे अच्छा जिस समय आप ग्यारह नारियल वाला प्रयोग करने गंगा या यमुना जी में जायें तो इस प्रयोग को भी साथ-साथ कर लें ।

नवग्रह बीज मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः - ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः
ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः - ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः - ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः - ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः
ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः

प्रेत बाधा तथा तांत्रिक प्रयोग के निवारण का अचूक उपाय

हनुमत तथा गायत्री आराधना

यदि जीवन में कोई भूत प्रेतादि बाधा से ग्रसित हो जाये या किसी भूत प्रेतादि ग्रसित प्राणी को मंत्रणा देनी हो तो अनुष्ठान विधि द्वारा हनुमत् आराधना करने की प्रेरणा देनी चाहिए, क्योंकि ग्रह यज्ञ से प्रेत बाधा नहीं जायेगी । इसीलिए ऐसी विषम परिस्थिति से निपटने हेतु हनुमत् आराधन ही सर्वथा उचित है, **भूत पिशाच निकट नहीं आवै, महावीर जब नाम सुनावै,** जब तक अनुष्ठान विधि का सहारा लेकर विधिवत संयम नियम पूर्वक अनुष्ठान नहीं होगा, गणपति, नवग्रह, कलश, ज्योति आदि की विधिवत प्रतिष्ठा, पूजन, नियम पूर्वक पाठ नहीं होगा तथा संकल्प प्रेतबाधा निवारण का नहीं लिया जायेगा या किसी के बहकावे में आकर पाठ पद्धति में कुछ बदलाव कर दिया जाएगा तो प्रेतबाधा से मुक्ति असंभव है ।

अनुष्ठान विधि के मुख्य पांच नियम होते हैं जिन्हें यजमान और ऋत्विज समान रूप से धारण करते हैं । 1. ब्रह्मचर्य 2. एक समय भोजन 3. पृथ्वी पर शयन 4. नख, दाढ़ी, केश न काटना 5. सत्यवाचन, यदि हो सके तो पाठ पूर्णकर आरती के बाद ही अन्न ग्रहण करें । यदि ब्राह्मणों के द्वारा अनुष्ठान करा रहे हैं तो उन्हें प्रातः नौ बजे दूध और फल दें, दोपहर सात्विक फलाहार और सायंकाल शुद्ध वैष्णव भोजन दें । तभी अनुष्ठान फलीभूत होगा और प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी । पाठ के दौरान यजमान या ब्राह्मणों द्वारा किसी अवस्था में ब्रह्मचर्य खण्डित नहीं होना चाहिए कारण यदि पाठ के दौरान ब्रह्मचर्य खण्डित हो गया तो पाठ बेकार हो जायेगा और जिस समय ब्रह्मचर्य खण्डित हुआ, ठीक उसी समय प्रेत पुनः जोर शोर से हमला कर देगा । अतः पूर्ण सावधानी पूर्वक पाठ चलायें ।

केन्द्र द्वारा प्रेतबाधा मुक्ति के लिए असंख्य पाठ हुए और हनुमत् कृपा से शत प्रतिशत् सफलता भी प्राप्त हुई लेकिन कुछ विलक्षण अनुभवों की भी अनुभूति हुई । यजमान या अनुष्ठान में वर्णित ब्राह्मणों के द्वारा जिस समय ब्रह्मचर्य खण्डित किया गया, ठीक उसी समय प्रेत ने पुनः पूर्ववत् हमला कर दिया । तब केन्द्र ने कलशों के जल से भगवान भास्कर को अर्घ्य दे दिया ओर वेदी एवं ब्राह्मणों की जनेऊ बदल दी तथा यज्ञशाला को पुनः गाय के गोबर से लिपवाया तथा पुनः पूर्ववत् नवीन सिरे से पाठ प्रारंभ किया तभी देव की कृपा से जातक प्रेत बाधा से मुक्त हो सका ।

प्रेतबाधा से मुक्ति हेतु जातक बहुत ही सावधानी और नियम पूर्वक पाठ को गति प्रदान करें और विधिवत सनातन पद्धति द्वारा सम्पन्न करें । याद रखें, पाठ के दौरान यजमान या ब्राह्मणों के द्वारा किसी भी प्रकार से ब्रह्मचर्य खण्डित किया गया हो तो पाठ को तुरन्त बन्द कर देना चाहिए अर्थात पूर्ववत् पाठ नवीन सिरे से प्रारंभ करना चाहिए। तभी इच्छित फल की प्राप्ति अर्थात प्रेतादि बाधा से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी वरना सफलता संदिग्ध हो जायेगी ।

पाठ के दौरान यजमान या ब्राह्मणों को किसी कारणवश स्वप्न दोष हो जाये तो इसे ब्रह्मचर्य खण्डित का दोष नहीं मानते इसीलिए स्वप्न दोष हो जाने पर पाठ नहीं बदलना चाहिए लेकिन जानबूझकर ब्रह्मचर्य खण्डित किया है तो पाठ अवश्य बदलना पड़ेगा । पाठ के दौरान किसी भी नियम की अवहेलना नहीं करनी चाहिए और न ही किसी के बहकावे से कुछ पाठ में बदलाव करना चाहिए तथा न ही किसी प्रकार से कुछ अपनी मनमानी करना चाहिए वरना असफलता हाथ लगेगी ।

प्रेत बाधा जितनी भयंकर हो उसी अनुपात में मंत्र जप करना पड़ेगा । केन्द्र ने यह अनुभव किया कि एक चरण चौबीस लाख का होता है अर्थात चौबीस लाख मंत्रों का अनुष्ठान विधिपूर्वक जाप हो जाये तो प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त हो जायेगी । लेकिन प्रेतबाधा बलिष्ठ हुई तो हनुमत् बीज मंत्र का एक करोड़ जाप कर या करवाना पड़ेगा तभी प्रेतबाधा से पूर्ण छुटकारा संभव है ।

हनुमत् बीज मंत्र :- ॐ हं पवन नन्दनाय स्वाहा ।

यदि ब्रह्मराक्षस से पीड़ित हैं तो हनुमत् बीज मंत्र के साथ गायत्री मंत्र जाप अवश्यमेव करना चाहिए ।

गायत्री बीज मंत्र :-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री मंत्र जाप विधिवत शास्त्रोक्त रीति से सम्पन्न करना पड़ेगा तभी ब्रह्मराक्षस से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी ।

यदि किसी ने कुछ खिला-पिला दिया है तो काल भैरव मंत्र की सतोगुणी उपासना करनी पड़ेगी तभी बाधा का पूर्ण निवारण हो सकेगा । काल भैरव की सतोगुणी उपासना के लिए राहु ग्रह पीड़ा निवारण विधि पुस्तक का अवलोकन करें ।

भैरव बीज मंत्र :- ॐ ह्रीं बटुकाय कष्टोद्धारण कुरू कुरू बटुकाय ह्रीं स्वाहा ।

यह तीनों पाठ अलग-अलग ब्राह्मणों द्वारा एक ही समय में चल सकते हैं । मात्र नियमों का ही पूर्ण पालन किया जाय । एक बात और याद रखें, पाठ के दौरान प्रातःसायं हनुमान चालीसा के पाठ 30-30 मिनट जरूर करें और शेष समय में **ॐ हँ पवननन्दनाय** स्वाहा, इस हनुमत् बीज मंत्र का जाप करें तभी संकल्प की सिद्धि हो सकेगी।

भूत-प्रेत, ब्रह्मराक्षस, पिशाच, यंत्र, तंत्र, आदि के पाठ सर्प खिलाने के समान होते हैं । जैसे थोड़ी सी असावधानी हुई और सर्प ने डसा । इसी प्रकार पाठ के दौरान थोड़ी असावधानी हुई तो पुनः प्रेत का बलिष्ठ हमला हो जाता है । अतः पाठ नियम पूर्वक पूर्ण अनुष्ठान पद्धति से सम्पन्न करें । पाठ को किस विधि से किन नियमानुसार सम्पन्न करना या करवाना चाहिए इसकी विस्तृत जानकारी केन्द्र ने **शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि** नामक पुस्तक में उल्लेखित कर दी है । यह जो एक अभूतपूर्व प्रकाशन है जिसका अध्ययन करने के बाद कुछ ज्ञात करना शेष नहीं रहता और न ही किसी से कुछ परामर्श लेने की आवश्यकता होती है । अतः सम्पूर्ण पद्धति से परिचय हेतु पुस्तक का अध्ययन अनिवार्य है।

यह पुस्तक अवश्यमेव शनि ग्रह की है लेकिन उसमें अनुष्ठान विधि की जो विस्तृत सम्पूर्ण जानकारी है वह निश्चित ही अनुगमनीय है । **पृष्ठ संख्या 280 से 331 तक विस्तृत रूप से पूजा पद्धति को उल्लेखित किया गया है ।** वेदी कैसे बनायें, कलश कैसे रखें, संकल्प कैसे करें आदि सभी कुछ विस्तार से बताया गया है । **अत: यह पुस्तक अपने आप में पूर्ण एक अनूठी कृति है जिसकी विद्वत् समाज ने ही नहीं साधारण जनता जनार्दन ने भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । अतः अनुष्ठान विधि की पूर्ण जानकारी हेतु इस पुस्तक का गहन अध्ययन जरूर करें ।**

विशेष :- भयंकर से भयंकर वर्षों पुरानी भूत प्रेत तथा समस्त तांत्रिक प्रयोग उपरोक्त रीति से सदा के लिए समाप्त किये जा सकते हैं । घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास तथा दृढ़ संकल्प की है । केन्द्र ने एक कन्या को जिसे प्रेत विगत 10 वर्षों से पुरुषवत् भोग रहा था, मुक्ति दिलाने में सफलता प्राप्त की है। जनसत्ता के पत्रकार श्री ज्योतिर्मय जी ने उस कन्या व कन्या के परिवार के सभी सदस्यों से चार घण्टे पूछताछ के बाद 16-5-97 को 'जनसत्ता' में विस्तृत रूप में छापा ।

विशेष ध्यान देने योग्य वार्ता यह है कि अनुष्ठान आरंभ से अनुष्ठान समाप्ति तक रजस्वला स्त्री से भोजन न बनबाएं और न खाएं । रसोई घर में शोचालय की चप्पल पहन कर स्त्रीयां भोजन न बनायें, प्याज लहसून अभक्ष का सेवन अनुष्ठान के दिनों में भूल कर भी न करें । यदि सावधानी न बरती गई तो प्रेत बाधा से मुक्ति नहीं मिलेगी ।

क्या तंत्र ताबीज, टोटके, रत्नादि से ग्रहपीड़ा निवृत्त होना संभव है

ग्रह पीड़ा शमन करने में कौन पूर्ण सक्षम है तंत्र अथवा मंत्र

तांत्रिक तथा अन्य धर्मावलम्बी, जातकों की ग्रहपीड़ा शमन, ताबीज भस्म या घोर तामसिक तंत्र क्रियाओं द्वारा करते हैं। तांत्रिक क्रियाओं से ग्रह पीड़ा निवृत्ति का झांसा देकर जीवों की बलि तक प्रदान कर जातक को यह समझा देते हैं कि तुम्हारी ग्रह पीड़ा हमेशा के लिए निवृत्त हो गयी परन्तु ऐसा कुछ होता नहीं है और जातक कष्टों संघर्षों के दलदल में निरन्तर फंसता जाता है।

इन क्रियाओं के पीछे यदि तांत्रिकों के पास कोई बल है तो भूत-प्रेत पिशाच आदि का है और इस्लाम के पास कोई बल है तो वह जिन्नादि का ही है। शान्ति से यदि विचार किया जाय तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि अपना कितना बल है जिससे दूसरों को ठीक किया जा सके। वस्तुतः पर विचार किया जाय तो यह स्पष्ट है कि भूत प्रेतादि अपने कुकर्मों का फल इस योनि में आकर भुगतते हैं और उन्हें तरह-तरह की यातनाओं का सामना भी करना पड़ता है तथा दूसरों के शरीर में प्रवेश कर कलेजे का खून चूसना, अच्छे भले लोगों को पागल करना, औरतों को नाना प्रकार से परेशान कर पुरुषवत् भोगना आदि। इनकी घृणित हरकतों की शिकार अधिकतम् औरतें ही होती हैं। अतः इनका निशाना अधिकाधिक स्त्रियों पर ही प्रभावी होता है। शास्त्रसम्मतानुसार इनका कोई विशेष अस्तित्व नहीं होता है, शरीर वायु का होता है लेकिन यह अधिकतम् नाना रूप बदल कर लोगों को छलते हैं लेकिन इनके पैर नहीं होते यह भूत प्रेत को पहचानने की मुख्य पहचान है। यह हमेशा ही भूख प्यास से व्याकुल सतत् भ्रमण करते हैं। श्रीमद्भागवत महापुराण में धुन्धकारी की कथा से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनका क्या अस्तित्व है।

अतः उपरोक्त से यह सिद्ध हो गया है कि जिनका अपना ही कोई अस्तित्व नहीं वो ग्रहपीड़ा से कैसे निवृत्ति करा सकते हैं इसलिए यह स्पष्ट है कि तंत्रादि से ग्रह पीड़ा कभी निवृत्त नहीं हो सकती है। याद रखें ग्रहों की प्रत्येक चाल प्राणी मात्र के कल्याण हेतु होती है लेकिन भूत प्रेतादि तंत्र की प्रत्येक चाल जीव मात्र के लिए कष्टकारी ही होती है।

मंत्र में उसके देव का बल पराक्रम समाहित होता है। देवों में अनन्त बल है इसीलिए उनके मंत्र का हार्दिक उच्चारण करने से हमें बल, बुद्धि, यश, धन यहाँ तक कि मोक्ष भी प्राप्त हो जाता है। अथर्ववेदानुसार मानव के प्रत्येक अंगों में देवों का निवास नियुक्त है जिसका स्पष्टीकरण 'शनि शत्रु नहीं मित्र' इस कृति में विस्तार से प्रतिपादित है।

मंत्र कभी किसी के लिए घातक अनिष्टकारी नहीं होते हैं और हर क्षेत्र में जातक को यश सुख धन प्रदान करते हुए कवच बनकर हर प्रकार की आपत्ति विपत्ति से रक्षा कर मोक्ष तक प्रदान करते हैं अर्थात मंत्र कभी किसी को धोखा नहीं देते और मरने पर भी निरन्तर सहायता करते हैं। हमारे ग्रंथ साक्षी हैं मंत्र बल से जो बढ़ा उसने सभी सुखों को प्राप्त कर अविनाशी पद तक प्राप्त किया लेकिन तंत्र भूत प्रेतादि की सहायता से किसी ने भी आज तक लौकिक पारलौकिक सुखों की अनुभूति कर परमपद प्राप्त नहीं किया और न ही कर सकता है। अतः यह स्पष्ट है कि जातक जैसी आराधना करेगा उसको वैसा फल प्राप्त होगा। यदि देवाराधना की तो देववत् बनोगे और यदि भूताराधन की तो अवश्य ही भूतवत् बनोगे इसमें कोई संशय नहीं है अतः विवेकवान विचार कर देवाराधना ही करें।

मंत्र की समीक्षा

उदाहरण के रूप में प्रथम ग्रह भगवान भुवनभास्कर सूर्य के बल् पराक्रम, तेज एवं प्रकाश पुँज का ही अवलोकन करें। भगवान सूर्य के उदय होते ही तीनों लोकों का अंधकार समाप्त हो जाता है। चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश छा जाता है। तेज का अवलोकन करें और देखें कि सूर्य में इतना तेज और प्रखर प्रकाश है कि थोड़ी देर भी सूर्य की तरफ नजर उठाकर देखने की हिम्मत नहीं होती अतः अनन्त बल पराक्रम है भगवान् भुवन भास्कर में उनकी ही दया रूपी किरणों से धान्य औषधि वृक्ष, लता तथा बीज अंकुरित होते हैं। सूर्य नारायण प्राणी मात्र की आत्मा तथा जीवनी शक्ति हैं। सूर्य जगत का एक मात्र नाथ है और सारा ज्ञान विज्ञान इन्हीं की किरणों द्वारा मानव मात्र को प्राप्त होता रहता है। अतः ऐसे देव की मंत्र द्वारा उपासना करने से उपरोक्त सभी कुछ जातक के शरीर में समाहित हो जाता है, और उसी प्रभाव के कारण सत्ता सुख राजपद ऐश्वर्य लाभ प्राप्त कर अंत में मोक्ष प्राप्त होता है।

ग्रहों में सूर्य पुत्र शनि के बल पराक्रम का वर्णन अनन्त है। भगवान सूर्य से 7 गुणा ज्यादा तेज शनि भगवान में है। शनि की दृष्टि में अत्यन्त बल है इनकी दृष्टि पड़ने से देवासुर मनुष्य सिद्ध विद्याधर भी तुरन्त नष्ट हो जाते हैं अतः उनकी दृष्टि में बड़ा दम है। जहाँ पर इनकी दृष्टि पड़ती है वहीं विनाश की बरसात हो जाती है। अतः शनि की दृष्टि परम तेजवान् शक्तिशाली है इसीलिए इनके बल पराक्रम के सामने सब नत् मस्तक हो जाते हैं। इसीलिए सत्तर प्रतिशत शनि का प्रभाव निरन्तर प्राणियों पर व्यापता रहता है !

वीर विक्रमादित्य, नल दमयन्ती तथा अन्य पराक्रमी राजा उनकी दृष्टि से व्यथित रहे। हर प्रकार की आपत्ति विपत्ति का सामना किया लेकिन सत्य को नहीं छोड़ा जिससे शनिदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें यश धन कीर्ति ख्याति और मोक्ष तक प्रदान किया। अतः ऐसे बलशाली, पराक्रमी शनि की उपासना करने से जीवन में कभी भी दरिद्रता, हानि, भय क्लेश आदि का सामना नहीं करना पड़ता और जातक का जीवन सुख, आनन्द से गुजरता है तथा अन्त में जीव को मोक्ष भी प्राप्त हो जाता है।

बुद्धिमान जातक गहन चिंतन करें कि तंत्र जिसके पीछे भूत, प्रेत अर्थात घोर तामसिक शक्ति का बल होता है क्या वह इतने शक्ति प्रभावशाली ग्रह पीड़ा से निवृत्ति करा सकती है। यह सब बहकाने, ठगने एवं धनोपार्जन करने का एक साधन अपना रखा है। ऐसा करने वाले अपने को धोखा देते हैं जनता को धोखा देते हैं जिसका फल उन्हें लाखों करोड़ों जन्मों तक भुगतना पड़ता है।

याद रखें ऋषि प्रदत्त मंत्र या साबर मंत्र ही ग्रह पीड़ा से निवृत्त करने में सक्षम हैं। ग्रहों के मंत्रों को किसी ने शाप नहीं दिया है। बिना मन लगाए जपने मात्र से ही ग्रह पीड़ा से निवृत्त कर देते हैं, यह अकाट्य सत्य है। केन्द्र ने इन मंत्रों का प्रयोग कर हजारों जातकों को ग्रह पीड़ा से निवृत्त कर भौतिक व अध्यात्मिक सुख प्रदान किया।

हनुमान जी का बल पराक्रम

भगवान हनुमान जी के ब्रह्मचर्य बल पराक्रम ओज, तेज, वीरता का इतिहास साक्षी है । बचपन में ही उन्होंने सूर्य जैसे तेज पुँज ग्रह को पकड़कर मुँह में डाल लिया । पवन पुत्र बजरंगबली के सामने कोई टिक नहीं सका । रावण भी हनुमान जी के बल पराक्रम की प्रशंसा करता था । हनुमान जी की गति वायु के समान है, भक्तों में अग्रगण्य हैं, अजर, अमर हैं, अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता हैं । शास्त्र साक्षी है कि भगवान शंकर ब्रह्मा जी को भी माया व्यापी, लेकिन वही माया केसरी नन्दन को छू तक नहीं सकी । गोस्वामी जी ने इसीलिए लिखा कि **"राम ते अधिक राम कर दासा"** और यही मुख्य कारण है कि राम से अधिक मन्दिर भगवान रामदास हनुमान जी के हैं । मंगलवार को मारुति नन्दन के मन्दिर में जितना प्रसाद चढ़ता है शायद ही किसी देव पर इतना प्रसाद चढ़ाया जाता हो । अतः इससे यह सिद्ध हो गया है कि देवों का बल ही सराहनीय है । ध्यान दें सूर्य के प्रकाश की हमेशा प्रशंसा होती है उपमा दी जाती है लेकिन जुगनू के प्रकाश का न कोई प्रसंशक होता है और न ही कोई उत्तम उपमा मानी गयी है ।

भूत प्रेत ब्रह्मराक्षस तथा अन्यान्य तांत्रिक प्रयोगों को शीघ्र निर्मूल करने का सुगम उपाय है, हनुमत गायत्री आराधना अर्थात् हनुमान जी गायत्री जी के बीज मंत्र का जाप अनुष्ठान विधि से करने पर सभी प्रकार के तंत्र तथा प्रेत बाधा निर्मूल हो जाती है । लेकिन अनुष्ठान के दौरान कर्ता को पूर्ण विधि अपनानी पड़ती है तभी वह बाधा से पूर्ण मुक्त होकर सुचारु रूपेण जीता हुआ लक्ष्य प्राप्त करता है । यदि अनुष्ठान किसी के द्वारा कहीं खण्डित हो गया तो प्रेतात्मा पुनः ताकतवर हमला कर जातक को निचोड़ देती है । अतः तंत्र एवं प्रेत के पाठ में पूर्ण सावधानी बरतें तभी बाधा मुक्ति संभव है ।

केन्द्र ने एक प्रेत से एक लड़की को हनुमान जी के बीज मंत्र द्वारा शीघ्र मुक्ति दिलायी जो विगत दस वर्षों से प्रतिदिन उसकी हवस का शिकार बन रही थी । आचार्य द्वारा दीपक जलाया गया और संकल्प कराया पूजनोपरान्त जप प्रारंभ हुआ । उसी दिन से वह प्रेत उसे हाथ तक नहीं लगा सका, दूर से रोता हुआ विदा हो गया । ऐसे पीड़ित सैंकड़ों जातकों को केन्द्र ने मुक्ति प्रदान की । अतः यह मानना पड़ेगा कि हनुमान जी के मन्त्र बल का प्रभाव अपौरूषेय है । विचार करें एक दिन पहले जातक प्रेत बाधा ग्रस्त था और एक दिन बाद वह प्रेत बाधा मुक्त है क्या कमाल हुआ कैसा आश्चर्य है तथा इसके पीछे रहस्य क्या है । इसके पीछे यही रहस्य है कि भूत पिशाच हनुमान जी का नाम लेने से ही भाग जाते हैं फिर जहाँ उनकी स्थापना आराधना होगी वहाँ प्रेतात्मा एक पल तक ठहर नहीं सकती है ।

केन्द्र द्वारा प्रेत मुक्ति की चर्चा चारों तरफ शनैः शनैः फैल गयी जिसे आश्चर्य मानकर जनसत्ता से संवाददाताओं की टीम आई जिसने लड़की से गहन पूछताछ की और परिवार वालों से भी लम्बी चर्चा की । प्रेतबाधा की पूर्ण पुष्टि लड़की द्वारा तथा उसके परिवार द्वारा की गयी जो पूरे परिवार को जीना दुश्वार किये था । लड़की ने तो यहाँ तक कहा था कि मुझे नया जीवन प्राप्त हुआ है जो प्रेत मुझे रात में चार-चार बार तक भोग लेता था आज वह मुझे दिखाई तक नहीं देता यह महावीर कृपा और पंडित जी के मार्ग दर्शन से ही सुलभ हुआ है । यह लेख

16-5-97 को जनसत्ता ने 'आशिक प्रेत से छुटकारा' नामक शीर्षक लिखकर विस्तृत छापा है । 'कादम्बिनी' के संवाददाता द्वारा पूर्ण पूछताछ के बाद तंत्र विशेषांक 97 (कादम्बिनी) में पूर्ण विधि सहित छापा जिससे जनता जनार्दन का कल्याण हुआ और हनुमत् बीज मंत्र के प्रभाव से वह अपने को भयंकर तंत्र भूत-प्रेत आदि बाधाओं से मुक्त कर सके, और कर रहे हैं तथा करते भी रहेंगे । अतः यह शाश्वत सत्य है कि हनुमान जी के मंत्र द्वारा भयंकर से भयंकर भूत-प्रेत आधि व्याधि को सदा के लिए निर्मूल कर भगवान हनुमान जी की कृपा प्राप्त कर परमात्म ज्योति में समाहित हो सकते हैं ।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महावीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीड़ा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।।

हनुमान जी का जपनीय मंत्र- ॐ हं पवन नन्दनाय स्वाहा ।।

गायत्री मंत्र :-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोः योः नः प्रचोदयात् ।

तंत्र की समीक्षा

कलि प्रभाव के कारण मानव की बुद्धि कुण्ठित हो गयी है, जिसके प्रभाव से वह वैदिक, पौराणिक विधि में अटल विश्वास न रखते हुए तंत्र विधि अर्थात् तंत्र पूजा की तरफ मुड़ गया है । कलिकाल में मानव मूढ़ता को न प्राप्त हो इसीलिए व्यास जी ने वेदों से पुराणों, स्मृतियों, शास्त्रों, उपनिषदों की सरलात्मक संरचना की । वेद व्यास जी ने पुराणों में तंत्र विद्या का उल्लेख किया है लेकिन तामस पूजा बताकर मोक्षमार्गी नहीं बताया अर्थात् भौतिक सुख प्रदात्री ही कहा है ।

आज प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय में तंत्र पद्धति का विधिवत् उल्लेख प्राप्त होता है । अतः यह तंत्र विधि, यह तंत्र विद्या सनातन से ही है और इसके जनक भगवान शंकर हैं । याद रखें, तंत्र सतोगुणी ही कल्याणकारक, मोक्षकारक है । रजोगुणी और तमोगुणी तंत्र मुख्यतः अनिष्टकारक ही है । अतः सात्विक विधि का ही आश्रय लें । इस लेख में हमने तंत्र शास्त्र एवं तांत्रिकों की किसी भी प्रकार से अवहेलना न करते हुए केवल यह बताया है कि तंत्र विधि का यदि आश्रय लें तो सात्विक तंत्र का ही प्रयोग करें जिससे लौकिक तथा पारलौकिक सुखों की प्राप्ति हो सके । हमें आशा है कि यह सत्यता भरा लेख सब को बेहद पसन्द आएगा और जातक सात्विक तंत्र का अनुष्ठान करेंगे ।

विशेष :- हमारे कहने का मुख्य तात्पर्य यह है कि तंत्र पद्धति द्वारा अनुष्ठान सम्पन्न करें, करवायें लेकिन सात्विक पूजा द्वारा ही तंत्र का प्रयोग करें राजस, तामस तंत्र का किसी भी काल में अनुसंधान न करें ।

क्या परमात्मा प्राप्ति सरल सुलभ है उपासना की समीक्षा

दूसरा प्रश्न जनमानस का यह होता है कि हम रामायण भागवत गीता पढ़ रहे हैं देवी देवों का अर्चन कर रहें हैं । ग्रह हमारा क्या बिगाड़ लेगा । इसलिए हम ग्रहों का पृजन क्यों करें । हम तो मात्र परमात्मा को भजेंगे उन्हीं का स्मरण करेंगे । हमारा ग्रहों से क्या सम्बन्ध है हम उन्हें क्यों भजें और यह हमें क्या देंगे । आदि निरर्थक प्रश्न का समूह दिलो-दिमाग पर दौड़ता रहता है और समय पर व्यक्त भी करते हैं । ऐसे जातक आत्म चिंतन करें और गीता में परमात्मा ने अर्जुन से क्या कह दिया उसका वास्तविक अर्थ क्या है समझें ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज, अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।

सुन्दर काण्ड में गोस्वामी तुलसी दास जी ने लिखा है ।

जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु धनु भवन सुहद परिवारा ।
सव कै ममता ताग बटोरी, मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं, हरष शोक भय नहिं मन माहीं ।
अस सज्जन मम उर बस कैसें, लोभी हदयँ बसइ धनु जैसें ।

उपरोक्त पंक्तियों का हार्दिक अवलोकन चिन्तन मनन करें सभी शंकायें स्वतः ढेर हो जायेंगी । आत्म चिन्तन करें, सभी धर्म को छोड़कर सभी सांसारिक इच्छाओं को मरोड़कर सारी मनोवृत्तियों का दमन कर जातक परमात्मा में समाहित हो सकता है यह इतना सरल है, यह इतना सहज है, यह इतना साधारण है नहीं, यह अत्यन्त दुर्गम दुर्लभ है । बड़े-बड़े साधकों ने वर्षों तपस्या की उनके मुख से राम नाम तक निकलना दुर्लभ हुआ, फिर यह साधारण मानव प्रभु ज्योति में तुरन्त कैसे समाहित हो सकता है? प्रभु पदारविन्दों का सहारा दर्शन सेवा कैसे प्राप्त कर सकता है विचार करें । यह केवल वाणी का विलास है । कब प्रभु पद्मपराग प्राप्त कर पाता है रामायण में स्पष्ट उल्लेख है । श्री राम जी ने कहा है सखा सुनो मैं अपना स्वभाव कहता हूँ । मद मोह तथा नाना प्रकार के छल कपट त्याग दे तो मैं उसे साधु के समान कर देता हूँ । माता पिता भाई पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र, परिवार इन सबके ममत्व रूपी तागों को बटोर कर और उन सबकी डोरी बटकर उसके द्वारा जो अपने मन को मेरे चरणों में बांध देता है सारे (सांसारिक संबंधों का केन्द्र मुझे बना लेता है) जो समदर्शी है कोई इच्छा नहीं है जिसे हर्ष, शोक भय नहीं है ऐसा सज्जन मेरे हृदय में ऐसे बसता है जैसे लोभी के हृदय में धन बसा करता है अर्थात जीव सभी सुध त्याग कर केवल मामेंकं शरणं हो तभी परमात्मा उस जीव को अपनाते हैं ।

अतः जातक बार-बार चिन्तन करें कि यह कार्य क्या एक जन्म में हो सकता है क्या जन्म जन्मान्तर की पाप राशि इस जन्म में नष्ट हो सकती है । जब प्राणी एक साधारण व्यसन को नहीं त्याग पाता फिर वह सर्वधर्मान परित्यज्य कैसे करेगा और बगैर सर्व धर्मान परित्यज्य के बिना शरण प्राप्त होना कितना दुर्लभ है । पूर्व जन्म जन्मांतर का अर्जित किया हुआ शुभ अशुभ प्राणी मात्र के मस्तिष्क पर मंडराता रहता है और उस शुभ अशुभ कर्मों का भुगतान ग्रह जीव मात्र को न चाहने पर भी भुगवाता रहता है । कारण जातक का पाप जन्म जन्मांतरों का होता है और ग्रह पाप राशि का भुगतान करवा रहा होता है । इसीलिए चाहते हुए भी जातक जप यजन नहीं कर पाता तथा ग्रह उसके दुष्कर्मों को प्रायश्चित् कराने हेतु जातक की प्रत्येक चाल को खराब कर देती है और जातक विषम परिस्थितियों से घिर जाता है ।

गायत्री भगवती आदि के मंत्र शापित हैं और बगैर शाप विमोचन किए पूर्ण फलीभूत नहीं होते और दूसरी रुकावट यह भी है कि यदि मंत्र जप करते समय मन नहीं लगा तो भी मंत्र फल नहीं देता है । जैसे जब तक विद्यार्थी का मन विद्या पढ़ने में पूर्णरूप से नहीं लगे तब तक उसे कुछ याद नहीं हो सकता मात्र वह पुस्तकें पलट कर समय पूरा करेगा इसी प्रकार इन मंत्रों में कुछ शर्तें हैं जिनको हम चाहते हुए भी पूरा नहीं कर पाते इसीलिए हमें मंत्र जप का पूर्णफल प्राप्त नहीं हो पाता । इसका प्रमाण गोस्वामी जी ने हनुमान चालीसा में दिया है **संकट से हनुमान छुड़ावे, मन क्रम वचन ध्यान जो लावे** अर्थात हनुमान जी संकट से तब छुड़ायेंगे जब हनुमान चालीसा का पाठ मन क्रम वचन से किया जाय तभी संकल्प की पूर्ति होगी और मन क्रम वचन से जप पाठ पूजन होना अत्यन्त कठिन है फिर इस कलियुग में किसका मन लगता है यह प्रायः समझने की बात है ।

ग्रहों के मंत्रों को शाप किसी ने नहीं दिया है इसलिए बिना मन लगाये भी यह पूर्ण फलीभूत हो जाते हैं और सभी शुभाशुभ कर्मों का भुगतान नवग्रह ही कराते हैं । अब ग्रहों के मंत्र जप प्राणीमात्र को सर्वप्रथम करना चाहिए । इसलिए शास्त्र निर्देशानुसार तथा केन्द्र अनुभव अयुत लक्ष कोटि होम ग्रहों के कर लेना चाहिए । इस प्रकार यजन जप करने से ग्रह अनुकूल हो जायेंगे पाप राशि नष्ट हो जायेगी तथा जातक इच्छित लाभ प्राप्त कर सकेंगे । जातक का ग्रह, जप, यज्ञ होने के बाद जो इष्ट हो गुरू प्रदत्तमंत्र हो उसके जप, यज्ञ करने से वह तत्काल फलीभूत होगा और समस्त कामनाओं की पूर्ति होगी । ऐसा केन्द्र का अनुभव है । अध्यात्मवादियों का अध्यात्म मार्ग प्रशस्त होगा और भौतिकवादियों की भौतिक इच्छाएं पूर्ण होंगी अर्थात समृद्धि ऐश्वर्य वैभव आदि प्राप्त कर सकेंगे और जातक के पूर्व कर्म निर्मूल हो जायेंगे । जिससे जीवन एक अनूठी शान्ति अनूठी समृद्धि प्राप्त करेगा ।

याद रखें, भजन तो परमात्मा का ही करना चाहिए परन्तु सर्वप्रथम ग्रह बाधा को दूर कर लेना चाहिए। भगवान राम के शब्दों पर गौर करें जो गोस्वामी जी ने मानस में अंकित किये हैं **"जाकर नाम सुमिर एक बारा, नर उतरहि भव सिंधु अपारा"** आखिर वह कौन सा एक बार है जिसका सुमिरन करके ही जातक भवसिन्धु को पार कर सकते हैं करोड़ों बार भी सुमिरन के बाद भवसिन्धु को पार कर सके यह सुलभ क्यों नहीं हुआ यह प्रत्यक्ष देख रहे हैं इस बात का विशेष ध्यान करें, चिन्तन करें, चिन्तन करने पर स्वतः शंका समाधान हो जायेगी। उत्तरकाण्ड में भगवान राम ने स्वयं श्री मुखसे कहा कि **"औरउ एक गुपुत मत, सबहिं कहउँ कर जोरि, संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि।।**

अतः गोस्वामी जी के इस दोहे का बार-बार चिन्तन करें कि जिसका नाम मात्र एक बार सुमिरन करने से जीव तर जाता है वही परमात्मा कह रहा है कि बगैर भगवान शंकर की भक्ति से मानव मेरी भक्ति प्राप्त नहीं कर सकता है ऐसा परमात्मा ने क्यों कहा इस पर बुद्धि जीवी विचार करें। इसके पीछे मात्र यही रहस्य है कि भगवान शंकर तमोगुण के अधिष्ठाता हैं और उनकी उपासना करने से तम नष्ट हो जाता है और सत्य का उदय हो जाता है। परमात्म प्राप्ति सुलभ हो जाती है इसीलिए प्रभु ने कहा कि प्रथम सदाशिव की भक्ति करो तभी मेरी भक्ति प्राप्त होगी।

दूसरा कारण स्पष्ट यह है कि जन्म जन्मांतर युग युगांतर कल्प कल्पान्तर तक का पाप जीव के मस्तिष्क में मंडराता रहता है। इसीलिए तामसी प्रवृत्ति के कारण परमात्मा सहज ही प्राप्त नहीं होता। उपरोक्त को पढ़ने के बाद जातक सभी कुछ समझ जायेंगे और यह भ्रांति हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगी कि ग्रह, यज्ञ का विधान हमारे शास्त्रों में नहीं है। अतः यदि सर्वप्रथम ग्रह संशोधन कर लिया जाय तो सभी बाधायें हमेशा हमेशा के लिए जाती रहेंगी और जातक इहलोक परलोक का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर परमात्मा ज्योति में समाहित हो सकेगा।

❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄ ❄

किस ग्रह की उपासना करने से सत्ता प्राप्त होती है?

सूर्य पहला ग्रह है, जो सत्ता प्राप्त कराता है। या दूसरा ग्रह राहु है जो राज्य को चलाने के लिए सफल कुटनीतिज्ञ बनाता है। तीसरा ग्रह बृहस्पति है जो जातक को समय-समय पर बोध करवाता है कि इस समय मुझे राज्य के संचालन हेतु क्या करना चाहिए। चौथा ग्रह मंगल है जो हर प्रतियोगिता में जातक को सफल बनाता है। हर इलैक्शन में प्रतिद्धन्दी से प्रतियोगिता में सफल बनाता है नारे लगाने की हिम्मत पैदा करता है और जातक को इलैक्शन में जितवा देता है।

जिस प्रकार सूर्य उदय होने के बाद चन्द्रमा तथा ताराओं के प्रकाश को साहीन कर देता है। अपने प्रकाश के सामने दूसरे को टिकने नहीं देता इसी प्रकार सूर्य प्रधान आदमी भी अपने सामने दूसरे को टिकने नहीं देता है। उसके चेहरे में वह तेज, वह प्रभा रहती है कि दूसरे आदमी को बात करने में भी डर लगता है। इसीलिए सूर्य प्रधान जातक जो चाहता है वह कार्य कर जाता है। सूर्य प्रकाश का मालिक है जिसके ह्रदय में प्रकाश होता है वहां अंधकार ठहर नहीं सकता। इसी कारण वह अत्याचार, बेइमानी, धोखेबाजी, नहीं कर सकता। हाँ क्रूर जरूर होता है क्योंकिं क्रूरता के विना राज्य नहीं चलता। एडमिनिस्ट्रेटिव पावर्स बहुत अधिक होती है जिसके कारण वह जनता-जनार्दन मंत्रियों को नेताओं को काबू रख राज़्य को चलाता है। अतः सत्ता के इच्छुक सूर्य भगवान के एक करोड़ मंत्र जप कर अपनी इच्छा पूर्ण करें।

दूसरा राज्य का कारक ग्रह राहु है। केवल सत्ता को प्राप्त करने पर राज्य नहीं चलंता जब तक वह राजा कूटनीतिज्ञ नहीं होता। कूटनीति राज्य को चलाने का मुख्य अंग है। कूटनीति घर, बाहर और राज्य में भी चाहिए। सत्ता प्राप्त हुई समाप्त हो जाती है जब तक वह कूटनीतिज्ञ नहीं होता।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में उदघोषित किया किः-

सोचेहीं नृप जो नीति न जाना॥

वह राजा सौच करने योग्य है जो नीति को नहीं जानता है। इसलिए सत्ता प्राप्त होने पर कूटनीतिज्ञ होना परम अवश्यक है। राहु की कृपा से जातक सफल कूटनीतिज्ञ हो सकता है। यदि जातक का राहु तीसरे या छठे भाव में या उच्च्व का होता है तो जातक राहु की कृपा से जन्म-जात कूटनीतिज्ञ होता है और जीवनोपरान्त कूटनीति के प्रभाव से अपना दबदवा बनाये रखता है।

यदि राहु पर शनि और मंगल की दृष्टि पड़ जाए तो राहु की शक्ति आधी समाप्त हो जाती है । अवश्यमेव राहु छाया ग्रह है परन्तु जीव को सफल योगी, सफल कूटनीतिज्ञ बना देता है । अन्य भावों में बैठा हुआ राहु इतनी सफलता प्राप्त नहीं होने देता।

राहु की महानता :-

राहु राक्षस है जिस समय अमृत बंट रहा था इसको यह बोध हो गया था कि यह भगवान विष्णु है और यह अमृत केवल देवताओं को ही मिलेगा और मैं वंचित रह जाऊँगा इसलिए उसने कूटनीति खेली और अमृत पान करने हेतु देव श्रेणी में शामिल हो गया । यदि कूटनीति नहीं खेलता तो इसे अमृत प्राप्त नहीं होता । अतः यह सिद्ध हो गया कि कूटनीति का कारक ग्रह राहु ही है । सत्ता के इच्छुक करोड़ों मंत्र जाप कर राहु के बुरे प्रभाव से अपने को मुक्त कर लें या राहु को जप द्वारा बलवान बना कर सत्ता के आनंद का उपभोग करें ।

बृहस्पति :-

बृहस्पति देवगुरु है । बृहस्पति जातक को बिमल बुद्धि प्रदान कराता है । बुद्धि के प्रभाव से जातक अपना दबदवा जनता-जनार्दन पर बनाये रखता है और ऐसी योजनायें बनाता है । जिससे जनता प्रभावित हो जाती है और उसकी वाह-वाह हो जाती है । ऐसा भाषण देता है कि उस भाषण के प्रभाव से जनता उसका गुणगान करती रहती है । जन्मांक में भाग्य का, लग्न का, पंचम का बृहस्पति जातक को सत्ता भोगने की क्षमता प्रदान करता है। जिनके जन्मांक में बृहस्पति शुभ न हो अच्छे स्थान पर स्थित न हो वह जातक सत्ता के इच्छुक बृहस्पति के करोड़ों मंत्र जाप कर इसके कुप्रभावों को समाप्त करें या स्वयं जप द्वारा बृहस्पति के प्रभाव को बढ़ा कर राज्य सत्ता का आनन्द लें ।

मंगल :-

मंगल हर प्रतियोगिता में जातक को सफल होने की सक्षता प्रदान करवाता है । यदि जन्मांक में मंगल तीसरे या छठे भाव में हो या छठे भाव का सम्बन्ध भाग्य, कर्म, या लाभ से हो तो जातक इलैक्शन में निर्विवाद विजयी हो जाता है । मंगल उसमें इतनी हिम्मत देता है और हिम्मत के बल पर वह सत्ता को भोगता है । सत्ता के इच्छुक इन चारों ग्रहों के करोड़ों मंत्र जाप कर सत्ता का आनन्द ले सकते हैं और सबसे बड़ा लाभ यह मिलता है कि जातक सत्ता में बदनाम नहीं होता और चिरकाल तक लोग उसका समरण करते हैं उसके पद चिन्हों पर चल कर राज्य का आनन्द लेते हैं यानि उसकी ख्याति, कीर्ति, बराबर बनी रहती है ।

जप के कारण दूसरा प्रभाव यह पड़ता है कि वह अत्याचार, अनाचार, पापाचार नहीं करता कारण कि मन उसे विपरित कार्य करने की आज्ञा नहीं देता और जब बुरा कार्य होता ही नहीं तो उसे भोगना भी नहीं पड़ता और चिरकाल तक सत्ता का आनन्द मंगल के प्रभाव से ले लेता है ।

केतु मंगल के समान ही प्रभावशाली ग्रह है यदि यह छठे भाव में बैठा हुआ हो और इसकी दशा चल जाऐ, शनि से दृष्ट न हो तो वे जातक चुनाव में अवश्यमेव जीतता है और जीतने के बाद मंत्री भी अवश्य बनता है कारण कि केतु का चिन्ह झंडा है इसलिए मकानों और कारों पर तिरंगा झंडा अवश्य फैराता है । छठे भाव का केतु एक लाख दोषों को नष्ट कर देता है तथा जो भी उल्ट फेर राज्य शासन में होती है सबका दमन करने की शक्ति जातक को प्रदान करता हैं ।

अन्य ग्रहों का प्रभाव भी जातक पर समान रूप से व्याप्ता है, महादशा तथा अन्तरदशाओं पर निर्भर करता है । इसलिए चुनाव में खड़े होने से पहले जन्मांक का निरिक्षण/परिक्षण किसी अच्छे दैवज्ञ से अवश्यमेव करवा लेना चाहिए ताकि पराजय का मुख न देखना पड़े ।

<u>मंत्र :-</u>

मंत्र के प्रभाव से हम वह कर सकते हैं जो कि नहीं हो सकता अवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है । इसके प्रतिक हमारे ऋषि मुनि हैं जिन्होंने घन-घोर तप कर जनता-जनार्दन के कल्याण हेतु शास्त्र पुराणों में वर्णित कर जनता-जनार्दन को मार्ग दिखाया। मन्त्र में बड़ा बल है । मन्त्र बल रूपी औषधि सारे पाप-ताप तथा रोगों का नाश कर देती है। फलस्वरूप जातक की आत्मा को पुष्ट कर उसमें देह बल, मनोबल, की पूर्ति करती है । तथा ज्ञान विज्ञान से पूर्ण कर सफल पूजनीय राजा बना देती है । मरने के बाद भी उसकी अमर कीर्ति यत्र-तत्र-सर्वत्र छायी रहती है ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

श्री सरस्वत्यै नमः

क्या कारण है जो चाहते हुए भी विद्यार्थी विद्या नहीं पढ़ पाते लाख प्रयास करने के बाद भी विद्यार्थी विद्या से वंचित क्यों?

सदा की भांति आज भी इस वैज्ञानिक प्रगति के युग में कुछ बालकों के अक्षर ज्ञान अर्थात विद्या अध्ययन की समस्या बनी हुई है । लाख चाहने और प्रयत्न करने के बाद भी अधिकांश बालक विद्या अध्ययन नहीं कर पाते हैं । कुछ थोडी बहुत ही ग्रहण कर पाते हैं और बहुत कम ही सही अध्ययन का लाभ उठा पाते हैं. । इसके जहाँ सामाजिक अर्थिक तथा राजनैतिक कारण हो सकते हैं परन्तु इनको जन्म देने वाला मुख्य कारण वह परिस्थिति है जिसमें हम रह रहे हैं । इस परिस्थिति का निर्माण हमारे पूर्वकृत कर्मों पर आधारित है और इसका निर्धारण ग्रहों की गति पर आश्रित है । अर्थात बालक द्वारा विद्या अर्जन कर पाना या न कर पाना ग्रहों की गति अनुसार जाना जा सकता है और उस गति द्वारा उत्पन्न अनिष्ट का उपचार कर उसे सौम्य या कार्य अनुरूप बनाया जा सकता है ।

इस विवेचन अनुसार तथा असंख्य जन्म कुण्डलियों के अवलोकन के आधार पर हम इसे तीन भागों में बांट सकते हैं । अर्थात वह बालक जो विद्या अध्ययन के अवसर से बिल्कुल वंचित रह जाते हैं दूसरे जो चाह कर और सारे प्रयास करने पर भी बहुत कम या काम चलाऊ विद्या प्राप्ति कर सकते हैं और तीसरे जो अल्प प्रयास से ही उत्तम विद्या प्राप्त कर शब्द ब्रह्म अर्थात इस सृष्टि के रहस्यों को जानने में सफल होते हैं । अपना जीवन भौतिक तथा अध्यात्मिक रूप से उन्नत कर मानव समाज में सुधार तथा उन्नति का वातावरण बनाने में सहायता करते हैं । गुणज्ञ विद्धानों द्वारा इसके कई कारण माने जाते हैं। परन्तु ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह चाल इसको प्रभावित करती है जो इस प्रकार है ।

विद्यार्थी (बालक) बड़ी उमंग उत्साह के साथ विद्या अध्ययन करना आरंभ करता है । परन्तु लाख प्रयास तथा परिश्रम करने के बाद भी विद्या नहीं पढ पाता । काफी समय

तक अध्ययन तथा मनन करने पर भी अगले दिन याद किये हुए विषय की विस्मृति हो जाती है । बार-बार प्रयत्न करने के बाद भी विद्यार्थी का मन विद्या से हटना आरंभ हो जाता है और वह मन को विद्या में नहीं लगा पाता । केन्द्र ने यह खोज की कि विद्यार्थी ने वही वि॰य याद किये, सारे दिन बेचारा याद करता रहा, जिस समय परीक्षा देने बैठा सब का सब भूल गया और याद करने के बाद भी वह याद नहीं आया, फलस्वरूप उसे फेल होना पडा । मां-बाप अपना सारा जरूरी काम छोड़कर बच्चे को पढ़ाते हैं तथा अच्छे-से-अच्छे अध्यापक से ट्यूशन लगवाकर पढ़ाते हैं । बार-बार पढ़ाने पर भी विषय बच्चा भूल जाता है फिर मां-बाप उसकी पिटाई करते हैं फिर भी उसका मन विद्या पढ़ने में नहीं लगता आखिर बच्चे को मां-बाप पढ़ाना बन्द कर देते हैं और उसकी किस्मत पर उसको छोड़ देते हैं । पछताने के सिवाय उन्हें कुछ हाथ नहीं लगता ।

दूसरी ओर विद्यार्थी को न मां-बाप स्वयं पढ़ाते हैं । न ट्यूशन से पढ़ाते हैं केवल बच्चा जो स्कूल में पढ़ता है, उसी के अनुसार वह अपने आप अपनी किताबों का अध्ययन कर कक्षा में सर्वोपरि अंक लेता है । वह बच्चा दिन में अल्प समय ही पढ़ता है फिर भी वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता है । उसके मां-बाप यह सब देखकर बड़े प्रसन्न होते हैं कि हमारा बच्चा बड़ा होनहार है । वे स्वयं ही थोड़े समय में सारे दिन की विद्या अध्ययन कर लेता है । वह जितना अध्ययन करता है उसको याद हो जाता है और मस्तिष्क की चेतना शक्ति उसे केन्द्रित करे रखती है । जब वे पेपर देने बैठता है तो मस्तिष्क की शक्ति उज्जवल होने के कारण प्रश्नों का उतर क्रमबद्ध देकर कक्षा में सर्वोपरि अंक लेता है और चारों तरफ उसकी वाह-वाह होती है ।

आज विज्ञान का युग है । माने हुए विज्ञानवेत्ता भी कभी-कभी अपने बच्चों को पूर्ण विद्या अध्ययन नहीं करवा पाते ऐसा क्यों? कौन शक्ति है जो बच्चे को पढ़ने या पढ़ने नहीं देती है । उपरोक्त दोनों विवरणों के अनुसार बच्चे एक जैसे ही है लेकिन दोनों की विद्या अध्ययन में इतना अन्तर क्यों है । गरीब-से-गरीब मां-बाप भी अपने बच्चों पर अधिक से अधिक विद्या अध्ययन करवाने में पैसा खर्च करते हैं फिर भी सफलता प्राप्त क्यों नहीं होती? । इन सब प्रश्नों का उतर विज्ञान के पास नहीं है । वह चाहने पर भी किसी बच्चे का मन विद्या अध्ययन में नहीं लगा सकता । क्योंकि भौतिक विज्ञान अपने में अधूरा है ।

भारतवर्ष में ऐसे त्रिकालज्ञ ऋषि हुए हैं जिनको सारा ब्रह्मण्ड हांथ पर रखे हुए आँवले की तरह दिखाई देता था । उनके पास अष्ट सिद्धियाँ थीं । सिद्धियों के बल पर वे पूर्ण ऐश्वर्य का भोग कर सकते थे परन्तु पर्ण कूटीर में रहकर सारी आयु तप-रत रहकर ही जीवन यापन किया और संसार के प्राणियों को बताया कि जो हर क्षेत्र में प्रगतिशील होना चाहता है वे तपरत रहे । महर्षि भृगु जी जो ब्रह्मा जी के मानस पुत्र हैं उन्होंने ज्न कल्याण

हेतु ज्योतिषशास्त्र की रचना की और बताया कि यदि विद्या अध्ययन संबंधी ग्रहों का जप, तप, यज्ञ अभिभावक करें या करवायें तो बच्चों की सारी समस्याऐं समाप्त हो जायेंगी और बच्चा पूर्ण विद्या अध्ययन कर पायेगा ।

अब हम ऊपर अंकित प्रथम प्रश्न का उतर दे रहे हैं । पूर्वजन्मों के भयंकर कुकृत्य के फलस्वरूप नवग्रह बचपन से ही पाप कर्मों का फल देना आरंभ कर देते हैं । पापक ग्रहों की दशा चौथे, पांचवे भाव की चल पड़ती है या अस्त ग्रहों की बचपन से ही शनि की साढ़ेसाती आरंभ हो जाती है और शुभ ग्रहों की दृष्टि चौथे, पंचम भाव पर नहीं होती। चौथे, पंचम भाव के स्वामी छः, आठ, बारह में बैठे हुऐ होते हैं या छः, आठ, बारह के स्वामी चौथे, पंचम भाव में आ बैठते हैं । चौथे भाव का शनि-राहु विद्या अध्ययन करवाने ही नहीं देता । कारण कि विद्या अध्ययन हो जायगा तो बच्चा बुद्धिमान बन जाएगा और फिर पाप कर्मों का भुगतान उस अनुरूप नहीं हो सकेगा । इसलिए बचपन से ही बच्चे के मन में उद्विग्नता, उत्तेजना पैदा कर विद्या अध्ययन से विमुख कर दिया जाता है। लाख चाहने पर भी वह नहीं पढ़ सकता । शनि, राहु दोनों गर्म ग्रह हैं, जिस समय यह अपना प्रभाव जमाते हैं तो मस्तिष्क की चेतना शक्ति नष्ट हो जाती है । इस प्रकार बच्चा विद्या से विमुख हो जाता है और उसके प्रति किये हुए उपरोक्त सारे प्रयास न चाहने पर भी विफल हो जाते हैं ।

केन्द्र ने ऐसे बच्चों के जन्मांक का अध्ययन कर पहले यह देखा कि कौन से ग्रह इसको विद्या अध्ययन से रोक रहे हैं उसका जप उससे या उसके अभिभावकों से या केन्द्र के ब्राह्मणों से करवाया । जप होने के बाद वह बच्चा खूब अध्ययन कर पाया । केन्द्र विश्वास दिला देना चाहता है कि मां-बाप हीन भावनाओं से न घिरें । हमारी हिन्दू संस्कृति अपने में पूर्ण है । मंत्र कभी विफल नहीं होते यदि बच्चों के निमित्त जप, तप, यज्ञ करवाऐ जायेंगे तो निश्चित ही बच्चे विद्या अध्ययन कर पायेंगे इसमें कोई संशय नहीं है । आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है ।

अब हम दूसरे प्रश्न का उतर दे रहे हैं जिन बच्चों के पूर्वजन्म के शुभ कर्म होते हैं ग्रह बच्चपन से ही उसे शुभ फल देना आरंभ कर देते हैं । शुभ ग्रहों की दशा बच्चपन से ही आरंभ हो जाती है । चौथे या पंचम भाव में बृहस्पति, बुध उच्च या स्वग्रही बैठे होंगे और पापक ग्रहों की दृष्टि इन दोनों भावों पर नहीं होगी तथा छः, आठ, बारह भावों पर बैठे हुए ग्रहों का प्रभाव चौथे, पंचम भाव पर नहीं होगा । सूर्य उच्च का दशम या भाग्य में बैठा हुआ होगा तथा ग्रह बच्चे को शुभ फल देने में उतारू होंगे जिसके फलस्वरूप बच्चे को पढ़ाना नहीं पड़ता स्वयं ही विद्या अध्ययन करता है और एम.ए., पी०एच.डी. की डिग्रीयाँ बिना किसी के पढ़ाऐ स्वतः ही प्राप्त कर लेता है । केन्द्र में हमने यह देखा कि इन योगों के बच्चों की मस्तिष्क की चेतना शक्ति इतनी दीप्त होती है कि एक बार जो पढ़

लिया वह मस्तिष्क में अंकित हो जाता है । दुबारा पढ़ना याद करना नहीं पड़ता । ऐसे बच्चे शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह खिलते रहते हैं । अपनी तथा मां-बाप की कीर्ति को बढ़ाने वाले होते हैं और चारों तरफ विजयी होते हैं । यह उनके शुभ कर्मों का प्रतिफल होता है जो ग्रह उसे बचपन से देना आरंभ देते हैं ।

उपरोक्त दोनों प्रश्नों का उतर हमने थोड़े शब्दों में दिया है और जो उतर दिया है शास्त्रोक्त है । केन्द्र ने बहुत से बच्चों पर यह प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है । आज के भौतिकवादी उपरोक्त पर पुनः विचार करें और इस तथ्य पर पहुंचे कि भौतिकविज्ञान बच्चों को विद्या क्यों नहीं पढ़ा सकता है । आगे हम विद्या अध्ययन के दूसरे तथ्यों का विश्लेषण क्रमवद्ध कर रहे हैं ।

विद्या अध्ययन में बाधक दो अन्य कारणों का उल्लेख

केन्द्र ने यह देखा कि बच्चे की ग्रह-दशा अनुकूल है । ग्रह विद्या अध्ययन में बाधक नहीं सहायक है । शुभ ग्रहों की दशा शुभ स्थानों पर स्थित होने के बाद भी बच्चा क्यों नहीं पढ़ पा रहा है । खोजने पर यह पाया कि विद्यार्थी ब्रह्मचारी नहीं रह पा रहा है । जब जन्मांक में शुक्र, मंगल एक साथ बैठे हुए हों या सप्तम, चतुर्थ, पंचम, लग्न में वैठे हुए होते हैं तो विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य का पालन करना कठिन हो जाता है । यदि इनकी महादशा हो तो असंभव ही हो जाता है । पंचमेश सप्तमेश में बैठा हुआ है और सप्तमेश लाभ या लग्न में बैठा हुआ हो तो ब्रह्मचारी रहना कठिन हो जाता है ।

जो बच्चा ब्रह्मचारी नहीं रहेगा वह ग्रह तथा महादशाओं के अनुकूल होने पर भी विद्या अध्ययन नहीं कर सकता । कारण कि वीर्य में ही ऊर्जा होती है जो पढ़ी हुई विद्या की शक्ति को छुपाकर रखता है और चेतना शक्ति को उज्जवल कर विद्या अध्ययन में सहायक होता है ।

आज विज्ञान की देन टी०वी० में लड़के लड़कियों का आपसी रोमांस देखकर विद्यार्थी भी रोमांस करने की तैयारियां करता है । जब पंचमेश छः, आठ, बारह भाव में होता है तो किया हुआ रोमांस या प्यार थोड़े दिन रहता है और समाप्त हो जाता है । जब रोमांस समाप्त हो जाता है और नित्य रोमांस को देखने के कारण विद्यार्थी की कामाग्नि उद्दीप्त हो जाती है वह अपने को नहीं संभाल पाता है । वह अप्राकृतिक ढ़ंग से यानि हस्तमैथुन आदि के द्वारा कच्चा वीर्य बुरी तरह से पात करना आरंभ कर देता है, जिसके कारण मस्तिष्क की ऊर्जा शक्ति कम होने लगती है । फलस्वरूप विद्यार्थी विद्या अध्ययन करना बन्द कर देता है । मां-बाप बहुत चिन्तित होते है पर कुछ नहीं कर पाते ।

अब मैं नीचे चार लक्षणों को दे रहा हूं यदि यह विद्यार्थी में घटें तो समझ जायें कि यह बच्चा ब्रह्मचारी नहीं रह पा रहा है जिसके फलस्वरूप विद्या अध्ययन कम होता चला जा रहा है ।

1. दिन में विद्यार्थी बहुत सोता हो, आँखे अन्दर की तरफ धसने लग गई हों, आँखों के निचले भाग में कालिमा आनी शुरू हो गई हो ।
2. गाल पिचक गऐ हों, चेहरे पर तेज न हो, शक्ल पर मुर्दाई छाई हुई हो ।
3. आलस बहुत रहता हो, बार-बार जमाई लेना आरंभ कर देता हो । आलस के मारे वह अपने नित्य नैमित्तक कर्मो से उपरत होता चला जा रहा हो ।
4. रात दिन टी०वी० में बैठा रहता हो और अश्लील तस्वीर देखता हो या बहुत लड़के लड़कियों के टेलीफोन आ रहे हों ।

यदि उपरोक्त चारों लक्षण विद्यार्थियों में घटित हो रहे हों तो यह स्पष्ट समझ लें कि यह बालक/बालिका ब्रह्मचारी न रहने के फलस्वरूप विद्या अध्ययन से वंचित होता चला जा रहा है । उससे युद्ध न करें किसी दैवज्ञ के पास ले जाकर उसे समझाने का प्रयास करें यदि कुछ न कर सकें तो उसके निमित्त शुक्र, मंगल का जप या जो ग्रह उसे प्यार दे रहे हैं उसके निमित्त जप स्वयं विद्यार्थी से करवायें अन्यथा ब्राह्मणों से करवायें ।

उपाय :-

1. प्रातः काल आँवले का मुरब्बा पानी में घोलकर नित्य प्रति खिलाऐं, उपर से जल पिलायें ।

2. पन्द्रह वादाम, पन्द्रह कमल गट्टे (काला छिलका उतार कर) पांचों मंगज, सौंफ, पन्द्रह काली मिर्च रात्रि में भिगो दें और सुबह घोंट पिट कर दूध में फैंट कर बच्चे को पिलायें जब तक भूख न लगे वह बच्चा भोजन न करे । ऐसा करने से गई हुई वीर्य शक्ति पुनः प्राप्त होती है । कमल गट्टे में वह शक्ति है जो वीर्य की क्षति को पूरा करती है ।

3. अपामार्ग की जड़, अश्वस्थ मूल की जड़ (पीपल) मरवे के पांच पत्ते, तुलसी के पांच पत्ते, बच्च कूठ, तांबे के पात्र में गंगा जल या साधारण जल डालकर और एक तेल और घी का दीपक जलाकर शुक्र, मंगल का जप कर अगले दिन छानकर विद्यार्थी को पिला देना चाहिए यदि स्वयं कर रहा है तो स्वयं पी लेना चाहिए ।

यदि उपरोक्त उपाय किये तो निश्चित ही वीर्य की क्षति पूरी होगी । विद्यार्थी पुनः विद्या अध्ययन करना आरंभ कर देगा । चेहरे पर चमक आ जायेगी और आलस करना बन्द कर देगा तथा सेहत बननी आरंभ हो जायेगी ।

केन्द्र यह विश्वास दिला देना चाहता है कि यदि उपरोक्त उपाय किये तो निश्चित ही सफलता मिलेगी इसमें कोई संशय नहीं है । जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है, सब कुछ संभव है । आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है ।

दूसरा कारण महादशायें भी ठीक है परन्तु विद्यार्थी कुसंगति में पड़ जाता है । कारण कि जब तृतीय भाव में पापक ग्रह होते हैं और जब वह शुभ ग्रहों की अन्तर प्रतिअन्तर दशा में आते हैं तो विद्यार्थी को यह कुसंगति रूपी प्रसाद दे देते है । मां-बाप

समझा बुझा कर अपने बच्चों को अपने अनुकूल रखें और बच्चे की हर चाल पर निगरानी रखें ।

तृतीय एक ओर कारण शेष रह गया कि विद्यार्थी बहुत अच्छी विद्या पढ़ रहा है अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी का है परन्तु एक दम विद्या से विमुख होने लगता है । ब्रह्मचारी भी है, कुसंगति भी नहीं है फिर भी वह विद्या अध्ययन को क्यों बन्द कर देता है ।

इस प्रश्न का उतर यह है कि महादशायें शुभ के बाद अशुभ आ गई और ग्रहों के प्रभाव से विद्यार्थी की चेतना शक्ति मलीन हो गई जिसके फलस्वरूप विद्या अध्ययन बन्द हो जाता है ।

विशेष :- यदि ऐसी स्थिति हो तो जिन ग्रहों ने विद्या बंद की है विशेष रूप से राहु, शनि, मंगल या अस्त ग्रह उनका जाप विद्यार्थी से करवायें या स्वयं करें या ब्राह्मणों से करवायें । उपरोक्त ग्रहों का जप यदि कर दिया तो निश्चित ही विद्यार्थी पुनः विद्या अध्ययन करना आरंभ कर देता है । केन्द्र ने ऐसे बहुत से विद्यार्थीयों पर यह प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है ।

चेतावनी :- केन्द्र विगत बीस, पचीस बर्षों से ग्रहों पर शोधकार्य करता चला आ रहा है और जो केन्द्र ने उपाय सुझाऐ हैं वह सत्प्रतिशत सत्य हैं । यदि विद्यार्थी या उनके मां-बाप उपरोक्त इन विधियों का सहारा लेंगे तो निश्चित ही मां-बाप अपने पुत्रों को उर्द्धगामी बना सकेंगे ।

अतः उपरोक्त सभी कुछ जानने के लिए प्रत्येक माँ-बाप को अपने बच्चों के जन्मांक अवश्य बनवाने चाहिए कारण यह है कि जन्मांक ही बच्चे के भूत भविष्य वर्तमान का उद्घोषक है, और जन्मांक ही जीवन की कुंजी है ।

केन्द्र ने एक ऐसी जन्मकुण्डली का निर्माण किया है जो एक दम नवीन, अद्भुत अनोखी और सभी उपायों से ओत प्रोत है । ग्रह दशा अस्त, वक्री, कारक, अकारक फलित, साढ़ेसाती आदि सभी कुछ वर्णन कर प्रत्येक ग्रह की शान्ति हेतु सरल उपायों का भी समावेश किया है । केन्द्र द्वारा निर्मित पत्री का आप स्वतः अवलोकन कर ग्रह स्थिति ज्ञात कर उपायों का सहारा लेकर ग्रह पीड़ा से मुक्त हो सकते हैं । अतः यह जन्म कुण्डली के साथ-साथ उपायों की महत्वपूर्ण पुस्तिका भी है । केन्द्र द्वारा बनाई गयी पत्री गणित-फलित से परिपूर्ण एवं उपायों से अलंकृत है ।

केन्द्र द्वारा अनोखी जन्म कुण्डली मात्र 300 रू० में बनाई जाती है । जगत् गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री माधव आश्रम जी महाराज ने विमोचन कर परम सराहना करते हुए कहा कि यह अनोखी जन्म पत्री के साथ-साथ अनोखे उपायों की पुस्तिका भी है ।

नोट :- जन्म कुण्डली का विवरण आप पुस्तक के अन्त में अवश्य पढ़ें ।

विद्यार्थी अपने जन्मांक से स्वयं विद्या अध्ययन का योग कैसे जानें

ज्योतिष विज्ञान अपने आप में पूर्ण है । इस विज्ञान के द्वारा बालक स्वयं ये ज्ञात कर सकता है कि विद्या के योग कौन-कौन से हैं । ज्योतिष एक ऐसा दर्पण है जिसमें सब कुछ देखा जा सकता है ।

जन्मांक में विद्या चौथे भाव से देखी जाती है । विद्या अध्ययन में बाधा किस प्रकार उत्पन्न होती है विद्यार्थियों की जानकारी हेतु कुछ मुख्य योग प्रस्तुत हैं ।

1. चौथे भाव में अस्त ग्रह नहीं होने चाहिएं और न ही चतुर्थेश अस्त होना चाहिए । अस्त ग्रह की यदि महादशा चल जाय तो वह विद्या को नष्ट कर देती है ।
2. चौथे भाव में राहु या शनि नहीं होना चाहिए और न ही शनि राहु की दृष्टि चतुर्थभाव में पड़नी चाहिए ।
3. चौथे भाव में पाप कृतरी योग नहीं होना चाहिए यानि तृतीय और पाँचवें भाव में पाप ग्रह नहीं होने चाहिए ।
4. चौथा भाव नष्ट नहीं होना चाहिए यानि चौथे भाव का स्वामी 6-8-12 भाव में नहीं होना चाहिए या 6-8-12 के स्वामी चौथे भाव में नहीं होने चाहिए कारण इन योगों में पढ़ी हुई विद्या काम नहीं आती है ।
5. विद्या अध्ययन काल में चौथे भाव की शनि की साढ़ेसाती नहीं होनी चाहिए ।
6. विद्या अध्ययन के समय में चौथे भाव स्थित शनि की महादशा या अन्तर्दशा नहीं होनी चाहिए ।

विद्या प्राप्ति के कारक ग्रह कौन-कौन से हैं । विद्या अध्ययन का असली कारक ग्रह गुरू है । दूसरा कारक ग्रह बुध है । यदि ये दोनों ग्रह चतुर्थ भाव में बैठे हुए होते हैं तो वह बालक उच्च विद्या प्राप्त करता है । यदि गुरु भाग्य में बैठा हुआ होता है तो चमत्कारिक विद्या प्राप्त होती है । वह पढ़ी हुई विद्या द्वारा धनोपार्जन करता है तथा उसकी कीर्ति यत्र-तत्र-सर्वत्र फैल जाती है ।

षड्वर्ग में चतुर्थ का बुध भी उच्च शिक्षा प्रदान करता है । चौथे भाव का अगर कोई संबंध बुध से होता है तो आदमी उत्तम इच्छित विद्या प्राप्त करता है । अब आप कहेंगे कि जिनका चतुर्थभाव से संबंध नहीं क्या वह विद्या नहीं पढ़ते । याद रखें विद्या के मुख्य दो ही भाव हैं वह हैं पंचम और चतुर्थ यदि इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो या शुभ ग्रह स्थित हों या शुभ ग्रहों का संबंध हो तभी जातक उत्तम विद्या प्राप्त कर यश धन कीर्ति प्राप्त करता है वरना किताबें पढ़कर समय गुजर जाता है और डिग्री रखी रह जाती है लेकिन पल्ले कुछ

नहीं पड़ता है । यदि चतुर्थ भाव में राहु या शनि हो या इनकी दृष्टि हो तो विद्या पढ़ना टेढ़ी खीर हो जाता है । बृहस्पति यदि चौथे भाव को देखता है तो जातक वेद शास्त्र धर्मशास्त्रों का ज्ञाता होता है । अगर मंगल देखता हो तो जातक दस्तकार होगा लेकिन बुध को मंगल देखता हो तो सफल टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त करता है ।

विद्या पाँच तरह की होती है

1. जो स्कूल में पढ़ी जाती है । यदि बुध चौथे भाव में हो या षड्वर्ग में बुध का संबंध चौथे भाव में रहता हो तो स्कूल की विद्या बिना बाधा के प्राप्त हो जाती है ।
2. दूसरी जो कॉलेज में पढ़ी जाती है (डाक्टरेट, बी.ए. एम. ए.) आदि ।
3. यदि गुरु का कोई संबंध चौथे भाव से होता है या बैठा होता है या लग्न पंचम नवम होता है या एकादश होता है तो विद्यार्थी विद्या को बड़े आराम से पूर्ण कर लेता है ।
4. मेडिकल साइन्स (एम. डी. इत्यादि) ।

चौथे भाव में जब तक मंगल नहीं होता या चौथे से मंगल का कोई संबंध नहीं होता तो मेडिकल साइन्स में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती । यदि मंगल 6-8-12 में हो और शनि से दृष्ट हो तो पढ़ी हुई विद्या व्यर्थ हो जाती है और उसे यश धनादि कुछ प्राप्त नहीं होता है ।

5. टैक्निकल विद्या यानि इन्जीनियर ।

षड्वर्ग में शनि का संबंध चौथे भाव से होने पर जातक सफल इन्जीनियर बन जाता है ।

6. अध्यात्म विद्या ।

केवल गुरु चौथे भाव में होने से या लग्न पंचम नवम एकादश भाव में होने से विद्यार्थी बचपन से ही वेदाध्ययन में लग जाता है और समस्त पुराणों का ज्ञाता बन जाता है तथा सफल कथा वाचक बन जाता है । चौथा भाव नष्ट हो जाने पर जातक सफल लैक्चरार नहीं बन सकता ।

राहु का संबंध लग्न तीसरे या छठे भाव में होने से सफल कूटनीतिज्ञ बनता है और उसकी कूटनीति की प्रशंसा यत्र-तत्र होती रहती है । शुक्र शनि का संबंध तांत्रिक विद्या तथा अघोरी विद्याओं से संबंध करा देता है ।

विद्यार्थी कितनी विद्या पढ़ेगा ?

जब तक किसी भी दशा का संबंध चौथे घर से रहेगा वो विद्या पढ़ता रहेगा । जिस दिन चौथे घर से संबंध समाप्त हो जायेगा उस दिन उसकी विद्या समाप्त हो जाएगी । विद्या से सफलता नहीं मिलेगी या पढ़ी हुई विद्या बेकार हो जाएगी ।

सफलता क्या है (4, 5, 10, 11) वाँ भाव । चौथा घर, पाँचवाँ घर, दशवां घर परिश्रम, ग्यारहवाँ घर सफलता । इन भावों का संबंध जब तक ग्यारहवें भाव से नहीं बनता तब तक विद्या में सफलता प्राप्त नहीं होती है यानि विद्या सफल नहीं होती । यदि इन भावों का संबंध 6, 8, 12 से हो जाता है तो पढ़ी विद्या और बुद्धि बेकार हो जाती है ।

विशेष :- चौथा भाव सुख का होता है । जैसे वैभव का सुख, विद्या का सुख, वाहन का सुख, धन का सुख, मकान का सुख । यदि राहु चौथे भाव में बैठा हुआ होता है और इसी भाव की दशा चली हुई होती है, तो राहु उपरोक्त सभी सुखों को समाप्त कर देता है । कारण कि राहु छाया ग्रह है, सब कुछ है परन्तु कुछ नहीं है । क्योंकि सब सुखों पर छाया कर देता है यानि सब कुछ घर में है परन्तु वह किसी भी वस्तु का उपयोग नहीं कर सकता है। अतः बुद्धिजीवी विचार करें कि जो राहु सूर्य चन्द्र जैसे तेज पुँज ग्रहों को काला कर सकता है फिर साधारण मानव की गणना ही क्या है ।

शनि सूखा ग्रह है, हर काम में सूखापन कर देता है । उठने बैठने सोने, खाने भोजन भजन या विद्या अध्ययन में सूखापन पैदा कर देता है । शनि नमक का स्वामी है इसलिए जहाँ वह बैठता है खरास पैदा कर देता है । भाइयों के घर में बैठे तो भाइयों में रूखापन, पिता के घर में बैठे तो पिता से रूखापन, और पत्नी के घर में बैठ जाए तो पत्नी से रूखापन और चौथे भाव में बैठ जाये तो माता, वाहन, जमीन, विद्या आदि सबसे रूखापन पैदाकर देता है । यानि चौथे भाव का शनि सबसे खराब होता है ।

उपरोक्त विवरण को विद्यार्थी ध्यानपूर्वक पढ़ें और ध्यान रखें इसमें शनि राहु का कोई दोष नहीं वह तो जीव के किए हुए अशुभ कर्मों का भुगतान करवाते हैं अर्थात धोखेबाजी-दगाबाजी, अनाचार, पापाचार, व्यभिचार आदि पाप कर्मों का भुगतान प्राणीमात्र के न चाहने पर बराबर भुगवाते रहते हैं । लेकिन प्राणी ग्रहों को कोसता है अपने को झांक कर नहीं देखता यदि अपने को झांक कर देखें तो बुरे कर्म नहीं होंगे और जब बुरे कर्म होंगे नहीं तो भोगने भी नहीं पड़ेंगे । यह अकाट्य सत्य है कि जीव शुभ-अशुभ अपने कर्मों का ही फल सुख दुख रूप में प्राप्त करता है ।

याद रखें, मन्त्र जप करने से पूर्वकृत पाप निर्मूल हो जाते हैं । सभी रास्ते अपने आप ही खुल जाते हैं । केन्द्र ने यह प्रयोग विगत बीस वर्षों से लाखों जातकों पर प्रयोग कर सफलता प्राप्त की है । अतः यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं है कि जगत में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे प्राप्त न किया जा सके लेकिन आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है ।

लाख चाहने और पूर्ण प्रयास करने पर भी लक्ष्मी क्यों नहीं प्राप्त होती ?

समस्त भ्रांतियों का रहस्य

कौन नहीं चाहता कि मुझे लक्ष्मी प्राप्त न हो परन्तु बिडम्बना यह है कि बारह-चौदह घण्टे अथक प्रयास और परिश्रम करने के बाद तथा भोजन और विश्राम की भी परवाह न कर निरन्तर कार्यरत रहने पर भी लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती है । बार-बार पूर्ण आशा बनती है कि अब प्राप्त हुई कि हुई । इसी आशा में समय व्यतीत हो जाता है और लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती है । लक्ष्मी प्राप्त न होने पर जातक आपार चिन्ताओं से दिन-रात घिरा रहता है । विवश हो कर दारिद्रमय जीवन जीता है । परम बुद्धिमान होने पर भी कुटुम्ब का भरण पोषण नहीं कर पाता । विवश होकर कुटुम्ब के भरण पोषण के लिए जन-जन के सामने हाथ पसारता है और उधार लेकर जीवन-यापन करता है ।

भाग्यवश यदि मां वाप की कृपा से या अन्य किसी साथी की कृपा से उसे अपार धन सम्पत्ति प्राप्त हो भी जाए तो उसे वह सम्भाल नहीं पाता और विवेक न होने के कारण सम्पत्ति का दुरुपयोग कर पुनः दरिद्रता का जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है ।

धन आना कुछ और बात है परन्तु धन को सम्भालना कुछ और बात है

हर मानव की यह सामर्थ्य नहीं होती कि वह लक्ष्मी को संभाल सके । लक्ष्मी वही संभाल सकता है जिसका विवेक जागृत रहता है । लक्ष्मी पाने पर जीव श्रीमद् से मदान्ध हो जाता है । मद् के नशे में वह यह भूल जाता है कि यह लक्ष्मी जिसका तू दुरुपयोग कर रहा है तुझको दुबारा प्राप्त नहीं होगी । दूसरे लक्ष्मी का वाहन उल्लू है जब लक्ष्मी आती है तो उल्लू भी साथ में आता है । उल्लू के प्रभाव से जातक की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और जातक लक्ष्मी का दुरुपयोग करता हुआ कराल पाप कमा लेता है । इसलिए प्रायः देखा गया है कि पैसे वाले ही ज्यादा बुरे कर्म करते हैं । परन्तु जो ईश्वर भक्त हैं, विवेकी है, सुसंस्कृत हैं, जिनकी बुद्धि जागृत है उनको उल्लू का प्रभाव नहीं व्याप्ता है और उसी पैसे से वह धन को कई गुना बड़ा लेते हैं, ईश्वर भक्ति में लगाते हैं, जनकल्याण करते है, गरीब कन्याओं का विवाह करते है, मन्दिर, धर्मशाला बनाकर जनसेवा करते है और अंत में स्वर्ग को प्राप्त हो जाते हैं ।

हमने देखा कि हमारे गांव में चौधरियों को, ब्राह्मणों को अन्य जातियों को सन् 1960 में एक-एक को दस-दस लाख रुपये या उससे भी अधिक-अधिक धन जमीनों से प्राप्त हुआ परन्तु उस धन को वह 10 वर्ष भी नहीं चला पाए और अन्त में फिर वही निन्दनीय जीवन जिये जो पहले जी रहे थे । तब इस पर सूक्ष्म विवेचन किया और यह बोध हुआ कि धन को संभालना कोई मामूली बात नहीं है धन वही संभाल पाते हैं जो परम बुद्धिमान हैं ।

वैश्य लोगों में परमात्मा ने यह क्षमता दी है कि जितना उनके पास धन आता है उतने ही वह विनम्र हो जाते हैं और उस धन को वह दुगना चौगुना कर पाते हैं और उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी धन का उपभोग करती रहती है । इसमें मुख्य रहस्य यह है कि वह जितना धन कमाते हैं उतना वह दान भी करते हैं इसलिए हर तीर्थ स्थल में इनकी धर्मशालाएँ और मन्दिर बने रहते हैं । ये लोग गरीबों के लिए भोजन की व्यवस्था भी करते हैं अन्य जाति के लोग दान न के बराबर करते हैं । इसलिए वह लोग आगे नहीं बढ़ पाते । कलियुग में गोस्वामी तुलसीदास जी ने दान की महिमा को विशेष रूप से गाया है । **'येन केन प्रकारेण दान करैं कल्याण ।'**

बुद्धि की समीक्षा

जातक में तीन प्रकार का बल होता है । 1. देहबल, 2. धनबल और 3. बुद्धिबल । देहबल और धनबल को बुद्धि नियन्त्रण करती है । इसलिए यह मानना पड़ता है कि बुद्धिबल ही सर्वोपरि बल है एक बुद्धिमान व्यक्ति कई लाख मनुष्यों का संचालन कर सकता है और जिसमें बुद्धि नहीं होती है वह अपने को भी नहीं संभाल सकता है बार-बार दूसरों की बुद्धि का सहारा लेकर अपनी बुद्धि को चलाता है । यदि बुद्धि नहीं होती है तो आया हुआ धन भी संभाल नहीं सकता और अपने हाथ से नष्ट कर डालता है । फिर सारी उम्र पछताता रहता है । इसलिए मानना पड़ता है कि बुद्धि बल ही सर्वोपरि बल है । इन तीनों बलों को ग्रह समाप्त कर देते हैं परन्तु चौथा देव बल है उसको कोई हाथ नहीं लगा सकता है परन्तु मानव उपासना से अपना मन चुराता रहता है और उसके फलस्वरूप देव बल कम प्राप्त होने लगता है । इसलिए मानव को देव उपासना कर देव बल को अर्जित करते रहना चाहिए ।

सरस्वती जी की उपासना करने से बुद्धि बल तुरन्त प्राप्त हो जाता है । इसलिए प्राणी-मात्र को सबसे पहले सरस्वती जी की उपासना कर लेनी चाहिए ।

लक्ष्मी प्राप्त न होने का पहला कारण ग्रह

पिछले संदर्भ में हमने नवग्रह की सूक्ष्म परिभाषा अलग-अलग रूप से की और इस विज्ञान को जनता-जनार्दन को समझाने का प्रयास किया गया । उसको पढ़ कर यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रह प्राणी-मात्र को किस प्रकार उसके कर्म का भुगतान करवाता है । कर्म के भुगतान के हेतु प्राप्त लक्ष्मी को उसी के हाथ से नष्ट करवा डालता है और समस्त आय के स्रोतों को बन्द कर दारिद्रता का जीवन जीने के लिए मजबूर कर देता है या शुभ ग्रहों के भुगतान हेतु अपार धन-धान्य, ऐश्वर्य तथा लक्ष्मी का पूर्ण उपभोग करवाता है ।

लक्ष्मी प्राप्त करना लक्ष्मीवान बनना प्रत्येक प्राणी की प्रबल अभिलाषा होती है और लक्ष्मी प्राप्त करने हेतु ही जातक श्री यंत्र, कनकधारा स्तोत्र, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त, त्रिपुरपुन्दरी भगवती अथवा अनेक देवी देवताओं का यजन करते हैं अर्थात् लक्ष्मी प्राप्त करने हेतु अनेक वैदिक, तांत्रिक अनुष्ठान करते हैं । याद रखें उपरोक्त अनुष्ठानों को करने से जातक कुछ लक्ष्मी प्राप्त कर लेता है तथा राहत महसूस करता है लेकिन थोड़े ही समय में लक्ष्मी चलायमान हो जाती और जातक पुनः श्रीविहीन हो जाता है ।

जातक यदि आत्ममन्थन करें कि ऐसा क्यों हो जाता है समझ में आ जाएगा । याद रखें, माँ लक्ष्मी परब्रह्म परमेश्वर विष्णु की धर्मपत्नी हैं यदि वही विधि के विधान को नकार देंगी अथवा जातक द्वारा किए हुए कुकर्मों को नजर अन्दाज कर देंगी तो फिर उस परमेश्वर की सत्ता को कौन स्वीकारेगा, न्याय-अन्याय सुकर्म-कुकर्म का भुगतान कैसे होगा तथा प्रकृति का संतुलन किस प्रकार कायम रह सकेगा । यदि लक्ष्मी जी चाहें तो जातक के कुकर्मों को भस्म कर उसे निर्मल कर सकती हैं लेकिन विधि के विधानानुसार प्रत्येक जातक

को कर्मफल भोगना पड़ता है इसीलिए लक्ष्मी जी किसी प्रकार से हस्ताक्षेप नहीं करतीं हैं । इसी प्रकार से कोई अन्य देवी देवता विधि के विधान में हस्तक्षेप नहीं करते हैं ।

याद रखें प्राणीमात्र के कर्मों का भुगतान करवाने का कार्यभार विधि ने नवग्रहों को सौंपा है जो निरन्तर कर्मभोग भुगवाते रहते हैं । अतः यदि जातक अपने पापकृत्य कर्मों का प्रायश्चित् कर जप तप कर ले तो वह इहलोक, परलोक में सुख, इच्छित कामना प्राप्त कर सकता है । इसीलिए मंत्र जाप कर अपना पूर्वकृत निर्मूल कर लेना चाहिए । यदि नवग्रहों के विधिवत् नौ करोड़ मंत्र, जप, यज्ञ कर अथवा करवा लिए जायें तो जातक यहाँ वहाँ सभी जगह सुख प्राप्त क़र प्रभु ज्योति में समाहित हो जाता है । पुनः याद रखें भगवान ब्रह्मा ने इन्हें वरदान दिया है कि जो तुम्हारा यजन करेगा वह इन्द्रपद् तक प्राप्त कर सकता है और बिना तुम्हारे अर्चन के इन्द्र भी इन्द्रपद पर आसीन नहीं हो सकता फिर तुच्छ प्राणी बिना ग्रह अर्चन के क्या उत्थान करेगा यह बात विचारणीय है । शिवपुराण में स्वयं सदाशिव ने माँ पार्वती से कहा है कि देवी प्रथम हमने सुचारू रुप से ग्रह पूजन नहीं किया था इसीलिए मुझे तुम्हारा वियोग सहना पड़ा ।

अतः यह सुसष्ट है कि बिना ग्रह अर्चन के सुख असंभव है । अतः प्रत्येक जातक को सर्वप्रथम ग्रह अर्चन कर तदोपरान्त इष्ट आराधना करनी चाहिए ऐसा करने से जातक इहलोक के सर्व सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त कर आवागमन से रहित हो जायेगा ।

केन्द्र का विगत बीस वर्षों का अनुभव है तथा मत्स्यपुराण तथा अग्निपुराण में स्पष्ट वर्णन है कि प्राणी-मात्र को हर क्षेत्र में प्रगतिशील होने के लिए नवग्रहों के मंत्रों का जप तथा लक्ष कोटि या सहस्त्र कोटि जप, यज्ञ कर लेना चाहिए ताकि जीवन में हर क्षेत्र में समस्त बाधायें निर्मूल हो जाएं और जीवन सुन्दर, सरस, सुखमय, आनन्दमय हो जाए । केन्द्र ने नवग्रहों के मंत्रों का अद्भुत चमत्कार पुस्तक के प्रारम्भ में दर्शा दिया है और स्वयं करोड़ों मंत्र, जप, यज्ञ कर ग्रहों के मंत्रों की प्रतिभा तथा चमत्कार को जाना है । यह पूर्ण विश्वास और दावे के साथ कहना पड़ रहा है कि चाहे जीव अध्यात्मवादी हो या भौतिकवादी दोनों को सर्वप्रथम नवग्रहों के नौ करोड़ मंत्र, जप, यज्ञ कर लेना चाहिए, तदोपरान्त जो जिसका इष्ट हो उसके जप करने चाहिए । इस विधि का सहारा लेकर वह इस जीवन रूपी नैय्या को आराम से पार कर पायेगा । थोड़े से प्रयास से आपार लक्ष्मी जीवन भर प्राप्त होती रहेगी और प्राप्त लक्ष्मी स्थिर रहेगी ।

नीचे लक्ष्मी का वर्णन विस्तार से कर रहे हैं कि लक्ष्मी का पूजन दीपावली पर कैसे करना चाहिए और इसके साथ-साथ सरस्वती, महाकाली का पूजन क्यों आवश्यक है? इसका भी विस्तार से वर्णन है ।

महालक्ष्मी का पर्व दीपावली

एक बार महालक्ष्मी ने भगवान विष्णु से कहा हे प्रभु ! हर पक्ष में पूजने के लिये दुर्गा को अष्टमी नवमी मिलती हं भगवान शिव को त्रयोदशी मिली, स्वयं विष्णु जी को एकादशी मिली गणपति को चतुर्थी मिली परन्तु मुझे पूजने के लिये कोई भी दिवस नहीं दिया गया। हे प्रभु ! कम से कम साल भर में एक दिन तो मुझे अवश्य ही मिलना चाहिए।

भगवान विष्णु ने लक्ष्मी जी की प्रार्थना सुनकर उनसे कहा कि कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या को वर्ष में एक दिन तुम्हारी पूजा होगी परन्तु जब तुम्हारी पूजा होगी मैं तुम्हारे साथ पूजित नहीं होऊँगा। ऐंसा सुनकर लक्ष्मी जी ने कहा हे प्रभु ! यदि पति ही पत्नी के साथ पूजित नहीं होगा तो पत्नी का क्या अस्तित्व होगा ? भगवान विष्णु ने कहा हे लक्ष्मी ! तुम्हारी पूजा होने के बाद तुम अत्याचारी, अनाचारी, पापाचारी, व्यभिचारी, निकृष्ट, धोखेबाज, दगेबाज, शराबी, जुआरी सबके यहां जाओगी और मेरा इन लोगो के यहां पर प्रवेश है ही नहीं। मैं तो केवल हरि भक्ति करने वालों के यहां पर ही जाता हूँ। इसलिये मैं तुम्हारे साथ पूजित नहीं होऊँगा। लक्ष्मी ने कहा तो फिर मेरे साथ कौन पूजित होगा। इस पर भगवान ने उत्तर दिया कि हे लक्ष्मी ! तुम्हारा वाहन उल्लू है जहां जाओगी तुम्हारा वाहन तुम्हारे साथ ही रहेगा और वाहन के प्रभाव से ही लोगों की बुद्धि उल्लू जैसी होगी, केवल हरि भक्तों को छोड़कर। इसलिये तुम अपने पुत्र गणपति के साथ पूजित होगी। गणपति बुद्धि का विनायक है बुद्धि का समुद्र है। इसलिए गणपति के सहित तुम्हारी पूजा करने पर लक्ष्मी प्राप्त होगी और उनकी बुद्धि भी शुद्ध रहेगी। धन का दुरुपयोग नहीं कर सकेंगे। अतः गणपति तुम्हारे साथ ही पूजित होंगे।

ऐसा सुनकर लक्ष्मी जी ने कहा कि प्रभु जैसी आपकी आज्ञा परन्तु मेरा यह पर्व ऐसी धूम-धाम से मनाया जायेगा और मेरे इस पर्व में इतना हर्षोल्लास होगा जो आपके किसी भी पर्व में नहीं होगा।

ऐसा सुनकर भगवान विष्णु ने कहा यह तो ठीक है कि बिना लक्ष्मी के कोई काम नहीं होता और वह साक्षात तुम्हारा ही पर्व होगा, इसलिए धूम-धाम से होना निश्चित् ही है। हे लक्ष्मी तुम्हारा तेल में निवास होगा और जो लोग तेल से बने हुए व्यंजनादि तुम्हें अर्पण करेंगे और तेल के दीपकों से घर में दीपमाला करेंगे और धान की खीलों से तुम्हारा पूजन करेंगे, उनके घर में सदा तुम्ह निवास करना। ऐसी मेरी आज्ञा है। एक अन्य कथा इस प्रकार से है।

भगवान राम जिस दिन 14 वर्ष के वनवास से वापिस अयोध्या लौटे थे तो उस समय समस्त नगरवासियों ने भगवान के शुभ आगमन पर दीपकों से ज्योति प्रज्ज्वलित की थी अर्थात दीपमाला की गई और उसे "दीपावली" का नाम दिया। तभी से यह दीपावली का पर्व मनाया जा रहा है।

दीपावली ऐसे मनानी चाहिए

दीपावली की पूजा सपत्नी रात्रि में करनी चाहिए और पत्नी लाल रंग की साड़ी बांधकर पूर्ण सिंगार करके पूजन करे । उस दिन पत्नी से विवाद आदि नहीं करना चाहिए जो वह कहे उस दिन उसकी बात सहर्ष स्वीकार कर लेनी चाहिए । क्योंकि पत्नी को गृह लक्ष्मी कहा गया है । जो लोग पत्नी से उस दिन लड़ाई झगड़ा करते हैं, पत्नी के साथ पूजन नहीं करते, उनका वर्ष भर लक्ष्मी से भी झगड़ा रहता है ।

बाजार से मिट्टी के बने हुए गणपति व लक्ष्मी इच्छानुसार कुल परम्परानुसार लाने चाहिएं । परन्तु लक्ष्मी की वास्तविक पूजा तो चांदी में होनी चाहिए । मिट्टी की मूर्ति में पूजा कदापि नहीं होनी चाहिए । वैसे मिट्टी की मूर्तियों को धूप, दीप नैवेद्य क्रमबद्ध चढ़ायें, परन्तु प्रधान पूजा तो चांदी में ही होनी चाहिए ।

असली चांदी की बनी कोई भी वस्तु रखकर लक्ष्मी पूजन करें नहीं तो गणपति व लक्ष्मी अंकित असली चांदी का रुपया ले आयें और श्रद्धा युक्त होकर पूजनादि करें ।

पूजा विधि

एक लकड़ी के पट्टे पर लाल रंग का कपड़ा बिछायें । गुलाब के फूलों के ऊपर गणपति व लक्ष्मी से अंकित चांदी के रुपये को पहले दूध, दही, घी, शहद, शक्कर तथा गंगाजल से शुद्ध स्नानादि कराकर गुलाब के पुष्पों के ऊपर रखें और दाहिनी तरफ घी का दीपक और बांयीं तरफ तेल का दीपक प्रज्ज्वलित करें । एक कलश की स्थापना करें उसके ऊपर कच्चा नारियल रखें कलश में केले के पत्ते लगाने चाहिएं । पट्टे के दोनों ओर केले के पत्तों के खम्भे स्थापित करें और षोड्शोपचार से पूजन करें । सबसे पहले भगवती को गुलाब का आसन देना चाहिए तत्पश्चात, भगवती को जलादि से स्नान करवा कर इसके उपरान्त चांदी के रुपये में केसर हल्दी और चंदन के तिलक लगायें ।

पूजन के समय जातक को भूंल कर भी चावल का प्रयोग नहीं करना चाहिए ।

धान की खील चढ़ायें, फिर माँ को नैवद्य का भोग लगायें, घर में बने पकवान्न का भोग लगायें, बाजार से लाई गई मिठाई का भोग लगायें, अखंड ऋतु फल (पंचमेवा) तथा ऋतु फल (सेब केला आदि) का भोग लगा तत्पश्चात् पान सुपारी लौंग आदि चढ़ायें और धूप, दीप दिखाकर आरती प्रारंभ करें ।

विशेष :- लक्ष्मी जी पर दो कमल के फूल अवश्य चढ़ायें ।

पूजन के बाद जातक लक्ष्मी जी के बीज मंत्र का सम्पूर्ण रात्रि सपरिवार बैठकर जप करें । क्योंकि यह रात्रि लक्ष्मी जी की रात्रि है । इस रात्रि में मंत्र जप करने से पूरे वर्ष भर धन धान्य की कमी नहीं रहती । क्योंकि रात्रि में लक्ष्मी बरसती हैं और जो जागते हुए इसकी उपासना करते हैं उन पर विशेष कृपा करती है । अतः प्राणीमात्र को मंत्र जप करते हुए जागरण अवश्य करना चाहिए ।

ॐ श्रीं (अतिलघु मंत्र)

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा (यह मन्त्रराज है जिसका जाप करके देवराज इन्द्र ने भगवती महालक्ष्मी के साक्षात् दर्शन किए थे ।)

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद ।

विद्वान या देवज्ञ श्री सूक्त के 108 पाठ अवश्यमेव कर लें, कारण कि दीपावली के शुभअवसर पर श्री सूक्त के पाठ से लक्ष्मी अति प्रसन्न होती है ।

विशेष :- रात्रि में ठीक बारह बजे कमल गट्टों को घी में भिगो-भिगो कर उपरोक्त मंत्रों से हवन सामग्री के साथ यज्ञ अधिक से अधिक समय अवश्य करना चाहिए और अपने इष्ट मंत्रों का तथा गुरु प्रदत्त मंत्रों से भी यज्ञ अवश्य करना चाहिए । समिधा आम या पिपल की होनी चाहिए । ऐसा करने से समस्त अरिष्ट समाप्त हो जाते हैं और लक्ष्मी की कृपा समान रूप से बरसती रहती है ।

चावल से लक्ष्मी पूजन करना निषेध क्यों?

दीपावली के दिन चावलों से लक्ष्मी पूजन नहीं होता धान की खीलों से क्यों होता है ? क्योंकि जैसा धान (भाड़) अग्नि की तपन से अपना रूप रंग स्वभाव बदल लेता है ठीक उसी प्रकार जातक लक्ष्मी से प्रार्थना करता है कि हे लक्ष्मी यदि आप मेरे घर में आ जायें तो मैं भी इस प्रकार अपना रूप रंग, स्वभाव बदल लूंगा और सुखपूर्वक जीवन यापन करूँगा । इसी भाव के अन्तर्गत लक्ष्मी पर चावल न चढ़ाकर खील ही चढ़ाना चाहिए ।

विशेष :- इस रात्रि में भूल कर भी जुआ नहीं खेलना चाहिए । जुआ खेलने वाले पाँडवों को याद करें । युधिष्ठिर जैसे चक्रवर्ती सम्राट को भी जुआ खेलने के कारण 13 वर्ष का वनवास और अज्ञात वास काटना पड़ा तो साधारण मनुष्य जुआ खेलकर अपने जीवन को किस प्रकार से सुखी बना सकता है? आज तक के इतिहास में कोई भी जुआरी अपने को सज्जन नहीं कहला पाया । समाज की दृष्टि में निन्दनीय बना रहा है । अतः याद रखें, 'जुआरी जीता भी हारा' और हारा हुआ तो हारा होता ही है ।

यदि जुआ खेलना ही है तो अपनी धर्मपत्नि से खेलें ताकि घर का माल घर में ही रहे । जिन जातकों का बुध अस्त हो, राहु पंचम या लग्न भाव में नीच का हो । वे जातक भूल कर भी जुआ न खेलें । यदि दुर्भाग्यवश खेला गया तो हार निश्चित ही होगी । और दीपावली की रात भयंकर दरिद्रता में परिणित हो जायेगा । ऐसा केन्द्र का अनुभव है ।

मानव जीवन पर पीतरों का प्रभाव

एक अकाट्य सत्य

वर्षों शास्त्र अध्ययन एवं शोध करने के उपरान्त लेखक को यह अनुभव, अहसास, ज्ञान हुआ कि मानव जीवन पर भी पितरों का अति विशिष्ट प्रभाव होता है। सर्व साधारण प्राणी इस गूढ़ रहस्य को नहीं जानते अथवा जानते हुए पितृार्जन नहीं करते जिसकी वजह से ही प्राणी आधि-व्याधि, बीमारी, धनाभाव अथवा निःसन्तान या पुत्र सुख से वंचित रहते हैं अथवा पुत्र द्वारा भयंकर सताए अपमानित किए जाते हैं। कुछ प्राणी हवन तर्पण ब्रह्मभोज श्राद्ध पक्ष में करा संतोष कर लेते हैं कि हमने पितरों के लिए कुछ किया और हमारे पितृ हमसे पूर्णतः प्रशन्न हो गये अतः हमारे ऊपर पितृ प्रकोप है ही नहीं बस अल्पज्ञान एवं अनभिज्ञ अवधारणा के कारण ही प्राणी भयंकर पितृ प्रकोप का भाजक बनता है परिणामतः वह अपने आप अपना सर्वस्व लुटा बैठता है और फिर पछतावा अर्थात पश्चाताप ही हाथ लगता है।

लेखक विगत दो दशकों से गहन अध्ययन एवं शोधकर इस स्थिति में पहुँचा कि प्रत्येक प्राणी को सर्वप्रथम पितृार्चन ही करना चाहिए। लेकिन पितरपक्ष में पितृयज्ञ करने का प्रतिफल क्या होता है फल कैसा प्राप्त होता है यह प्रबल उत्कण्ठा वर्षों से थी। यजुर्वेद का शताक्षरी मंत्र क्या चमत्कार दिखाएगा समय की तलाश थी। मन में भाव था कोई सुयोग्य पात्र मिले तभी अनुसंधान किया जाय। अतः यह भाव मन का मन में रहा और समय की प्रतीक्षा रही।

वर्ष 1998 में लाला प्रमोद अग्रवाल अपनी पत्री लेकर मेरे पास आए उनका 10 करोड़ का नुकशान बृहस्पति की दशा बुध के अन्तरदशा में हुआ था कारण बुध जन्मांक में अस्त था। याद रखें जो ग्रह जन्मांक में अस्त होगा और उसकी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा जीवन में जब-जब आयेगी व्यापार में हानि अवश्य होगी। मैंने कहा सेठ जी यह बुध सारे कार्य कलाप बन्द कर देता है। अब एक उपाय है पितर पक्ष आने ही वाले हैं अतः मैं प्रथम पितरों का जप यज्ञ करा पितृ प्रकोप शान्त करूँगा इसके बाद तुम्हे सफल व्यापारी बनाने हेतु बुध के एक करोड़ मंत्र जाप करवाऊँगा जिससे तुम्हें शान्ति सुख और अतुलित संपत्ति प्राप्त होगी तथा व्यापार उत्तरोत्तर वृद्धि की ओर जाएगा।

अग्रवाल जी ने हमारी बात स्वीकार कर ली और 40 ब्राह्मणों द्वारा सितम्बर 20-9-98 को पितृ पक्ष की प्रतिपदा से पितृयज्ञ (अनुष्ठान) आरंभ हो गया तथा अमावस्या को समाप्त कर दिया गया । यजुर्वेद के (**ॐ पितृभ्य स्वधायिभ्य: स्वाधा नमः पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नमः । अक्षन्न पितरो ऽमीमदन्त पितरो ऽतीतृपन्त पितर: पितर: शुन्धध्वम् ।। ॐ पितरेभ्य नमः।।**) 5 लाख मंत्र जप किए, गायत्री 5 लाख लेकिन अधिक जप शनि का हुआ कारण शनि पितरों का उद्धारक है । अतः कुलमंत्र जाप 51 लाख हुआ तथा श्री मद्भागवत महापुराण का वाचन पारण भी अनुष्ठान अवधि में हुआ । अतः यह सब विधिवत सम्पन्न करने से पितर प्रशन्न हो गये और बिगड़े कार्य बनने लगे तथा लक्ष्मी देवी नित्य प्रति दर्शन देने लगी अर्थात व्यापार से आश्चर्य जनक आय होने लगी तथा मस्तिष्क में पूर्ण शान्ति की अनुभूति हुई ।

लेखक का यह प्रथम पितृयज्ञ था जिसे किसी के ऊपर प्रयोग कर उसका फल देखने की प्रबल लालसा वर्षों से थी अतः शत प्रतिशत यह प्रयोग सफल गया और चमत्कारिक परिणाम प्राप्त हुए । इसीलिए प्रत्येक जातक को सर्वप्रथम यजुर्वेद के **ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य:....** इस मंत्र का जप, यज्ञ करना अथवा करवाना चाहिए। इसके बाद ही ग्रह, जप, यज्ञ पूर्ण फलीभूत है । जीवन में प्रत्येक प्राणी के ऊपर उसके पितरों की महान अनुकम्पा होती है तभी वह प्रगतिशील हो पाता है । शास्त्र पितृ अर्चन के लिए हर जगह निर्देशित करता है यहाँ तक कि शादी, उपनयन में भी नान्दीमुख श्राद्ध का विधान है अतः पितृयज्ञ हमेशा प्रगति प्रदायक है । जिस जातक के ऊपर पितृ प्रकोप होता है वह किसी भी क्षेत्र में प्रगतिशील नहीं हो सकता चाहे वह सिद्ध साधक ही क्यों न हो अतः पितृ यज्ञ करना निश्चित ही नहीं अनिवार्य है ।

केन्द्र में जो भी शोध कार्य होता है उसका प्रथम अनुसंधान कर यह देखा जाता है कि यह कितना कारगर है, यदि वह शत प्रतिशत सफल होता है तभी जनता जनार्दन के समक्ष मीडिया के माध्यम से परोसा जाता है ताकि सभी वर्ग के प्राणी इसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें और अपने को प्रगतिशील करते हुए मानव जीवन सार्थक कर सकें ।

शनैश्चरी या सोमवती अमावस्या को प्राणीमात्र को अपने घर में या हरिद्वार में कुशाघाट पर जा कर नान्दीमुख श्राद्ध को अवश्यमेव करवा लेना चाहिए । यदि पितर प्रकोप न भी हो तो भी उपरोक्त दोनों तिथियों में किया हुआ नान्दी मुख श्राद्ध आने वाले समय में जातक को हर क्षेत्र में प्रतिशील बनाऐ रखता है । इसका मुख्य कारण यह है कि शनि ही पितरों का उद्धार करता है ।

विवाह में देरी क्यों

आज भौतिक वस्तुओं को प्राप्त कर मानव विज्ञान को ही सर्वस्व मान बैठा है लेकिन आत्मिक चिन्तन करें कि इस संसार रूपी चल-चित्र को चला कौन रहा है और जब आत्मिक चिन्तन होगा तो संसार रूपी चलचित्र के चालक का हमें स्वतः ही आभास हो जायेगा । आज प्राणी-मात्र अन्यान्य प्रकार के दुःखों से बुरी तरह झुलस गया है । ऐसे कराल समय मे श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान केन्द्र ने जातकों के कल्याणार्थ सरल मार्ग का मार्गदर्शन किया है जिसका अनुसरण कर जातक शीघ्र ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं ।

जिन बालक बालिकाओं का विवाह योग्य होने के बावजूद समाचार पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापन देने एवं लाख प्रयास करने के बाद भी सफलता की झलक तक न दिखे, सभी सम्बन्धियों द्वारा अथक प्रयास करने के बावजूद निराशा हाथ लगे, धन, रूप, ऐश्वर्य, व्यवसाय, नौकरी आदि सभी कुछ होने के बाद भी विवाह सम्पन्न न हो रहा हो और जातक की बढ़ती हुई उम्र चिन्ता का कारण बनी हो, ऐसे जातक सर्वप्रथम अपना जन्मांक देखें ।

जन्मांक के प्रथम पृष्ठ को छोड़कर दूसरे पृष्ठ पर कालम नं 3 पर अंशों का उल्लेख है जिसे डिग्री कहते हैं ।

1. यदि सूर्य से आगे बुध होगा और जितनी डिग्री का अन्तर होगा करीब-करीब उतने ही वर्ष विवाह के लिए बढ़ जाते हैं । **उदाहरण :-** माना 10 डिग्री का सूर्य है और 19 डिग्री का बुध है तो नौ डिग्री का अन्तर आया अतः विवाह का समय संभवतः आगे और बढ़ जाता है ।
2. ग्रह वर्ष आयु सप्तमेश से आंकी जाती है । ग्रह वर्ष आयु सूर्य 22, चन्द्रमा 24, मंगल 25-28, बुध 25-32, गुरु 16-32, शुक्र 25, शनि 25, 30, 36, राहु 18, 25, 42, केतु 25-28 आदि ग्रह की वर्ष आयु आंकी गई है ।
3. यदि सप्तमेश का स्वामी 6, 8, 12 भावों में बैठा हो और शनि से दृष्ट हो तो भी समय से विवाह नहीं होता है ।
4. महादशाएं अनुकूल न हो या शनि की साढ़ेसाती चल रही हो तो भी विवाह समय से संपन्न नहीं होता है ।

जन्मपत्रिका जातक का जीवन दर्पण होती है जिसके माध्यम से जातक अपने अच्छे बुरे समय से परिचित हो जाता है और ग्रह संशोधन कर वह बुरे समय को भी अच्छे समय में परिवर्तित कर लेता है । जन्मांक सभी प्रकार का उद्घोष करता है । मात्र उसे कोई बारीकी से जान सके । जैसे विवाह कब और किस उम्र में होगा । दाम्पत्य सुख प्राप्त होगा या नहीं आदि सभी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर केवल जन्मांक ही देता है । कर्मानुसार ग्रह मानव को नियन्त्रित करता है । उन्हें कोई चुनौती नहीं दे सकता । केन्द्र ने अथक परिश्रम द्वारा ग्रहशोध करके जो चमत्कारिक परिणाम प्राप्त किये हैं उन्हें जनकल्याणार्थ पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से परोस दिया है जिसका अनुगमन कर जातक स्वतः ही समस्या का समाधान कर लेता है । जातक स्वतः ही जन्मांक द्वारा विवाह के बंधन योग देखें या किन कारणों से विवाह संपन्न नहीं हो रहा है विचार करके ग्रह संशोधन करें और इच्छित मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्त करें । उपरोक्त का अध्ययन करने के बाद भी कुछ समझ में नहीं आये, किसी प्रकार की कोई शंका हो तो वह केन्द्र से संपर्क करें केन्द्र उनके सभी प्रश्नों का उत्तर देगा ।

विवाह किन योगों में होता है

1. प्रत्येक वर्ष का वर्ष फल बनाइये । जब वर्ष फल में केन्द्रस्थ बृहस्पति हो जाये तो विवाह हो जाता है ।

2. सप्तमेश जब लाभ में पहुंच जाये तो विवाह हो जाता है । यह अकाट्य नियम है । सूर्य चन्द्र अपवाद हैं ।

3. लग्नेश की राशि अंश कला को सप्तमेश की राशि अंश कला में जोड़िए और 12 से भाग दीजिये । जो राशि अंश कला शेष बचे उस राशि अंश कला पर बृहस्पति 1, 5, 9 में जब आयेगा तो विवाह हो जायेगा ।

4. प्रश्न कुण्डली में जब सप्तमेश केन्द्र में आ जायेगा तो विवाह हो जायेगा ।

5. दशाओं में जब सप्तमेश और लाभेश की दशाएं चल जायें तो विवाह सम्पन्न हो जाता है ।

जिन जातकों का विवाह जिस ग्रह के कुप्रभाव से सम्पन्न नहीं हो पा रहा हो, उन्हें उस ग्रह की विधिवत पूजा पाठ, जप, रत्न धारण, दान यज्ञ आदि सम्पन्न कर या करवा लेना चाहिए । ऐसा करने से विवाह सहज ही सम्पन्न हो जायेगा और तपोबल के प्रभाव से मनोनुकूल जीवनसाथी प्राप्त होगा और वह इह लोक एवं परलोक तक भी साथ निभायेगा ।

उदाहरण :- मानिये, आपके विवाह में बाधक बुध है तो प्रथम बुध के विधिवत अनुष्ठानात्मक 24 लाख मंत्र जप कर या करवा लेना चाहिए । इसके बाद बुध के ही नक्षत्र में दान कर 5 रत्ती का पन्ना प्राण प्रतिष्ठा कराकर धारण करना चाहिए । अनवरत रूप से 40 दिन तक गाय को हरा चारा या पालक खिलाना चाहिए । इस प्रकार बुध का यजन करने से बुध कारक हो जायेगा और सर्वगुण सम्पन्न इच्छित जीवन साथी प्राप्त करायेगा । 41 दिन तक अनवरत रूप से पीपल परिक्रमा करने पर विवाह शीघ्र सम्पन्न होता है ।

विवाह में विवाद और तलाक क्यों

हिन्दू शास्त्रों में एक विधान का प्रतिपादन है जो गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में इस प्रकार से है कि:-

करम प्रधान विस्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फल चाखा ॥

इस सिद्धान्त के अनुसार मानव जो भी कर्म जाने या अनजाने में जिस प्रकार करेगा उन सबका भुगतान उसी को करना पड़ेगा । इसीलिए बुरे कर्म करने से पहले अपने मन को अच्छी प्रकार समझा लें कि इन कर्मों का भुगतान मुझे ही करना पड़ेगा ।

इस तथ्य के अनुसार कर्मों के भुगतान का कार्यभार नवग्रहों को सौंपा गया है । अति निन्दनीय क्रूर कर्मों का भुगतान शनि, राहु, मंगल, कराते हैं और पूर्व जन्म के कर्मों का विवरण हम अपनी जन्म कुण्डली से जान सकते हैं । ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र का निर्माण इसलिए किया है कि जातक अपनी कुण्डली देखकर पूर्व जन्म के कर्मों का स्वरूप जानकर अपने को पहचाने और प्रभु की उपासना से उन कर्मों को शमन करें और अपना मार्ग स्वच्छ करें । कुण्डली में यदि सप्तम भाव में शनि राहु मंगल होंगे या सप्तमेश पर इनकी दृष्टि होगी या लग्न में सूर्य सप्तम में शनि और साथ में राहु बैठा हो तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि इन पर न हो तो जातक यह अच्छी तरह समझ लें कि उसको गृहस्थ का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होगा और पति-पत्नी में विवाद निश्चित ही होगा ।

उपरोक्त स्थिति तब ही आती है जब जातक अहंकार, धन, मद से मदान्ध होकर, सत्यता को जाने बगैर बहकावे में आकर स्त्री को नाना प्रकार से दुखी रखकर उसका अपमान करता है, और पर-स्त्री गमन करता है तथा यहां तक कि अत्याचार करता है । उन्हें जला तक डालता है । ईश्वर की शक्ति तक को नकार कर नास्तिकता को स्वीकारता है । इसी प्रकार स्त्री भी जब अपने रूप यौवन व धन मद के अंहकार से उच्छृंखल स्वभाव अपना लेती है । संतान को त्याग पति का अपमान कर पर-पुरुषों की अंकशयिनी बनती है। ऐसे कर्मों के फलस्वरूप ही जातक अपने अगले जन्म में गृहस्थ सुख से वंचित रह कर तिरस्कृत जीवन जीते हैं । जातक अपने को धोखा देता है परमात्मा को धोखा देता है और अपनी प्राणबल्लभा को भी धोखा देता है । वह कहता कुछ और है करता कुछ और है तथा विवाह में अग्नि के समक्ष स्त्री को जो वचन देता है उस में भी धोखा करता है ।

स्त्रियों में भी भारी दोष है । जो स्त्रियां अपने रूप, यौवन, तथा धन से मदान्ध होकर उच्छृंखल स्वभाव की हो जाती हैं, अपने सामने किसी को नहीं मानती तथा निन्दनीय कर्म करने में तो उनको भय ही नहीं होता है, अपनी मनमानी करती हैं, पति उनके समक्ष मसक 'मच्छर' समान होता है, अपने मां-बाप या अन्य किसी के बहकावे से पुरुषों पर

जबरदस्ती आरोप लगाकर घर नहीं बसाती, पति के लाख मनाने पर भी घर नहीं बसाती और अन्य पुरुषों का घर बसाती हैं ऐसी स्त्रियों का सुकृत नष्ट हो जाता है। ऐसी स्त्रियों के अगले सात जन्मों में भी विवाह नहीं होते। यहां पर भी हम देखते हैं कि लड़की रूप यौवन तथा नौकरी से सम्पन्न है फिर भी लाख चाहने पर भी उसे पति प्राप्त नहीं होता है।

कर्मों का भुगतान कराने के लिए अगले जन्मों में पाप ग्रह शनि, राहु, मंगल सप्तम भाव में आ बैठते हैं। या लग्न में सूर्य सप्तम भाव में शनि या सप्तमेश पर इन तीनों की दृष्टि हो जाती है। शनि इन भावों में होकर अन्धकार कर देता है। सप्तम में बैठकर लग्न को देखता है। पत्नी के स्वभाव को इतना गर्म कर देगा कि पत्नी को लड़ाई के सिवाय कुछ सूझेगा हीं नहीं। सातवीं दृष्टि से लग्न को देखेगा। शनि की दृष्टि के फलस्वरूप जातक अपनी स्त्री को देखेगा परन्तु उसकी सुन्दरता पर मोहित नहीं होगा, और लड़ाई शुरू कर देगा। क्योंकि शनि दोनों के मस्तिष्क को गर्म कर देता है। दोनों विद्वान् होते हुए भी एक दूसरे के प्रति इतने असभ्य शब्दों का प्रयोग करते हैं कि जनसाधारण भी ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करता है। शनि के प्रभाव से उनकी विद्वता मारी जाती है और यह सच है कि पत्नी जैसा सुख कहीं नहीं है। मां-बाप का सुख व प्रेम 20 वर्ष तक चलता है। इसके बाद चालीस पचास वर्ष तक व्यक्ति को पत्नी का ही सुख मिलता है, उस सारे सुख व प्रेम को शनि जहर बना देता है। यदि ज्यादा अंशों में खराब है तो एक दूसरे से अलग करवा देगा। विवाह विच्छेद कर देगा तथा आपस में एक दूसरे का शत्रु बना देगा। आपस में एक दूसरे के हजारों अवगुणों को देखेंगे तथा दोनों से मिलने की इच्छा होने पर भी दोनों को नहीं मिलने देगा। तथा विषय होते हुए भी विषय को न भोगना, उसके प्रति चिन्तातुर होना यही उसका प्रायश्चित है यह पूर्व जन्म के कर्मों का ही प्रतिफल है, इसमें शनि का दोष नहीं।

राहु भी सप्तम भाव में शनि से ज्यादा काम खराब करता है। राहु पति या पत्नि के मस्तिष्क में ऐसा पागलपन भर देता है कि आपस में द्वन्द हो जाता तथा वह दोनों ही भूल जाते हैं कि हम पति-पत्नि हैं। राहु गर्म ग्रह है। युद्ध कराने के बाद अपार चिन्ताओं से उनकी चेतना शक्ति का अपहरण कर लेता है और जातक आत्महत्या कर बैठता है। विशेषकर स्त्री स्वयं ही आत्महत्या कर लेती है। यदि मंगल ग्रह का भी कहीं सम्बन्ध हो तो वह आग लगा कर स्वयं आत्महत्या कर लेगी।

उपर्युक्त विवेचन से जातकों को यह समझ में आ गया होगा कि किन-किन कारणों से पति-पत्नि विवाद होता है। घर में सुख शान्ति क्यों नहीं रह पाती ग्रह उसके कर्म के अनुसार पहले एक दूसरे में भयंकर युद्ध कराते है। यदि ग्रह ज्यादा खराब हों तो वाक् युद्ध के बाद सम्बन्ध विच्छेद करवा देते हैं या एक दूसरे की मृत्यु करा देते हैं। मूल कारण यह है कि विषय सुख की इच्छा होते हुए भी विषय सुख प्राप्त नहीं होता। बड़े-बड़े

विद्वानों के घर में, उच्चस्तरीय अधिकारियों के घर में तथा महान् धनिकों के घर में पति-पत्नि की आपस में वैमनस्यता देखी गई है । बड़े-बड़े पदाधिकारीयों जो हजारों आदमियों पर शासन करते हैं परन्तु अपनी धर्म पत्नी पर शासन नहीं कर पाते कारण कि ग्रहों का प्रभाव इतना अधिक होता है कि घरवाली पति देव पर शासन करने लग जाती है । पति की एक भी नहीं चल पाती तथा आपस में झगड़ा हो जाता है और काफी दिनों आपस में वार्तालाप तक नहीं होती है । ऐसे जातक अच्छी तरह से समझ लें कि ग्रह बहुत बलवान होते हैं । यह बिना उपासना दान पुण्यादि के अपना प्रभाव नहीं हटाते तथा निरन्तर व्यक्ति को प्रताड़ित किये रहते हैं । अतः बुद्धिमान जातकों को इन ग्रहों का जप कर या करवा लेना चाहिए ताकि स्थिति अनुकूल बनी रहे ।

इस संसार में जो जातक आयेगा उसे चार चीजें अवश्य व्यापेंगी । आहार, निद्रा, भय और मैथुन । नित्यप्रति भूख लगेगी । आहार मिलने पर ही शान्ति प्राप्त होगी । यानि भोजन प्रतिदिन चाहिए । भोजन के बाद निद्रा भी उतनी-ही जरूरी है बगैर निद्रा के जातक को चैन नहीं आएगा । मृत्यु भय सर्वोपरि भय है जो समय समय पर प्रत्येक जातक को व्यापता रहता है । मैथुन भी उतना ही जरूरी है जितना आहार, निद्रा । जब रात्रि में कामदेव का हमला होता है और जातक तड़प उठता है तथा उस मैथुन भूख के सामने उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता । मैथुन की इच्छा इतनी प्रबल हो जाती है कि वह बेहाल हो जाता है। अप्राकृतिक तथा असमाजिक कार्य करने में भी उसको भय नहीं लगता है तथा वह ऐसे कर्म करके अपने सुकृत नष्ट कर देता है ।

वर या कन्या के मां-बाप कपड़े, रोटी मकान की भूख मिटा सकते हैं, परन्तु मैथुन की भूख नहीं मिटा सकते क्योंकि बुढ़ापे तक भी मां-बाप की मैथुन की भूख नहीं मिटती । फिर जवान बच्चों की कैसे भूख मिटा सकते हैं । जवानी में तो कामदेव सिर पर नाचता है और तमो गुणी भोजन करने वाले तो अपने को किसी भी प्रकार से रोकने में असमर्थ हो जाते हैं ' तलाक दिलाने वाले मां-बाप उपरोक्त तथ्यों पर गहराई से विचार करें और तलाक न दिलवाकर बच्चों की ग्रह स्थिति को जपकर या जप करवा कर शान्त करायें या स्वयं करें और दूषित वातावरण को अनुकूलता में बदल दें । विवाह विच्छेद होते ही दूसरा पति या पत्नी खोजने लगते हैं । जो तलाकशुदा हो या पत्नी या पति की मृत्यु हो गई हो उस तलाकशुदा स्त्री पुरुष की स्थिति भारतीय सामाजिक दृष्टि से निकृष्ट मानी जाती है । कोई भी अविवाहित पुरुष स्त्री ऐसे व्यक्ति से विवाह करने में हिचकिचाता है और उसे सम्मानित दृष्टि से नहीं देखता है । राम चरितामनस में माँ सीता जी ने भगवान श्री राम से यह शब्द कहे थे कि----**जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी ।।**

अर्थात जैसे प्राण के बगैर इस देह का कोई अस्तित्व नहीं उसी प्रकार बगैर पुरुष के नारी का कोई अस्तित्व नहीं है । माँ अनुसूईया जी ने भी सीता जी को उपदेश देते

समय कहा था कि.... **एकई धरम एक ब्रत नेमा । काय बचन मन पति पद प्रेमा ।।** अर्थात स्त्रियों का एक ही धर्म है और एक ही कर्म है कि मन क्रम और वचन से पति के चरणों में प्रेम करने वाली हो । यह भारतवर्ष है, इस परम पावन भूमि पर अनेक पतिव्रता स्त्रियों ने जन्म लिया है । पति सेवा करके देवताओं को भी हिला दिया, सूर्य की गति रोक दी । हमारे समक्ष सती सावित्री का चरित्र साक्षी है । पति की आयु नहीं थी । फिर भी पतिव्रता धर्म के बल पर यमराज से अपने पति को जीवित लौटा लाई । यह पतिव्रत धर्म का ही प्रतिफल था । भारतवर्ष में अनेकों पतिव्रता स्त्रियां हुई हैं, और होंगी । शास्त्रानुसार एक बार ही व्यक्ति का विवाह होता है, दोबारा नहीं होता । हम लोगों ने पाश्चात्य सभ्यता को अपना लिया है उसी के अनुसार हम लोग एक पति, दो पति, तीन पति, चार पति पत्नियां वरण करने लगे हैं । समुद्र के उस पार जितने देश हैं सब भोग प्रधान देश हैं, स्वर्ग से बचे हुए पुण्यों का भोग कराने के लिए उन देशों में परमात्मा जन्म करा देता है । वहां मनु जी ने एक ही धर्म सिखाया है । कि सत्य बोलो और चाहे जो करो । जैसे स्वर्ग में अप्सराओं से रमण होता है, उसी प्रकार यहां भी खुला रमण होता है । एक-एक के बीस-बीस चालीस-चालीस पति होते हैं । पर हमारे पवित्र भारत में यह नियम लागू नहीं होता है । भारतवर्ष तो कर्म प्रधान देश है जो मानव जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही भुगतान करना पड़ेगा । भारतीय संस्कृति इसी तथ्य का उद्घोष करती है ।

तलाक की समीक्षा

सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करने के बाद देखें कि कितने तलाक लेने वालों के घर बसे और कितने प्रतिशत कामयाब हुए । अध्ययन करने पर यह ज्ञात होगा कि एक दो प्रतिशत के अलावा किसी के घर नहीं बसे । कारण कि जिसका घर उसके पिछले कर्म के अनुसार राहु, शनि, मंगल सूर्य उजाड़ते हैं तो उसके घर को वे ग्रह क्यों बसने देंगे । दूसरे पक्ष वाला भी ग्रहों से कुपित हुआ होता है । अतः जिसके घर को ग्रह बिगाड़ते हैं दुबारा बसने नहीं देते हैं क्योंकि ग्रहों में अनन्त बल है । इसी कारण आज अदालतें इन तलाकों के मुकद्दमों से भरी पड़ी हैं ।

बिना कोर्ट कचहरी के घर बसाने का सरलतम उपाय

केवल ऋषि प्रदत्त मंत्रों में ही ऐसा बल है जो ग्रहों की भयंकर से भयंकर स्थिति अर्थात शनि की ढैया साढ़ेसाती आदि कराल पीड़ा से भी जातक को मंत्र ही मुक्त करा सकते हैं । अतः जातक विश्वास पूर्वक श्रद्धापूर्वक ही इन ग्रहों के मंत्रों का जप हृदय से करें तो निश्चित ही अपने घर को स्वर्गतुल्य बना पायेंगे और पति पत्नी विवाद सदा के लिए निर्मूल हो जायेंगे । दोनों में इतना प्रेम होगा जैसे विवाह अभी ही हुआ हो पति पत्नि दोनों चौबीस-चौबीस लाख मंत्र राहु, शनि, मंगल, सूर्य के करें । स्त्रियां मासिक धर्म के

पांच दिन छोड़कर शुद्ध मुख से मंत्र सम्पूर्ण दिन चला सकती हैं, मंत्र जाप होते ही ग्रह का कुप्रभाव दूर हो जायेगा और जिस पति में हजार हजार अवगुण दिखाई देते थे उसमें गुण दिखने आरम्भ हो जायेंगे । मस्तिष्क में से क्रोध निकलेगा और पति के प्रति श्रद्धा विश्वास होना आरम्भ हो जायेगा । तथा अवगुण दृष्ट न होकर पति पत्नी में परस्पर मिलन की नवीन उत्कण्ठा जागृत होगी । चौबीस लाख मंत्र होने में तीन महीनों का समय लगेगा तीन महीनों में वातावरण अनुकूल हो जायेगा । तथा एक ग्रह शुद्ध हो जायेगा बस इसी प्रकार इन ग्रहों का जप क्रमबद्धता से करें । जैसे-जैसे जप सम्पूर्णता की ओर अग्रसर हो जायेगा, वैसे-वैसे वातावरण भी इच्छा अनुकूल होता चला जाएगा ऐसा केन्द्र का अनुभव है ।

स्त्रियां अपने को कूड़ा करकट न समझें । यह पुरुष की शक्ति हैं बिना शक्ति के कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता । जिन स्त्रियों के पति क्रूर हों, आततायी हों, असमाजिक हों, नीच प्रकृति के हों वे स्त्रियां दायीं तरफ शुद्ध घी का तथा बायीं तरफ तेल का दीपक जलायें और मध्य में ताँबें का कलश रखकर और उसमें रुद्राक्ष, पीपल की जड़, एक चांदी का रुपया तथा तीन गांठ वाली इक्कीस घास दूब डालें । अगर कुछ भी प्राप्त न हो सके तो जल ही पर्याप्त है । स्त्रियां यह सम्पूर्ण सामग्री कलश में डालने के बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मेरा पति जहां कहीं है उसकी बुद्धि शुद्ध हो जाये और मेरे से पूर्ण स्नेह स्थापित करे तथा संकल्पित जल को तुलसी या केले के वृक्ष की जड़ में छोड़ दें। इसके बाद ग्रह के मन्त्र का जप करें । इस प्रकार जप करने से जल अभिमन्त्रित हो जायेगा। लोटे के अभिमन्त्रित जल को छान कर दूसरे दिन प्रातः काल सूर्य की ओर मुंह करके पति को पान करवा दें । ऐसा करनें से दो चार महीनों में ही उसे पति की अनुकूलता का आभास घर बैठे ही मिलेगा । जो लड़कियाँ विवाह होने के बाद बिना मतलब ही छोड़ दी जाती हैं, उनके मां-बाप इन कन्याओं से भी इस प्रकार जप सम्पन्न करवा लें और स्वयं भी करें । मंत्र जाप होने के बाद ग्रह उसके पति के स्वभाव में अनुकूल परिवर्तन करने में योगदान देगा । दुनिया की ऐसी कोई ताकत नहीं जो उजड़े हुए घर को पुनः बसा सके, मात्र मंत्रबल द्वारा ही असंभव को संभव किया जा सकता है । लड़कियों को तलाक दिलाने वाले मां-बाप उपरोक्त ग्रहों का जप घर में बैठकर स्वयं करें तथा लड़की से भी करवायें । जप होने के थोड़े ही महीनों में स्थिति अपने आप सुधर जायेगी । सम्बंध पुन स्थापित होने लगेगा । तथा सारे विवाद अपने आप शान्त हो जायेंगे ऐसा केन्द्र का अनुभव है । लाभ अवश्य होगा हानि के लिए कोई जगह नहीं है ।

धन-धान्य तथा रूपवती होने के बाद भी कन्या का विवाह नहीं होता है तथा आयु अधिक हो जाती है । मां-बाप बार-बार प्रयास करते हैं बात बनते-बनते बिगड़ जाती है एवं बारम्बार असफलता ही हाथ लगती है । काम अब होगा, अब होगा काम, बस अब बना इसी आशा में उम्र तीस पैंतीस की हो जाती है और अधिक उम्र होने के बाद उनके साथ कोई विवाह नहीं करता । सभी गुणों के सम्पन्न होने क तथा पूर्ण प्रयास करने के बाद

असफलता ही हाथ लगती है । बार-बार असफलता मिलने से जातक महान चिन्ताओं से घिर जाता है तथा उसे कोई रास्ता दिखाई ही नहीं देता । यह उसके पूर्वकृत जन्म के कर्मों का प्रायश्चित है । जो ग्रह उसको जबरदस्ती भुगवाते हैं, लाख चाहने पर भी मनोरथ पूरा नहीं होने देते । ऐसे जातक अपनी जन्म कुण्डली में जिस ग्रह की महादशा चल रही हो और सप्तम में बैठे हुए ग्रहों का जल ज्योति के सामने श्रद्धापूर्वक जप करें । ग्रहों का जप होते ही स्थिति अनुकूल हो जायेगी और विवाह हर्षोल्लास से सम्पन्न हो जायेगा । विवाह होने से पूर्व मां-बाप अपने बच्चों के जन्माँक का परीक्षण करवा लें यदि जन्मांक में उपरोक्त दोष हों तो ग्रहों का जप बच्चों को समझा बुझा करके करा लें ताकि विवाहोपरान्त उनमें कोई दोष विवाद न हो और गृहस्थ जीवन सुखमय व्यतीत हो जाये ।

अखबारों में विज्ञापन देने के बाद और पूर्ण प्रयास करने पर भी जिनका विवाह सम्पन्न नहीं होता हो वे अपना फोटो तथा जन्मांक या अपना ठीक समय, जन्म तारीख, जन्मस्थान अपना पूरा विवरण आदि स्पष्ट लिखकर भेजें । जैसे वर वधू पाने की इच्छा हो, स्वजाति स्व अन्य जाति में अपने मनोभावों को स्पष्ट लिखें तथा दोनों हाथ के छापे दायाँ तथा बायाँ सफेद कागज पर भेजें । विवरण देते समय सत्यता बरतें अन्यथा केन्द्र उनकी सेवा नहीं कर पायेगा ।

केन्द्र उनकी कुण्डली व हस्तरेखा को देखकर यह बता पायेगा कि विवाह क्यों नहीं हुआ । किस उम्र में होगा या नहीं होगा । वधू पक्ष वालों का भी उसी प्रकार प्रवर निरीक्षण किया जायेगा । केन्द्र इस बात पर विशेष ध्यान देगा कि उनका दाम्पत्य जीवन मंगलमय बीतेगा या नहीं या बीच में विवाह विच्छेद तो नहीं हो जायेगा, आदि आदि बातों का स्पष्ट एवं सरल उतर केन्द्र द्वारा दिया जायेगा । यदि वर-वधू की कुण्डलियों का भविष्य उज्ज्वल होगा तो केन्द्र विवाह करने की भी सलाह देगा । जिन जातकों के पास अपना जन्मांक या जन्मतिथि व जन्म समय नहीं हो तो वह स्वयं केन्द्र से सम्पर्क करें ताकि उनके विवाह के लिए केन्द्र हस्तरेखा व प्रश्न कुण्डली द्वारा निर्णय ले सके । इस प्रकार केन्द्र अधिक उम्र वालों के विवाह कराने में योगदान देगा ।

यदि इच्छा हो तो तलाक शुदा, विधवा तथा विधुर भी अपना जन्मांक जन्मपत्री या जन्मस्थान तथा जन्म तारीख भेजें । केन्द्र वर-वधू दोनों को ग्रहों के मंत्रों का जप, दान आदि स्वयं करने की सलाह देगा । ग्रहों के कुप्रभाव से मुक्त होने के बाद दोनों का सम्बन्ध कराने में सहायता करेगा । केन्द्र वर-वधू का मेल-मिलाप भी करायेगा । यदि जन्म समय व जन्म तारीख याद न हों तो जिस समय वह पत्र लिखें वह उस दिनांक एवं समय तथा एक सौ आठ के बीच का कोई अंक लिखकर भेजें ताकि प्रश्न कुण्डली बनाकर उतर दिया जा सके।

केन्द्र की महत्वपूर्ण खोज : हर प्रकार के रोगों को शमन करने का अचूक उपाय

प्रातः स्नान करने के बाद नियमित अनवरत रूप से भगवान भास्कर को अर्घ्य देना चाहिए । स्तोत्र पाठ करने के बाद एक लकड़ी के पट्टे पर लाल कपड़ा बिछाकर दायें घी का दीपक बायें तेल का दीपक जलाकर दोनों दीपकों के बीच तांबे के लौटे में गंगा जल, चांदी का सिक्का, रुद्राक्ष, अश्वत्थ मूल, पीपल के पत्ते, दूर्वा, मुरा, जटामांसी, बच, कूठ, हल्दी, अपामार्ग की जड़, मरवे के पत्ते, तुलसी के पांच पत्ते, दारूहल्दी, चन्दन, पुस्ता, कलश के जल में डालें । कलश के ऊपर पीपल, बड़, गूलर, अशोक, अर्जुन, आम के पत्ते लगायें या इनमें से जो पत्ते उपलब्ध हो सकें लगायें । जिस ग्रह ने रोग दिया है, उस ग्रह का अधिक से अधिक सुबह, शाम, मंत्र जाप जल ज्योति के सामने करें । मंत्र जप जितना अधिक होगा उतनी ही जल्दी लाभ देगा । दूसरे दिन इस पात्र के अभिमंत्रित जल को सूर्य की तरफ मुंह करके पी लें । या जिसके निमित्त जप करें, उसी को पिला दें । जल निकाल लेने के बाद पुनः सारी वस्तुएँ पूर्ववत् उसी प्रकार डालकर दूसरे दिन सेवन करें । इस प्रकार यह प्रयोग निरन्तर 40 दिन तक करें । या जब तक रोग समाप्त न हो जाये तब तक कर्मठतापूर्वक विश्वास रखते हुए जप करें । जप काल के दौरान पूर्ण सात्विकता बरतें । यहां तक कि चमड़े आदि की कोई वस्तु धारण न करें और न ही स्पर्श करें तथा किसी भी प्रकार से कोई अभक्ष्य मांसादि वस्तु का सेवन न करें । इस प्रकार विधिवत जप करने से लाभ शीघ्र होगा, हानि का कोई प्रश्न ही नहीं होता है ।

असाध्य रोगों की साध्य औषधि

इस मृत्यु लोक अर्थात पृथ्वी पर सभी जीवों का शरीर पंच महाभूतों (जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, तथा वायु) द्वारा निर्मित होता है । इन पांच तत्वों की सम अवस्था को ही शरीर की निरोगता कहा जा सकता है । परन्तु इन तत्वों में प्रत्यावर्तन (अदल-बदल) होता रहता है । यह लगभग एक घण्टे में हो जाया करता है । और दूसरे प्रधान तत्व की बारी आ जाती है । अर्थात एक तत्व प्रधान होकर दूसरे तत्वों को क्षीण करता रहता है और वह तीव्रता प्राप्त कर कुपित होने पर विकार को प्राप्त होतें रहते हैं । यह संघर्ष मनुष्य के जीवन में रात और दिन में लगभग पांच बार प्राप्त होता है । इस संघर्ष अर्थात विकार के कारण पित्त, कफ, तथा वात के रूप में प्रकृति के तीन गुण-सत्व, रज, तम, के योग से घटित होती रहती है । इन पांच तत्वों के संतुलन को बनाये रखने के लिए पांच देवों की पूजा, जो इन तत्वों के अधिष्ठात्री देवता हैं, की जाती रही है । जैसे जल तत्व के लिए

भगवान गणेश, अग्नि तत्व के लिए माँ दुर्गा, पृथ्वी तत्व के लिए भगवान शिव, आकाश तत्व के लिए भगवान विष्णु तथा वायु तत्व के लिए भगवान सूर्य की पूजा अर्चना होती रही है । इन तत्वों में जल प्रधान तथा प्रथम तत्व है इसलिए गणेश की प्रथम पूजा का विधान है । जैसे जल ही हमारे जीवन का प्रथम तथा प्रधान तत्व है । इसी प्रकार वायु तत्व से सभी तत्वों में गति प्रदान होती है और जब तक यह तत्व सक्रिय न हों अर्थात वायु का सहयोग प्राप्त न हो तो शरीर में दूसरे तत्वों का संचालन नहीं हो सकता है और उसका अनुभव भी नहीं होता है । इसलिए इसके देवता सूर्य की हर कार्य और हर अवस्था में पूजा होती रही है परन्तु आज हम इन अकाट्य सिद्धान्तों को भूल चुके हैं और परिणाम स्वरूप परेशानी को प्राप्त हो रहे हैं ।

इसके साथ हमारे शरीर के विभिन्न अँगों पर नवग्रहों का आधिपत्य अर्थात अधिकार है जो इसकी कार्य शैली को काफी हद तक नियन्त्रित करते हैं । इन्हीं के नियन्त्रण के विकार के कारण बहुत सारी असाध्य बीमारियों का हमें शिकार होना पड़ता है । पेट विकार ही सारे रोगों का मूल माना गया है और इसे तीन ग्रह शनि, राहु, तथा केतु और कुछ अंशों में अन्य ग्रह उदर को संचालित करते हैं । इसी प्रकार देह में मंगल रक्त का स्वामी है आदि आदि । चन्द्रमा सोम होकर सर्व औषधियों और वनस्पतियों को पुष्ट करता है जिसे सेवन कर जीवों के शरीर की रक्षा तथा निरोगता प्राप्त होती है । इसलिए जब इन ग्रहों की खराब स्थिति होती है तब वे शरीर के सूक्ष्म तत्वों को प्रभावित करते हैं तो उनमें विकार उत्पन्न हो जाता है, जो आगे चलकर असाध्य रोगों का रूप धारण कर लेता है । जब तक यह ग्रह अनुकूल नहीं होते हैं, तब तक वह रोग न तो शमन हो पाते हैं और न ही रोगी को किसी प्रकार की राहत मिलती है । इसलिए जब ऐसी अवस्था प्राप्त हो जाये तो इन रोगों को देने वाले ग्रहों की शरण में जाने से काफी राहत प्राप्त हो जाती है और रोग मूल से ही समाप्त हो जाते हैं । अर्थात जिस ग्रह ने रोग दिया हो उसका विधिवत मंत्र, जप, यज्ञ करने के बाद औषधि अपना कार्य कर पाती है अन्यथा सब यत्न तथा डाक्टर, वैद्य आदि बेकार साबित हो जाते हैं।

केन्द्र द्वारा निर्मित कुण्डली में जन्मांक के पृष्ठ भाग पर नवग्रहों के द्वारा प्रदत्त रोगों का पृथक-पृथक रूप से वर्णन किया गया है । जातक उसी पृष्ठभाग को देखें और ज्ञात करें कि कौन सा ग्रह कौन सा रोग दे रहा है, उसी ग्रह का मंत्र जप, यज्ञ, दान, रत्न धारण करने से ग्रह कृपा प्राप्त होती है और साधारण उपाय से ही जातक पूर्ण स्वस्थ्य हो जाता है वरना जीवनपर्यन्त रोग से दुखी होकर नरकात्मक जीवन जीता है । अतः जो ग्रह रोग प्रदान कर रहा हो प्रथम उसका विधिवत जप, यज्ञ, करना चाहिए । तभी रोग मुक्ति संभव है । रोगी जब तक रोग मुक्त नहीं हो जाय अनवरत् रूप से ग्रह यजन करते रहना चाहिए ।

औषधि के गुण दोष का विवेचन

अपामार्ग :- अथर्ववेद काण्ड 4 सूक्त 17 में अपामार्ग को सभी औषधियों का राजा कहा गया । मूर्छा आना, रक्त क्षीण होना, बुरे स्वप्न आना, जीवन की उदासीनता, निस्तेजता और क्षीणता, ववासीर, चिड़चिड़ा स्वभाव, भूख और प्यास ज्यादा लगना, इन्द्रिय दोष, बन्ध्यापन आदि सभी रोग अपामार्ग औषधि के सेवन से दूर हो जाते हैं ।

कूट :- अथर्ववेद काण्ड : मंत्र 1 से 10 तक

कूट औषधि की एक अनूठी शक्ति अथर्ववेद में दर्शायी है । यह बलवर्द्धक, क्षय रोग नाशक प्राण, व्यान, चक्षु आदि के लिए हितकारी है । सिर के रोग, आंखों की व्याधि तथा शरीर के दोष दूर होते हैं और आरोग्यता प्राप्त होती है ।

बच :- अथर्ववेद एवं अग्निपुराण में बच का विशेष महत्व दर्शाया गया है । अथर्ववेद मण्डल 4 मंत्र 3-4 में तो यह भी कहा है **अवस्वुवं व्यहरध्वम्** । बच नामक औषधि कई क्रिमियों का नाश करने वाली है, और इसका कई प्रकार से उपयोग करते हैं जैसे इसका चूर्ण शरीर पर लगाने से क्रिमि बाधा नहीं होती है । गले में या शरीर पर धारण करने से भी क्रिमि पीड़ा दूर होती है और जल में घोल कर भी इसका सेवन करने से पेट के अन्दर के क्रिमी दोष दूर हो जाते हैं ।

दूर्वा :- भविष्य पुराण के 56 वें अध्याय में दूर्वा की विशिष्ट महिमा का वर्णन आया है । एक बार युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण से पूछा, प्रभु दूर्वा कहाँ से कैसे उत्पन्न हुई, तब श्री कृष्ण ने कहा कि यह दूर्वा भगवान विष्णु के रोम हैं । समुद्र मंथन के समय जब उन्होंने मन्दराचल को धारण किया तो रगड़ से जो रोम टूटे वही हरित घास अर्थात दूर्वारूप में परिणत हो गये, इसी दूर्वा पर देवताओं ने अमृत रखा था । कलश से जो अमृत की बूंदें दूर्वा पर गिरीं, उसी के प्रभाव से दूर्वा अजर-अमर हो गयी । इसीलिए इसमें 33 कोटि देवी-देवताओं का भी वास रहता है । और यह सर्वरोग हर भयंकर रोगों को तुरन्त ही ध्वस्त कर देती है तथा यह सौभाग्य संतति सुखी जीवन दात्री भी है अतः प्रत्येक प्राणी-मात्र को कलश में दूर्वा डालकर ही मंत्रों का उच्चारण या जप प्रारम्भ करना चाहिए । अतः यह परम गुणकारी और हर प्रकार से कल्याणकारी है । तथा सभी प्रकार के रोगों का शमन करने में यह अग्रगण्य है । यह शीतवीर्य, तिक्त, मधुर, तथा कसाय रस युक्त एवं कफ, पित्त, रक्त, विसर्क, तृष्णा, दाह और चर्म रोगों को दूर करने वाली गुणकारी औषधि है ।

कलश में डालने वाली उपरोक्त सभी औषधियां विशिष्ट गुण शक्ति से संपन्न तथा कई प्रकार के रोगों का नाश करने वाली हैं । साथ ही इन्हें मंत्र शक्ति से विशेष अभिमंत्रित कर जब औषधियों का सेवन किया जाता है अर्थात कलश के जल को पिया जाता है तो वह रामबाण स्वरूप कार्य करता है अर्थात कर्त्ता को तुरन्त रोग से राहत प्राप्त होती है ।

सभी औषधियों की महान् सामर्थता है लेकिन यहां दूर्वा बच आदि का ही महत्व उल्लेख किया जाता है । शेष जानकारी केन्द्र से प्राप्त करें । नासिका से रक्त आता हो व आ रहा हो तो दूर्वा का लेप लगाने से बन्द हो जाता है । अग्निपुराण अ; 283

जन्मांक में यदि मार्केश या प्रबल मार्केश लग गया हो या लगने वाला हो तो महामृत्युन्जय के सवा लाख या सवा पांच लाख मंत्र जाप अवश्य करें या करवायें । तभी रोग मुक्ति एवं पूर्णायु प्राप्त होगी । अतः सोच विचार कर कृत्य श्रद्धापूर्वक संपन्न करें और भगवान साम्ब सदाशिव के चरणों का चिन्तन करें । सफलता अवश्य मिलेगी और भगवान शंकर आरोग्यता एवं पूर्णायु प्रदान करेंगे । केन्द्र का जो भी नवीन शोध होता है, उसे तुरन्त समाचार पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करवा दिया जाता है ताकि जनता जनार्दन उसका पूर्ण लाभ साधारण ही प्राप्त कर सके । यहां भी उसी उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए उपरोक्त का वर्णन किया गया है ।

केन्द्र उपरोक्त सभी वस्तुओं को प्रधान कलश सहित सभी कलशों में 1-1 नग डालता है । पंचपल्लव, दूर्वा, आदि कलश में लगायी जाती हैं । मंत्र जाप संपन्न होने के बाद यह सब वस्तुएं अमृतमय हो जाती हैं और यज्ञोपरान्त प्रधान कलश के जल को यजमान को पिला दिया जाता है तथा शेष कलशों के जल से यजमान का अभिषेक किया जाता है जिसके फलस्वरूप जातक का वाह्य आभ्यान्तर शुद्ध हो जाता है । इसीलिए यह प्रयोग शत् प्रतिशत रोगादि निवारक है । इस उपचार को करने से किसी को, किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती, लाभ ही लाभ होता है ।

नोट :- तुलसी दूर्वा मरवे के पत्ते एवं हरी जड़ें प्रतिदिन बदलें और मुरा, जटामांसी, आदि सभी वस्तुएं मात्रा अनुसार कलश में एक-एक नग ही डालें ।

योगासन एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा उदर रोग दूर करने का सरल उपाय

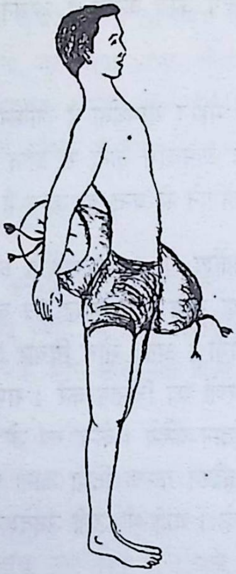

बीमारियों का केन्द्र बिन्दु होता है उदर, और ज्यादातर लोग पेट की ही बीमारी से पीड़ित होते हैं । इसका कारण एक और भी है जैसे चलती हुई गाड़ी से उतरना, अचानक गढ्ढे पर पैर आना या अकस्मात कूदने से नाभि अपने स्थान से हट जाती है । नाभि या तो दायें नले की ओर फँस जाती है या बायें नले की ओर फँस जाती है । नाभि के हटते ही पेट दर्द, अतिसार या पेट पत्थर की तरह हो जाता है । भूख नहीं लगती पेट अफरा रहेगा यही इसके लक्षण हैं । विडम्बना यह है कि मैडीकल साइन्स इसको नहीं मानती परन्तु जिसकी एक बार नाभि हट जाती है वह जीवनपर्यन्त दुःख भोगता है । याद रखें, जिसके नले होते हैं वह किसी भी औषधि से ठीक नहीं होते चाहे जातक शरीर से कितना भी बलिष्ठ हो वह इस रोग के कारण तन, मन, धन खो बैठता है ।

केन्द्र ने उपरोक्त बीमारी से निपटने हेतु तथा निवारण करने हेतु योगशास्त्र द्वारा एक पद्धति खोज निकाली है तथा परीक्षण भी कर लिया है और वह पद्धति पूर्ण लाभकारी भी सिद्ध हुई है तथा इसी पद्धति द्वारा केन्द्र उपरोक्त बीमारी से पीड़ित जातकों की निरन्तर निःशुल्क सेवा कर रहा है । इसी कारण जातकों का यह केन्द्र श्रद्धा बिन्दु बना हुआ है ।

विधि

कर्त्ता प्रथम सीधे जमीन पर लेटे और कमर के नीचे अर्थात कटिभाग के नीचे एक मोटा मसनद लगायें जिसकी ऊँचाई एक फुट होनी चाहिए । हाथ पैर सिर जमीन पर रहेंगे और कटिभाग पृथ्वी से लगभग एक फुट ऊंचा मसनद पर रहेगा । इसके बाद प्रथम दाहिना पैर उठायें और सिर की तरफ जितना मोड़ सकें मोड़ें । इसी प्रकार बांये पैर को उठायें और पूर्ववत करें । इसके बाद दोनों पैर उठायें और सिर की ओर ले जायें फिर शनै-शनै पैर नीचे लायें, उपरोक्त क्रिया 5-5 बार करें ।

उपरोक्त क्रिया करने के बाद मसनद निकालें और मुंह से लम्बी सांस लें और नासिका से धीरे-धीरे साँस निकालें इस क्रिया को भी 5 बार करें । तदोपरान्त रबड़ की थैली में तेज गरम पानी भरें और पेट के ऊपर एक रूएँ वाला तौलिया पानी में भिगोकर अच्छी तरह निचोड़े और पेट पर रखें । इसके बाद तौलिया के ऊपर गरम पानी की थैली से पेट की सिकाई करें ।

इस प्रकार पेट की सिकाई 15-20 मिनट करें इसके बाद पहले से भिगोई हुई पीली मिट्टी का लेप 2 इंच मोटा पेट पर करें । आधा घंटे तक वह लेप 2 इंच मोटा पेट पर रहने दें । आधे घंटें के बाद वह लेप उतार दें । पेट साफ करें तथा गुनगुने पानी में नींबू और शहद डालकर पियें और तीन घंटे तक कुछ नहीं खायें जब भूख लगे तो हींग से छौंकी हुई खिचडी खायें । यह प्रक्रिया लगातार पांच दिन करना चाहिए ।

ऐसा करने से आपका पेट एकाएक नरम हो जायेगा नाभि केन्द्र पर आ जायेगी । भूख अपने आप लगने लगेगी और हाजमा ठीक हो जायेगा । अपच अतिसार सदैव के लिए खत्म हो जायेगा और यह कहावत चरितार्थ होगी । पांव नरम, पेट गरम, सिर ठंडा, डॉक्टर यदि घर आयें तो मारे डंडा ।

नोट :- यदि ग्रह के कारण पेट खराब हो तो केतु का विधिवत एक करोड़ मंत्र जाप करें और प्रत्येक मंगलवार तथा अमावस्या या प्रतिदिन पाव भर बाजरा उबालें और उसमें दही, गुड़ डालकर एक पत्तल पर रख भूरे रंग के कुत्ते को खिलायें या भूरा कुत्ता न मिले तो किसी भी कुत्ते को खिला दें । पेट शीघ्र ठीक हो जायेगा, यह केन्द्र का अनुभव है ।

....

शंख मणि

चन्द्रमा

अथर्ववेद में शंख मणि की महिमा इस तरह से गायी गई है कि शंखमणि वायु से, अन्तरिक्ष से, बिजली से, और सूर्यादि ज्योतियों से भी सब प्रकार से उत्पन्न हुआ वह सुवर्ण मे बना मोती रूपी तेजस्वी शंख हम को पाप से बचाए ।

यह स्वयं तेजस्वी है और समुद्र से प्राप्त होता है, इससे रोग बीज दूर होते हैं, खून का शोषण करने वाले रोगों के क्रिमी इससे नष्ट होते हैं ।

शंख से आम के कारण उत्पन्न होने वाले रोग दूर होते हैं बुद्धि की सुस्ती हट जाती है, शंख से शरीर की अन्य पीड़ा हट जाती है, शंख सब रोगों की औषधि है । यह तेजस्वी शंख हमें रोगों से बचाता है ।

यह शंख समुद्र से उत्पन्न होता है और महानदियों के मुख पर भी प्राप्त होता है। यह मब आयु में हमें दुःखों से पार करता है ।

उपरोक्त से यह सिद्ध हो गया है कि शंख मणि जीवन में हर एक के लिए परमोपयोगी है । भगवान विष्णु भी इसी कारण शंख को हमेशा हाथ में धारण किये रहते है । अतः किस प्रकार इस मणि का सेवन करना चाहिए, अधोलिखित है :-

सेवन विधि

(1) श्वेत रंग का साफ सुथरा बड़ा शंख लेना चाहिए । शंख को अच्छी तरह से साफ करने के बाद उसमें गंगा जल भर उसमें 5 तुलसी पत्ते डाल लेना चाहिए । तथा कपड़े से ढक देना चाहिए अगले दिन प्रातः काल सूर्य के समक्ष खड़े होकर उस जल को पी लेना चाहिए । अगले दिन पूर्ववत कार्य दोहरा लेना चाहिए । इसी तरह जीवनपर्यन्त जल पीने से किसी भी प्रकार के रोग नहीं सताते हैं । मातायें बच्चों को यह जल बाल्य काल से ही पिलाना आरम्भ करें । ताकि आगे आने वाले जीवन का हर प्रकार से अभ्युदय हो सकें ।

दक्षिणावर्ति शंख

यदि दक्षिणावर्ति शंख से उपरोक्त प्रयोग किया जायेगा तो निश्चय ही सोने पर सुहागे का काम करेगा । दक्षिणावर्ति शंख जिस घर में रहता है वह घर धन-धान्य से भरा रहता है, वहाँ पर रिद्धि, सिद्धी, तथा लक्ष्मी समान रूप से निवास करती है । दक्षिणावर्ति शंख से भगवान शंकर का अभिषेक करने से पूर्ण वैभव की प्राप्ति होती है, और पूर्ण आयु प्राप्त होती है तथा अकाल मृत्यु टल जाती है । मातायें नवजात शिशुओं को 5 वर्ष की आयु तक नित्य स्नान करायें और शंख मणि का जल तुलसी सहित नित्य पिलाऐं । ऐसा करने से बालक विद्यावान, यशवान, धनवान, तथा कुल की वृद्धि करने वाले होते हैं । अतः पूर्ण प्रयास कर दक्षिणावर्ति शंख के जल का ही सेवन कराना चाहिए ।

विशेष :- सब से बड़ा लाभ यह है कि जातक की मनोवृत्तियां पाप करने की इच्छाएं, ठगी, धोखेबाजी, हत्याएँ, अनाचार, पापाचार तथा व्यभिचार करने की वृत्तियां समाप्त हो जाती हैं । इसके साथ-साथ **ॐ श्राँ श्री श्रौं सः चंद्रमसे नमः** इस मंत्र का जप करते रहना चाहिए ।

उपरोक्त को ध्यानपूर्वक कई बार पढ़ें । यदि मन नहीं माने पुनः मन को समझाएं और फिर अध्ययन करें । यदि समझाने के बाद भी न माने तो शंख के जल का अवश्य सेवन करें और चंद्रमा के बीज मंत्र का एक करोड़ जप करें ।

केन्द्र की एक और अभूतपूर्व चमत्कारिक खोज

अक्षय फल प्रदायिनी सोमवती अमावस्या का महात्म्य एवं पीपल पूजन द्वारा पितृ प्रकोप से तुरन्त निवृत्ति तथा समस्त मनोकामना पूर्ति

पूर्व जन्म, इह जन्मकृत ब्रह्म हत्या, बाल हत्या तथा अन्यान्य जघन्य पापों से तुरन्त निवृत्ति

हमारे पूर्व जन्मों के पाप स्वरूप इस जीवन शृंखला में बहुत इच्छित पदार्थ तथा सुख प्राप्त नहीं हो पाते हैं । इसके लिए शास्त्रों में वर्णित तथा संत पुरुषों द्वारा समय-समय पर सुझाए गये उपायों को प्रयोग करने पर कोई परिणाम प्राप्त नहीं हो पाता है । ऐसा ही यहां केन्द्र में कई जातकों के ग्रह जप, पूजन यजन आदि करने पर भी प्राप्त नहीं हो सके तो निरन्तर प्रयास जारी करने पर यह आभास प्राप्त हुआ कि इसके लिए इन जातकों को परिक्रमा योग्य महान विभूतियों की परिक्रमा करनी चाहिए । इनका कारण है कि परिक्रमा योग्य, दिव्य वस्तु अपनी परिक्रमा करने वाले को अपने तेज कण उनकी दक्षिणावर्तिनी गति होने के कारण स्वभावतः ही देते हैं । उनका यह तेजोदान वर-प्रदान है जो सम्भावित विघ्नों एवं संकटों का नाश करने में समर्थ है । इन विभूतियों की परिक्रमा न करने से उनके ये तेज कण अथवा दिव्य परमाणु व्यर्थ चले जाएंगे और सम्भावित संकटों के निराकरण कर या सामर्थ्य प्राप्त करने से हम वंचित रह जाएगें जिससे हमारे अपने हित तथा कल्याण का नाश हो जाएगा । इस प्रकार पाप के भागी बन जाएंगे ।

शास्त्र के अनुसार पूज्य, वन्दनीय और आदरणीय व्यक्ति शक्ति प्रदक्षिणा के योग्य हैं । केवल श्रेष्ठ पवित्र सत्वगुण प्रधान तत्व ही पूजनीय होने के कारण सेवा से उपासक को पवित्र और सात्विक बनाते हैं । जिस प्रकार भगवान के चरणों का स्पर्श प्राप्त करके जल तीर्थ चरणामृत बन जाता है, वैसे ही भगवान को निवेदित किया गया नैवेद्य प्रसाद बन जाता है और उस चरणामृत तथा प्रसाद को ग्रहण करने से उपासक पवित्र हो जाते हैं उसी प्रकार सत्वगुणी प्राणी, पदार्थ तथा देवता की दाहिनी दिशा से की गयी परिक्रमा साधक में सत्वगुण की वृद्धि करती है । जैसे साधारण स्वच्छ जल तथा भगवान से स्पर्श किये गये जल अर्थात चरणामृत के अन्तर को चर्म चक्षुओं से नहीं पहचाना जा सकता। इस अन्तर को दिव्यदृष्टि एवं सूक्ष्म बुद्धि से निश्चित ही देखा जा सकता है वैसे ही परिक्रमा न किये और परिक्रमा किये हुए व्यक्ति के आभामण्डल के अन्तर को सूक्ष्मग्रही अन्तर्चक्षुओं से अर्थात ज्ञान दृष्टि से देख सकना सम्भव है ।

इसकी परिक्रमा करने के तथ्य पर विचार करने पर कि वह कौन सी सर्व सुलभ दिव्य विभुति तथा पदार्थ हैं जिसकी परिक्रमा करने से उसके आभामण्डल के तेज कणों की शक्ति को प्राप्त कर पूर्व जन्मों कृत पापों के कारण इस जीवन में उपस्थित बाधाओं तथा विघ्नों से उभरने में सहायता प्राप्त हो सके । इन सब पर विचार करने पर देव प्रेरणा से पीपल वृक्ष, जिसमें सभी देवी देवताओं का वास माना जाता है और हमारे शास्त्रों में साक्षात विष्णुरूप की संज्ञा दी गई है, को दिव्य परिक्रमा योग्य महान विभूति पाया गया । इसके

अनुसार वर्ष भर में दुर्लभ प्राप्त सोमवती अमावस्या को श्रेष्ठ माना गया जो शास्त्र सम्मत है। इस प्रकार जातकों को पीपल की परिक्रमा सोमवती अमावस्या आदि में करने की प्रेरणा दी गई जिसके परिणाम बहुत उत्साहवर्धक प्राप्त हुए हैं । इस परिक्रमा की विधि आदि का वर्णन किया जा रहा है ।

जो जातक सभी प्रकार के उपचार करने के बाद भी फल प्राप्त न कर सके हों, सभी प्रकार से मुँह की खानी पड़ रही हो या धनाभाव अथवा रोग, शोक एवं सभी प्रकार के क्लेशों से संतप्त हों या हर प्रकार के यंत्र, तंत्र करने के बाद भी निराशा प्राप्त हुई हो वह इस प्रयोग को कर तुरन्त चमत्कारिक फल प्राप्त करें । यह प्रयोग सरल, साधारण एवं सभी वर्ग के लिए अनुकरणीय है ।

पीपल भगवान विष्णु का स्वरूप है क्योंकि गीता में भगवान श्री कृष्ण जी ने स्वयं कहा है कि वृक्षों में पीपल का वृक्ष मैं हूँ । पीपल में 33 कोटि देवी देवता निवास करते हैं । पीपल में भगवान शनि का भी वास है और पीपल में ही पितरों का निवास है इसलिए इसके सान्निध्य में किया गया धर्म कर्म अवश्यमेव फलीभूत होता है । सूर्य, चन्द्र, जब एक राशि में आते हैं उस तिथि में सोमवार हो तभी सोमवती अमावस्या कहलाती है इसीलिये इस अमावस्या को किया गया जप, पूजन, दान, आदि विशेष फलदायी होता है । दूसरा रहस्य यह है कि जातकों पर भयंकर पितृ दोष या प्रकोप होता है इसीलिये वह धन, पुत्र, शान्ति से वंचित रहते हैं लेकिन वह इस प्रयोग को करते ही लाभान्वित होते हैं और पितरों के तृप्त हो जाने से पितृगण कर्त्ता को धन पुत्र आदि से परिपूर्ण कर देते हैं ।

सोमवती अमावस्या को सर्वप्रथम पीपल की परिक्रमा पितरों के निमित्त करें और उसका पूर्ण फल पितरों को अर्पण कर देना चाहिए तदोपरान्त अपने कल्याण हेतु पुनः पूर्ववत 108 परिक्रमा करनी चाहिए । परिक्रमा करने के बाद यदि सामर्थ्य हो तो पीपल के ही नीचे तुलादान भी करना चाहिए ।

केन्द्र की सर्वोतम् खोज

केन्द्र विगत पांच वर्षों से पीपल परिक्रमा ग्रह पीडित तथा अन्य वाधाओं से प्रताड़ित जातकों से करवाता चला आ रहा है । पीपल परिक्रमा से जो जनता जनार्दन को राहत तथा ग्रह पीड़ा से जो मुक्ति मिली है वह अवर्णनिय है । अब केन्द्र इस नतीजे पर पहुंच गया है कि इस परिक्रमा को नित्य एक साल तक रविवार को छोड़कर नित्य करनी चाहिए । एक साल परिक्रमा करने से सब कुछ ठीक हो जायेगा यह अकाट्य सत्य है ।

अब प्रश्न यह उठता है कि खर्चा बहुत हो जाता है । इसके लिए केन्द्र ने युक्ति खोजी है 108 फल के बजाये एक अनार में से 108 दाने निकाल लें । 108 मिठाई के वजाये 108 बूंदी के दाने । 108 दीपक के बजाये 108 रूईं की वाती वट कर घी में भिगो कर अपनी परिक्रमा पूर्ण कर लेनी चाहिए ।

वैज्ञानिकों की दृष्टि में पीपल का महात्म्य

वृक्षों के महत्व और मनुष्य तथा प्राणियों के लिए उनकी उपयोगिता सर्वविदित है। वृक्ष प्रकृति के उसी तरह आवश्यक अंग हैं जिस तरह मनुष्य। वृक्षों के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

सदैव से हमारे देश में वृक्ष पूज्यनीय रहे हैं। देवताओं को प्रिय रहे हैं। हर देवता का अलग प्रतीक चिन्ह भी है वृक्ष। इसीलिये वृक्षों को काटने पर पाप लगता है। वृक्षों में भी मनुष्यों के समान प्राण होते हैं। भगवान महावीर ने कहा था-वृक्षों में भी प्राण हैं। वृक्षों को काटने से हिंसा होती है।

महात्मा बुद्ध ने कहा-हे मनुष्यो, वृक्षों से कुछ सीखो। वृक्ष तो उन्हें भी शरण देते हैं जो उन्हें काटते हैं।

महाभारत में कहा गया है-जो व्यक्ति वृक्षों को काटता है और नदियों को दूषित करता है, वह आत्मघात करता है।

इन सब तथ्यों का अर्थ यह है कि मनुष्य यदि वृक्षों को काटता है तो उसके कर्म का भुगतान उसे करना ही होता है। इस जन्म में या अगले जन्म में।

विश्व के वैज्ञानिक लगातार खोज कर रहे हैं कि वृक्ष और मनुष्य का या पूरी प्रकृति के सन्तुलन का परस्पर कितना अटूट रिश्ता है। हमारे मनीषियों ने घोर तप और ज्ञान के आधार पर सदियों पहले अनेक गूढ़ रहस्य जान लिये थे और मनुष्यों की भलाई के लिए उन्हें दो मुख्य वर्गों में विभाजित कर दिया था-पाप और पुण्य। वृक्ष और वनस्पति के सम्बन्ध में भी पाप और पुण्य लागू होता है। जैसे घर में तुलसी का पौधा लगाने से पुण्य मिलता है और पीपल के वृक्ष को काटने से पाप लगता है। इस पर विचार करें। वैज्ञानिकों ने विचार किया और पाया कि तुलसी का पौधा घर में रखने से पूरे घर में प्रवेश करने वाली वायु प्रदूषण को नष्ट करती है और घर में सुखद वातावरण रहता है। तुलसी के पत्तों में पारा होता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी है। अनेकानेक रोगों में तुलसी महा औषधि है।

इसी तरह वैज्ञानिकों ने अनुसंधान करके सिद्ध किया है कि पीपल एक ऐसा वृक्ष है जो चौबीसों घंटे आक्सीजन देता है। आक्सीजन यानि प्राणवायु। स्वास्थ्य के लिए उत्तम वायु परम आवश्यक तत्व है। इसीलिये पीपल के वृक्ष को काटने की अनुमति नहीं है। जो पीपल के वृक्ष को काटता है उसे ब्रह्म हत्या का पाप लगता है।

हमारे ऋषि-मुनियों का साधारण से साधारण मनुष्य को गहन गम्भीर बातों को समझाने का सरल तरीका रहा है - धर्म के उपदेश। मनुष्य के लिए उपयोगी और

आवश्यक वस्तुओं की सुरक्षा और संरक्षण के लिए कहा गया है कि इनको नष्ट करना पाप कमाना होता है । इनकी रक्षा करना पुण्य होता है ।

आज वैज्ञानिकों ने अनुसंधानों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि हर वृक्ष सुबह अथवा शाम को आक्सीजन देता है और नाइट्रोजन लेता है या फिर नाइट्रोजन और कार्बनडाइआक्साइड गैसें छोड़ता है । इन वृक्षों की पहचान कर ली गई है । लेकिन हमारे ऋषि मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व बता दिया था कि किस वृक्ष को घर के पास लगाया जाये किस वृक्ष को नहीं ।

हर वृक्ष का एक पत्ता एक दिन में एक ग्राम आक्सीजन बनाता है । इस तरह एक वृक्ष अपने पचास वर्ष के जीवन काल में विभिन्न रूपों में लगभग १५ लाख ५७ हजार मूल्य के बराबर लाभ मनुष्य को देता है । यह भी पता लगा लिया गया है कि एक वृक्ष से जो आक्सीजन मिलती है उसका मूल्य लगभग ढाई लाख रुपयों के बराबर होता है।

थोड़ा सा विचार कीजिये-पीपल जो चौबीसों घंटे आक्सीजन ही आक्सीजन देता है और दूषित गैसों को अपने भीतर समा लेता है उतना उपयोगी महत्वपूर्ण और पूज्यनीय है ।

हम कह सकते हैं कि पीपल आक्सीजन की फैक्टरी है । जो बिना मूल्य लिये मनुष्यों के हितार्थ सदैव तत्पर है और प्राणवायु देकर मनुष्यों का उपकार कर रहा है ।

इसी रहस्य को जानकर हमारे ऋषि मुनियों ने पीपल के वृक्ष की परिक्रमा करने और पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर तप करने का मार्ग खोजा । न जाने कितने ऋषि मुनियों को, शंकराचार्य और महात्मा बुद्ध को पीपल के वृक्ष के नीचे तपस्या करके ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

यह बात वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आ रही थी कि पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति का रहस्य क्या है? इस रहस्य को जानने के लिए उन्होंने अनुसंधान किया और पाया कि पीपल के पत्तों में जो तरल पदार्थ होता है और मनुष्य के मस्तिष्क में जो तरल पदार्थ होता है वह एक समान है । दोनों के बीच तारतम्य स्थापित हो जाता है । ज्ञान की धारा प्रवाहित हो उठती है ।

पीपल के पत्तों को जरा ध्यान-पूर्वक देखिए आप पायेंगे कि उनमें एक तेज है, ताजगी है और शीतलता है । इसीलिये हमारे ज्ञानियों ने कहा कि मनुष्य को संकल्प लेकर पीपल के वृक्ष की परिक्रमा करनी चाहिए । इस परिक्रमा के दौरान आप आक्सीजन के प्रभाव क्षेत्र में होते हैं । एक तरह से पत्तों से आक्सीजन झरनों की तरह झरता है और आप उसमें सराबोर हो जाते हैं । आपके मन में शांति आ जाती है, संकल्प के प्रति आस्था जाग जाती है और तनाव स्वतः ही कम होने लगता है ।

अतः पीपल की महिमा वर्णनातीत है ।

परिक्रमा करने की विधि

कर्ता प्रथम पीपल पर दुग्ध मिश्रित जल अर्पण करें और हृदय से भगवान विष्णु को नमस्कार करें, इसके बाद दाँयें तरफ घी का बाँयें तरफ तेल का दीपक तथा धूप जलायें । तेल के दीपक के नीचे उड़. और काले तिल रखें, घी के दीपक के नीचे चने की दाल अ . गुड़ रखें । इसके बाद पीपल की जड़ में ही गणपति का ध्यान करें और सम्पूर्ण पाप निवृत्ति हेतु संकल्प करें । तदोपरान्त जड़ में ही सूक्ष्म गणपति पूजन करें और पीपल को विष्णुमय समझते हुए षोड्शोपचार से पूजन प्रार्थना करें । इसके बाद परिक्रमा प्रारंभ करें। प्रत्येक परिक्रमा में एक घी की बत्ती जलते हुए घी के दीपक में जलायें । एक मिठाई व एक फल पीपल को स्पर्श कर पात्र में रखें इसके साथ-साथ दुग्ध मिश्रित जल व फूल भी पीपल की जड़ में चढ़ाते रहें और सूत लपेटते हुए परिक्रमा करें । परिक्रमा के दौरान अनवरत् रूप से **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,** इस द्वादश अक्षर मंत्र का जाप अवश्य करते रहना चाहिए । इसी प्रकार **108** परिक्रमा सम्पूर्ण करें । तदोपरान्त पीपल को पकड़कर प्रार्थना करें । परिक्रमा उपरान्त पात्र के प्रसाद को वितरित करें व स्वयं भी ग्रहण करें कारण कि यह भगवान विष्णु का प्रसाद है ।

सोमवती अमावस्या को किया गया यह प्रयोग तुरन्त फलदायी होता है कारण इस प्रयोग को करते ही एक सौ आठ गौ दान करने का फल प्राप्त हो जाता है । यही कारण है कि जातक प्रयोग करते ही तुरन्त संकल्प की प्राप्ति कर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है । अर्थात बाल, गौ, ब्रह्म हत्याओं, विश्वासघात आदि जघन्य पापों से वह मुक्त हो जाता है मस्तिष्क में अखण्ड शान्ति की अनुभूति होती है और पूर्ण निद्रा आने लगती है ।

हर प्रकार की विपत्ति के निवारणार्थ यह प्रयोग राम बाण है अतः प्रत्येक जातक इस प्रयोग को सोमवती अमावस्या के दिन जरूर करें । इस प्रयोग को करने से रोगी रोग मुक्त हो जाता है विद्यार्थी पूर्ण विद्या प्राप्त करता है विवाह की सभी रुकावटें दूर होती हैं और इच्छित जीवन साथी प्राप्त हो जाता है, कारोबार में वृद्धि होती है, उजड़ा हुआ घर पुनः बस जाता है और पूर्व से भी मधुर दाम्पत्य सुख की अनुभूति होती है ।

इस प्रयोग को करने से ह ' प्रकार का लाभ होता है, हानि का कोई प्रश्न नहीं । इस प्रयोग को कोई भी कर सकता है और यह प्रयोग शत प्रतिशत फलीभूत है । आवश्यकता केवल श्रद्धा और विश्वास की है । विस्तृत जानकारी हेतु केन्द्र से सम्पर्क करें और पूर्ण विधि से परिचित हो पूर्ण फल को एक ही दिन में प्राप्त करें ।

नोट :- उपरोक्त में हमने सोमवती अमावस्या की महिमा गाई, परन्तु अच्छे समय में प्रत्येक अमावस्या को परिक्रमा प्राणी-मात्र को करनी चाहिए, ताकि बुरा समय आये ही नहीं, यदि ग्रह पीड़ा बहुत अधिक हो तो जातक चारों तरफ मुसीबतों से घिर गया हो, कोई रास्ता नहीं सूझ रहा हो, कन्याओं का विवाह नहीं हो रहा हो तो **108** दिन या उस से अधिक परिक्रमा करनी चाहिए, इससे सारी मुसीबतें समाप्त हो जायेंगी और जातक के सारे काम अपने आप बनने लगेंगे ।

'गायत्री परम मंत्र है' इसे जप कर मनुष्य भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त करता है

गायत्री आह्वान उपस्थान तथा शाप विमोचन के मंत्र

माँ गायत्री वेद जननी है इसीलिए न तो गायत्री के समान कोई मंत्र है और न व्याहृति के समान कोई हवन है । अग्निपुराण अध्याय 215 में तो लिखा है कि द्विज मात्र को गायत्री जप अनिवार्य है । यह सौ बार जप करने से पाप को नष्ट करती है । हजार बार जप करने से उपपातकों का शमन करती है । एक करोड़ गायत्री का जप करने से सभी इच्छायें पूर्ण होती हैं और वह जीव समस्त पापों से निवृत्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है ।

गायत्री मंत्र द्वारा हवन करने से भी कामनाओं की शीघ्र पूर्ति होती है । शान्ति के लिए जौ की आहुति दें, आयु प्राप्त करने वाले इच्छुक व्यक्ति घी से आहुति दें, कार्य में सिद्धि चाहने वाले व्यक्ति सफेद सरसों से आहुति दें, ब्रह्मवर्चस्व के इच्छुक व्यक्ति दूध से आहुति दें, पुत्र प्राप्त करने वाले इच्छुक दही से आहुति दें । ग्रह पीड़ा से शान्ति चाहने वाले व्यक्ति गूलर की समिधा से आहुति दें, लक्ष्मी के इच्छुक जातक विल्व पत्र से, आरोग्यता हेतु दूर्वा से आहुति दें । सौभाग्य कामी गुग्गुल से आहुति दें और विद्या प्राप्ति हेतु विद्यार्थी खीर से आहुति दें । प्रथम जप होना चाहिए । उसका दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्रह्मभोज करना चाहिए तभी इच्छित फल की प्राप्ति होती है । गायत्री मंत्र द्वारा दस हजार आहुति देने से पापों का क्षय होता है । एक लाख आहुति देने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है और एक करोड़ आहुति देने पर जातक जन्म जन्मांतरों के पापों से मुक्त होकर परम ज्योति में समाहित हो परम पद प्राप्त कर लेता है । अतः गायत्री महामंत्र से सभी कुछ प्राप्त किया जा सकता है ।

उपरोक्त के अनुसार प्राणी-मात्र को गायत्री महामंत्र का जाप अवश्य करना चाहिए। मन लगे या न लगे द्विजाति मात्र को प्रतिदिन 5 या 11 माला अवश्यमेव जाप करना चाहिए । यह मंत्र शापित है । इसको ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, शुक्र ऋषि ने शाप दिया है, अतः जप करने से पहले शाप विमोचन अवश्य करना चाहिए तभी मंत्र फलदायी होगा। मन को एकाग्र करने में पूर्ण प्रयास करना चाहिए । जातकों की जानकारी के लिए गायत्री, ध्यान, आवाहन, उपस्थान तथा शाप विमोचन के मंत्र जनकल्याणार्थ हेतु आगे दिये जा रहे हैं ।

गायत्री माता का ध्यान

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम् ।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा ॥
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम् ।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ॥
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् बालां, विद्यां, तु, गायत्रीं, लोहितां, चतुः, आननाम्।
रक्त, अम्बर, द्वयो, पेताम्, अक्ष, सूत्र कराम् तथा ॥
कमण्डलु धराम्, देवीम्, हंस वाहन संस्थिताम् ।
ब्रह्माणी, ब्रह्म दैवत्याम्, ब्रह्म लोक निवासिनीम् ॥
मन्त्रेण, आहवयेत्, देवीम् आयान्तीम् सूर्य मण्डलात् ।

'भगवती गायत्री का मुख्य मन्त्र के द्वारा सूर्यमण्डल से आते हुए इस प्रकार ध्यान करना चाहिए कि उनकी किशोरावस्था है और वे ज्ञानस्वरूपिणी हैं ·। वे रक्तवर्णा एवं चतुर्मुखी हैं । उनके उत्तरीय तथा मुख्य परिधान दोनों ही रक्तवर्ण के हैं। उनके हाथ में रुद्राक्ष की माला है । हाथ में कमण्डल धारण किये वे हंस पर विराजमान हैं । वे सरस्वती-स्वरूपा हैं, ब्रह्मलोक में निवास करती हैं और ब्रह्माजी उनके पति देवता हैं ।

गायत्री का आवाहन :- इसके बाद गायत्री माता के आवाहन के लिये निम्नलिखित विनियोग करें ।

तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबृष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

पश्चात् निम्नलिखित मंत्र से गायत्री का आवाहन करें ।

'ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।' (यजु॰1-31)

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

'ओ३म् तेजोऽसि, शुक्रम्, अस्य, अमृतम्, असि, धामनामासि, प्रियं देवानाम्, अनाधृष्टम्, देवयजनमसि ।' (यजु॰1-31)

गायत्री देवी का उपस्थान (प्रणाम) :- आवाहन करने पर गायत्री देवी आ गयी हैं, ऐसा मानकर निम्नलिखित विनियोग पढ़कर आगे के मंत्र से उनको प्रणाम करें ।

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि । न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ।(बृहदा॰5 । 14 । 7)

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् गायत्रस्य, एकपदी, द्विपदी, त्रिपदी, चतुष्पदी, अपदसि । नहि, पद्यसे, नमस्ते, तुरीयाय, दर्शताय, पदाय, परो, रजसे, असावदो मा प्रापत् । (बृहदा॰5 । 14 । 7)

गायत्री-शापविमोचन

ब्रह्म, वसिष्ठ, विश्वामित्र और शुक्र के द्वारा गायत्री-मंत्र शापित है अतः शाप-निवृत्ति के लिए शाप विमोचन करना चाहिए ।

(1) ब्रह्म-शापविमोचन :- विनियोग - ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ब्रह्म-शाप विमोचन :- विनियोग - ओ३म् अस्य श्री ब्रह्म शाप विमोचन मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्ति मुक्ति प्रदा ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्री शक्तिः देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशाप विमोचने विनियोगः ।

मंत्र :-

ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः ।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् गायत्री, ब्रह्म, इति, उपासीत, यद्, रूपम्, ब्रह्मविदः, विदुः ।
ताम् पश्यन्ति, धीराः सुमनसः, वाचम्, अग्रतः ॥

ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् । ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् वेदान्त नाथाय-विद्महे हिरण्य गर्भाय धीमहि तन्नः ब्रह्म प्रचोदयात् । ओ३म् देवि! गायत्रि ! त्वं ब्रह्मशापाद् विमुक्ता भव ।

(2) वसिष्ठ-शापविमोचन :- विनियोग - ॐ अस्य श्रीवसिष्ठ शापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

वसिष्ठ-शाप :- विमोचन - विनियोग :- ओ३म् अस्य श्री वसिष्ठ शाप विमोचन मन्त्रस्य निग्रह-अनुग्रह कर्ता, वसिष्ठ ऋषि वसिष्ठ-अनुगृहीता गायत्री, शक्तिः देवता, विश्व-उद्भवा गायत्री छन्दः, वसिष्ठ शाप विमोचनार्थं जपे विनियोगः ।

मन्त्र :-

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः ।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म्, सो-अहम् अर्कमयम्, ज्योतिः, आत्मज्योतिः, अहम्, शिवः ।
आत्म ज्योतिः, अहं, शुक्रः, सर्व ज्योती रसः-अस्मि-अहम् ॥

योनिमुद्रा दिखाकर तीन वार गायत्री जपें ।

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् देवि ! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठ शापाद् विमुक्ता भव ।

(3) विश्वामित्र-शापविमोचन :- *विनियोग---* ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्रऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

विश्वामित्र-शाप विमोचन - विनियोग :- ओ३म् अस्य श्री विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टि कर्ता, विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्र-अनुगृहीता गायत्री, शक्तिः देवता, वाक्-देहा गायत्री छन्दः, विश्वामित्र शाप विमोचनार्थम् जपे विनियोगः ।

मन्त्र :- ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः ।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये ॥
ॐ देवी ! गायत्रि ! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् गायत्रीं, भजामि, अग्निमुखीम्, विश्वगर्भाम्, यत्, उद्भवाः ।
देवाः, चक्रिरे, विश्व सृष्टिम्, ताम्, कल्याणीम्, इष्टकरीम् प्रपद्ये ॥
ओ३म् देवि ! गायत्रि ! त्वं, विश्वामित्र शापाद्, विमुक्ता भव ।

(4) शुक्र-शापविमोचन :- *विनियोग---* ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषिः अनुष्टुपछन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

शुक्र-शाप विमोचन - विनियोग :- ओ३म् अस्य श्री शुक्र शाप विमोचन मन्त्रस्य श्री शुक्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, देवी गायत्री देवता, शुक्र शाप विमोचनार्थम् जपे विनियोगः ।

मन्त्र :-

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः ।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ।।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् सो-अहम्, अर्कमयम् ज्योतिः, अर्क ज्योतिः, अहम् शिवः ।
आत्म ज्योतिः, अहम्, शुक्रः, सर्व ज्योति रसः - अस्मि-अहम् ।।

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव ।

या

ओ३म् देवि ! गायत्रि ! त्वं शुक्र शापाद् विमुक्ता भव ।

प्रार्थना :-

ॐ अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति ।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते ।।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वती ।
अजरे, अमरे, च-एव, ब्रह्मयोनिः नमो-अस्तु, ते ।।

ॐ देवि गायत्री त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव, शुक्रशापाद्विमुक्ता भव ।

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

ओ३म् देवि ! गायत्री ! त्वं ब्रह्म शाप विमुक्ता भव । वसिष्ठ शापाद् विमुक्ता भव । विश्वा मित्र शापाद् विमुक्ता भव ! शुक्र शापाद् विमुक्ता भव।

विशेष :- ग्रहों के मंत्र शापित नहीं हैं इसीलिए यह बिना मन लगाये, मात्र जपने से ही फल की प्राप्ति करा देते हैं । बुद्धिजीवी प्राणी सूर्य से ऊर्जा शक्ति अवश्य लें, चंद्रमा से मन को नियंत्रित करें । मंगल से शरीर पुष्ट करें, बुध से हृदय विकार समाप्त करें, गुरु से प्रज्ञा बुद्धि प्राप्त करें, शुक्र से काम शक्ति पर विजय प्राप्त करें । शनि की उपासना से तप करना सीखें, राहु से योग परिपक्व करें और केतु से मोक्ष प्राप्त करें ।

ग्रह शोध करने के बाद गायत्री जप करने में उसे हर प्रकार की शक्ति भी मिलेगी तथा इच्छित फल प्राप्त होगा एवं दिव्य धाम की प्राप्ति होगी अर्थात इहलोक एवं परलोक सार्थक होगा ।

नोट :- ग्रह मंत्र नित्य जपने से पहले या जो मानव जिस किसी देव का जप करता हो, उसे प्रथम गायत्री की 5 माला जप अवश्य करना चाहिए वरना संकल्प की प्राप्ति संदिग्ध हो जाती है ।

सात वारों की उत्पत्ति देवता आदि की पूजा का फल

सप्ताह के सात वार होते हैं । प्रायः सारे विश्व में अपनी भाषा में इन सात वारों के वही नाम प्रचलित हैं । यदि यह पूछा जाए कि रविवार को रविवार क्यों कहा जाता है और उसके पश्चात् सोमवार-इस क्रम से ही क्यों दिन आते हैं । कैसे अनादिकाल से सब देशों में उसी दिन को रविवार कहा जाता है । क्यों कोई उसे सोमवार (चन्द्र का दिन) नहीं कहता । क्यों सब कहीं ये नाम और क्रम एक से हैं । सब ग्रह मेषराशि के आदि में थे, उस समय इस कल्प का आरम्भ हुआ । काल गणना सृष्टि के आदि से ही चली । उसी दिन सर्वप्रथम सूर्योदय हुआ ।

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का काल अहोरात्र कहा जाता है । इसका प्रथम भाग दिन और द्वितीय भाग रात्रि कहलाती है । काल की सूक्ष्म गणना के लिए दिन और रात्रि में से प्रत्येक के छः छः भाग माने गये है, जिन्हें लग्न कहते हैं । इस प्रकार 12 लग्नों का अहोरात्र हुआ । लग्न के आधे भाग को होरा कहा जाता है । 'अहोरात्र' शब्द के मध्य के दोनों अक्षरों से ही यह शब्द बना है । इसी को पाश्चात्य प्रणाली में घंटा कहते हैं । अपने तेजोमय रूप के कारण सृष्टि के प्रथम होरा का स्वामी सूर्य माना गया है । इसके पश्चात् अपनी कक्षा के अनुसार ग्रह होरा अधिपति माने गये । ग्रह कक्षा के सम्बन्ध में ज्योतिष शास्त्र का कहना है कि ब्रह्माण्ड के मध्य में आकाश है । उसमें सबसे ऊपर नक्षत्र-कक्षा हैं फिर क्रम से शनि बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चन्द्रमा है । इनके नीचे सिद्ध विद्याधर और मेघ हैं । ऊपर के ग्रहों की कक्षा नीचे के ग्रहों की अपेक्षा क्रमशः बड़ी है । अब प्रथम होरा के स्वामी सूर्य हुए, तब क्रमशः शुक्र, बुध चन्द्रमा, शनि, बृहस्पति, मंगल–ये 6 होराओं के स्वामी हुए । आठवीं होरा के स्वामी फिर क्रमानुसार सूर्य हुए । इस प्रकार क्रमशः ये ग्रह एक-एक होरा के स्वामी होते हैं और यहीं प्रथम अहोरात्र समाप्त हो ज.ा है । पंचसवनी होरा का स्वामी क्रम के अनुसार चन्द्रमा है । ़ह पच्चीसवीं होरा को अहोरात्र के दिन की प्रथम होरा है अतः प्रथम होरा के अधिष्ठाता चन्द्रमा होने से इस अहोरात्र का नाम चन्द्रमा का दिन सोमवार पड़ा । इसी क्रम से अहोरात्र के नाम पड़ते गये और फलतः सप्ताह के दिनों के नाम वर्तमान क्रम से हुए । यही क्रम सृष्टि के आरम्भ से अब तक चला आ रहा है । जिस दिन के प्रथम होरा का जो अधिष्ठाता ग्रह है, उस दिन का वही नाम है ।

शिवपुराण के अध्याय 15 के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में सर्वज्ञ, दयालु और सर्वसमर्थ महादेवजी ने समस्त लोकों के उपकार के लिए वारों की कल्पना की । वे भगवान शिव संसार रूपी रोग को दूर करने के लिए वैद्य हैं । सबके ज्ञाता तथा समस्त औषधों के भी औषध हैं । इसके अनुसार सात वारों की कल्पना की और सूर्य ग्रह को जो अपने ही

स्वरूप भूत तथा प्राणियों के सुख-दुःख के सूचक हैं । इन सात वारों का स्वामी निश्चित किया । इनका वर्णन इस प्रकार है ।

रविवार

सबसे पहले भगवान शिव ने अपने वार की कल्पना की, जो आरोग्य प्रदान करने वाला है । इस वार या दिन का स्वामी सूर्य है । इस दिन सूर्य की पूजा करने से आरोग्य फल की प्राप्ति होती है । दोनों नेत्रों तथा मस्तिष्क के रोग में और कुष्ट रोग की शान्ति के लिए सूर्य की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन करायें । यह साधन लगातार एक दिन, एक मास, एक वर्ष अथवा तीन वर्ष तक करना चाहिए । इससे प्रबल प्रारब्ध का निर्माण हो जाय तो रोग एवं जरा आदि रोगों का नाश हो जाता है । रविवार को सूर्य देव के लिए, अन्य देवताओं के लिए और ब्राह्मणों के लिए विशिष्ट वस्तु अर्पित करें । यह साधन विशिष्ट फल देने वाला होता है और इसके द्वारा विशेष रूप से पापों की शान्ति होती है ।

सोमवार

अपने वार के बाद भगवान शिव ने अपनी माया शक्ति का वार बनाया जो सम्पत्ति प्रदान करने वाला है । इसका स्वामी सोम है । सोमवार को विद्वान् पुरुष सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी आदि की पूजा करें तथा सात्विक ब्राह्मणों को घृतपक्वान्न अन्न का भोजन करायें ।

मंगलवार

इसके पश्चात् जन्मकाल में दुर्गतिग्रस्त बालक की रक्षा के लिए कुमार के वार की कल्पना की । इस वार का अधिपति मंगल ग्रह को बनाया । यह व्याधियों का निवारण करते हैं । मंगलवार को रोगों की शान्ति के लिए काली आदि की पूजा करें तथा उड़द, मूँग एवं अरहर की दाल आदि से युक्त अन्न ब्राह्मणों को भोजन करायें ।

बुधवार

इसके बाद आलस्य और पाप की निवृत्ति तथा समस्त लोकों का हित करने की इच्छा से लोकरक्षक भगवान विष्णु का वार बनाया । इसका अधिपति बुध ग्रह को बनाया । आलस्य तथा पाप की निवृत्ति के लिए बुधवार को विद्वान् पुरुष दधियुक्त अन्न से भगवान विष्णु का पूजन करें । ऐसा करने से पुत्र, मित्र और कलत्र आदि की पुष्टि होती है । इससे बुध पुष्टि प्रदान करते हैं ।

बृहस्पतिवार

इसके बाद भगवान् शिव ने पुष्टि और रक्षा के लिए आयुकर्ता, सृष्टिकर्ता परमेष्ठी ब्रह्मा का आयुष्कारक वार बनाया, जिससे सारे जगत् को आयुष्य की प्राप्ति हो सके । इस वार का अधिपति बृहस्पति ग्रह को बनाया । दीर्घायु की इच्छा रखने वाले गुरुवार को देवताओं की पुष्टि के लिए वस्त्र यज्ञोपवीत तथा घृतमिश्रित खीर से भजन-पूजन करें । इससे आयु की वृद्धि होती है ।

शुक्रवार

इसके बाद तीनों लोकों की वृद्धि के लिए पहले पाप-पुण्य की रचना हो जाने पर उनके करने वाले लोगों को शुभाशुभ फल देने के लिए भगवान शिव ने इन्द्र के वार का निर्माण किया जो भोगों को देने वाला है । इन्द्र के वार का स्वामी शुक्र ग्रह को बनाया । भोगों की प्राप्ति के लिए शुक्रवार को एकाग्रचित होकर देवताओं का पूजन करें और ब्राह्मणों की तृप्ति के लिए षट्रस युक्त अन्न दें । इसी प्रकार स्त्रियों की प्रसन्नता के लिए सुन्दर वस्त्र के दान का विधान है ।

शनिवार

सब के अन्त में भगवान शिव ने शुभाशुभ का फल देने के लिए यम के वार की कल्पना की और इसका स्वामी शनि ग्रह को बनाया । शनैश्चर मृत्यु का निवारण करते हैं । अपमृत्यु निवारण के लिए विद्वान् पुरुष रूद्र आदि की पूजा करें । तिल के होम, दान से देवताओं को सन्तुष्ट करके ब्राह्मणों को तिलमिश्रित अन्न भोजन करायें ।

इन वारों में देवताओं की प्रसन्नता के लिए पांच प्रकार की पूजा का विधान किया गया है । उन-उन देवताओं के मन्त्रों का जप पहला प्रकार है । उनके लिए होम करना दूसरा दान करना, तीसरा तप करना, चौथा प्रयास करना है । किसी वेदी पर, प्रतिमा में, अग्नि में अथवा ब्राह्मण के शरीर में आराध्य देवता की भावना करके षोड्शोपचारों से उनकी पूजा या आराधना करना पाँचवा प्रकार है । शुभ (मांगलिक कर्म) के आरम्भ में और अशुभ (अन्तयेष्टि आदि कर्म) के अन्त में तथा जन्म नक्षत्रों के आने पर गृहस्थ पुरुष अपने घर में आरोग्य आदि की समृद्धि के लिए सूर्य आदि ग्रहों का पूजन करें । शुभ फल की इच्छा रखने वाले मनुष्यों को सातों ही दिन अपनी शक्ति अनुसार सदा वेदपूजन करना चाहिए । निर्धन मनुष्य को तपस्या (व्रत आदि के कष्ट सहन) द्वारा और धनी धन के द्वारा देवताओं की आराधना करें । समयानुसार पुण्यकर्मों के फलस्वरूप से अन्तःकरण शुद्ध होने पर ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है ।

ग्रह बीज मंत्रों के अधिक जप के लिए आग्रह क्यों

अब तक के विवरण और विचार मन्थन में पाठकों से बार-बार आग्रह किया गया है कि वह नवग्रह बीज मंत्रों का पाप-ताप निवारण के लिए अधिक से अधिक जप करें जो कम से कम एक पुश्चरण अर्थात 24 लाख से एक करोड़ तक होना चाहिए । केन्द्र ने अनेकानेक जातकों के द्वारा ग्रह मन्त्रों के करोड़-करोड़ का जप कर करवा कर अनुभव प्राप्त किया है कि जापक का पाप अधिक होने से ग्रह का प्रभाव अधिक होता है और ग्रह मन्त्र का जाप उसके अनुपात में कम होता है जिसके कारण राहत प्राप्त नहीं हो पाती है ।

ग्रह के बीज मन्त्रों का जाप पहले जातक के आचरण को शुद्ध करता है, फिर उसमें श्रद्धा, विश्वास की भावना लाकर उसे फल प्राप्ति का पात्र बनाता है । जब तक जातक फल प्राप्ति का पात्र नहीं बन जाता राहत प्राप्त नहीं हो सकती है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि बीज मन्त्र का जाप व्यर्थ चला गया । बीज चाहे जैसे भी बोया गया हो अवश्य उपजता है अर्थात राहत प्रदान करता है । वह जीवन में आए संकट को सौम्य करने के रूप में हो अथवा जातक के आचरण को शुद्ध करने में हो अवश्य प्राप्त होती है । कुछ ऐसा भी होता है कि जातक में श्रद्धा कम होती है या कुसंग के कारण फल प्राप्ती के प्रति सशंय बना रहता है जिससे राहत प्राप्ति मनोकूल नहीं होती है । जिस प्रकार किसान खेत में बीज बोता है तो उससे पहले भूमि को सुधारता है, खाद डालता है, पानी देता है और बीज डालने के बाद खेती की रखवाली करता है । अंत में अगर पस्थितियाँ हर प्रकार से अनुकूल रहे तो समय पर अच्छी फसल प्राप्त करता है । इसमें भी अगर यह सब न भी हो तो बीज अवश्य अंकुरित होते हैं । इसी प्रकार बीज मन्त्रों के जाप से राहत अवश्य अंकुरित होती है जिसे अन्य नियमों के सावधानी पूर्वक पालन से पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है । इस में संशय की कोई जगह नहीं है ।

इस कथन का केवल यही आशय है कि सभी प्रकार के संशयों को छोड़ कर जीवन में ग्रहों द्वारा उपस्थित बाधा से राहत पाने के लिए बीज मन्त्रों का अधिक से अधिक जाप कर करवा लेना चाहिए जिससे जीवन सुचारू रूप से चल सके । जापक को जप करते हुए प्रबलत्तर मनोभावना बनाये रखनी चाहिए कि जैसे तन में औषधि काम करती है ऐसे ही मेरे मानस रोगों-पापों को, मेरी चिन्ताओं को, मेरी चंचलताओं को, मेरे मलिन विचारों, को दूर करने का काम मन्त्र स्वयं कर रहा है और मुझे एकाग्रता धारण करके उसे काम करने का अवसर देना चाहिए । जिस प्रकार चन्द्रमा की शीतल किरणें वनो, उपवनों, तृण, लता, वृक्ष, पुष्प आदि में अवतरित होकर उन्हें प्राण प्रदान करती हैं और सूर्य की किरणें जड़ जगम जगत को ज्योति जीवन, बल और शक्ति सहज में दान दिया करती हैं उसी प्रकार मन्त्र उपास्क में मन्त्र के देवता की कृपा स्वयं अवतरित होती है और उसे राहत प्रदान

करती है । एक साधारण व्यक्ति के लिए बीज मन्त्र का जप, चिन्तन आराधन एक शब्द को बार-बार रटना मात्र है परन्तु एक श्रद्धालु जापक की समझ में पाप-ताप के विनाश का एक अतुलनीय उपाय है । ये बीज मन्त्र हमारे पुर्वजों द्वारा कठिन तपस्या द्वारा प्राप्त किये गये हैं। इनका जाप करते हुए जो ध्वनि निकलती है उसका मन तथा वातावरण पर प्रभाव पड़ता है और जिस ग्रह से सम्बन्धित होते हैं उसके अनुसार राहत देते हैं ।

जिस प्रकार किसान बीज बोता है और उससे कई गुना फसल प्राप्त करता है और वह फसल उसकी उस समय की जरूरत पूरी कर देती है और आगे आने वाले समय के लिए उसे फिर बीज बोने पड़ते हैं और फसल प्राप्त होती है । इसी प्रकार जीवन में आई बाधा से राहत पाने के लिए ग्रहों के मन्त्रों का जाप कर करवा लेना चाहिए जिससे उस समय की उपस्थित बाधा से छुटकारा पाया जा सके । प्राप्त फसल को खाने में प्रयोग करने के बाद भूख समाप्त हो जाती है, अन्न की ऊर्जा शक्ति शरीर का स्वतः पोषण करती है ऐसे ही बीज मंत्र के जाप से प्राप्त शक्ति जापक या जिसके प्रति जाप किया गया है को शक्ति प्रदान कर उस समय उपस्थित हर प्रकार की बाधाओं को हटा देती है और कार्य बन जाता है । आगे भूख मिटाने के लिए जैसे ओर अन्न की आवश्यकता पड़ती है और उसे अधिक मात्रा में उपजाना पड़ता है इसी प्रकार से बीज मन्त्र का जप भी अधिक से अधिक और बार-बार करना पड़ता है जिससे आने वाली बाधाओं से राहत पाने की शक्ति पहले ही प्राप्त की जा सके ।

यदि यह छुटकारा लम्बे समय के लिए चाहिए तो अनुपात में जाप भी ओर अधिक अर्थात करोड़ों में होना चाहिए जिससे राहत बहुत समय तक बनी रहे । इसी कारण केन्द्र द्वारा बार-बार आग्रह किया जाता है कि मानव को प्रत्येक ग्रह के एक करोड़ या उससे अधिक जप जीवन में कर या करवा लेने चाहिए जिससे जीवन सरस और सुन्दर बना रहे और जीवन यापन सफलतापूर्वक हो जाए ।

किस अँगुली से जप करने से क्या प्रभाव तथा फल?

आज मानव पाश्चात्य संस्कृति से बुरी तरह झुलस गया है और वह पतंगे की तरह अपना सर्वस्व नाश करने में तुला हुआ है एवं भयंकर यातनाओं से प्रताड़ित हो रहा है । यदि मानव वैदिक संस्कृति का आश्रय ले तो वह संस्कृतज्ञ हो जायेगा और उत्तम जीवन जीने का मार्ग प्राप्त कर लेगा । भगवान् श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं शबरी से कहा कि मंत्र जाप मम् दृढ़ विश्वासा ।

मानस में गोस्वामी जी ने मंत्र की महत्वता सामर्थ्यता दर्शाते हुए कहाः-

मंत्र महामणि विषय व्याल के । मेंटत कठिन कुअंक भाल के ।।

अर्थात् यदि जातक मंत्र रूपी नैया का आश्रय लेता है तो उसे इहलोक एवं परलोक में भी सुख शान्ति प्राप्त होती है, मंत्रों की शक्ति अद्भुत है । मंत्र सर्व शक्ति संपन्न है । मंत्र पारस मणि है । मंत्र इस संसार से मुक्त कर परलोक में भी सहायता करते हैं मंत्र द्वारा प्राणी जो चाहे प्राप्त कर सकता है तथा वह विधि का लेख भी मंत्र जाप से बदल सकता है । लेकिन विश्वास और कर्मठता अटूट होनी चाहिए ।

मंत्रों में अनंत शक्ति होती है, इसलिए मंत्रों की शक्ति को हम नकार नहीं सकते । ॐ मंत्र अनंत शक्ति पूर्ण महामंत्र है । यथार्थ भाव से ज्ञान ज्योति जगाकर समता भाव से एकाग्र होकर इसका जाप करने से जीव चिंता मुक्त हो जाता है और चिन्ता मुक्त होने से ही मानव का कल्याण संभव है ।

मल्लाह नाव ले गया, यह तो सही है, लेकिन मल्लाह को नाव ले गयी यह ठीक नहीं है । इसी प्रकार मंत्रों में असीम शक्ति होते हुए भी हम उसे नहीं जानते । मंत्रों का जप करने से परिणामों स्वरुप समता और शान्ति प्राप्त होती है और इसी से इनका सृजन हुआ है । **'ज' से जन्म नाश और 'प' से पाप नाश** । अतः शब्दों की शक्ति को समझने के लिए शब्द ज्योति, दिव्य ज्योति, और ज्ञान ज्योति की आवश्यकता होती है लेकिन ज्ञान ज्योति सर्वोपरि है ।

सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों में अपने इष्ट मंत्र या गुरु प्रदत्त मंत्र जपने की परंपरा अनादि काल से है तथा अपने इष्ट मंत्रानुसार माला का भी उल्लेख मिलता है इसी प्रकार भिन्न-भिन्न अंगुलियों से माला जपने का प्रभाव भी पृथक-पृथक है ।

जातक अपनी गलती स्वीकार न कर मंत्रों को कोसता है जबकि मंत्रों में अपार शक्ति समाहित है । गलती केवल कर्त्ता की होती है । हमारी अंगुलियाँ भिन्न-भिन्न स्विच के समान हैं जिसके ऊपरी पोरों को दबाने से शरीर के भिन्न-भिन्न चक्र प्रभावित होते हैं । अंगुलियों के नाम अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका हैं जिनका प्रभाव इस प्रकार है ।

अनुष्ठान में जितनी सावधानी बरतेगा जप उतना ही जातक को मोक्ष, सुख, शान्ति, तथा सभी मनोकामना पूर्ण करने में शीघ्र सहायक होगा । जप द्वारा सभी कुछ संभव है लेकिन पात्रता होनी चाहिए तभी फल संभव है ।

प्रत्येक जातक को साधना में अडिग रहना चाहिए क्योंकि साधना की सिद्धि के लिए समय की कोई सीमा नहीं बाँधी जा सकती । वस्तुतः इसका आधार अन्तःकरण के दोषों की निवृत्ति के ऊपर है । पाप अधिक होते हैं तो सफलता देर से प्राप्त होती है और पाप कम होते हैं तो सफलता जल्दी प्राप्त हो जाती है । शास्त्रों में प्रमाण है कि भक्त ध्रुव को छः माह में ही भगवत्-प्राप्ति हुई । राजा खटवांग ने क्षणभर में संकल्प प्राप्त किया लेकिन विद्यारण्य मुनि को गायत्री के 23 पुरश्चरण करने पर भी कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हुई। दुःखी होकर उन्होंने सन्यास ले लिया और सन्यास लेते ही ऋषी के समक्ष गायत्री प्रकट हो गयी और कहा वत्स वर मांगो । विद्यारण्य मुनि बोले माता जी अब तो मैं सन्यासी हूँ मेरी कोई कामना नहीं है परन्तु आपने पहले दर्शन क्यों नहीं दिया? यह मेरी समझ में नहीं आता । तब माँ गायत्री ने कहा-बेटा तुम्हारे 24 महापाप थे, 23 पुरश्चरण से 23 पाप धुल गये यदि एक और पुरश्चरण किया होता तो तुम्हें मेरा दर्शन होता लेकिन तुमने सन्यास ले लिया सन्यास लेने से तुम्हारे 24 पाप दग्ध हो गए और मैं तुम्हारे सम्मुख समक्ष प्रकट हो गयी हूँ ।

विद्यारण्य मुनि ने धैर्य गवाँकर साधना छोड़ दी थी, उसी प्रकार आजकल बहुत से लोग एक निश्चित समय तक कोई फल प्राप्त न होते देखकर साधना छोड़ देते हैं । प्रथम आवश्यकता तो अविचल श्रद्धा की है । ऐसी श्रद्धा हो तो धैर्य टिके और तभी उत्साह से साधना हो सके । साधना छूटती है अपने दोष के कारण और जापक (कर्त्ता) समझता है कि फल नहीं मिलता अथवा साधना में कुछ तत्व नहीं ऐसी अधकचरी साधना करने वाले ही शास्त्र की निन्दा करते हैं । अडिग साधक अपना संकल्प अवश्य प्राप्त करता है इसमें किसी प्रकार का कोई संशय नहीं बशर्ते निरन्तर जपरत रहे सफलता अवश्य मिलेगी ।

नवग्रहों के जप हेतु पृथक-पृथक मालाओं से जप करने का विधान है यथा सूर्य के जप हेतु माणिक की माला, चन्द्रमा के जप हेतु मोती की माला, बुध के जप हेतु पन्ना की माला, गुरु के जप हेतु पुखराज की माला, शुक्र के जप हेतु हीरे की माला, शनि के लिए नीलम की माला, राहु के लिए गोमेद की माला तथा केतु के लिए लहसुनिया की माला अनुकरणीय है ।

उपरोक्त मालाओं से जप करना सभी के लिए नामुमकिन है अतः केन्द्र ने जनसुविधा हेतु विधि खोज निकाली है जिसका परिणाम शत् प्रतिशत् प्राप्त हुआ है ।

जैसे:- सूर्य का जप लाल चन्दन या माणिक्य की माला से करें ।
चन्द्रमा का जप सफेद चन्दन या मोती की माला से करें ।
मंगल का जप रुद्राक्ष या मूंगे की माला से करें ।

बुध का मंत्र जाप तुलसी या पन्ने की माला से करें ।

गुरु का जप हल्दी या तुलसी की माला से करें ।

शुक्र का जप स्फटिक या तुलसी की माला से करें ।

शनि का जप नीली या कमलगट्टा, लाल चन्दन या तुलसी की माला से करें ।

राहु का जप सफेद चन्दन से । केतु का जप सफेद चन्दन या तुलसी की माला से करें ।

फल में कोई न्यूनता नहीं होगी । तुलसी की माला से सभी का जप किया जा सकता है और संकल्प की प्राप्ति की जा सकती है । तुलसी की माला से मुख्यतः विष्णु का जप श्रेयस्कर है चन्द्रमा का जप मोती की माला, स्फटिक या सफेद चन्दन से करें लेकिन तुलसी की माला से सभी का जप किया जा सकता है विधान सभी के पृथक-पृथक हैं । मालाऐं भी निर्धारित हैं लेकिन तुलसी अनुगमनीय है ।

जपकर्ता न्यास, ध्यान तथा माला की पूजा करके ही जप प्रारंभ करें ।

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः इस मंत्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें ।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरू माले त्वं गृहणामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा । इस प्रकार माला की पूजा कर जप प्रारंभ करें ।

जप सम्पन्न होने के बाद इस श्लोक को पढ़ कर जप निवेदन करें ।

देवि

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणामस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

गुह्य-अति गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणाम्, अस्मत्, कृतम्. जपम् ।
सिद्धिः, भवतु, मे, देवि ! त्वत्, प्रासादात्, महेश्वरि ॥

देवता

गुह्याति गुह्यगोप्त्रा त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ।
सिद्धि भर्वतु में देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

गुह्य-अति, गुह्य गोप्त्रा, त्वम् गृहाणाम्, अस्मत् कृतं, जपम् ।
सिद्धिः, भवतु, मे, देव, त्वत्, प्रासादात्, महेश्वर ॥

अमन व्यापार, व्यापार भारती

31 जुलाई 1999

तपोबल की अनूठी श्रेष्ठता

कुछ दिन पूर्व हमारे विशेष संवाददाता ने श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान, संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र, सैक्टर 11, फरीदाबाद के संस्थापक पं. श्याम सुन्दर लाल वत्स जी से मिलने गये । संवाददाता ने वहां के आश्रम के शान्त वातावरण में लगभग 100 ब्राह्मणों के सहित यज्ञ कुण्ड में पं. जी को मंत्र जप करते देखा । हमारे संवाददाता ने देखा कि केन्द्र में ब्राह्मण मस्तक पर अगर, तगर, चन्दन, केसर, कपूर, आदि से मिला हुआ लेप लगा कर प्रातः 6 बजे से मन्त्र जप आरम्भ कर देते हैं । मस्तक पर लेप लगाने से मन स्वतः ही निर्मल रहता है और ऐसा होने से जिसके प्रति जाप ब्राह्मणों द्वारा किया जा रहा होता है उसको तुरन्त ही फल मिल जाता है । केन्द्र द्वारा मंत्र जाप के लिए निर्धारित पांचों नियमों का ब्राह्मणों द्वारा बराबर पालन होता है । मन्त्र जाप के समय कोई ब्राह्मण आपस में कोई वार्तालाप तक नहीं करता, मंत्र जाप के समय उनके होंठ बराबर समान रूप से हिलते हुए दिखाई देते हैं जिससे स्पष्ट आभास होता है कि मंत्र जाप हो रहा है । इस मंत्र जाप के निरीक्षण के लिए आचार्य लोग ब्राह्मणों की मंत्र जाप विधि का बराबर निरीक्षण करते रहते हैं कि ब्राह्मणों द्वारा कोई असावधानी न हो जाए और मंत्र जाप में त्रुटि न आ जाये जिससे मंत्र जाप के फल की प्राप्ति जप करवाने वाले को शीघ्र प्राप्त हो जाये । ऐसा अद्‌भुत दृश्य हमारे संवाददाता ने देखा और अनुभव किया कि ऐसी मंत्र जाप विधि हर-एक इच्छुक प्राणी को अपनानी चाहिए और यदि इच्छा हो तो केन्द्र में जाकर ब्राह्मणों को जाप करते हुए देखकर इसका अनुभव प्राप्त करना चाहिए । इसके लिए केन्द्र में कोई रोक-टोक नहीं है । 28-6-99 से पांच करोड़ मंत्रों का जाप निरन्तर प्रवाह रूप से हो रहा है जो 28-7-99 गुरूपूर्णिमा को सम्पन्न होगा ।

वत्स जी से वार्तालाप करने पर यह विदित हुआ कि वह स्वयं नवग्रहों आदि के सूक्ष्म तत्वों का अनुभव प्राप्त करने हेतु मंत्र, जप तप कर रहे हैं । इस प्राप्त अनुभव को जनता-जनार्दन के कल्याण के लिए उनको अनुभव कराया जायगा जिससे वह कालान्तर में उनके द्वारा बताये हुए प्रयोगों का लाभ सत्यता से ले सकें । शनि की पुस्तक 'शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि-शनि शत्रु नहीं मित्र' को लिखने से पहले शनि के 2 करोड़ मंत्रों का जाप किया फिर इस पुस्तक को लिखा, जो बहुत लोकप्रिय हुई है । इसको बहुत सराहा गया और इसमें बताये हुए प्रयोगों से जनता-जनार्दन का अत्यधिक लाभ हुआ । पंडित जी ने पुनः बताया कि वह जो अनुसंधान करते हैं उसको वह दैनिक पत्र पत्रिकाओं आदि में जनता-जनार्दन के कल्याण हेतु प्रकाशित करते रहते हैं । इसमें 'पंजाब केसरी' 'जनसता' 'टाईम्स ऑफ इण्डिया' तथा 'हिन्दुस्तान' (कादम्बिनी) आदि ने सराहनीय सहयोग देकर इन अनुभवों को प्रकाशित किया है ।

संवाददाता ने पंडित जी से विशेष प्रश्न किया कि आपने अभी इस साल में करोड़ मंत्र जाप किए हैं और इससे पहले जीवन में करोड़ों मंत्र जाप तो कर ही चुके हैं, अब पुनः पांच करोड़

मंत्र जप क्यों कर रहे हो । पंडित जी ने उतर दिया कि तप के प्रभाव से मैंने नवग्रहों पर नौ पुस्तकें प्रकाशित करनी हैं और जब तक मेरे अन्दर तप बल नहीं होगा तो मैं सूक्ष्म विवेचन नहीं कर सकूंगा और बिना सूक्ष्म विवेचन प्राप्त किये जनता-जनार्दन की भलाई के लिए प्रयोगों को प्राप्त नहीं किया जा सकेगा । इसलिए मैंने अपने आपको कठोर तप में लगा रखा है । हमारे ऋषियों ने स्वयं तप किया और बताया कि आज तक जो भी आगे बढ़ा है वह तपोबल से ही बढ़ा है । तपोबल ही सर्वोपरि बल है । तपोबल से हम वह कर सकते हैं जो नहीं हो सकता । तप के द्वारा जो भाग्य में लिखा है उन सबको मिटा सकते हैं । तप बल से असम्भव भी सम्भव हो जाता है । तपोबल से ही शनि, मंगल, राहु की भयंकर पीड़ाऐं, रोग-दोष सब अनुकूल हो जाते हैं । पंडित जी ने अपना अनुभव बताते हुए विस्तार से वर्णन किया कि प्राणी-मात्र को नौ ग्रहों के नौ करोड़ मंत्र कर या करवा लेने चाहिये ताकि जीवन में उतार-चढ़ाव बन्द हो जायें क्योंकि हर प्राणी ग्रहों के द्वारा नियंत्रित है तथा उन्हें कोई चुनौती देने का साहस नहीं कर सकता ।

प्रमाण :- एक आदमी एक समय में करोड़ों रूपये कमाता है । चार-पांच फैक्ट्रियाँ बना लेता है चारों तरफ सुख समृद्धि ऐश्वर्य का झंड़ा फहराने लगता है परन्तु ग्रह चाल बदलते ही वह अपने हाथ से उन सबको खो बैठता है । वही दिमाग और वही स्थान होता है परन्तु वह ग्रह की दशा बदलने पर एक भी पैसा नहीं कमा सकता । याट रखना चाहिए जब शनि, राहु, मंगल की 6, 8, 12 भावों की दशायें चलेंगी, साढ़ेसाती चलेगी तो निश्चित ही नुकसान होंगे । जीव उससे अपने को नहीं बचा पायेगा । ऐसे योगों में मैंने हजारों आदमियों को रोते-पिटते देखा है । मेरा विगत 20 वर्षों से अनुभव है कि मंत्र जाप से हर ग्रह की पीड़ा शांत की जा सकती है । आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की है ।

अन्त में पंडित जी ने कहा कि मैं अब इस समय **'नवग्रह पीड़ा निवारण विधि'** पुस्तक प्रकाशित कर रहा हूँ जो प्रेस में है जिसका वितरण भारत की समस्त लाईब्रेरियों, ज्योतिर्विदों आदि में किया जायगा । केवल डाक व्यय देने पर पुस्तक प्राप्त की जा सकेगी, ऐसी केन्द्र की योजना है ।

संवाददाता ने बताया कि पंडित श्याम सुन्दर लाल वत्स भारत के एक दैवज्ञ मूर्धन्य विद्वान हैं जो स्वयं तप करते हैं । तप करने के बाद जो अनुभव प्राप्त होता है उसे जनता-जनार्दन तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं । भारत में यह अपने आप में ऐसा केन्द्र है जो ग्रहों का जाप शास्त्रोक्त रीति से विधिवत पूरा करता है । निरन्तर 100-100 ब्राह्मण यजमानों के लिये जप, तप, यज्ञ करते रहते हैं । केन्द्र में सबसे अधिक जप शनि ग्रह के प्रति होता है क्योंकि शनि से सबको अधिक डर लगता है । परन्तु इन्होंने शनि पर ही सबसे ज्यादा अनुसंधान किया है और भारत की यह पहली पुस्तक है जो शनि ग्रह पर 'शनि शत्रु नहीं मित्र' इन्होंने प्रकाशित की है ।

पं. जी का कहना है कि जो भी ज्योर्तिविद है, जो ज्योतिष के क्षेत्र से जीविका चलाते है, वह स्वयं इन ग्रहों के मंत्रों का स्वयं जप करें ताकि जिससे वह जो फलादेश दें वह सत्य हों और उनकी विद्या से जनता-जनार्दन का कल्याण हो । जनता को सन्मार्ग दे सकें पाखंड समाप्त हो। यह बिना तप के सम्भव नहीं हो सकता है । जो इस मन्त्र जप विधि का ज्ञान प्राप्त करना चाहे तथा इससे लाभ प्राप्त करना चाहे वह स्वयं केन्द्र में निःसंकोच आ सकते है और लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।

महर्षि भृगु जी द्वारा तप की अनूठी महत्ता का वर्णन

तप से असंभव को संभव किया जा सकता है । ज्ञान, धन, कीर्ति, नेत्रवल, मनोबल, स्वर्ग मुक्ति सुख-शांति यह सब कुछ तप की अग्नि में तपाने से प्राप्त होता है।

सिद्धि शक्तियाँ तप के द्वार पर सिर झुकाये रहती हैं अर्थात् तप की छत्रछाया में निवास करती हैं । तप शक्ति का जनक (अर्थात पिता) है जहां तप है वहीं पर शक्ति, मुक्ति, सुख-शांति, आनंद, धन, ज्ञान, ख्याति और संसार का समस्त वैभव सब कुछ है ।

तप कर कुछ कष्ट सहना परिश्रम पुरुषार्थ है और प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की कुंजी है । जीवन में शिथिलता आना असफलता है । सफलता हेतु गतिशीलता आवश्यक है अत: जीवन में तप करते रहना चाहिये ।

देखो शुक्र जब तक अग्नि जलती है उसकी उष्मा अर्थात गर्मी बनी रहती है । प्राणी को भी जीवन के अन्त तक अपनी शक्तियों को स्थिर रखना चाहिए । तेज मन्द नहीं होने पाए । शारीरिक कृण्णता समाप्त हो और आत्मिक आभास हों इसलिए मैंने दिव्य योग कहे हैं । अग्नि अर्थात प्रकाश गुण है । प्राणी के पास जो अज्ञान व अंधकार है उसे दूर करने के साधन भी उपलब्ध हैं । शक्ति से ही सुख-शांति वैभव मिलता है । उसी से प्रगति विकास संबंधित है । इसलिए अपनी शक्तियों का सदैव विकास करते रहना चाहिये । मेरे योग से अज्ञानता को दूर कर सकते हैं और बताया हुआ मन्त्र निरन्तर करते रहना चाहिए ताकि चारों ओर ज्ञान दीपक जलता रहे और यह भक्त अपने कल्याण के साथ-साथ अन्य प्राणियों का कल्याण कर सके । इसी के लिए मैंने महान दिव्य सिद्धियों की प्राप्ति हेतु योग बताये हैं ।

अत: मनुष्य जीवन में सुख-शांति और समृद्धि की वृद्धि तथा जीवन में आए क्लेश, दु:ख, भय, कलह, द्वेष आदि से त्राण पाने के लिए दान, मन्त्रों का जप, तप और उपासना करना बहुत ही आवश्यक है ।

उपरोक्त महर्षि भृगु जी की आज्ञा तथा बचनों को बार-बार पढ़ना चाहिये, पढ़ कर मनन करना चाहिए, मनन कर आचरण कर लेना चाहिए ताकि मानव देह प्राप्त करना सफल हो जाए ।

महर्षि भृगु जी ने 2-11-82 के प्रश्न फल में यह आज्ञा मुझे दी थी कि तुम नित्य गणपति का पूजन करोगे तथा हर मास कृष्ण पक्ष की चतुर्थी का सपरिवार व्रत करोगे और चन्द्र को अर्घ दे तथा पूजा कर भोजन करोगे । महर्षि भृगु जी ने स्पष्ट रूप से बताया कि ऐसा करने से तेरे उपासना के विघ्न समाप्त हो जायेंगे और तू इसी जन्म में ईश्वर की प्राप्ति करने में सक्षम होगा । महर्षि भृगु जी की आज्ञा अनुसार यानि 2-11-82 से मैं निरन्तर गणपति षोडषोपचारेण पूजन, नवग्रह पूजन तथा हर मास कृष्ण चतुर्थी का व्रत परिवार सहित पिछले

अठारह बर्षों से करता चला आ रहा हूँ । इन सब शुभ कर्मों से जो मुझे फल प्राप्त हुआ वह सराहनीय एवं अकथनीय है तथा वाणी का विपय नहीं है ।

उपरोक्त महर्पि भृगु जी की आज्ञा और बचनों को स्वीकार कर मैंने युवावस्था से ही अपने जीवन को तपोमय बना रखा है । बड़े-बड़े अनुष्ठान, यज्ञों को निरन्तर करता चला आ रहा हूँ । **पिछले सन्दर्भ 31-7-99 को जो मैंने पांच करोड़ मन्त्र जप किये उनका पूरा उल्लेख है । इसके वाद मैंने अथर्ववेद का अध्ययन किया तथा अथर्ववेद ने घोषणा की कि जो इस अथर्वशिर्ष का 1008 पाठ करेगा, 1008 लड्डू देशी घी के भगवान गणपति को गणेश चतुर्थी के दिन अर्पण करेगा वह सर्वत्र विजयी होगा सूर्य के समान वर्चस्वी होगा उसकी ख्याति-कीर्ति यत्र, तत्र सर्वत्र होगी और जीवन विघ्नों से मुक्त हो जायेगा ।**

महर्षि भृगु जी की उपरोक्त दोनों आज्ञाओं का पूर्ण चमत्कार पाने के लिए मैंने गुरुपुष्य नक्षत्र यानि दिनांक 21-1-2000 से भगवान गणपति का सवा करोड़ बीज मन्त्र तथा ग्यारह हजार आठ अथर्वशिर्ष का जप तथा भगवान शनि के सवा करोड़ बीज मन्त्र तथा सवा लाख स्तोत्र पाठ करने का अनुष्ठान आरम्भ किया । 24-1-2000 को संकष्टी चतुर्थी के दिन (भगवान गणपति प्रकट दिवस) जो कि बारह चतुर्थियों में सर्वोपरि फलदायक है इसी पर्व योग में मैंने भी भगवान गणपति को पुत्रों सहित 1008 लड्डू भगवान गणपति पर एक-एक करके बीज मन्त्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाए तथा विशाल यज्ञ किया । अर्थात् संकष्टीचतुर्थी का पूर्ण फल लेने हेतु उपरोक्त सारा कार्य पर्व काल में पूर्ण कर दिया । इसी चतुर्थी को भारतवर्ष की समस्त स्त्रियां अपने सुहाग की कामना हेतु भगवान गणपति का व्रत करतीं हैं और चन्द्रमा को अर्घ देकर व्रत का पारायण करतीं हैं ।

शनैश्चरी अमावस्या साल भर में एक-दो बार आती है । इस बार 5-2-2000 को शनैश्चरी अमावस्या थी उस दिन शनि के सवा करोड़ मन्त्र पूरे किये । शनि का यज्ञ किया और भगवान शनि का दूध, दही, शहद, घी तथा तेल से अभिषेक करवाया । सभी पाठी ब्राह्मणों सहित (120 ब्राह्मणों) शनि का गुलाद के फूलों से राजा दशरथ कृत सिद्ध शनि स्तोत्र से 108 बार अभिषेक किया । इस प्रकार हमने शनैश्चरी अमावस्या का पूर्ण फल भगवान शनि से प्राप्त किया । शनि से हमने एक ही भीख मांगी कि मेरा जीवन तपोमय रहे (कारण कि शनि ही तप का कारक ग्रह है और तप को परिपक्व करता है) और मेरे ज्ञान के नेत्र खुल जायें ताकि मैं अपने आराध्य देव भगवान श्री कृष्ण की प्राप्ति कर सकूं ।

बसंत पंचमी 10-2-2000 को हमने भगवान भृगु के एक करोड़ मन्त्र जप किया और इसी पर्व काल में चार करोड़ मन्त्रों की आहुति दे पूर्णाहुति पूर्ण कर दी । इन तीनों उपरोक्त कार्यों में हमने देव से "भगवत इच्छानुसारेण फलप्राप्ति अर्थ तथा आरोग्यता प्राप्ति अर्थं" का संकल्प लिया था और कुछ भी नहीं मांगा था भगवत इच्छा पर ही छोड़ दिया था कि जो ईश्वर देना चाहे वह दे दे । बस एक ही इच्छा सर्वोपरि रही कि अब आवागमन का चक्कर

सदा सदा के लिए समाप्त हो जाये । उपरोक्त संकल्प लेना साधारण बात नहीं है यह सब देव कृपा से ही सम्भव हो पाया है ।

उपरोक्त सबका उदघोष करने का हमारा अभिप्राय यही है कि जातक थोड़ा सा मन्त्र जाप कर ईश्वर को उलाहना देना आरम्भ कर देते हैं कि हमने इतना जप, तप, दान कर लिया है हमें कोई फल नहीं मिला । फल विलम्व से मिलने के कारण वह हीन भावनाओं से घिर जाते हैं और चलते हुए जप, तप को मूर्खता के कारण बन्द कर बैठते हैं ।

प्राणीमात्र का जन्मजन्मातर कल्पकल्पान्तर, युगयुगान्तर का कायिक, वाचिक, मानसिक कर्मों द्वारा अर्जित पाप बना रहता है और ज्ञाताज्ञात, भक्ष्याभक्ष्य, गम्यागम्म तथा गौ हत्या, ब्रह्म हत्या, वाल, पत्नी हत्याऐं होती हैं उससे पाप और बढ़ जाता है । इन सबका प्राणीमात्र को न चाहने पर भी भुगतान करना पड़ता है । शास्त्र का मत है कि "करम प्रधान विश्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फल चाखा" यह अकाट्य सत्य है कि जो जीव जैसे कर्म करेगा भुगतान उसी को देना पड़ेगा । नवग्रह पुस्तक में हमने बार-बार उद्घोष किया है और यह बताने का प्रयास किया है कि कम खा लेना चाहिए बुरे कर्म नहीं करने चाहिए वरना भुगतान बड़ा जटिल हो जायेगा ।

परमात्मा उपरोक्त इन सब कर्मों का फल जीव को जन्मजन्मांतर भुगतवाता रहता है। भगवान शनि ने मां अम्बिका से हाथ जोड़कर कहा कि हे मां अम्बिके मैं सौ जन्म तक जातक का पीछा नहीं छोड़ता हूँ जब तक उसका कुकृत्य समाप्त न हो जाये । परमात्मा की आज्ञा का मैं निरन्तर पालन करता रहता हूँ । कहने का तात्पर्य यह है कि जातक को अपना किया हुआ कर्म भोगना ही पड़ेगा । उस भोग को भुगतवाने का कार्यभार नवग्रह पर आधारित है ।

जीव का जब आधा पाप आधा पुण्य होता है तो परमात्मा दया करके मानव देह दे देता है । मानव देह से शुभ कर्मों का भी भुगतान होता है और पाप कर्मों का भी भुगतान होता है । शुभ कर्मों के भुगतान हेतु शुभ ग्रहों की महादशा बचपन से ही आरम्भ हो जाती है और पापक ग्रहों की यानि शनि, मंगल, राहु की इसके बाद आरम्भ होती है ताकि जातक का बचपन न बिगड़े । जातक के जन्मांक से इन सबका बोध हो जाता है कि यह जातक कितनी पाप आत्मा है या पुण्य आत्मा है । हर एक को जन्मांक बनाना चाहिए उनके अनुसार ग्रह मन्त्र का जाप कर अपने को ग्रह पीड़ा से मुक्त कर लेना चाहिए ।

अब मैं 1-1-97 से 10-2-2000 तक अर्थात् सवा दो वर्ष में चौदह करोड़ मन्त्र जप करने का रहस्य वर्णन कर रहा हूँ । मेरा प्रश्न फल 25-11-97 का महर्षि भृगु जी ने सुनाया और कहा कि पूर्णिमा से ठीक तीन दिन बाद तेरे पिछले तीन जन्मों के पाप कर्मों के फलस्वरूप तुझे हृदय रोग होगा । तीन जन्म के पापों ने एक साथ हमला कर दिया है इसलिए हृदय रोग भी विशेष होगा । महर्षि भृगु जी के कथनानुसार 2-12-97 को हार्ट अटेक हुआ जो दो घंटे तक रहा । सारा शरीर पसीने में पूरा भीग गया, ऐसा लगा कि जीवन यात्रा समाप्त हो गई है । तीन तारीख को पुनः हुआ, चार

तारीख को मामूली सा होकर शांति हो गई । महर्षि भृगु जी ने उदघोष किया था कि अभी मृत्यु नहीं होगी, अभी तो तूने जन कल्याण करना है और ग्रहों का प्रचार प्रसार करना है । उन्होंने मंत्र तथा दिव्य औषधि का वर्णन किया था सो हमने पांच करोड़ मंत्र कर डाले ।

दूसरा प्रश्न फल 15-5-99 को मिला । महर्षि भृगु जी ने कहा कि अभी दो जन्मों का पाप बाकी है जिसके कारण तेरी केन्द्र की जमीन हर प्रकार से मुक्त होने के बाद भी अधिग्रहण से मुक्त नही हो रही है । मंत्र जप पुनः आरम्भ करो जिससे हृदय रोग पूर्णतः निर्मूल होगा तथा केन्द्र की भूमि अवश्य प्राप्त होगी । भृगु जी के कथनानुसार 26-7-99 श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को पुनः अनुष्ठान आरंभ कर दिया। भगवान शनि, नारायण मंत्र, भृगु जी मंत्र के सवा सवा करोड़ मंत्र तथा चौबीस लाख महामृत्युंजय का जप कर डाला ।

चमत्कार यह हुआ कि 31-7-99 को जमीन अधिग्रहण से मुक्त हो गई और केन्द्र की भूमि केन्द्र को पुनः प्राप्त हो गई । बड़ा हर्ष हुआ कि तप में वड़ा वल है । जो पिछले 27 बर्षों से कोर्ट कचहरीयों के धक्के खाने के बाद भी पूरा नही हो रहा था पूरा हो गया तथा हृदय रोग भी करीब-करीब समाप्त हो गया । यह मन्त्र जप का प्रत्यक्ष फल प्राप्त हुआ ।

जैसा मैं पहले वर्णन कर चूका हूँ कि 21-1-2000 से पुनः चार करोड़ मंत्र का संकल्प लिया और 10-2-2000 को समाप्त कर दिया और भगवान शनि और महर्षि भृगु जी की अपार कृपा प्राप्त की ।

कहने का भाव यह है कि थोड़े जप तप से पूर्वजन्म कृत पाप समाप्त नहीं होते और जातक ग्रह पीड़ाओं से मुक्त नहीं होता ।

यदि मैं जप तप नहीं करता तो हॉस्पीटल में बाईपास सर्जरी करवानी पड़ती और फिर भी रोग ठीक होता नहीं होता इसकी कोई गारंटी नहीं थी । हृदय रोग देने वाला ग्रह सूर्य और शनि है । यदि षष्टांश मे ंगल और राहु क्रूर होते हैं तो हृदय रोग दे देते है । यदि इससे कोई पीड़ित हो तो औषधि के साथ-साथ इन चारों ग्रहों का जप अवश्य करवा लें तथा मृत्यु से जूझने के लिए तथा पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए चौबीस लाख महामृत्युंजय का जाप अवश्य करवायें कारण कि भगवान शंकर मृत्यु के देवता हैं । यदि किसी को अन्य कोई विचित्र बीमारी हो जो डॉक्टरों की समझ में नहीं आ रही हो और मृत्यु से जूझ रहें हों वह भी ग्रहों का शोध तथा महामृत्युंजय का आसरा लें ताकि जीवन आराम से व्यतीत हो जाये । यह ऋषि प्रदत्त विज्ञान प्रायः लोप होता चला जा रहा है । इसके पुनः उत्थान में मैं देव कृपा से सक्रिय हूँ जैसा-जैसा अनुभव होता है जनता जनार्दन के सामने परोस दिया जाता है ।

उपरोक्त सबको लिखने का अभिप्राय यही है कि जीव का पाप अधिक होता है और पुण्य थोड़ा होता है वह थोड़े जप से पूरा नहीं होता । जातक हीन भावनाओं से न घिरे फल न मिलने पर भी निरन्तर जप तप करता रहे, अवश्यमेव उसका फल मिलेगा । मन्त्र तथा किया

हुआ दान कभी निष्फल नहीं जाता । कालान्तर में जपने वाले को ही फल मिलता है । मेरा अनुभव है कि इन सबसे बचने के लिए जीव को अच्छे समय में नवग्रहों के नौ करोड़ मन्त्र जप कर या करवा लेने चाहिए ताकि जीवन सुख शान्ति से व्यतीत हो सके ।

अन्त में मैं पुनः पाठकों का ध्यान दिला देना चाहता हूँ कि वे लेखक परिचय पढ़े उसमें मैंने लिखा है कि मैंने और पत्नी ने यौवन काल में ही गोपाल मन्त्र के चार करोड़ मन्त्र जप अनुष्ठान रूप से किये थे फिर भी सन् 1976 में जब हमारी जन्म कुण्डली भृगु संहिता से मिली उसमें लिखा था कि शनि का प्रभाव अभी आरंभ हुआ है जो तुझे और तेरे परिवार को नष्ट कर डालेगा । शनि प्रभावित हुआ और उसने अपना कार्य करके दिखा दिया । हमने शनि पर खोज आरम्भ की और जप तप करके शनि ग्रह की अनुकूलता प्राप्त की और शनि कृपा से शनि के दो करोड़ मन्त्र जप कर साढ़े चार सौ पृष्ठ की पुस्तक लिख डाली । यह सब जप तप का ही प्रतिफल है जो जीवन में आगे बढ़ा है वह तपोबल से ही बढ़ा है । तपोबल ही सर्वोपरि बल है । अतः यह अकाट्य सत्य है कि तपोबल ही सर्वोपरि बल है ।

कर्म दोषयुक्त है और मनुष्य कर्म किये बिना जीवन धारण नहीं कर सकता है । श्वास लेना भी कर्म है और इसके बिना प्राणों का संचालन तक नहीं हो सकता । तप दोषों की निवृत्ति के लिए परम रसायन (Tonic) है । मिट्टी भी तप कर ही पूज्य बनती है । जब वह अग्नि की तपन को पा लेती है तब आदर प्राप्त करती है । पदार्थ की महत्ता वेदना सहकर ही होती है ।

मैं पाठकों से अनुरोध करता हूँ और विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि वह हीन भावनाओं से न घिरें और निरन्तर जप तप करते रहें । बहकाने वालों से सावधान रहकर नियमबद्ध तपबल को बढ़ाते रहें इसमें कोई संशय नहीं है । इस पुस्तक में जो हमने लिखा है वह सब हमारा अनुभव है और जो लिखा है वह सत्य है इसमें किसी भी प्रकार की कोई मिलावट नहीं है । आशा है जनता जनार्दन इस कृति को पढ़ कर अपना तथा पड़ोसियों का कल्याण कर सकेगी ।

विशेष :-

याद रखें जब जातक पग-पग पर विघ्नों से घिरा रहता हो, उन विघ्नों के कारण जीवन रसातल हो रहा हो या सब कुछ ठीक चल रहा हो तो भी भगवान गणपति का उपरोक्त प्रयोग एक साल में एक बार अवश्य कर लेना चाहिए ताकि जीवन विघ्नों से मुक्त रहे और ग्रह पीड़ा न सताए ।

॥ इति शुभम् ॥

सिद्धों की दृष्टि में

श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र सैक्टर 11 लघु सचिवालय मार्ग फरीदाबाद (हरियाणा) 121006

श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र सैक्टर 11 लघु सचिवालय मार्ग फरीदाबाद जो दिल्ली मथुरा रोड़ के साथ तीन दशक पूर्व से स्थापित है समय-समय पर नवग्रहों के शोध कार्य में हुए अनुभवों को जनता जनार्दन के कल्याणार्थ समाचार पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करता आ रहा है । इसी कड़ी में एक सुखद आश्चर्यजनक अनुभव 29-10-99 को प्राप्त हुआ कि केन्द्र द्वारा अपनायी पद्धति तथा उपायों की सराहना जहां यह समाज तो कर ही रहा है वहां इसकी सराहना सिद्धों द्वारा भी की जा रही है उनके द्वारा भी निर्देश दिया जा रहा है कि इस केन्द्र द्वारा सुझाए हुए उपायों को अपना कर इस समय जीवन में आए कष्टों को कम करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है । इसका सांकेतिक प्रमाण जो प्राप्त हुआ है उसे आप तक पहुंचाने में केन्द्र अपने को धन्य मानता है जो इस प्रकार है ।

29-10-99 रविवार के दिन पूर्वाह्न में एक सज्जन श्री आर०पी०सिंह, दिल्ली निवासी (47-C गौतम नगर, नई दिल्ली) का अपने पुत्र के साथ आगमन हुआ । उन्होंने केन्द्र में आकर पहले इसका परीक्षण किया और अपने को आश्वस्त किया कि वह सही स्थान पर पहुंच गये हैं । केन्द्र के संस्थापक पंडित जी के बारे में पूछा और उनसे मुलाकात करने की जिज्ञासा प्रकट की। पंडित जी से मिलने पर उन्होंने बताया कि उन्हें एक सिद्ध द्वारा निर्देश हुआ है कि जीवन में इस समय आए संकट के समाधान के लिए केन्द्र के संस्थापक पंडित जी द्वारा सुझाए उपायों को अपना कर इससे राहत पायें और जीवन आदि को समाप्त करने जैसे अन्याय उपायों को छोड़ दे । श्री सिंह द्वारा इस प्रकार बताये जाने से हम सबको एक सुखद हैरानी का अनुभव हुआ कि एक सिद्ध द्वारा हमारे बताये हुए उपायों को सही ठहराया जा रहा है । इस पर हमने श्री सिंह जी को कहा कि वह विस्तार से सिद्ध के बारे में बताये और उनको क्या कष्ट है इसका भी ब्यौरा दे । इस पर श्री सिंह जी ने इस प्रकार बताया ।

आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व अर्थात 1969 में जब वह सेना में (हैदराबाद) सेवारत थे तो एक सांय काल में एक सिद्ध आत्मा स्त्री रूप में सामने प्रकट हुई जिसके दर्शन कर सारा शरीर रोमांचित हो गया और सारी सुध-बुध जाती रही । मन में अपार आनन्द भर गया और जीवन धन्य लगने लगा । थोड़ी देर बाद अपने आपको संभालने के बाद मैंने उस सिद्ध आत्मा का स्वागत सत्कार किया और उनसे आशीर्वाद की याचना की । सिद्ध आत्मा ने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा वह जीवन पर्यन्त मुझ पर कृपा बनाए रखेगी और मेरे जीवन में आने वाली परेशानियों से उभरने में मेरी सहायता करेगी । इस कृपा के बाद सिद्ध आत्मा यदाकदा प्रकट होती और मुझे एकान्त में ले जाकर लोक लोकान्तरों का वर्णन कर उनका दर्शन भी करवाती । सारे नक्षत्र मण्डल आदि के बारे में विस्तार से बताया । उनसे इन वार्ताओं के दौरान बहुत आनन्दमय अनुभव हुए ।

कुछ समय बाद मेरे अन्य साथियों को मेरे एकान्त में जाने और बातचीत करने का पता चल गया तो सिद्ध आत्मा का साक्षात्कार कम होता चला गया । इस पर सिद्ध ने मुझे आश्वासन दिया कि मेरे उन्हें याद करने पर वह मुझे दर्शन देगी और समस्या हल करेगी । कई रहस्यमय घटनाओं को बताते हुए उन्होंने कहा कि मेरी लड़की के पैदा होने के समय बताया कि यह पिछले जन्म की तुम्हारी बहिन है और इस जन्म में तुम्हारी पुत्री के रूप में तुम्हारे घर आई है परन्तु यह अपनी मां का दूध नहीं पी सकेगी । लड़की के जन्म से पहले मेरी पत्नी हर तरह से ठीक ठाक थी परन्तु प्रसव के बाद उनके स्तनों से दूध नहीं आया और लड़की को बाहरी दूध पर ही पालना पोसना पड़ा । इसी प्रकार उन्होंने बताया कि तेरा लड़का जितना ठीक नहीं है उसका बेटा अर्थात मेरा पोता प्यारा तथा शुभ होगा और मुझे अति प्रिय होगा और होने वाले पोते की सकल सूरत पहले ही दिखा दी और कहा यही तेरा पोता होगा । जो मैंने देखा था वैसा ही रूप रंग वाला पेदा हुआ । इस कारण आज मुझे अपने पोते से बहुत प्यार है और उसके बगैर मेरा रहना भारी हो जाता है । इस प्रकार जीवन भर सिद्ध ने हर समस्या और घटना की पूर्व सूचना दी और सहारा दिया है ।

केन्द्र में अपनी समस्या से और राहत पाने के लिए आने के बारे में उन्होंने बताया कि वह इस समय तुगलकाबाद रेलवे पार्ट में एक कन्टेनर कम्पनी में काम कर रहे हैं और उनका लड़का भी अच्छी नौकरी पर लगा हुआ है । अभी कुछ समय पहले वह घर से नाराज़ होकर निकल गया है और मुझे भी नौकरी में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है । पूरी ईमानदारी से काम करने के वाबजूद मेरे पर हेराफेरी तक का दोष मढ़ा जा रहा है । इन सब से विचलित होकर मैं बहुत खिन्न हो गया हूँ और यह विचार करने लगा कि अपने सारे परिवार को समाप्त कर स्वयं आत्महत्या कर इस संकट से छुटकारा पाऊँ । मेरा ऐसा निश्चय करने पर सिद्ध आत्मा प्रकट हो गई और मुझे समझाया कि इस प्रकार आत्महत्या करने से इन संकटों से छुटकारा प्राप्त नहीं होगा बल्कि बहुत बड़ा पाप होगा और मरने के बाद एक भूत प्रेत का जीवन जीना पड़ेगा जो इससे भी ज्यादा कठिन होगा । साथ में परिवार की हत्या का पाप भी होगा, किये हुए कर्मो के फल का भुगतान तो करना ही पड़ेगा । बिन भुगते पूर्व कर्मों के फल से छुटकारा नहीं मिल सकता। ऐसा सोचना ही गलत है और इस संकट का सामना करना ज्यादा उचित है । इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने मुझे इस केन्द्र के बारे में बताया कि मैं वहां जाऊँ और आपके बताये उपायों पर चल कर इन संकटों से राहत प्राप्त करूँ ।

इसके लिए सिद्ध आत्मा ने कहा कि मैं तुझे श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र जो सैक्टर 11 फरीदाबाद में स्थित है उसे दिखाती हूँ इसको अच्छी तरह से पहचान केन्द्र में स्थित पांचों हवन कुण्डों को देख, चारों तरफ नवग्रहों के चित्र तथा उपाय लिखे हुए हैं इनको देख तथा इन जप करते हुए ब्राह्मणों को भी देख, यहां भगवती योग माया दुर्गा जो पीतल के रूप में स्थित है इसको देख तथा शनि का कराल रूप और राजा रूप का अवलोकन कर पांचों जोत सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कांसा में अलग-अलग जोत जलते हुए देख और ब्रह्मचारी वेदपाठी किस प्रकार जप पाठ कर रहे हैं उनका अवलोकन कर । इन सबको दिखाने के बाद इस केन्द्र के संचालक पंडित जी को देख जिन्होंने जनता जनार्दन के हितार्थ शनि पर विशेष तथा अन्य ग्रहों पर भी खोज की है । यह दिखाने के बाद सिद्ध आत्मा ने कहा प्रातः काल बिना किसी को

बताऐ, बिना स्नान किए केन्द्र में चला जा मैं तेरे साथ हूँ जहां रास्ता भटकेगा सीधा मार्ग दिखा कर केन्द्र में पहुंचा दुंगी । वहां जाकर पंडित जी से मेरा यह सारा समाचार कहना वह तेरा जन्मांक बनाएंगे उपाय सुझाएंगे और उपाय करने से तेरा परम कल्याण हो जायगा । मरने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी । पंडित जी पूर्व जन्मों के सिद्ध साधक योग यति हैं । इसलिए भगवान शनि का इनके ऊपर वरद हस्त है और भगवान शनि तथा महर्षि भृगु जी की आज्ञा अनुसार यह शनि तथा अन्य ग्रहों के प्रचार प्रसार में रत हैं । प्राणी मात्र का कल्याण कर रहे हैं और ऐसे उपाय खोज निकाले हैं जिससे जनकल्याण ही होता है हानि का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है ।

उपरोक्त सारे घटनाक्रम को श्री सिंह ने सुनाया । इस महान आश्चर्य जनक घटनाक्रम को सुनकर हमें महान आश्चर्य तथा हर्ष हुआ । आश्चर्य तो यह हुआ कि हमारे केन्द्र की ख्याति सारे उत्तर भारत और विदेशों में भी है सभी पत्र पत्रिकाओं ने समान रूप से इसको छापा है और जनता की दृष्टि में यह केन्द्र है परन्तु एक महान आश्चर्य यह हुआ कि यह केन्द्र अब सिद्धों की दृष्टि में भी आ गया है और जब कोई भी वस्तु सिद्धों की दृष्टि में आ जाती है तो संचालक तथा अन्य कार्यकताओं तथा जनता का जनहित ही होता है और हर्ष यह हुआ कि जो हम शोधकार्य कर रहे हैं वह सब सत्य हैं क्योंकि सिद्धों की दृष्टि में यह कार्य आ गया है और इस कार्य की सिद्धों द्वारा पुष्टि भी हो गई है ।

हमने सिद्ध को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और बिनती की कि यदि कोई शोधकार्यों में कमी हो तो उसे भी हमें श्री सिंह के द्वारा अवगत करवा दिया जाए ताकि जनता जनार्दन का समान रूप से कल्याण हो सके । अन्त में श्री सिंह ने प्रश्न किया कि पंडित जी मैं यह पूछना चाहता हूँ कि इस सिद्ध आत्मा ने आपका ही पता क्यों बताया और आपका ही केन्द्र क्यों दिखाया। कन्याकुमारी से लेकर वद्रिका आश्रम तक बड़े बड़े सिद्ध साधक बैठे हैं उनका पता क्यों नहीं बताया हमने कहा इस प्रश्न का उतर तो सिद्ध ही दे सकता है हम नहीं दे सकते।

अन्त में हमने उसकी कुण्डली बनाई देखा चौथे भाव की शनि की साढ़ेसाती तथा राहु का अन्तर तथा अन्य ग्रहों की स्थिति भी बहुत भयानक थी जिसके कारण श्री सिंह हीन भावनाओं से घिर गया था उसको सारे उपाय सुझाए और मन्त्र जाप बताए और कहा यदि तू तप करेगा तो निश्चित ही तेरा कल्याण होगा । जब वह जाने लगा उससे एक बात हमने अवश्य कही क्योंकि यहां करोड़ों मन्त्र जाप निरंतर होता रहता है और हर हफ्ते यहां करोड़ों मन्त्रों की आहुतियां भी दी जाती हैं । देवताओं को आहुतियों के द्वारा हविष्यान्न मिलता रहता है इसलिए देवताओं की दृष्टि में यह केन्द्र आ गया है ।

लेखक के उदगार

अकाट्य समझने योग्य सिद्धान्त पक्ष

पूर्व-जन्मों के महान् पुण्यों के प्रभाव तथा लक्ष्मी की प्राप्ति की इच्छानुसार परमात्मा जातक को इस जन्म में अपार लक्ष्मीवान तथा वैभवशाली बनाता है । ताकि वह इन सब का उपभोग कर अपनी इच्छा शान्त कर ले तथा प्राप्त धन से बड़े-बड़े अनुष्ठानों, यज्ञों, दान पुण्य तथा देवालय का निर्माण कर तथा मेरे भजन द्वारा मुझे प्राप्त कर ले ताकि आवागमन का चक्र समाप्त हो जाए ।

परन्तु होता उल्टा ही है कुछ बिरले भक्तों को छोड़कर प्राप्त लक्ष्मी का दुरूपयोग होता है धन के मद से मदान्ध होकर जातक धन का दुरूपयोग करता है और इतने निन्दनीय घृणित कार्य कर बैठता है जिसके फलस्वरूप उसे दुवारा नरक यातनाऐं भोगनी पड़ती हैं ।

दूसरा कारण यह है कि जब लक्ष्मी आती है तो उसका वाहन उल्लू भी साथ आता है । उल्लू का काम अच्छी भली बुद्धि को भ्रष्ट करने का होता है । भ्रष्ट बुद्धि के प्रभाव से अत्याचार, अनाचार, पापाचार, व्यभिचार तथा निन्दनीय क्रूर कर्म का आश्रय लेकर जातक अपने को नष्ट कर लेता है ।

तीसरा परमात्मा की माया इतनी बलवान होती है कि उसकी लपेट में आकर तथा पूर्व पाप कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त लक्ष्मी का दुरूपयोग करता है और अपने को नष्ट कर डालता है ।

उपरोक्त सब से बचने के लिए परमात्मा गणपति के रूप में प्रकट हुए और जातक से कहा तू मेरा मंत्र जप, यज्ञ कर । मैं उल्लू के प्रभाव से तेरी बुद्धि को नष्ट नहीं होने दूंगा । बुद्धि भ्रष्ट नहीं होगी तो धन का सदुपयोग होगा और जीव तर जायेगा । इसका प्रमाण यह है कि सारे गुजरात, महाराष्ट्र में भगवान गणपति को पूजते हैं और उसके प्रभाव से वहां के लोग हम सबसे ज्यादा धनवान, लक्ष्मीवान, ऐश्वर्यवान होते हैं । यानि भगवान गणपति की कृपा से वे धन का दुरूपयोग नही करते हैं ।

यदि परमात्मा जातक को धन नही देता तो धन प्राप्ति हेतु उसे कठिन परिश्रम करके धनोपार्जन करना पड़ता है जिसके कारण वह भजन से वंचित रह जाता है । और अधिक धन प्राप्त होने पर फुरसत न होने के कारण भजन नही कर पाता अर्थात दोनों प्रकार से मारा जाता है । इस रहस्य को समझाने

के लिए वो परमात्मा वेदों शास्त्रों, पुराणों, दैवज्ञों तथा स्वयं अवतार ग्रहण कर अपनी मधुर वाणी से गीता आदि का उपदेश करता है परन्तु जातक इस सबको समझने का प्रयास नहीं करता और माया में लिप्त होकर पुनर्जन्मों को प्राप्त करता रहता है ।

उपमा :- अभी इसी शताब्दी में बिडला सेठ धनवानों में अग्रगन्य हुए और प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग किया । भक्त होने के कारण भारत के अनेक स्थानों पर तथा देश विदेशों में देवालय बनाये, प्ररमात्मा की कीर्ति का स्वयं गुणगान किया और अपने नाम को अमर कर गये ।

प्राणि-मात्र जो इस धरा-धर्म पर आता है उसकी यह प्रबल इच्छा होती है कि मैं करोड़ों रूपये कमाऊँ पन्द्रह बीस उद्योग लगायें और धनवानों में मेरी ख्याति हो । पर करोड़ों मन्त्र कमाने की इच्छा उत्पन्न नहीं होती क्योंकि वे शुभ संस्कारों से विहीन होते हैं । केन्द्र का विगत 25 वर्षों का अनुभव है और यह पाया है कि धन का कोई अस्तित्व नहीं है । यह आज है कल जा भी सकता है । पर मन्त्र कभी किसी को धोखा नही देते मरने के बाद भी काम आते हैं । मन्त्र जप से अखंड शान्ति जीवनपर्यन्त बनी रहती है । धन के उतार चढ़ाव नहीं होते विमारी नहीं आती और प्राप्त धन से खुरापात नहीं होते तथा धन चिरकाल तक स्थिर रहता है । अत: इस सिद्धान्त को जीवन में अवश्यंमेव अपनाना चाहिए ।

प्राणि-मात्र पर नवग्रहों का प्रभाव समान रूप से छाया रहता है । शुभ ग्रहों की दशा में खूब धन, यश कमाया जाता है और अशुभ ग्रहों की दशा में यह सब कुछ नष्ट हो जाता है । इन सब आपदाओं से बचने के लिए प्राणि-मात्र को अच्छे समय में नवग्रहों के नौ करोड़ मन्त्र तथा नौ करोड़ भगवती योग माया दुर्गा इसके बाद अपने इष्ट मन्त्रों का जप कर या करवा लेना चाहिऐ ताकि जीवन सुखमय रहे । इसमें उतार चढ़ाव न हों और मानव जीवन जीने का फल प्राप्त हो । यह भी स्मरण रंखना चाहिए कि उपरोक्त ग्रह, जप, यज्ञ की अहिमा अग्निपुराण और मत्स्यपुराण में समान रूप से दी गई है ।

जन्मांक बनाना क्यों आवश्यक है?

पूर्व उल्लेख पर 'अपनी कुंडली स्वयं कैसे देखें' को पढ़ कर जातक के मन में उत्कंठा जागृत होगी पर यह तभी सम्भव हो सकता है जब आपके पास जन्मांक होगा। जन्मांक होने से हानि, लाभ, दुर्घटना, मृत्यु आदि सब कुछ मालूम किया जा सकता है। अतः यह सत्य है कि जन्मांक एक ऐसा दर्पण है जिसमें सब कुछ देखा जा सकता है।

केन्द्र ने एक ऐसा अनोखा अद्भुत नवीन पद्धति के अनुसार जन्मांक बनाया है। इस जन्मांक में नवग्रहों का सूक्ष्म विवरण, मंत्र और ऐसे उपायों का समावेश है जिनका अनुसरण करने से ग्रह पीड़ा निर्मूल होती है।

केन्द्र विगत 20 वर्षों से नवग्रहों पर शोध कार्य कर रहा है और ऐसे उपाय खोज निकाले हैं जिनसे लाखों प्राणियों का भला हुआ है। उन्हीं सब उपायों का समावेश इस जन्मांक में है। सरल रीति से जातकों को समझाया गया है कि अपना जन्मांक स्वयं पढ़ कर ग्रह स्थिति जानें और ग्रह पीड़ा से कैसे मुक्ति प्राप्त होगी। जन्मांक में जो-जो दर्शाया गया है, उसको अगले पृष्ठ पर पूर्ण रूप से पढ़ सकते हैं।

जगत गुरु शंकराचार्य ज्योतिष पीठाधीश्वर स्वामी श्री माधव आश्रम जी महाराज ने इस जन्मांक का विमोचन दिनांक 1-1-1998 को किया और हर्षित होकर आशीर्वाद दिया और कहा निश्चित ही यह जन्मांक अद्भुत चमत्कारी है इसको पढ़ कर जातक स्वंय अपने जन्मांक को समझ पायेंगे। यह जन्मांक भी है और उपायों की 40 पृष्ठों की एक पुस्तिका भी है।

पुनः सारे जन्मांक का अवलोकन करने के बाद कहा कि भारतवर्ष में इस प्रकार का यह पहला जन्मांक है। आज तक किसी भी ज्योतिषाचार्य ने ऐसा अद्भुत जन्मांक नहीं बनाया जिसमें सभी कुछ प्रतिपादित है। आशीर्वाद देते हुए कहा-इसी प्रकार पंडित जी नवींन खोज करते रहें और जनता जर्नादन का भला करते रहें ऐसी मेरी शुभकामना है। ज्योतिष अपने आप में पूर्ण है और अनुभवी दैवज्ञ ही सूक्ष्म रहस्यों को खोज कर जनमानस का भला कर सकते हैं।

स्वामी जी ने जो सूक्ष्म मनन कर प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दिए हैं। जन कल्याणार्थ हेतु जन्मांक देखने की विधि आगे प्रस्तुत है।

27-2-98 को पंजाब केसरी के स्थानीय संपादक श्री अश्विनी कुमार चोपड़ा जी ने पूर्वालोकन, अध्ययन चिन्तन कर जनकल्याणार्थ अपने समाचार पत्र में सचित्र प्रकाशन किया है वह भी जनकल्याणार्थ प्रस्तुत है।

जगत गुरु श्री स्वामी माधव आश्रम जी द्वारा जन्माक का विमोचन

जन्म कुण्डली द्वारा भूत भविष्य वर्तमान बताना कोई आधुनिक सिद्धि या आधुनिक खोज नहीं बल्कि सनातन पद्धति है और सनातन से धारा प्रवाह चली आ रही है जिसका प्रतिपादन वेद शास्त्रों ने विस्तार से किया है ।

अन्यान्य प्रकार की जन्म कुण्डलियों का अवलोकन किया लेकिन ज्योतिष की दुनिया के जादुई चिराग माने जाने वाले पंडित श्याम सुन्दर लाल वत्स जी ने जिस प्रकार जिस विधि से नवीन जन्म कुण्डली को जन्म दिया है वह शाश्वत प्रशंसनीय है । इस जन्म कुण्डली को वत्स जी ने ऐसा रूप दिया है कि वह निश्चित ही देश, विदेश में अपनायी एवं सराही जायेगी ।

आधुनिक समय में कम्प्यूटर द्वारा जन्म कुण्डली का निर्माण प्रायः लोग करते हैं लेकिन पंडित श्याम सुन्दर जी का कदम अपनी अनोखी छटा हमेशा दर्शाता रहेगा । पंडित जी की विशेष प्रशंसा इसीलिए करनी होगी कि उनका जो भी कदम ज्योतिष की दुनिया में उठा वह जनकल्याण हेतु और उसका लाभ अमीर गरीब सभी को समान रूप से प्राप्त हुआ। उन्होंने हतप्रभ करने वाले अनेक चमत्कार दिखाये और असंभव को ग्रह, जप, यज्ञ द्वारा संभव कर दिखाया । इसी तरह का यह एक नवीन कदम जन्म कुण्डली निर्माण का है जो अपनी छठा स्वतः बिखेर रही है । मैंने वत्स जी के संस्थान से कम्पयूटर द्वारा बनाई हुई पत्री का अवलोकन किया और देखा कि वत्स जी ने कितना परिश्रम करके जन कल्याणार्थ इसे अन्तिम रूप दिया है । इस कुण्डली में गणित फलित सिद्धान्त तो हैं ही साथ ही, अनोखे उपाय अलंकृत करके वत्स जी ने इसे और महत्त्वपूर्ण बना दिया है । इस कुण्डली द्वारा जनसमूह स्वतः अपने समय का आंकलन कर उपायों का सहारा ले सुखपूर्वक दुर्दैव समय का निवारण कर मानव जीवन सार्थक कर सकेंगे । अतः मेरा विश्वास है कि समस्त प्राणी वत्स जी द्वारा रचित कुण्डली से पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकेंगे और मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्री एवं इसके समस्त अचूक उपाय प्राणीमात्र के कवच बनकर रक्षा करेंगे और जनता जनार्दन को वत्स जी के अनुपम ज्ञान की उपलब्धि भी होगी ।

(स्वामी माधव आश्रम)

पंजाब केसरी

'जन्मांक कुंडली' है ज्योतिष की दुनिया में नई क्रांति, अपना भविष्य खुद जानिए

प्रविन्द्र शारदा

प्रख्यात ज्योतिष सम्राट् पं. श्याम सुंदर लाल वत्स के फरीदाबाद स्थित श्री बजरंग नवगृह अनुसंधान केन्द्र ने एक नई जन्मपत्री बनाई है जिसे कोई भी अपने भविष्य का भला-बुरा जानकर उपाय कर सकता है । कम्प्यूटर पर बनी यह कुंडली ज्योतिष की दुनिया में एक क्रांतिकारी पग कहा जा सकता है ।

पं. श्याम सुंदर लाल वत्स द्वारा इस तैयार कुंडली का विमोचन दैनिक 'पंजाब केसरी' दिल्ली के स्थानीय संपादक श्री अश्विनी कुमार ने किया । पं. श्याम सुंदर लाल वत्स बताते हैं कि मानव खुद अपनी कुंडली से अपने भविष्य का फल जाने, इसी उद्देश्य को लेकर उनके केन्द्र ने इस काम पर शोध कार्य किया और सफलता पाई । पं. वत्स ने बताया कि नई कुंडली में ज्योतिष शास्त्र तथा ज्योतिष विज्ञान के समझाने वाले महर्षि भृगु का पूर्ण विवरण है । चित्र द्वारा नवजात शिशु पर ग्रहों का प्रभाव है, डिग्री क्या होती है? अस्त वक्री ग्रहों का क्या प्रभाव होता है? जन्म समय कौन सा होना चाहिए । इन सबका विवरण दिया गया है । मानव के शरीर पर ग्रह, राशि, नक्षत्रों का प्रभाव किन-किन अंगों पर पड़ता है । सूर्य, चन्द्र मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नवग्रह का सूक्ष्म परिचय तथा ग्रह पीड़ा निवारण के अकाट्य उपाय भी दिए गए हैं । बाधा को निवृत्त करने के सरल उपाय जो स्वयं किए जा सकते हैं वह भी कुंडली में हैं । वह बताते हैं स्वयं जन्मांक को देखकर यह जाने कि विवाह क्यों नहीं हो रहा है और कब होगा या नहीं होगा या किन योगों में होगा । पति-पत्नी सुखी हैं या नहीं, तलाक तो नहीं होगा ?।

साढ़ेसाती कब और किस समय आएगी और कब तक रहेगी? उपाय करने से तुरन्त कैसे समाप्त होगी? शनि, राहु की पीड़ा को एकदम शांत करने के उपाय भी उक्त कुंडली में किए गए हैं । वह बताते हैं कि केन्द्र ने कम्प्यूटर कृत जन्मकुंडली बनाने के साथ-साथ उसमें अनूठे उपायों का भी समावेश किया है ताकि जातक पत्री द्वारा स्वतः ही अच्छे-बुरे को ज्ञात कर सकें और अपनी महादशा, अन्तर्दशा, प्रति अन्तर्दशा को स्वयं जान

सकें कि मेरी कौन सी दशा हानिकारक होगी और कौन सी दशा लाभदायक होगी और फिर उपायों का सहारा लेकर बुरे समय को निर्विघ्नतापूर्वक लांघ जाये ।

जन्म कुंडली जीवन की कुंजी होती है जिसके माध्यम से हम सभी कुछ ज्ञात कर सकते हैं । ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों का प्रभाव जातक पर किस प्रकार व्यापता है? क्यों मानव अस्त-व्यस्त हो जाता है? नवग्रहों के नौ अलग-अलग चित्र देकर अलग-अलग उपाय जड़ी, बूटी, दान आदि का भी शोधपूर्ण उपचार दर्शाया गया है वह बताते हैं कि प्रत्येक मानव को तीस वर्ष में एक बार शनि की साढ़ेसाती अवश्य आती है और वह उस साढ़ेसाती में सभी कुछ खो बैठता है । अतः साढ़ेसाती से सहज ही छुटकारा पाने के लिए शोधपूर्ण उपायों का समावेश भी किया गया है ।

पं० वत्स बताते हैं कि जन्मकुंडली जीवन की पथ प्रदर्शिका होती है । अतः प्रत्येक मां-बाप का यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपने बच्चों की कुंडली अवश्य बनवा लें ताकि पत्री द्वारा उसके जीबन का पूर्ण विवरण प्राप्त किया जा सके, जैसे जातक को कितना कष्ट, कितना सुख किस-किस वर्ष में है । जातक स्वस्थ रहेगा या अस्वस्थ, दुर्घटना किस वर्ष में होगी, नौकरी करेगा या व्यापार अर्थात क्या करेगा । विवाह होगा या नहीं । यदि होगा तो किस वर्ष में और यदि विवाह हो गया तो पति-पत्नी को दाम्पत्य सुख प्राप्त होगा या नहीं अथवा विवाह-विच्छेद हो जाएगा आदि जीवन का सभी कुछ अच्छे-बुरे का ज्ञान जन्मपत्री द्वारा होता है ।

श्री वत्स का दावा है कि उन द्वारा तैयार जन्मांक अब तक कोई तैयार नहीं कर पाया । अस्त वक्री ग्रह कैसे होते हैं और अस्त वक्री ग्रहों का प्रभाव क्या होता है तथा 6, 8, 12 में बैठे ग्रह क्या कार्य करते हैं और किस प्रकार जातक की चाल को रोक देते हैं और कैसे ठीक हो जाते हैं यह सब विवरण जन्मांक में किया है । भारत का यह पहला ऐसा जन्मांक है जिसे आज तक कोई ज्योतिषी प्रकाशित नहीं कर सका है । यह प्रकाशन केन्द्र ने जनहित में किया है ताकि जनता ज्योतिष न जानने वाले लोगों के चंगुल में न फंसे और अपना ग्रह फलित स्वतः करें । वह बताते हैं कि जिनका ज्योतिष में यकीन है वे उनका कहा मानें । विज्ञान प्रेमी इसे जो चाहे कहें । उन्होंने अपना अद्भुत प्रयोग कर जनहित में परोस दिया है ।

....

ग्रहों का मानव से संबंध एवं जन्म कुण्डली निर्माण हेतु ग्रहणीय समय तथा ग्रहों की गति उच्च, नीच, अस्त, वक्री, मार्गी, आदि का विवेचन

हमारा वर्तमान मनुष्य-जीवन हमारी जीवन शृंखला अर्थात अनंत जीवनों की एक कड़ी मात्र है । यद्यपि इस जीवन में हम अपने पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप भोगों को भोगने में अन्य योनियों के जन्मों की तरह ही परतंत्र हैं, तद्यपि मात्र मनुष्य जीवन में ही नवीन कर्म करने में स्वतंत्र हैं और उनके फलस्वरूप अपने पूर्व कर्म फल को समाप्त कर पाने में भी समर्थ हो सकते हैं । यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम मनुष्य-धर्म अर्थात सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य, उदारता, सेवा आदि का पालन पूर्ण सहजता के साथ करें। परन्तु हम अपने आपको धर्म तथा ईश्वर के बन्धन से मुक्त होकर जीने में गर्व करते हैं जिसके कारण हम अपने मन तथा इन्द्रियों के पूर्ण दास हो जाते हैं । मनुष्य एक क्षण में ऐसा महान पुण्य या इतना भारी पाप कर सकता है कि उसका फल भोगने के लिए उसे लाखों जन्म लेने पड़ते हैं । जब हमारा ईश्वर तथा पूर्वजन्म पर विश्वास नहीं होता है तो हमें पाप-पुण्य का कोई भय नहीं होता है और अपनी स्वार्थवृत्ति के कारण बड़े भारी संयमी, सत्यवादी, सदाचारी होते हुए भी उच्छृंखलतावश बड़े से बड़ा पाप करने में हिचक नहीं होती है । जिसका फल हमें रोग तथा अशान्ति के रूप में भोगना पड़ता है । फिर लाख सिर पटकने पर भी हम रोग तथा अशान्ति भोगने में स्वतंत्र नहीं हो सकते हैं । करुणामयी माँ अम्बा प्रकृति के अटूट नियमों के अनुसार हमें अपने कर्मों का फल भुगवाती हैं और इसे भुगतवाने में प्रकृति के प्रतिनिधि रूप में ग्रहों का अन्य तत्वों के अतिरिक्त विशेष महत्व होता है । इसीलिए जब मनुष्य इस धरती पर जन्म लेता है और उसे माँ से नाल छेदन द्वारा अलग किया जाता है, उस समय जो आकाशीय ग्रह मंडल, नक्षत्रों आदि की अवस्था होती है उनके अनुरूप प्रभाव में उसको जीवनयापन करना पड़ता है ।

जब शिशु माँ के गर्भ से जन्म लेता है और नाल छेदन होता है, उसी समय को ज्योतिष ग्रंथों में जातक का असली जन्म समय माना गया है । नाल छेदन होते ही माँ से संबन्ध कट जाता है और उस समय आकाश मंडल में ग्रहों की जो स्थिति होती है, ग्रह जिन राशियों में स्थित होते हैं, उसी के अनुसार ग्रह की उच्चता या नीचता का प्रभाव नवजात शिशु पर पड़ता है और उसी प्रभाव के अनुसार जातक को जीवनपर्यन्त ग्रह की चाल के अनुसार विवश होकर चलना पड़ता है ।

बारह राशियों पर ग्रहों का भ्रमण तथा डिग्री का प्रभाव

हमें पृथ्वी जिसके हम वासी हैं तथा प्रत्यक्ष दिखने वाला आकाश का आकार गोल वृत्ताकार प्रतीत होता है । जिसका जोड़ चार समकोण अर्थात 360 डिग्री माना गया है। इस गोलाकार में सूर्य आदि ग्रहों के भ्रमण मार्ग को क्रान्तिवृत पथ कहा जाता है जिसे ज्योतिष में 12 राशियों में बराबर बांटा गया है । अर्थात एक राशि का 30 डिग्री भाग होता है । इसलिए इसको भोगने वाले ग्रह का पूर्ण भोग 30 डिग्री का होता है जो उस के उस राशि के भोग के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है । इसी राशि के भोग काल के अनुसार ही जातक पर जीवन भर चाल बनी रहती है ।

सूर्य एक राशि में एक मास, चंद्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ़ मास, बुध एक मास, बृहस्पति तेरह मास, शुक्र एक मास, शनि तीस मास, राहु-केतु अठारह मास तक एक-एक राशि को भोगते हैं । जन्म के समय इन राशियों पर जो ग्रह भ्रमण कर रहे होते हैं और उस राशि में जितना भ्रमण कर चुके होते हैं, उतनी ही डिग्री की किरणें बालक पर छोड़ते हैं और उन्हीं डिग्रियों के अनुसार जातक की चाल जीवनपर्यन्त बनी रहती है ।

डिग्री का संचार, जैसे-शनि एक राशि में तीस मास रहता है । यदि शनि को उस राशि में रहते हुये बीस मास बीत गए हों तो बीस डिग्री का प्रभाव बालक पर पड़ता है । सूर्य एक मास में एक राशि को भोगता है । सूर्य को उस राशि में प्रवेश किए हुए दस दिन होते हैं तो 10 डिग्री का प्रभाव बालक पर पड़ता है । 10 से 20 डिग्री तक यदि ग्रह होता है तो ग्रह पूरा तरुण होता है और अपना पूर्ण प्रभाव देता है और जीवन को सुंदर सुखद बना देता है । यदि एक डिग्री से दस डिग्री के बीच होता है तो ग्रह बाल अवस्था में रहता है और बाल अवस्था जैसा प्रभाव जातक पर बनता है इसलिए वह ज्यादा उन्नति प्रगति जीवन में नहीं कर पाता है । यदि बीस से तीस डिग्री का ग्रह होता है तो जठर हो जाता है और जातक को भी जठर बना देता है । उसे बहुत धीरे-धीरे उन्नति करने देता है ।

उपरोक्त को ध्यानपूर्वक पढ़ने से डिग्री का प्रभाव जातक को स्वयं ही समझ में आ जाएगा । जन्म के समय ग्रह अपनी किरणों के माध्यम से बालक पर अपना प्रभाव डालते हैं और जीवनपर्यन्त यह प्रभाव बनाये रखते हैं ।

ग्रहों का उच्च अथवा नीच स्वरूप

ग्रहों के उच्च अथवा नीच स्वरूप को इस प्रकार समझा जा सकता है : सूर्य-मेष, चंद्रमा-वृष, मंगल-मकर, बुध-कन्या, बृहस्पति-कर्क, शुक्र-मीन, शनि-तुला, राहु-मिथुन, केतु-धनु राशि में उच्च का माना जाता है । शिशु के जन्म समय में यदि इन राशियों में

उपरोक्त ग्रह बैठे हों तो उसकी अपनी उच्चता का प्रभाव जीवनपर्यन्त बनाये रखते हैं। जातक भी भिन्न भिन्न ग्रहों की उच्चता के अनुसार प्रभावित होता है। वह जातक महान, विद्यावान, गुणवान, धनवान, यशस्वी और पूर्ण राज सुख प्राप्त कर सकता है।

ग्रहों की नीचता इस प्रकार निर्धारित की गयी है : सूर्य-तुला, चंद्रमा-वृश्चिक, मंगल कर्क, बुध-मीन, बृहस्पति-मकर, शुक्र-कन्या, शनि-मेष, राहु-धनु, केतु-मिथुन राशि में नीच के होते हैं। शिशु के जन्म के समय यदि ग्रह उपरोक्त राशियों में बैठे हों तो नीच प्रभाव डालते हैं। जिसके फल स्वरूप विद्या में हीनता, अपयश, नीच कार्य करने की वृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। जातक नीचता पूर्वक धन उपार्जन, अपकीर्ति तथा दरिद्रतामय जीवनयापन करता है।

उच्च नीच ग्रह की समीक्षा

प्रत्येक ग्रह की एक अपनी बैल्ट चलती है जिसका अच्छा या बुरा प्रभाव प्राणी मात्र पर सामान्यतः पड़ता है। एक बैल्ट चलती है देखिए बृहस्पति उच्च राशि में चार अगस्त 1978 से 13 अगस्त 1979 तक रहा। इस अवधि में जो बालक पैदा हुए वे पूर्ण विद्यावान धनवान हुए क्योंकि बृहस्पति कर्क राशि में था और जातक को उसकी उच्च किरणें मिलीं। उनके प्रभाव से उस अवधि में जन्में जातक विद्यावान, यशवान एवं कीर्तिवान हुए। दूसरी ओर शनि की बैल्ट चली। शनि अप्रैल 69 से सितम्बर 71 तक नीच अर्थात मेष राशि में रहा। इसमें जो जातक पैदा हुए उन्हें शनि की नीच किरणें प्राप्त हुईं। उनके प्रभाव से जातक नीच कार्य करने वाले बने होंगे लेकिन किसी जातक को उच्च शुभ ग्रहों के मिश्रण से शुभ फल भी प्राप्त हो सकते हैं।

उदाहरणार्थ एक बालक की कुंडली का अवलोकन करें। उसे देखने से ग्रहों की उच्चता-नीचता बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है। नामः राजीव मेहता, जन्म तिथिः 16-10-1974, जन्म समय 1.55 दोपहर पता A - 14 गली नं: 2 राजेन्द्र नगर दिल्ली। कर्क लग्न है। कर्क में बृहस्पति उच्च का होता है। चौथे भाव में शनि उच्च का बैठा है। सप्तम भाव में मंगल उच्च का है। भाग्य में शुक्र बैठा है। और कर्म भाव में सूर्य उच्च का बैठा है। पांच ग्रह उच्च के केन्द्र में और त्रिकोण में स्थित हैं। इन ग्रहों के शुभ फल ने राजीव को विलक्षण मेधा बुद्धि प्रदान की। उसकी स्मरणशक्ति तीव्र हुई। वह जो भी पढ़ता है तत्काल याद हो जाता है। ग्रहों के प्रभाव से वह महान विद्यावान और राजनीतिज्ञ होगा। इस कुंडली से यह समझ में आ जायेगा की ग्रह की उच्चता क्या काम करती है।

ग्रह का अस्त और वक्री स्वरूप

शुक्र जब अस्त होता है तो समस्त शुभ कार्य विवाह, उपनयन, आदि बंद हो जाते हैं । जब तक शुक्र उदय नहीं होता विवाह आदि नहीं होते हैं । यदि अस्त शुक्र में विवाह कर दिया जाये तो सन्तान बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है । पति-पत्नी में वैमनस्यता छाई रहती है । गृहस्थ जीवन का सुख बहुत कम प्राप्त होता है । कारण शुक्र रति सुख तथा अन्यान्य समस्त सुखों का स्वामी है । अतः अपनी भलाई चाहने वाले इस बात का विशेष ध्यान रखें और अस्त शुक्र में शुभ कार्य न करें । अस्त शुक्र को दूसरी भाषा में तारा डूबना भी कहते हैं ।

सूर्य की परिधि में 6 डिग्री पहले तथा 6 डिग्री बाद के अनुपात से चंद्रमा को छोड़कर सभी ग्रह अस्त हो जाते हैं । 6 डिग्री तक पूर्णास्त होते हैं और दस डिग्री के बाद उदय हो जाते हैं । यदि ऐसे समय में बालक का जन्म हो जाता है तो सौर मंडल में जो ग्रह अस्त होता है, उसकी किरणें बालक को प्राप्त नहीं होतीं । इस कारण जब अस्त ग्रह की दशा, अन्तर्दशा आती है तो जीवन में धन, यश, अपने आप अस्त हो जाते हैं । लाख यत्न करने पर भी जातक अपने घाटे को नहीं बचा पाता । जो ग्रह अस्त होते हैं, वे ग्रह जातक को क्या दे पायेंगे । यदि गोचर में वह अस्त ग्रह 6, 8, 12 में लग्न से सम्बन्धित हो तो जीवन को भय उत्पन्न हो जाता है । इसलिए अपनी कुंडली स्वयं देखें । अस्त ग्रह उस समय दशा, महादशा, अंतर्दशा, में चल रहा हो तो व्यापार न करें । अन्यथा हानि अवश्यंभावी है । हां यदि उस अस्त ग्रह का जप कर लिया जाये तो सभस्या हल हो सकती है । सौर मंडल में कुछ ग्रह तीव्र गति से और कुछ मंद गति की अपनी नियमित चाल के अनुसार भ्रमण करते हैं । मंद गति वाले ग्रह मंद गति से भ्रमण करते हैं । तीव्र गति वाले ग्रह को आगे गति देने के लिए मंद ग्रह उल्टा चलना आरम्भ करते हैं । उसी को वक्री ग्रह कहते है । अपनी गति पर पुनः आ जाने पर उसे मार्गी ग्रह कहते हैं ।

जातक के जन्म के समय यदि ये ग्रह वक्री होते हैं तो अपना पूर्ण फल नहीं दे पाते हैं । केवल वक्री अवस्था में ही फलदायक होते हैं । मार्गी होते ही वे फल नहीं दे पाते । इसलिए बुद्धिमान जातक इस बात का स्वयं ध्यान रखें और अपने मूल धन को नष्ट न होने दें ।

मानव की अपनी कोई चाल नहीं होती ग्रहचाल के अनुसार उसे विवश होकर चलना पड़ता है । ग्रह जातक के पूर्व कृत कर्मानुसार अच्छा या बुरा फल देते हैं । जीवन का पूर्ण क्रिया कलाप हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश, जय, पराजय, सर्दी-गर्मी, आंधी-तूफान, मान-अपमान, अतिवृष्टि-अनावृष्टि, भूकम्प आदि प्रकृति का पूर्ण संचालन ग्रहों पर आधारित है ।

मानव जीवन ग्रहों की रश्मियों के संतुलन का एक पुंज है । इस धराधाम पर जब वह जन्म लेता है उस क्षण विशेष में उस स्थान पर ग्रहों की रश्मियों का जितना और जो कुछ प्रभाव होता है, उस प्रभाव को उस क्षण विशेष में बालक के अपने शरीर में समाहित कर लेता

है । आदमी बीमार तभी पड़ता है जब उन ग्रहों की रश्मियों में असंतुलन आ जाता है । प्रत्येक क्षण मानव जीवन पर ग्रहों का प्रभाव रश्मियों के माध्यम से पड़ता रहता है और इसी वजह से सुख दुख आदि का भोग उस व्यक्ति को भोगना पड़ता है ।

जब मानव जन्म लेता है तो वह पूर्व जन्म के संस्कारों से बंधा हुआ होता है । उसके जीवन में उन संस्कारों का प्रभाव भी होता है । इसके साथ ही साथ जीवन में ग्रहों के प्रभाव को भी उस को स्वीकार करना पड़ता है और उन दोनों के समन्वय से उसका यह जीवन पथ निर्माण होता है । प्रत्येक क्षण की अपने आप में स्वतंत्र सत्ता है और प्रत्येक क्षण अपने आप में मूल्यवान हैं इसके साथ ही साथ प्रत्येक क्षण का प्रभाव भी अपने आप में अलग होता है । ज्योतिष के माध्यम से ही हम उस क्षण को और प्रकृति को पहचान सकते हैं और तदनुकूल कार्य करके परिणाम प्राप्त कर सकते हैं । सृष्टि के रहस्य का पता भी ज्योतिष के माध्यम से ही हो सकता है क्योंकि ज्योतिष ने प्रत्येक अणु की संरचना का ज्ञान प्राप्त किया है और यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक अणु का निर्माण किस प्रकार से संभव हो सकता है इसी तथ्य के आधार पर सृष्टि का निर्धारण और इस के रहस्य को समझा जा सका है ।

पृथ्वी में भी आकर्षण शक्ति है जिस कारण सूर्य उसे प्रकाश तथा ताप प्रदान करता है और इसी प्रकार वर-वधु अथवा दो व्यक्तियों की शत्रुता मित्रता को देखने के लिए भी राशि के स्वभाव पर ध्यान दिया जाता है । जिस राशि का जैसा स्वभाव होता है उन राशियों में उत्पन्न हुआ पुरुष तथा स्त्री का स्वभाव भी वैसा ही होता है । दो समान स्वभाव वाले प्राणियों में मित्रता और असमान स्वभाव वाले प्राणियों में शत्रुता रहती है । प्रत्येक राशि काल पुरुष के एक अंग का प्रतीक है । मेष राशि से सिर, वृष से मुख आदि आदि जिस पुरुष या स्त्री के जिन राशियों में अशुभ ग्रह होते हैं उन अंगों को पीड़ा देते हैं । शरीर विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान पूर्ण रूप से ज्योतिष से बंधे हुए हैं क्योंकि इन दोनों का संबंध मानव शरीर है और इसी प्रकार ज्योतिष का संबंध भी मानव शरीर से ही है ।

मंत्र कभी किसी को धोखा नहीं देते हैं । मृत्यु के बाद भी काम आते हैं । गायत्री भगवती आदि के मंत्र शापित हैं । बिना शाप विमोचन किये फल नहीं देते हैं । दूसरे मंत्र जपने में मन नहीं लगा तो भी फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति असंभव होती परन्तु ग्रहों के मंत्रों को किसी ने शाप नहीं दिया हैं इसीलिए बिना मन लगाये ही केवल मंत्र उच्चारण करने मात्र से पूर्ण फल की प्राप्ति तथा कष्टों से निवृत्ति हो जाती है ।

ज्योतिष एक ऐसा दर्पण है जिसमें सब कुछ देखा जा सकता । आवश्यकता विद्वत्ता की है । यदि समझ में नहीं आये तो दैवज्ञों से कुण्डली आदि दिखाकर परामर्श लेना चाहिए तदोपरान्त कार्य प्रारंभ करना चाहिए । ताकि जीवन में उथल-पुथल न हो ।

श्री गणेशाय नमः अपनी जन्म-पत्री का स्वयं अवलोकन करें

ज्योतिष विज्ञान अपने में पूर्ण है और जातक की जन्मकुण्डली जीवन दर्पण है । इसे समझने का प्रयास करें । जन्मपत्री पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों के अनुसार फलदायक होती है । जैसा कर्म होता है उसी के अनुसार ग्रह जन्मांक में बैठते हैं । ग्रहों की महादशाओं के ऊपर जीवन का पूर्ण क्रिया कलाप आधारित रहता है । महादशा, अन्तर्दशा तथा ग्रहचाल को समझ कर ग्रहशोध करें । अर्थात जन्मपत्री एक ऐसा दर्पण है, जिसमें सब कुछ देखा जा सकता है आवश्यकता दैवज्ञ की है ।

अपनी जन्मपत्री का अवलोकन इस प्रकार करें ।

1. जन्मपत्री के दूसरे पेज को देखें और उस में सब से अंतिम वाले (कालम) को देखें कि नवग्रहों में कितने ग्रह अस्त और कितने ग्रह वक्री हैं अपनी डायरी में नोट करें ।
2. नीचे अपने जन्मांक को देखें 6, 8, 12 भावों में कौन-कौन ग्रह बैठे हैं । इसको भी अपनी डायरी में नोट करे लें ।
3. जन्मांक के 6 व 27 वें पेज में विंशोत्तरी महादशा लिखी हुई है । महादशा में देखें किस वर्ष से किस वर्ष तक कौन-कौन महादशाएं रहेंगी। तथा उसमें कब से कब तक किन-किन ग्रहों का अन्तर रहेगा ।
4. अपनी डायरी को पुनः देखें अस्त ग्रहों की दशा कब से कब तक चलेगी तथा 6, 8, 12 भावों में जो ग्रह बैठे हैं । उनकी दशा कब से कब तक रहेगी । इस को भी डायरी में नोट करें ।
5. जन्मांक में साढ़ेसाती का विवेचन है कब से कब तक रहेगी, और कौन-कौन से भाव की रहेगी । इसको भी नोट कर लें ।
6. याद रखें जब-जब अस्त ग्रहों की दशाएं चलेंगी तो निश्चित ही नुक्सान, धन हानि, मान हानि, तथा मानसिक संतुलन बिगड़ेगा ।

उस समय कोई नया काम न करें । यदि लग्न अस्त हो जाए तथा 6, 8, 12 से संम्बन्ध हो तो जीवन में भय उत्पन्न कर देगी । इस समय में जो ग्रह अस्त है । उस ग्रह के बीज मंत्र का जप अवश्य करें, जिससे दुर्भाग्य का मुख देखना न पड़े । अस्त ग्रह मूल धन को नष्ट कर देती है । सावधानी से अस्त ग्रहों पर दृष्टि रखें ।

7. पुनः याद रखें और अपनी डायरी को देखें कौन-कौन ग्रह 6, 8, 12 में बैठे है, और उनकी महादशा तथा अन्तरदशा कब से कब तक चलेगी अपनी डायरी में अच्छी तरह नोट करके रखें । केवल शुक्र 8-12 वें भाव में और राहु तिसरे छठे भाव में फलदायक होता है । बाकी सभी ग्रह हानि कारक होते हैं । इन दशाओं में भूल कर भी नया काम नहीं करना चाहिए । किसी को उधार नहीं देना चाहिए वर्ना पैसा लौटकर

नहीं आएगा। इन दशाओं में हानि ही हानि होती है । अपने हाथ से कमाया हुआ धन अपने ही हाथों से नष्ट होता है । इसीलिए बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए ।

8. साढ़ेसाती कब से कब तक चलेगी, उस समय भी सावधानी बरतनी चाहिए वर्ना चले चलाए काम बन्द हो जाते हैं । शनि में वो सामर्थ्य है जो हर चलती हुए चीज को रोक देता है। शनि की दृष्टि में इतना दम है । अच्छे चलते हुए काम देखते-देखते पूर्ण प्रयास करने पर भी नहीं चल पाते हैं । साढ़ेसाती में यह मस्तिष्क में आकर बैठ जाता है तथा निर्णय शक्ति को भ्रमित कर देता है । जिससे जातक अपने आप नष्ट हो जाता है ।

केन्द्र ने **'शनि शत्रु नहीं मित्र'** नामक पुस्तक प्रकाशित की है । साढ़ेसाती के समय इस पुस्तक का अवश्य अवलोकन करें तथा जप, तप, कर ग्रह बीज मंत्र का जाप कर पीड़ा मुक्त हो जाएं । अपनी कुण्डली को स्वयं कैसे देखें तथा महादशा अन्तर्दशा को समझने, तथा अस्त ग्रहों को समझने के सरल रीतियों का उपरोक्त वर्णन कर दिया है । उपरोक्त जब तक समझ में न आए बार-बार पढ़ें और आचरण करने का प्रयास करें । यदि उपरोक्त को समझ लिया उसके अनुसार आचरण किया । खराब, अस्त तथा 6, 8, 12 भावों की दशा आने से पहले मंत्र जप, यज्ञ, दान, कर लिया तो निश्चय ही कष्टकारी महादशाएं कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगी । जीवन सरस सुन्दर बना रहेगा । सभी प्रकार की भ्रांतियाँ समाप्त हो जायेंगी । यह अकाट्य सत्य है । इसमें लेशमात्र भी असत्यता नहीं है । आप स्वयं भी करके देखें । जब यह चमत्कार आपको होगा तो निश्चय ही आपका हृदय गद्‌गद् हो जाएगा ।

केन्द्र विगत 20 वर्षों से मंत्र जाप कर जातकों की भयंकर ग्रह पीड़ा को मंत्र शक्ति द्वारा सदा के लिए समाप्त करने में सफल हो गया है । और एक दिल्ली निवासी जातक पर नवग्रहों के 12 करोड़ मंत्र जाप करके काली हथेली काले पोर, काला माथा को गौरवर्ण में परिणत करके हथेली की रेखाओं को भी बदलने में सफल हो गया है । अतः केन्द्र इस नतीजे पर पहुंच गया है कि मंत्र जप से हम वह कर सकते हैं जो नहीं हो सकता । शर्त केवल यह है कि विधिवत जप यज्ञ संपन्न किया जाय अथवा ब्राह्मणों से संपन्न कराया जाये । केन्द्र 15 दिन में 1 करोड़ मंत्र विधिवत जप कर देता है । जगत में कुछ भी असम्भव नहीं है । आवश्यकता केवल श्रद्धा और विश्वास की है ।

कम्प्यूटर द्वारा विशेष जन्म पत्रिका निर्माण

नवजात शिशु पर ग्रहों का प्रभाव, अद्‌भुत चमत्कारी प्रयोगों से भरपूर अनोखी जन्म कुण्डली बनवाइए । अच्छे या बुरे समय का ज्योतिष की दृष्टि से लेखा-जोखा स्वयं जानें व परखें, जन्म कुण्डली सरल रीति से आपके भूत व भविष्य का वित्तरण देते हुए उन से लाभ उठाने के उपाय बताती है ।

कम्प्यूटर जन्मपत्रियां तो बहुत संस्थाएं बनाती है लेकिन हमारी संस्था द्वारा बनाई जन्मपत्रियां विशेष है उनकी विशेषताएं निम्न हैं :-

1. ज्योतिष शास्त्र तथा ज्योतिष विज्ञान के समझाने वाले महर्षि भृगु का पूर्ण विवरण ।
2. चित्र द्वारा नवजात शिशु पर ग्रहों का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है । डिग्री क्या होती है ? अस्त वक्री ग्रहों का क्या प्रभाव होता है? जन्म समय कौन-सा होना चाहिए । इन सब का विवरण ।
3. मानव के शरीर पर ग्रह, राशि, नक्षत्रों का प्रभाव किन किन अंगों पर पड़ता है । रंगीन चित्र द्वारा विवरण ।
4. सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नवग्रह का सूक्ष्म परिचय तथा ग्रह पीड़ा निवारण के अकाट्‌य उपाय ।
5. सफल तांत्रिक प्रयोग तथा भूत, प्रेत बाधा को निवृत्त करने के सरल उपाय जो स्वयं किये जा सकते हैं ।
6. स्वयं जन्मांक को देखकर यह जानें कि विवाह क्यों नहीं हो रहा है और कब होगा या नहीं होगा या किन योगों में होगा । पति-पत्नी सुखी हैं या नहीं । तलाक तो नहीं होगा ?
7. योगासन द्वारा पेट के समस्त रोग दूर करने का विवरण । जड़ी, बूटी तथा औषधियों से किस प्रकार असाध्य रोग ठीक होता है, सूक्ष्म विवरण ।
8. ग्रह पीड़ा निवारण हेतु तथा अन्य सभी प्रकार के दोषों के निवारण हेतु पीपल परिक्रमा तथा सोमवती अमावस्या की महिमा ।
9. ाढ़ेसाती कब और किस समय आएगी और कब तक रहेगी? उपाय करने से तुरन्त कैसे समाप्त होगी? आदि-आदि का विवरण ।
10. शनि राहु की पीड़ा को एकदम शान्त करने के सरल उपायों का विवरण । केंद्र का यह सफल प्रयोग है । लाखों लोगों से यह प्रयोग कराकर केंद्र ने पूर्ण सफलता प्राप्त की है ।
11. **केन्द्र की यह शोधपूर्ण जन्म पत्रिका अकाट्‌य उपायों की एक पुस्तिका भी है ।**

यह जानकर आपको परम प्रसन्नता होगी कि श्री बजरंग नवग्रह अनुसंधान केन्द्र विगत 20 वर्षों से नवग्रहों का शोधकार्य अनवरत रूप से कर रहा है । शोधकार्य के जो परिणाम प्राप्त हुए हैं, आश्चर्यजनक है । इन शोधपूर्ण व उपायों से जनमानस को चमत्कारिक लाभ प्राप्त हुआ है इसीलिए आज यह केन्द्र देश-विदेश के जातकों का श्रद्धा बिन्दु बना हुआ है ।

केंद्र ने कम्प्यूटर कृत जन्मकुण्डली बनाने के साथ-साथ उसमें अनूठे उपायों का भी समावेश किया है ताकि जातक पत्री द्वारा स्वतः ही अच्छे बुरे को ज्ञात कर सके और अपनी

महादशा, अन्तर्दशा, प्रति अन्तर्दशा को स्वयं जान सके कि मेरी कौन सी दशा हानिकारक होगी और कौन सी दशा लाभकर होगी और फिर उपायों का सहारा लेकर बुरे समय को निर्विघ्नता पूर्वक लांघ जाये । जन्म कुण्डली जीवन की कुंजी होती है जिसके माध्यम से हम सभी कुछ ज्ञात कर सकते हैं । ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों का प्रभाव जातक पर किस प्रकार व्यापता है ? क्यों मानव अस्त व्यस्त हो जाता है ? नवग्रहों के नौ अलग-अलग चित्र देकर अलग-अलग उपाय जड़ी, बूटी, दान आदि का भी शोधपूर्ण उपचार दर्शाया गया है । प्रत्येक मानव को तीस वर्ष में एक बार शनि की साढ़ेसाती अवश्य आती है और वह उस साढ़ेसाती में सभी कुछ खो बैठता है । अतः साढ़ेसाती से सहज ही छुटकारा पाने के लिए शोधपूर्ण उपायों का समावेश भी किया गया है ।

केन्द्र जन्मांक, वर्ष फल, मासिक एवं दैनिक फल या जिस वर्ष तक का जातक चाहे गणित फलित से कुण्डली में चार चांद लगाता है । अर्थात गणित द्वारा उत्तम जन्मांक कों फलित सहित प्रतिपादित करता है ।

पथ-प्रदर्शिका है जन्म कुण्डली

जन्मकुण्डली जीवन की पथ प्रदर्शिका होती है । अतः प्रत्येक मां बाप का यह कर्तव्य होता है कि वह अपने बच्चों की कुण्डली अवश्य बनवा लें ताकि पत्री द्वारा उसके जीवन का पूर्ण विवरण प्राप्त किया जा सके, जैसे जातक को कितना कष्ट, कितना सुख किस-किस वर्ष में है । जातक स्वस्थ रहेगा या अस्वस्थ, दुर्घटना किस वर्ष में होगी, नौकरी करेगा या व्यापार, अर्थात क्या करेगा । विवाह होगा या नहीं । यदि होगा तो किस वर्ष में और यदि विवाह हो गया तो पति-पत्नी को दाम्पत्य सुख प्राप्त होगा या नहीं अथवा विवाह-विच्छेद हो जायेगा आदि जीवन का सभी कुछ अच्छे बुरे का ज्ञान जन्मपत्री द्वारा होता है ।

भूतकाल में कोई जातक करोड़पति था वर्तमान में वह खाकपति हो गया और यदि उसकी कुण्डली होती है और वह किसी योग्य ज्योतिषी से परामर्श लेता और ग्रहों के उपचार कर अथवा करवा लेता तो वह खाकपति नहीं होता, करोड़पति ही रहता । इसीलिए पत्री की परम आवश्यकता होती है । जैसे विगत वर्षों में एक छात्र अच्छे अंक प्राप्त कर रहा था, हमेशा अध्ययन ही करता रहता था आज वह पुस्तक भी नही छूता । कारण चतुर्थ में राहु हो और उसकी महादशा चल जाये तो वह विद्या पढ़ ही नहीं सकता । जब तक राहु का वैदिक विधि द्वारा मंत्र जप कर या करवा नहीं लेगा तब तक पूर्ववत विद्या प्राप्त नहीं कर सकता । जैसे रोग आता है उसका उपचार करके ही हम रोग मुक्त होते है । इसी प्रकार कष्टमय ग्रहदशा को हम उस ग्रह का जपकर उसे अनुकूल कर लेते है । अतः जीवन में प्रत्येक पहलू के ज्ञान हेतु जन्मपत्री परम आवश्यक है । इसीलिए बच्चों की जन्म कुण्डली अर्थात जन्मपत्री मां बाप अवश्य बनवायें ।

....

केन्द्र द्वारा निर्मित जन्म पत्रिका की मुख्य विशेषताएं

- हिन्दी, अँग्रेजी भाषा में उपलब्ध है ।
- ज्योतषीय गणना शत् प्रतिशत शुद्ध है ।
- जन्मपत्रिका की विस्तृत गणना-सुदर्शनचक्र, षोड्षवर्ग, भावफल, अष्टकवर्ग, कारक अवस्था, उपग्रह, के-पी-पद्धति कारक सहित, विंशोत्तरी, योगनी एवं कालचक्र दशा ।
- शुभाशुभ ज्ञान, रत्न चुनाव एवं धारण विधि, मांगलिक दोष साढ़ेसाती विचार एवं उपाय पर विशेष माडल उपलब्ध है ।
- नवजात शिशु के लिए नक्षत्रफल, पाया विचार, योनि, गण आदि फल, माता-पिता एवं भाई बहिनों पर प्रभाव दर्शाने वाला विशिष्ट माडल ।
- कम्प्यूटर द्वारा बिना विरोधाभास के फलादेश तथा भावों का युक्ति युक्त विश्लेषण, फलादेश में स्वास्थ्य, धन, सन्तति, माता-पिता, दाम्पत्य सुख तथा व्यवसाय आदि का अलग-अलग विश्लेषण ।
- वर्षफल की गणना ताजिक पद्धति से की गई है जिसमें पूचं वर्गीय बल, द्वादश वर्गीय बल, वर्षेश निर्णय सहम पात्यंदशा, मुद्दा एवं सूक्ष्म दशा की गणना की गई है । साथ ही इसमें मासिक फल भी दिया गया है ।
- कुण्डली मिलान का माडल शुद्ध शास्त्रीय गणना पर आधारित है । इसमें वर वधु की प्रकृति, स्वास्थ्य, धन सम्पत्ति, सन्तति, एवं ससुराल वालों से सम्बंध के विषय में भी विश्लेषण किया गया है ।

नोट :- ज्योतिर्विदों के लिए जन्मपत्रियां बनवाने हेतु विशेष रियायत उपलब्ध है । निजी रूप से सम्पर्क करें ।

उपरोक्त की सत्यता और केन्द्र की महत्वपूर्ण खोजों को जानने के लिए अपना जन्मांक तथा वर्षफल मात्र 500 रु० में अवश्य बनवायें । केन्द्र द्वारा प्रदत्त उपायों का सहारा लेकर सहज ही ग्रह पीड़ा से अपने आप को मुक्त करें ।

विशेष :- केन्द्र में लक्षचण्डी, विष्णु यज्ञ, रुद्र यज्ञ, ग्रह यज्ञ, श्रीमद्भागवत महापुराण, गृह प्रवेश, विवाह कराना आदि सभी सात्विक जप यज्ञ आदि कराने का प्रबन्ध है । कर्मकाण्ड वैदिक पद्धति द्वारा विधिवत संपन्न कराता है । केन्द्र में 40/50 वैदिक वेदपाठी ब्राह्मण अनवरत् रूप से रहते हैं तथा जप यज्ञ भी निरन्तर चलता रहता है ।

॥ नवग्रह चालीसा ॥

दोहा :-

विष्णु चरन सिरनायकै सुमिरहुं गणपित ध्याय ।
श्री नवग्रह महिमा कहौ शारद होहु सहाय ॥
जय-जय रवि शशि भौम बुध जय गुरू भृगु शनिराज ।
जय-जय राहू केतु ग्रह करहु कृपा मिल आज ॥

॥ श्री रवि-स्तुति ॥

प्रथमहिं दिनकर नावहुँ माथा । करहु कृपा प्रभु जानि अनाथा ॥ 1 ॥
हे आदित्य भास्कर भानू । मैं मति मन्द महा आज्ञानूं ॥ 2 ॥
दे प्रकाश तम हरहु कलेशा । तेज पुंज रवि रूप दिनेशा ॥ 3 ॥
नमो दिवाकर सूर्य प्रभाकर । अर्थ, मित्र अघ ओघ क्षमाकर ॥ 4 ॥

॥ श्री चन्द्र स्तुति ॥

राकापति हिमाँशु, राकेशा । जपतप जनहित हरहिं कलेशा ॥ 5 ॥
शशि मयंक रजनीपति स्वामी । चन्द्र कलानिधि नमो नमामी ॥ 6 ॥
सोम इन्दु विधु शान्ति सुधाकर । शीत रश्मि औषधि निशाकर ॥ 7 ॥
भाल शम्भु के आप विराजत । तुमहिं निरख दुख दारिद भाजत ॥ 8 ॥

॥ श्री मंगल स्तुति ॥

जय मंगल कारक सुखदायक । लोहित भौमाहित प्रिय नायक ॥ 9 ॥
अंगारक कुज रूज ऋण हारी । द्रवित होहु यह विनय हमारी ॥ 10 ॥
हे छितिसुत महिसुत सुखराशी । लोहितांग जग जन अघनाशी ॥ 11 ॥
सकल अमंगल प्रभु हरि लीजे । सकल मनोरथ पूरण कीजे ॥ 12 ॥

॥ श्री बुध-स्तुति ॥

जय शशि नन्दन बुद्धि विराजा । करहु सकल शुभ हे महाराजा ॥ 13 ॥
निरमल बुद्धि ज्ञानमय कीजै । कष्ट-कराल सकल हर लीजै ॥ 14 ॥
हे तारासुत रोहिणी-नन्दन । चन्द्र सुवन दारिद्र दुख भंजन ॥ 15 ॥
पूजहूं चरन आपके स्वामी । स्वीकारहु प्रभु भक्ति नमामी ॥ 16 ॥

॥ श्री बृहस्पति स्तुति ॥

जय जय बृहस्पति गुरु देवा । करहुँ सदा चरनन की सेवा ॥ 17 ॥
देवाचार्य देव गुरु ज्ञानी । इन्द्र पुरोहित विद्या दानी ॥ 18 ॥
व्रह्मऋषि जग नाम तिहारा । वाचस्पति वागीश उदारा ॥ 19 ॥
विद्या वारिधि अंगिरा नामा । पूरण करहुं सकल विधि कामा ॥ 20 ॥

॥ श्री शुक्र-स्तुति ॥

हे उशना भार्गव भृगुनन्दन । दैत्यपुरी हित पाप निकन्दन ॥ 21 ॥
भृगुकुल भूषण दूषण हारी । हरहु नेष्टि ग्रह करहु सुखारी ॥ 22 ॥
तुम पंडित, जोशी, द्विजराजा । तुमसे संवरत बहुविधि काजा ॥ 23 ॥
शुक्रदेव प्रभु चरनन ध्याता । भक्ति भाव श्रद्धा उर लाता ॥ 24 ॥

॥ श्री शनि-स्तुति ॥

जय शनिदेव परम उपकारी । न्याय नीति के तुम अवतारी ॥ 25 ॥
बल पौरुष लखि सृष्टि डरावै । देव असुर बल पार न पावै ॥ 26 ॥
मन क्रम वचन ध्यान सों ध्यावै । सो नर मनवांच्छित फल पावै ॥ 27 ॥
चर औ अचर सभी गुणगावें । पाय कृपा 'बजरंग' हरसावै ॥ 28 ॥

॥ श्री राहु-स्तुति ॥

जय-जय राहु ग्रह मन बसिया । तुम्ही सूर्य चन्द्र मुख ग्रसिया ॥ 29 ॥
रवि शशि अरि स्वर्भानु धारा । शिखी आदि बहुनाम तिहारा ॥ 30 ॥
सैहि केय तुम निश्चर राजा । अर्धकाय प्रभु राखहु लाजा ॥ 31 ॥
यदि ग्रह समय पाय कहुँ आवहु । सदा शान्ति रहि सुख उपजावहु ॥ 32॥

॥ श्री केतु-स्तुति ॥

जय-जय केतु कठिन दुखहारी । भक्तन हेतु सदा शुभकारी ॥ 33 ॥
ध्वजयुत खण्ड रूप विकराला । घोर रौद्रतन अधमन काला ॥ 34॥
शिखी तारिका ग्रह बलवाना । महाप्रताप न तेज ठिकाना ॥ 35 ॥
मंगलकारी प्रभुवर केतू । बाँधे आप सिन्धु पै सेतू ॥ 36 ॥

नव ग्रह शान्ति फल

यह नवग्रह शान्ति रूप चालीसा । जप कर्ता पावै अशीषा ॥ 37 ॥
जो नित पाठ करै चित लावै । सब सुख भोगि परम पद पावै ॥ 38 ॥
पावै यश सम्पति विधि नाना । करहि नवग्रह मिल कल्याना ॥ 39 ॥
'बजरंग' जो नवग्रह व्रत धारै । ताकी जय जगती उच्चारै ॥ 40 ॥

दोहा :-

धन्य नवग्रह देव प्रभु, सकल विश्व सुखकार ।
नित नव मंगल मोद ग्रह, हरहु कलेश विकार ॥
नव-ग्रह चालीसा करै, गृह-आँगन सुख रास ।
पढ़त प्रेमयुत नेम सौ, पावत हर्ष-हुलास ॥

श्री नवग्रह-स्तोत्र

श्लोक - जपा कुसुम संकाशं काश्पेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ 1 ॥

अर्थ - जपा कुसुम की भांति कान्तिमय रूप मनोहर ।
कश्यप नन्दन पाप तिमिर हर हे प्रभु दिनकर ॥
हरो अविद्या अंधकार प्रभु मम प्रणाम स्वीकारो ।
सूर्य देव करि कृपा तेज आपुन विस्तारो ॥

श्लोक - दधि-शँख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकटभूषणम् ॥ 2 ॥

अर्थ - दही, शंख, हिम के समान जो मन को मोहे ।
शम्भु मुकट बन चन्द्र रूप में शीश पै सोहे ॥
ऐसे मुक्तामणि रूपी श्री चन्द्रदेव को नमस्कार है ।
क्षीर सिन्धु से भये प्रकट जो उनकी जै जैकार है ॥

श्लोक - धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।
कुमारं शक्ति हस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥ 3 ॥

अर्थ - धरा उदर से जन्मा है जो, विद्युत जैसी कान्ति मनोहर ।
जिन हाथों में संचित शक्ति, मंगलमय प्रभु शान्ति सरोवर ॥
मंगलमय प्रभु मंगल देव को अर्पित शुद्ध धाम है ।
उनके श्री चरणों में अर्पित मेरा कोटि प्रणाम है ॥

श्लोक - प्रियंगुकलिका श्यामं रूपेण प्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ 4 ॥

अर्थ - प्रियंग कलिका श्यामवर्ण जो अनुपमेय रूप नाम है ।
सौम्य गुणों से युक्त बुद्ध को मेरा कोटि प्रणाम है ॥

श्लोक - देवानां च ऋषिणां च गुरूं काञ्चन सन्निभम् ।
बुद्धि भूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ 5 ॥

अर्थ - सकल देव गण, ऋषि मण्डल गुरू कंचन जैसी आभा वाले ।
बुद्धि विद्या के समुद्र जो त्रयलोकी प्रभु प्रतिभा वाले ॥
देवगुरू श्री बृहस्पति को अर्पित श्रद्धा सुबह शाम है ।
उनको जग का शत-शत प्रणाम है ॥

श्लोक - हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ 6 ॥

अर्थ - दैत्य परम गुरू तुषार कमल सी आभा वाले ।

सब शास्त्रों के वक्ता अनुपम, चमत्कार मंत्रों का पाले ॥
ऐसे शुक्राचार्य गुरू को बारम्बार प्रणाम है ।
महामृत्युंज्य विद्याधारी अमर आपका नाम है ॥

श्लोक - नीलाञ्जन समाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ 7 ॥

अर्थ - नील अंजन सी दीप्त है जिनकी सूर्य तनय यमराज के भ्राता ।
छायानन्दन श्री शनिराज को भक्त भाव श्रद्धा सों ध्याता ॥

श्लोक - अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रा दित्य विमर्दनम् ।
सिंहि का गर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ 8 ॥

अर्थ - यद्यपि आधा ही शरीर है फिर भी महापराक्रम वाले ।
सूर्य चन्द्र को ग्रसें पराजित जो कि सिंहिका गर्भ से पाले ।
ऐसे प्रभुवर राहु देव जी को मेरा शत प्रणाम है ॥
अमृत पीकर अमर हो गए श्री राहु का अमर नाम है ॥

श्लोक - पलाश पुष्प संकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ 9 ॥

अर्थ - पलाश के लाल फूल की भांति तारका दल में सर्वोत्तम है ।
रौद्र रूप अरु रौद्रात्मक है घोर रूप में केतु अहम् है ॥
दुष्ट जनों को दण्ड दिलाते जो सज्जन की जयकार है ।
ऐसे प्रभुवर केतु देव को अर्पित मेरा नमस्कार है ॥

श्लोक - इति व्यास मुखोद्‌गीतं यः पठेत्सु समाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्न शान्ति र्भविष्यति ॥ 10 ॥

अर्थ - श्री व्यास मुख से उद्‌भाषित जो स्तोत्र का पाठ करेगा ।
विघ्न बाधाऐं शान्त सभी हों वो जीवन सुख गोद भरेगा ॥

श्लोक - नरनारी नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्न नाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टि वर्द्धनम् ॥ 11 ॥

अर्थ - नर, नारी नृप सकल जगत के दुःस्वप्नों को दूर हटाते ।
अतुलनीय ऐश्वर्य निरोगी पुष्टि वृद्धि दे कर हरषाते ॥

श्लोक - ग्रहनक्षत्रजाः पीड़ास्तस्कराऽग्नि समुद्‌भवाः ।
ता सर्वाः प्रशमंयान्ति व्यासो ब्रूते न संशय ॥ 12 ॥

अर्थ - ग्रह, नक्षत्र, चोर अग्नि से जाग्रत पीड़ायें मिट जाती ।
संशय नही कोई भी इसमें व्यास कहें दुविधा हट जाती ॥

इति वेदव्यास विरचित नवग्रह स्तोत्रम्

श्री नवग्रह कवच

समस्त ग्रहों को प्रसन्न रखने व आत्मरक्षा हेतु नीचे लिखे **"श्री नवग्रह कवच"** का नित्य पाठ करने से ग्रहों की क्रूर दृष्टि से उत्पन्न पीड़ाएँ, बाधाएँ व रोग समाप्त हो जाते हैं, किसी रोगी व्यक्ति के शरीर को स्पर्श कर इस कवच के पाठ से रोग बहुत शीघ्र ही समाप्त हो जाता है । ग्रहण काल में इस कवच का पुरश्चरणकर और भोजपत्र पर लिखकर चाँदी या ताँबे के ताबीज में भर कर भुजा पर धारण करने से वैदिक, दैविक व भौतिक तापों से छुटकारा प्राप्त हो जाता ही है ।

ॐ शिरो मे धातु मार्तण्डः कपालं रोहिणी पति ।
मुखमंगारकः पातु कण्ठं च शशि नन्दनः ॥ **1** ॥
बुद्धि जीवः सदा पातु हृदयं भृगु नन्दनः ।
जठरे च शनि पातु, जिव्हा में दिति नन्दन : ॥ **2** ॥
पादौ केतुः सदा पातु, वारा : सर्वांगमेव च ।
तिथियोऽष्टौ दिशः पातु, नक्षत्राणि वपु सदा ॥ **3** ॥
अंशौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च ।

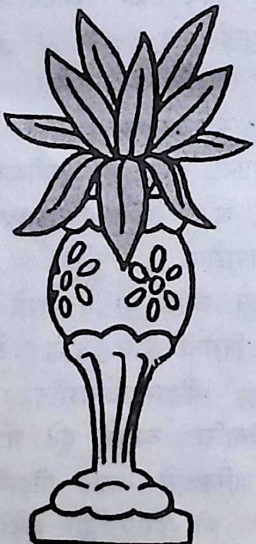

आरती श्री नवग्रह

आरती श्री नवग्रहों की कीजै ।
बाधा, कष्ट, रोग, हर लीजै ॥
सूर्य तेज व्यापे जीवन भर ।
जाकी कृपा कबहु नहिं छीजै ॥ 1 ॥
रूप चन्द्र शीतलता लाये ।
शान्ति- स्नेह सरस रसु भीजै ॥ 2 ॥
मंगल हरे अमंगल सारा ।
सौम्य-सुधा- रस अमृत पीजै ॥ 3 ॥
बुद्ध सदा वैभव यश लाये ।
सुख-सम्पत्ति लक्ष्मी पसीजै ॥ 4 ॥
विद्या-बुद्धि ज्ञान गुरू से ले लो ।
प्रगति सदा मानव पै रीझै ॥ 5 ॥
शुक्र तर्क विज्ञान बढ़ावै ।
देश धर्म सेवा यश लीजे ॥ 6 ॥
न्यायधीश शनि अति ज्यारे ।
जप तप श्रद्धा शनि को दीजै ॥ 7 ॥
राहु मन का भरम हरावे ।
साथ न कबहु कुकर्म न दीजै ॥ 8 ॥
स्वास्थ्य उत्तम केतु राखै ।
पराधीनता मनहित खीजै ॥ 9 ॥

विशेष सूचना

शनि ग्रह पीड़ा निवारण विधि "शनि शत्रु नहीं मित्र" नामक प्रसिद्ध पुस्तक का चतुर्थ संशोधित संस्करण तथा आडियो कैसेट शनि गीत माला जय श्री शनि देव पाँच भागों में पूर्ण विवरण सहित केन्द्र से प्राप्त किया जा सकेगा अत: जिज्ञासु सम्पर्क कर जिज्ञासा शान्त करें ।

आज तक के इतिहास में शनि की पूर्ण जानकारी हेतु आडियो कैसेट तथा गीत माला नहीं बनी । पं० जी ने जनता जनार्दन के उपकार हेतु ऐसा कदम उठाया है ताकि जनता सुन कर शनि को जान सके और पढ़ कर शनि को पहचान सके और अपनी समस्त भ्रांतियों का निर्मूल कर शनि कृपा प्राप्त कर सके । इस कैसेट को शनि से पीड़ित व्यक्ति अवश्य सुनें ।

अद्भुत जन्मांक का निर्माण जिसे पढ़कर जातक स्वत: ही अपनी कुण्डली का फलित कर सकेगा इस अनोखे जन्मांक का विमोचन दिनांक 1-1-1998 पूज्य शंकराचार्य स्वामी श्री माधवआश्रम जी ने किया था । केन्द्र से इस अनूठे जन्मांक को बनवाकर अपना निर्विघ्न पथ स्वत: प्रसस्त कर सकेंगे और अपने को तथा अपने परिवार को कराल ग्रह दशा से मुक्त कर ग्रह कृपा प्राप्त कर सकेंगे ।

विशेष सूचना

रुचि एवं बेहतर चिकित्सा विधि [illegible] आप स्वयं [illegible] होम्योपैथी पुस्तकों का सम्पूर्ण [illegible] पूर्ण विवरण सहित [illegible] से प्राप्त किया जा सकता है। [illegible] सम्पर्क कर [illegible]।

आज तक के इतिहास में [illegible] की पूर्ण जानकारी हेतु [illegible] के उपचार [illegible] है [illegible] और अपनी [illegible] प्राप्त [illegible] पीड़ित व्यक्ति [illegible]।

[illegible] 1-1-1998 [illegible]

११-१ २८/ जवलपुर

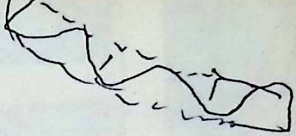

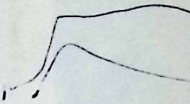

THE MAN IS CONTROLLED BY THE PLANETS NOBODY DARE TO CHALLANGE IT

मनुष्य ग्रहों द्वारा नियंत्रित है। कोई उन्हें चुनौती देने का साहस नहीं कर सकता

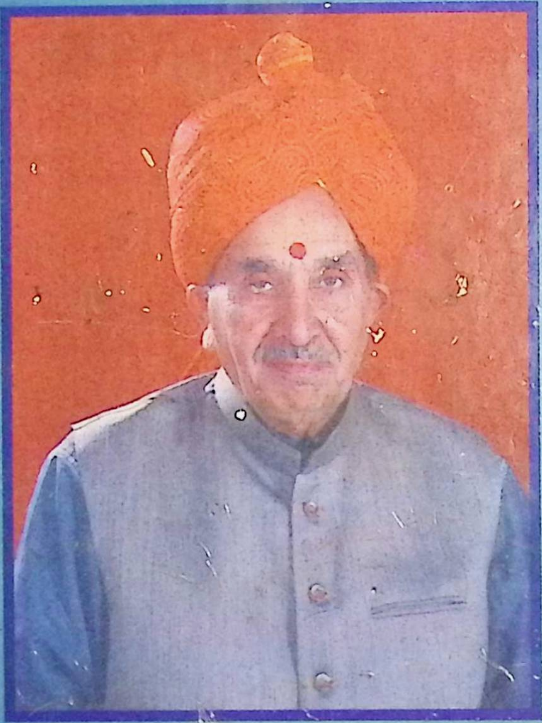

चाहे जातक अध्यात्मवादी हो, चाहे भौतिकवादी हो, आस्तिक हो या नास्तिक ो, किसी सम्प्रदाय का हो, किसी जाति का हो, देशी हो या विदेशी हो, किसी धर्म का ानने वाला हो या ना मानने वाला हो । ग्रहों का प्रभाव हर प्राणी पर समान रुप से हर वस्था में पड़ता है और ग्रह की चाल के अनुसार ही उसे विवश होकर चलना पड़ता है। ोई भी अपने को इस प्रभाव से नहीं बचा सकता। जैसे औषधि रोग को निवृत्त कर देती , उसी प्रकार मंत्र ग्रह पीड़ा को निवृत्त कर देते हैं। केन्द्र का अनुभव है कि मंत्र की त्यता जानने के लिए हर जाति वालों को कुछ समय जप कर अनुभव प्राप्त कर लेने ाहिए। यह अकाट्य सत्य है कि मंत्र जप होते ही मस्तिष्क में शान्ति आ जायेगी और गड़े काम अपने आप बनने लगेंगे।

ी बजरंग नवग्रह अनुसंधान संशोधन तथा जीवन प्रदायण केन्द्र, सैक्टर-11, A/32B
सचिवालय मार्ग, फरीदाबाद (हरियाणा) - 121 006 दूरभाष - 0129-5280912